श्री गणेशायनमः। श्री सरस्वत्यै नमः ॥

अथ चिंतातंत्र लिख्यते॥

दोहा

पारद भारद कारनी । बसनी हारद माहि॥
वीन बिशारद धारनी । शारद सुमरौ नाहि॥१॥
वानी मानी शील सुख । सब जानी जानीन॥
मति दानी ज्ञानीन की । रानी महारानी न॥२॥
अति मति मंद गुलाब कवि छंद अलंकृति रीति।
कला बरीतीति गति बिरति नाहि जानै नीति नीति३
तउ हठ बल रचना रचत पचि पचि तचि २ ताप॥
सोचि २ पद लोचि २ रह्यो बिन बानी के जाप॥४॥
तातैं अब बिनती करौं भूलि माफ करि माय॥
दै चिंता गत दास को चिंता तंत्र बनाय॥५॥

गुरु निमित्त चिंता कथन॥ दोहा॥ एकानन हर हि
र हरि सुख घर अकर द्वि देह॥ भानु सहस कर हीन गुरु
ाहि सुमरे गुन गेह॥६॥ टीका॥ एक मुख के महादेव हैं
ाय हाथ के विष्णु हैं सुख के घर हैं बिना सूड़ के गणेश हैं
बिना हजार किरन के सूरज हैं गुन के घर हैं ऐसे गुरु मैंने
हीं सुमरे॥६॥ दोहा॥ आशाय घर दीरघ उदर ... नह
कृपाल॥ मोदक भायक मोद कर भजे गुरु नगन ... अनंत ३
॥ गुरु गन पाल नहीं भजे गुरु कैसे हैं नह ... ग्यो कुंद
उदर अभिप्राय कों धरने मैं दीर्घ हैं उदजल
वारे हैं कृपाल हैं मोदकभायक प्र

दक्र आनंद के करवे वारे हैं गरोश जीकैसे हैं आश्रय घर आधार कों घ-
र वे वारे हैं अर्थात भक्त जन कों आधार दाता हैं दीरघ उदर
लंबो है उदर जिनको सर्व सहाय शिव जो है सहायक जिन
के कृपाल हैं मोदक भायक लड्डू भाव हैं जिनको मोद कर क-
ल्यान करवे वारे हैं ॥ श्लोक ॥ आश्रयः स्याद्दृभि प्राये पन
माधार यौरपि ॥ मोदकः वाद्य भेदे स्त्री हर्ष के पुस न्यवत ॥
इति मेदिनी कोषे ॥ गुरु अंशमानार्थ ॥ दोहा ॥
दर्शक सुपथ कुपंथ के शंख वेद धुनि वान ॥ नम हर साखी ज
नन के भजे न गुरु वसु मान ॥ ९ ॥ गुरु हर्यर्थ ॥ दोहा ॥
दाता मति गति मंत्र के हाता दुरित अमान ॥ त्राता जन सुमिरेन
में साता गुरु भगवान ॥ पीताम्बर श्री जलज धर पालक वीश
सहाहि ॥ रत्नाकर घर चतुर कर गुरु हरि सुमिरे नाहि ॥ १० ॥
टीका ॥ गुरु हरि नहि सुमिरे गुरु कैसे हैं पीतांवर श्री ज
लज धर पीत बस्त्र शोभा और संतान कों धारे है पालक वी
स सहाहि कविराजन के सहाही पालक हैं ॥ रत्नाकर घर च
कर रत्नन के समूह धारण करे हैं शिष्यन कों प्रवीन करे हैं
हरि कैसे हैं पीतांबर लक्ष्मी शंख कों धारे हैं वीस गरुड़ के
सहाही पालक है समुद्र के घर है चतुभुज है ॥ १० ॥ गुरु
रामार्थ ॥ दोहा ॥ अवरी मति हर सुमति घर सवरी
ति के धाम ॥ बनिता खवरी हरि हित कवरी काहे गुर राम
-णार्थ ॥ दोहा ॥ द्विज कुल भव द्विज दरद द
र कास ॥ गो पति हित गो पति अहित भजे
म ॥ १२ ॥ टीका ॥ गुरु घन श्याम नहीं
द्विज कुल में उत्पन्न भये हैं ब्राह्मण के
ाले हैं संसार के भायक हैं काम के करत

हैं गो पति शिव से है हित जिनका गो पति मूल से अहि-
त है अर्थात् मन कों रोकने वाले हैं कृष्ण केसे हैं चन्द्रमा
के कुल में उत्पन्न भये हैं सुदामा का दरद दूर किया है
शिव के भायक हैं कामावतार प्रद्युम्न के करने वाले हैं गो
पति हित वरुण में हित है इन्द्र में अहित हैं ॥ २२ ॥
गुरु हरार्य ॥ दोहा ॥ शुचि घर चंदन चंद धर भूति
मान गति दाय ॥ सुखद दुखद दर चरित वर भजन गुरु
गिरि राय ॥ २३ ॥ टीका ॥ गुरु गिरीश नहीं भजे गुरु कैसे
हैं पवित्रता के घर हैं चंदन कपूर धारण करे है संपतिवा
न हैं ज्ञान के दाता हैं सुख के दाता हैं दुखद जो दुर्व्यसन
उनके दलिने वाले हैं चरित्र करि विद्या पढावें हैं शिव के
से हैं अग्नि के घर हैं तीसरे नेत्र में अग्नि है चंदन चंद्रमा
कों धारे हैं भस्म सहित हैं शुभ गति के दाता हैं सुखद स्व
र्ग के दाता हैं दुखद दर दुष्टन के दलिने वाले हैं चरित उत्त
म है ॥ २३ ॥ गुरु विधातार्य ॥ दोहा ॥ रचना कर वरवे
द धर गमन सराल उदार ॥ दानि चतुर्मुख चतुर कर भुजन गु
रू जग कार ॥ २४ ॥ टीका ॥ गुरु कैसे हैं कविता के करिवे
वारे हैं सुंदर वेदन के धारन करि वे वारे हैं हंस कोसो ग-
मन है उदार सरल तें विद्या के दानी हैं चतुरन में मुख्य
हैं चतुर करि वे वारे हैं ब्रह्मा भी कैसे हैं संसार कों ब-
नायवे वारे हैं वर और वेदन के धारन करि वे वारे हैं
स पे चढ़ि के गमन करि वे वारे हैं दानी हैं च
र भुजा वारे हैं कैसे गरुड़ जग कार में ने नहीं अनंत ३५ ॥
अर्थिका ॥ दोहा ॥ गो पति पति जल ज्यो कुंद मुद
धहर धर्म बिलीन ॥ ज्ञाता अक्षर अर्थ प्र

रीत कीन ॥ २५ ॥ **टीका** ॥ गुरु हरि हर में रति नहि करी गुरु कैसे हैं गो पति पति वानी के पति जो विद्वान तिन में मुख्य हैं ॥ जल जात धर मोतीन के धारन करि वे वारे हैं भव हर ॥ व्यसन के दूर करि वे वारे हैं ॥ धर्म विलीन पुराय १ न्याय २ में लीन हैं ॥ ज्ञाता है ॥ अक्षर अर्थ प्रद ॥ वर्ण अर्थ प्रयोजनके दायक हैं हरि कैसे हैं इंद्र के स्वामी हैं ॥ शंख धर हैं पाप हर हैं ॥ न्याय १ आचार २ में लीन हैं ॥ ज्ञाता हैं ॥ अच्युत हैं ॥ प्रयोजन १ यज्ञ के २ दाता हैं हर कैसे हैं ॥ वृषभ के पति हैं ॥ चंद धर हैं ॥ दुःख हर हैं ॥ धनुष अहिंसा २ उपनिषद में लीन हैं ॥ ब्रह्म हैं ॥ धन दानी हैं ॥ २५ ॥ **गणपति निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥** एक रदन वारण बदन मदन कदन के नंद ॥ मथन सदन सद मति सदन कथे न करुणा कंद ॥ १६ ॥ संद सतिन के फंद हर शिवा नंद सुख कंद ॥ नरक निकंदन चंद धर नहिं बंदे जगवंद ॥ १६ ॥ सुख घर संपति निकर कर दुख दर अधम उधार ॥ उद्धर कदन लगि नहि रे लंबोदर दरदार ॥ १७ ॥ बिघन सकोचन सोच हर पोच सकोच निकाल ॥ भय मोचन लोचनन सें कब लखि हैं गणपाल ॥ १७ ॥ **रवि निमित्त चिंता कथन ॥ दो०** अरुन बसन वर अरुन तनु जोति वंत छबि थान ॥ उदयाचल थित उदय कर भय हर भजे न भान ॥ २० ॥ सेवा नर नाकन की भायक करत दस्योन ॥ नायक सुर नायकन को दिमस्योन ॥ २१ ॥ वृष रबि सन्मुख दीठि दे इकठ ॥ धरि शिर दीपक सर्व दिन थित नर क्यो इ ॥ रन में रावन वधन रबि सुमरे राम सराहि ॥

ला ॥ १ भय कों दूर कर वाला

नवहो दश सिर गिरि गये सो मैं सुमरे नाहि ॥ २३ ॥ घात
क जालक जाल के पालक बालक बाल ॥ टालक कालकरा
ल के कये न कालक काल ॥ २४ ॥ मन वाहक चाहक जन
दाहक दारिद दाह ॥ गाहक दीन पुकार के नहि जान्ये दिन
नाह ॥ २५ ॥ बरस बिताया भूलि में साबिता छबिता कीन ॥
सबिता कबिता दीन तउ सविता कविता कीन ॥ २६ ॥ सु
भायक घायक असुर सकल सहायक आप ॥ अज कायक
बायक मृदुल क्यों न हरो मो ताप ॥ २७ ॥ विष्णु निमित्त चिं
ता कथन ॥ **दोहा** ॥ नील जलद तनु विमल मन कमल
नयन सुखकार ॥ कंज गदा दर चक्र धर मैन भजे सुज च्य
र ॥ २८ ॥ दाना दान अमान के जन्मन कारन स थान ॥ वन
वासि मन लाय न भजे जग भावन भगवान ॥ २९ ॥ परमानद
जन मन हरन तनक न कीने काम ॥ परमानद ध्यायेन मैं
के धाम ॥ ३० ॥ धारि धारणा धाम तजि साधनस
अनंत ॥ किलकत कमला हित भज्यो भज्यो न कमला
॥ ३१ ॥ वग सति धारि जग पतिन के खग गति धायो
॥ जग रति तजि सेये नही खगपति के असवार ॥ ३२ ॥
जग गति देखि तजे नही उरा न ति केल गवार ॥ खगपति
पालक तजे मे खगपति असवार ॥ ३३ ॥ विश्वंभर भ्रम
भजे विश्वंभराधि पान ॥ विश्वंभर पालन भजे
भगवान ॥ ३४ ॥ लपट्यो लोभ अनंत मे
॥ हट्यो न संतन के सरण रट्यो न नाम अनंत ३५
द्वंद अनंद मे लाग्यो तोषण तुंद ॥ राग्यो कुंद सुद

पालक २ राजा ३ ब्रह्मादि ४ निधि भेद ॥

मे त्यागयो नाम सुकुंद ॥२६॥ चरवा दारन लौं रंज्यौ पर घर घर वा आदि ॥ नहि हरि दर वाजो भज्यो कर वा कर मे राषि ॥ २७॥ दिशि दिशि फिर कासि कासि बपुष जोर्यो धन दुख हानि ॥ वसि जगदीश पुरी करी नहि पापन की हानि ॥२८ धामनि धीशन के सकल फिरि फिरि सब जगदीश ॥ तट नदी श जगदीश पुर मे जगदीश न दीश ॥२९॥ कदरी बनि सुनि अगदरी गन की गाथ ॥ सब तजे बदरी फल भषत बस्यौ नव दरीनाथ ॥३०॥ करे राव अति रंक कौं अति निर्धन निधि वान ॥ धर्यौ न छिन मनि मंद मे सिंधु सुता को ध्यान ॥३१ छमा सदन दारिद कदन कमल बदन वर हाथ ॥ क्यौं न करै मोपर मया रमा रमा के नाथ ॥३२॥ कारन मानि अकार नहि रह्यौ गवारन लार ॥ दुख दारन धार्यौ न उर वर वानर षवार ॥३३॥ **राम निमित चिंता कथन ॥ दोहा ॥** श्याम गोर जोरी जुगल पीत नील पट धारि ॥ विचरत दशरथ अजिर मे सुमरे मैन सम्हारि ॥३४॥ निश दिन अकरन करन मैं तनकहु कस रन कीन ॥ असरन सरन खरारि की छिन हू सरन गहीन ॥ ३५॥ हट्यौ न माया मोह मद कट्यौ न पाप पहार ॥ चट्यौ न धन अनुराग मन रट्यौ न राम उदार ॥३६॥ व्यरथ पर्यौ सम रथ समुझि असमरथन के फंद ॥ अरथ त्यागि सुमर्यौ नहीं समरथ दसरथ नंद ॥३७॥ सरजू तीर कुटीर वसि लहि समीर हर पीर ॥ अति गभीर बरनीर मे नहि सुमरे रघुवीर ॥३८ चैन कथलीखन कत फिर्यौ कनक कली सी प्यार ॥ जनक ली नाजि नहि भजे जनक लली भरतार ॥३९॥ भाषि भाषि०

१ भूतत्वान २ समुद्र ३ फिसादीप ४ नहि कर वा को ५ सोना की खानि

त समान फल लाय लखिन करि नीर ॥ हर्षे हर्षे विपिनन फिर्यो राषि राषि उर रघुवीर ॥५०॥ तरुनी तरुनी राम की वर वरनी वरनो न ॥ बैतरनी तरनी करी शुभ करनी करनो न ॥५१॥ बर्ष विती-ता व्यर्थ बहु चित चीता के माहि ॥ रीता को रीतो रह्यो सीता सुमरी नाहि ॥५२॥ नमत निहारि अनंदनी जगत बंदनी ख्यात ॥ हरी न नरकनि कंदनी जनक नंदनी मात ॥५३॥ दरनी दारिद दुख दलन करनी अति कल्यान ॥ हरनी रावन सहस शिर वरनी राम प्रियान ॥५४॥ गली गली विफली फिर्यो छली छली की लार ॥ जनक थली बसि नहि करी जनक लली रखवार ॥५५॥ शोध्या नाना पंथ में वोध्या जन धन देन ॥ शोध्या वोध्या सकल तजि वस्यो अयोध्या मैन ॥५६॥ रह्यो नही निशि वासरो सासरो कि मठ माहि ॥ सीता पति को सासरो कर्यो आसरो नाहि ॥५७॥ नाना बनक बनाय के धर्यो धनिक नगरीन ॥ लोभ पास के नास हित प्रविश्यो जनक पुरीन ॥५८॥ अनुचित अनुचित कर्म करि भरी पाप की पोट ॥ जमसेना भय धरि नली चित्रकूट की ओट ॥५९॥ अघ अपवित्र विचित्र भट कीने घने अमित्र ॥ परम पवित्र कियो नही चित्रकूट निज मित्र ॥६०॥ दंडक पाप प्रचंड को खंडक कष्टत माम ॥ राम सरण लीह नहि कर्यो दंडक बन में धाम ॥६१॥ राम लखन सिय पग परस पावन भूमि मझार ॥ फिर्यो न सुमरत राम को निरषत मुनिन अगार ॥६२॥ घटी घटी वय घटि गई हटी न आशा आँच पंच बटी बसि नहि लख्यो मुक्ति नटी को नाच ॥६३॥ जम सैं वाँध बिरोध अति करि करि अगनित षोट ॥ राम नाम वल नहि वस्यो पंचवटी के कोट ॥६४॥ विपति पाय जामे वसे सीता लछमन राम ॥ मे व्यापद गत नहि कर्यो पंचव-

टी में धाम ॥ ६५ ॥ जटी तरु लता पाँति मैं फटी गूदरी धारि ॥ पंचवटी कव नाँचि हौं मुक्ति नटी मद मारि ॥ ६६ ॥ **कृष्ण निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥** पीत वसन घन श्याम तनु शोभा सदन सुजान ॥ वर वंसी बनमाल धर धरे न उर भगवान ॥ ६७ ॥ धायो धौंनोदर भरन वामोदर भरयोन ॥ क्षामोदरि जसुदा तनय दामोदर सुमरयोन ॥ ६८ ॥ बंधि फंदन सैं ढंढ़ता मै मति मंद ह्रीन ॥ कीर नद नंदन बंदना चंदन दाम घरीन ॥ ६९ ॥ साधा साधा नरन की करी अगाधा सेव ॥ राधा वर वरने नहीं वाधा हर हरि देव ॥ ७० ॥ करत रह्यो जग पथन मैं अकथन कथन अपार ॥ मन हर मन मथ मन मथन कथे न नंद कुमार ॥ ७१ ॥ अघ दल दल पलकन भजे वल भैया खल काल ॥ पल जल मैं लपस्वाल की पाली ख्वाली ख्वाल ॥ ७२ ॥ वर्षत बनमालीन में विचरयो वन मालीन ॥ कुल पाली पाली रह्यो सुमरे बन मालीन ॥ ७३ ॥ सब संग तजि रँगि राग में गोपिन की अनुहारि ॥ ब्रज वसि तन मन नहि करयो बनमाली बलिहारि ॥ ७४ ॥ तरसत बरसत वारि मैं धायो धनिकन धाम ॥ वर्षत घन श्यामन सहत नहि सुमरे घन श्याम ॥ ७५ ॥ उतरन पट गोपीन की धरि टोपी को पीन ॥ कोपी गुन लोपीन मति हरि मैं रोपीन ॥ ७६ ॥ तुलसी बन मैं नहि फिरयो धरि तुलसी माल ॥ हित जुत हरि उर मैं धरी नहि तुल दल साल ॥ ७७ ॥ पाप प्रचंडन सों डरयो परयो रह्यो मैं ... ॥ मधु धेनुक चाणूर हर समरथ शरण गहीन ॥ ७८ ॥ ... थ मद पाप भय करत सकल मिलि मार ॥ कैटभ

श्री केशव हर कब कोरे है उद्धार ॥ ७९ ॥ श्याम सिद्धि की साधिका विघन बाधिका चाहि ॥ सुर नर की आराधिका रटी राधिका नाहि ॥ ८० ॥ राधे राधे रट रटत साधे साधन मैन ॥ दुख दाधे साधे मनुज आराधे दिन रैन ॥ ८१ ॥ दरसाने दिन टारने सरसाने शुभ काम ॥ बरसाने वसि नहि लखे बरसाने घनश्याम ॥ ८२ ॥ थली थली बिथली करी हेरत वली वलीन ॥ लाल लली टेरत दली गोकुल गली गलीन ॥ ८३ ॥ आसा बाँधि आसान फिरि घर घर वासा लीन ॥ त्यागि दुरासा हरि सुमरि मथुरा वास न कीन ॥ ८४ ॥ भज तो राधा रमन कों बाधा हरन अपार ॥ तजि धन दारा नहि धस्यो द्वार बनी दुवार ॥ ८५ ॥ समन स्व सादिन कर सुता पावन श्याम सरीर ॥ तजि घर घरनी हरि भजत तस्यो न जमुना नीर ॥ ८६ ॥ सब परि हरि हरि हरि रटत परि हौं तिनके द्वार ॥ नहि जानो है हैं किनहि हरि राधा रखवार ॥ ८७ ॥ **शिव निमित्त चिंता कथन दोहा** ॥ सित शरीर वर सर्प शिर कृपा गार हर मार ॥ विष शशि सरिता भस्म धर हरन करे हितकार ॥ ८८ ॥ वसुमति वस वसुमति फिस्यो वसुमति पति न सयान ॥ पशुपति मति तजि नहि भजे पशुपति वसु हग वान ॥ ८९ ॥ विशद न कीनों हृद सदन मदन कदन उर राखि ॥ बदन दोषक दनन कस्यो पंच बदन गुन भाषि ॥ ९० ॥ पांच का- पाँच पाँच तजी सोच विमोचन सेव ॥ नहि लोचन रोके देखि त्रिलोचन देव ॥ ९१ ॥ लखी आरसी आरसी लार ॥ शिव सिपारसी नहि धस्यो बनारसीन मझार ॥

९२॥ पंचानन नित तीर पर हर हर कहत फिरयौन॥ बसि पंचानन नगर मे पंचानन सुमरयौन॥ ९३॥ भूप भवन आधार लहि विचरयो सदा अधीर॥ निराधार हर हर कहत फिरयो न सुर सरि तीर॥ ९४॥ अब कब ह्वै है वह दिवस धारि बसन का साय॥ फिरि हौं गिरिजा बहन तट गिरिजा पति गुन गाय॥ ९५॥ राम रचित संसार हित करि हर सूरीन चाह॥ डरि पापन सों नहि लई सेतु बंध की राह॥ ९६॥ करि पूजन हर हर जपत धरत उमा हम हाहि॥ बस्त भवन नीन लहि फिरयो सेतु बंध के माहि॥ ९७॥ निर्मल गंगोतरी सलिल भरि सो तीन प्रकार॥ धरि कावरि निज कंध पै गयो न मैं ओंकार॥ ९८॥ सारस नैनिन के सरस लखि लखि सारस नैन॥ जुवना रस बस घर वस्यो वस्यो बनारस मैन॥ ९९॥ सांसी सन्यासीन की नासी पीड़ा तीन॥ नासी जम पासीन की कासी वासन कीन॥ २००॥ भस्म लाय कर पात्र धरि संग त्यागि अघ हीन॥ कबहू न कासी मे फिरयो करि के बल कोपीन॥ २०१॥ विस्वासी राख्यो न मैं जम पासी को टाल॥ दाता दासी मुक्ति को कासी को कुत वाल॥ २०२॥ **हरि हर निमित चिंता कथन॥ दोहा॥** बनिता उर वासीग धर गरुड ध्वज वृष केत॥ पाल प्रलय कर भूति धर करयो न हरि हर हेत॥ २०३ बसि कासी मथुरा पुरी धसि देवा लय माहि॥ पूजि उमा धव प्रेम सों माधव ध्यायो नाहि॥ २०४॥ साधि समाधि मुनीन लौं करि कोपीन पिधान॥ बैठि कुशासन विपिन मैं धरयो न हरि हर ध्यान॥ २०५॥ धरयो काल ने गाल मैं षिन षिन

खीचत ख्याल॥ कब करि हो मो पाल अब हरि हर त्रिभुव
न पाल॥ २०६॥ देवी निमित चिंता कथन॥ दोहा
बर बरनी दर दारनी करनी कुल कल्यान॥ हर अरधंग वि
हारनी हेरी हिये हरान॥ २०७॥ त्रिभुवन की प्रति पालिका
अमर मालिका अैन॥ असुर घालिका कालिका पूजि रिझाई
सैन॥ २०८॥ प्रबल खलन की खंडिका दनुज दंडिका चा-
हि॥ मोह मंडल की मंडिका रटी चंडिका नाहि॥ २०९॥
रुद्रारणी कात्यायनी भवा भवानी बैन॥ सर्वाणी दाक्षाय-
णी रटी मृडानी अैन॥ २१०॥ पछितातो मन मै रह्यो पुनि
पुनि धारि उमाह॥ दुर्गम गनि लीनी नहीं हिंगलाज की रा-
ह॥ २११॥ सहे कसाला निति करे आला आला पाप॥ नीह
ताप्यो पाला परत ज्वाला जलकी नाप॥ २१२॥ भयो न रवी
न व्रतादि करि नियमित बस्तु भषीन॥ सुखी दुखी दिन
कटि गये ज्वाला मुखी लखीन॥ २१३॥ आलस बस बैठ्यो
दिन गे सोवत खात॥ मानी मात पितादि की गौन जो
को जात॥ २१५॥ विधि निमित चिंता कथन॥
॥जरा कर सुख घर दुःख हर सुर नर असुर समान॥
चतुमुख चतुमुख धर्यो न निशि दिन ध्यान॥ २१६॥
कि ताही करि वृथा बिता दिये दिन रैन॥ मान्य पिता
के भजे पिता मह मैन॥ २१७॥ बिछुरत प्रिय सुत
सें निज तनहो तजि दीन॥ से घर हू तजि विरति धरि
रीति सी रखीन॥ २१८॥ राम दरश की लालसा पतिस
रामन करयोन॥ कौसल्या लों सें निपुर प्रभु पद प्रेम ध-
॥ २१९॥ सुर पति सम ऐश्वर्य तजि करी राम पद प्रीति

मौन पट धरि धन धाम तजि चलत भयो प्रभु लार ॥ लखन तीन मैं लखन रीत लखी न स्वम मकार ॥ १२० ॥ त्रिभुवन पति निज भुवन करि पाल्यो जिन उर लाय ॥ पस्यो न ज्ञान मति मंद मैं नंद जसोदा पाय ॥ १२१ ॥ हनुमान निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥ धन हित घोर घोर दीनता जाचे धनिक अमान ॥ सीतापति को बोहरो नहि जाच्यो हनुमान ॥ १२२ ॥ फिस्यो दोहरे द्वार बहु देखसी हरे यान ॥ विदित बोहरो राम को नहि जाच्यो हनुमान ॥ १२३ ॥ पुष्करादि निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥ पुष्कर कर नन मैं रह्यो कस्यो न पुष्कर पान ॥ प्रफुलित पुष्कर छबि लखत बस्यो न पुष्कर थान ॥ १२४ ॥ मकर भानु दिन मात हो करन पाप गन छीन ॥ जाय सितासित नीर मैं चुबकी नित्य न लीन ॥ १२५ ॥ मकरा लय लगि मकर गति फिस्यो मकर निधि राग ॥ त्यागि मकर मकरी जनन रतसो न मकर प्रयाग ॥ १२६ ॥ मकरन भयो न लीन लखि कर न सक्यो बड याग ॥ दिये न करन कथान मैं मकर न कस्यो प्रयाग ॥ १२७ ॥ अक्षय पाप न क्षय अरस जोरि जुग हाथ ॥ रस रस कोहि नहि भरी अक्षय बट के साथ ॥ १२८ ॥ हरि गुन सुमरन श्राद्ध करि पितु सों उरिण भयो न ॥ अब अब करतहि दिन गया सब तीज गया बोल ॥ १२९ ॥ सतसंग लतन कन कस्यो कस्यो कनक हेत ॥ फिस्यो न धीर सुनि बन कनहि धस्यो कनक कुरु खेत ॥ १३० ॥ भयो मन अनुराग मैं धन सुत दारा गेह ॥

भानु ग्रहन कुरु खेत नाहि भयो सहित सनेह ॥२३१॥ सुनि सुनि
तहुन तारयित पुनि पुनि करि जल पान ॥ हर हर सुमरत नाहि
कस्यो हरद्वार अस्नान ॥२३२॥ कोटिन नर नारी गये गये संतम
ति धाम ॥ तब हू मेला कुंभ पर गयो न तजि घर काम ॥२३३॥ ध-
स्यो बिष्णु पद भीति हित उड्यो विष्णुपद माहि ॥ पूजि विष्णुपद
प्रेम सों लियो बिष्णु पद नाहि ॥२३४॥ रवा बदील वज्र रूपने
धायो धरि वज्र रूप ॥ भ्रम्यो भूलि बज्र रूप मे नहि सुमरे [illegible] नी
रूप ॥२३५॥ नाना अगहन गहन करि असहन सहन [illegible] बज्र-
सहे गहन दुख जनन के बस्यो गहन बन नाहि ॥ [illegible] सराहि ॥
तरुनीन मे पागयो त्यागयो नाम ॥ वैतरनी तरनी [illegible] ॥२३६॥ वैतरुनी
दाम ॥२३७॥ केश कांश रद रद भये काय कर [illegible] नली तरनी चंदन
लगाव का तउ मन काम न त्याग ॥२३८॥ [illegible] सी लाग ॥ हग भेवरी
रत मस्त चहुं ओर ॥ भीम भक्ष्य क्यों धरि ली रन की गर्दरी फि
[illegible]३९॥ दया सदन जन दुख क[illegible]ब लूटि हैं काक कंक कर मोर
[illegible]लाव अघ ग्रसित को करै [illegible]न त्रिभुवन के रखवार ॥ अब
डीत चिंता [illegible] भवारीव पार ॥२४०॥
[illegible] तन सम्पूर्णम शुभम

मदन दहन गुन गहन हर, जन पालक खल हार ॥
दुख दारिद हर दीन के, करो मोर उद्धार ॥ २० ॥

देवीस्तुति दोहा

वीणा पुस्तक धारिनी । हंस बाहिनी माय ॥
विनय करौं कर जोरि कै । शारद होऊ सहाय ॥ २१ ॥
जग जननी जग ईश्वरी । जग की रक्षा कार ॥
सब देवन की मात तुम । मेरी करो सम्हार ॥ २२ ॥
दुःख हरनि सुख की करनि बुद्धि दायनी माय ॥
लोभ ईरषा देत दुख, इनसें मोहि बचाय ॥ २३ ॥
सब गुण की तुम खानि हो हो सब की हितकार ॥
मति दायनि मति देन में क्यों हारी मो बार ॥ २४ ॥
शुंभ निशुंभ बिनाशिनी जग पालनि जग माय ॥
मैं हौं निर्बल अति दुखित मेरी करो सहाय ॥ २५ ॥
चंड मुंड की मारनी, महिषा सुर बध कार ॥
देवन की प्रति पालनी, गिरिजा करो सम्हार ॥ २६ ॥
मुनि किन्नर सुर नाग नर सिद्ध पितर रख वारि ॥
मात चराचर पालनी, बार न करि मो बारि ॥ २७ ॥
उतपति कर प्रति पालनी करनी सुख संसार ॥
चंद्रकला बिनती करै अब है मेरी बार ॥ २८ ॥
गणपति जननी दुख दलनि अघ हरनी सुख दानि ।
भवसागर में बहत हौं पकरो मेरो पानि ॥ २९ ॥
काम लोभ मद देत दुख इनसें मोहि निकारि ॥
जन पाली काली तुही, है मेरी रख वारि ॥ ३० ॥
शीघ्र असुर संहारि सब सुर दुख दीनें टारि ॥
विनय करत हिमकर कला त्यौं अब मोहि उबारि ॥ ३१ ॥

दीनन को अति पालनी सुनिये करुणा लाय ॥
जगदंबा माहेश्वरी सिंह वाहिनी माय ॥२२॥
दनुज दलनि जगदंबिका शंकर प्रिया भवानि ॥
महिषासुर मद मारनी कृपा करो जन जानि ॥२३॥

सीता स्तुति ॥ दोहा ॥

शशि सो मुख भृकुटी धनुष लसत कुंद से दंत ॥
जलज नयन शुक नासिका अधर अरुण बिंब लसंत ॥२४॥
वर कपोल कर पद कमल श्रीफल कुच वर श्याम ॥
कनक लता तनु छबि भरी रामचंद्र की बाम ॥२५॥
रचना पाल प्रलैन की करनी राघव नारि ॥
सुख भरनी दारिद दरनि मेरी ओर निहारि ॥२६॥
दश शिर रावन बीस भुज पुर बसि छाया रूप ॥
सकुल सदल नास्यो असुर हरो सु मो भव कूप ॥२७॥
रावन राक्षस सहस शिर पुष्कर द्वीप निवासि ॥
सो मास्यो पल एक में पूरन कला प्रकासि ॥२८॥
जनक सुता जन तारनी जग जननी जग पाल ॥
राम प्रिया अघ हारनी टारो कुमति कराल ॥२९॥

राधा स्तुति ॥ दोहा ॥

भाल विपुल शशि सो बदन रदन कुंद कलिकाहि ।
अधर बिंब शुक नासिका केश श्याम मृदु आहि ॥३०॥
खंजन से दृग पानि पद पलज जलज छबि धाम ॥
भौंह मदन धनु बील कुच राधा कंचन दाम ॥३१॥
कीरति सुता सु लोचनी अति रोचनि मति धाम ॥
रति रम्भा मद मोचनी हरो विघ्न हरि बाम ॥३२॥
जग जननी वृषभानु जा निज पुर की रखवारि ॥

डूबत हौं भवसिंधु मैं मात मोहि उद्धारि ॥ ३३ ॥

गंगा स्तुति दोहा ॥

कुंद इंदु सो गोर रँग अर्ध चंद्र सो भाल ॥ २८ ॥
मकरा सन थित हिमसुता टारो कलुस कराल ॥ ३४ ॥
कंज अभय बर कलस कर शोभि सो सुख सम देह ॥
सेत वसन करुणायतन करो सु मोपर नेह ॥ ३५ ॥
शुभ करनी दुख दल दलनि दीन दोष रिकवारि ॥
चंद्रकला शिर धारनी चंद्रकला कौं तारि ॥ ३६ ॥
जो तो मैं मज्जन करै ताको अंगा पाय ॥ २८ ॥
अर्धंगा गंगा करै क्यौं दे बिश अन्ववाय ॥ ३७ ॥
मैं तुव दासी दुख भरी है सुछि दया न माय ॥
शंकर सीस निवासिनी सुछि तुव तीर बसाय ॥ ३८

जमुना स्तुति दोहा ॥

सूर सुता जग पावनी अघ हरनी सुख दानि
मात चराचर पालनी जमुना मो दुख भानि ३९
समन स्व सादिन कर सुता हिमकर बदनी माय ॥
दुख हरनी करनी नरक जमुना करी सहाय ॥ ४० ॥
जम गंगा सुज्ञ मेरि लावनी जग पावनि जन पाल ॥
मन मोहन मन भावनी माता होउ मयाल ॥ ४१ ॥
हिंग लाज ज्वाला सुखी केला काली जौन ॥ २८ ॥
रक्तदंतिका आदि मम हरो पाप गनि दौन ॥ ४२ ॥

अथ विष्णु आदि चौवीस अवतारन
को स्तुति दोहा

गदा पद्म दर चक्र धर रमा रमन वागीस ॥ २८ ॥

अरि गंजन भंजन खलन जन रंजन जगदीस ॥ ९३॥
करन छीर सागर सयन तउ व्यापक सब ठौर ॥
विष्णु चराचर नाथ सो बसो सदा मन मोर ॥ ९४॥

राम स्तुति दोहा

रघुवर मेरे स्वामि हो मैं चरनन को चेरि ॥
दीन दया करि दीठि दे हरो दीनता मोरि ॥ ९५॥
राम तुम्हारे पद कमल मम उर करो निवास ॥
मो मन प्रभु पद कमल में करे मधुपकै वास ॥ ९६॥
बालि बिराध कबंध खग कुंभकरन घननाद ॥
तारे दस सीसादि सो मोपर करो प्रसाद ॥ ९७॥
डूबत हौं भव सिंधु में प्रभु पकरो मो हाथ ॥ ॥
तुम अनाथ के नाथ हो मैं अनाथ हौं नाथ ॥ ९८॥
निर्धन के धन दुख दरन असरन सरन उदार ॥ ॥
भव सागर में भ्रमत हौं करो करो मो पार ॥ ९९॥
आसा तृष्णा मोह मद लोभ ईरषा काम ॥ ॥
देत महा दुख दोष बिन इनहि निवारो राम ॥ ५०॥
वार न पकर्यो ग्राह नैं तब झट करी सम्हार ॥
वार करी किहिं कारने चंदकला की बार ॥ ५१॥
राक्षस बानर भाल खग प्रभु कीने भव पार ॥
करो न घिनि करुणा सदन हौं इनतें न उतार ॥ ५२॥
गनिका सबरी मुनि तिया तारी तात कहाल ॥
चंदकला अबला खला रहो लला कलिकाल ॥ ५३॥
मैं अघ युत अघ हरन तुम दीन बंधु मैं दीन ॥
मैं दुख धर दुख हरन तुम तउ बिलंब क्यों कीन ५४
प्रभु सुग्रीव बिभीषनहि करे रंक सैं राज ॥ ॥

अब अबला को तारि अघ करो अलघ रघुराज ॥५५॥
विनय करौं कर जोरि के नवौं धरनि धरि शीश ॥
मैं अति पापिनि दीन हौं कृपा करौ जगदीश ॥५६॥

कृष्ण स्तुति दोहा ॥

बंसी लकरी कर्न में गल फूलन की माल ॥१॥
मोर मुकुट पट पीत धर मोहन श्रीब्रजलाल ॥५७॥
शकट अघासुर पूतना वकखर असुर संहारि ॥
राखे गोपी गोप प्रभु त्यों मुहि राखो मुरारि ॥५८॥
नाथ्यो कालिय नाग हरि नृत्य करयो शिर तास ॥
पुनि टारयो तिहिं गरुड़ भय त्यों टारो मम त्रास ॥५९॥
देखि नाग कौं अति दुखी विनय करी अहिवाल ॥
हरयो तासु भय त्यों हरो मोर महा अघ जाल ॥६०॥
टारयो सुरपति को गरब छिगुनी नख गिरि धारि ॥
वसत सुखो उर घर सदन मोरे याहि मुरारि ॥६१॥
विप्र सुदामा को हरयो दारिद इक छिन मांहि ॥
तैसे मेरो मोह मद नाथ हरो क्यों नांहि ॥६२॥
शिवा सदन सें रुक्मिनी हरि लाये ब्रजराज ॥
तैसें मोरि दुरास कौं हरो न हरि किहिं काज ॥६३॥
द्रुपद सुता के बसन कौं हरता राखी लाज ॥
त्यों त्रिभुवन पति अघ हरन करो किंकरी काज ६४
गोपिन सें दधि दान हठि लियो नंद के लाल ॥
चंदकला कौं देहु अब भक्ति दान खल काल ॥६५॥
सबला गोपिन कौं सधी अबला नवला चाह ॥
चंदकला अबला लला रही निहारत राह ॥६६॥
कुबरी दासी कंस की पावन कीनी आप ॥१॥

मैं दासी प्रभु चरन की क्यौं न हरो मो पाप ॥ ६७॥
शंख वेद हरि ले गयो प्रलय मांक तिहिं मारि ॥
वेद लाय विधि कौं दिये मीन सु मोहि उधारि॥ ६८॥
बोन वामन बलि सदन मैं जाय दान लै धीर ॥
टारी सुरपति की बिपति त्यौं टारो मो पीर ॥ ६९॥
अग्नि तोय विष शैल की बिपदा टार खरारि॥
रक्षा की प्रह्लाद की त्यौं अब मोहि उबारि ॥ ७०॥
बालक ह्वो प्रह्लाद तब रटतो राम सराहि ॥ ॐ ॥
पिता कही तू क्यौं रटै मेरो बैरी नाहि ॥ ७१ ॥
नहिं मान्यो प्रल्हाद तब मन मैं मानि कुबात ॥
थंभ बाँधि अभिमान जुत असि धरि बोल्यो तात ७२
बता कहाँ हैं राम अब सुनि बोल्यो प्रल्हाद ॥
तो मो मैं असि थंभ में हैं सब ठौ निर्वाद ॥ ७३॥
पितु सुनि सुत के बचन कौ मारन लाग्यो कोपि॥
थंभ फारि नरहरि प्रगट हन्यौं असुर मद लोपि॥ ७४
कमठ होय धरि धरिणि धर कर्यो सुरन को काम॥
हन्यो असुर दल त्यौं हरो मोरि कुमति मति धाम ७५
हिरन्याक्ष हनि घृष्टि बनि लाये धरनी सोय ॥
चंदकला के अघ हरो नाथ दया द्रव होय॥ ७६॥
परशु धारि इकईस वर क्षत्रिय गन संहारि ॥
विप्रन कौं धरनी दई राम सु मोहि उबारि ॥ ७७॥
हलधर होकरि मुष्टिसें मार्यो तुरत प्रलंब ॥
चंदकला के दुखन कौं हरतो करो विलंब ॥ ७८॥
बुद्ध होय के मखन की निंदा करि हरि ताप ॥
जीवन की रक्षा करो सो मेटो मम पाप ॥ ७९ ॥

के कल्की अवतार हरि हरि हो म्लेछ अपार ॥२॥
कोर हो जग रक्षा सु अब करो कृपा कर्तार ॥८०॥
वेद शास्त्र मथि व्यास है दिये पुराण बनाय ॥२॥
राख्यो बरणाश्रम धरम सो मम करो सहाय ॥८१॥
नर नारायण कपिल अरु नारद सनत कुमार ॥२॥
दत्तात्रेय रु मोहिनी करो भवार्णो पार ॥ ८२ ॥
धन्वंतरि हरि ध्रुव ऋषभ हंस यज्ञ अवतार ॥
विष्णु रूप चौबीस मिलि करो मोहि भव पार ॥८३॥

जम स्तुति दोहा ॥

नील कमल सम श्याम तनु राजत अंबर पीत ॥
श्याम वरण शिर पर मुकुट कुंडल श्रवण पुनीत ८४
हार भार उर में लसत अंगद भुज में भ्राज ॥ २ ॥
काल मृत्यु के नाथ मम हरो पाप जमराज ॥८५॥
सूरज सुत भ्राता जमुन दीनन के प्रतिपाल ॥ २ ॥
कुटिल किंकरी कुमति पर करुना करो कृपाल ॥८६॥

भैरव स्तुति दोहा

गोर रंग मुख कमल सो सोहत लाल लंगोट ॥
चंद कला शिर धर हरो चंदकला की खोट ॥८७॥
उर भुज भाल विशाल बपु शिर पर चिक्कन वार ॥
कर त्रिशूल खप्पर धरे हरो सु भव भय भार ॥८८॥
श्याम वरण अति अरुण हग भाल चंद सिंदूर
खुले केश नख शिख सुभग करो सो मो दुख दूर ॥८९॥
भीम रूप खल खल गनन कौं सुजनन कौं सुख रूप ॥
चंद कला के दुख हरो सो भैरव भव भूप ॥ ९० ॥
शंभु उमा के अति हितू कासी के कुतवाल ॥

अति समर्थ भव दुख हरन भैरव हरो कुकाल ॥ ९१॥
श्याम गौर तनु अमल मन काम रूप सुखकार ॥
दुख दारिद खल हर करो समजोरी उद्धार ॥ ९२॥

हनूमान स्तुति ॥ दोहा ॥

जलधि लाँघि सिय सोधि ले आयो लंक जराय ॥
चूड़ामनि रामहि दई निरभि मान शिरनाय ॥ ९३॥
लक्ष्मन तनु बरछी लगी गये राम घबराय ॥
तब लाकरि संजीवनी तुरतहि लिये बचाय ॥ ९४॥
राम लखन हरि ले गयो अहिरावन पातार ॥
ताकों हनि लायो तऊ अति नहि रह्यो उदार ॥ ९५॥
रावन हनि निज पुर अविसि पाय राज कोहि राम ॥
मैं तेरो रिनिया सदा रहि हौं कपि बल धाम ॥ ९६॥
राम चन्द्र के फेरि हू कारज सारे दौरि ॥
सो हनुमत अंजनि तनय बिपदा टारो मोरि ॥ ९७॥
तुलसी चन्दन कल्प तरु बील आमलक सोय ॥
पीपल बट केलादि तरु मोर सहायक होय ॥ ९८॥
हरद्वार पुष्कर गया सेतु बंधु जग दीश ॥
बदरीनाथ प्रयाग सब हरो पाप मम ईश ॥ ९९॥
चित्र कूट हिम वान गिरि हेम कूट गिरि राज ॥
द्रोण प्रवर्षण आदि गिरि मोर सुधारइ काज २००
कासी अवध अबंतिका मथुरा माया सात ॥
द्वारावति काँची पुरी करो मोर अघ घात ॥ २०१॥
नृपति मुकुट मणि राम की नगरी बुंदी माँहि ॥
यह वय चौदह बर्ष मे रचना कीन्ही आहि ॥ २०२॥
श्री गुलाब कबि राज ने मुहि अभ्यास ॥

कर लायो बालक हिये हिरदयना फल तास ॥२०३॥
सम्वत सर उनईस मे पैंतालीस दिनेस ॥
मार्ग कृष्ण पक्ष अष्टमी कीनों शतक अशेस॥२०४॥
इति श्री महाराव गुलाबसिंह नां किंकरी चंद्रकला जी कृत करुणा शत
क सम्पूर्णम ॥ सं० १९५३ वि० में प्रकाश हुआ ॥

करुणा शतकका शुद्धा शुद्ध पत्र

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१	२१	शोप	शीष
२	२२	जरासाय	जरा साय
२	१८	कर	करि
२	२५	यों अब	त्यों अब
५	५	शीश सो	शीश सो
६	२	शोप	शीष
६	८	राखो	राखे
६	२३	गोपिन को	गोपिन की
८	६	भवार्ग	भवार्णव
८	१०	अवर	अम्बर
८	१८	हरी	हरो
८	२२	करो सो	करो सु

इति

(ह० द० बारीलाल कापी नवीस फतेहगढ़)

वनिताभूषण

(अर्थात्)

क्रम सें नायिका अलंकारन के सकल लक्षण
उदाहरनन को संस्कृत अनेक ग्रंथ मतानुसार अर्थात् ॥
युत चक्र धारा वंश अवतंस हर ॥ बुंदी पति रघुबीर की
बुन्दीन्द्र महाराजा धिराज र में उद्यम कयो गुलाब
जी श्री श्री श्री श्री ॥ आश्विन नवमी शुक्ल
ग्रंथ नियम ॥ दोहा ॥
सिंह जी के वर्णो इक ठाम ॥ याही तें याको धयो
श्री गुलाब यका जाति ॥ दोहा ॥ जाति
नारि ॥ बहुरि हस्तनी उत्तमतु प्र
साधारण नायिका स्वकी
जगत प्रकाश दोहा ॥ उपजत रतिथाई निरखि-
पी के प्रेम में पगी स्वकीया जानि ॥ ८
पंडित जी श्री भेद होय ॥ खंडितादि जे भेद ते सा
जी के अर्थ अलंकार लक्षण ॥ दोहा ॥ स
र्थ के माहिं ॥ चमत्कार भूषन सोरस भू
(ह० दरबारी य अलंकाराण कथन दोहा
रीत रूपादि उपमान ॥ समानार्थ वाच
न ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ है उपमेय विषय

अरु दरायें ॥ उपमानतु विषयी रु अवरायें ॥ प्रासंगिक कहँ प्रस्तु त जानि ॥ अप्रसंग अ प्रस्तुत मानि ॥ २२ ॥ भेदय विशेष्य विशेषण भेद रु ॥ वृह व्यापक सामान्य अखेद्क ॥ २३ ॥ अल्प व्यापक आदि विशेष ॥ भूषन भासक नाम अशेष ॥ २३ ॥ अथ पूर्णोपमा लुप्तोपमा लक्षण ॥ दोहा ॥ सुपूर्णोपमा वाचक रु बिषय धर्म उपमान ॥ इक द्वय के लोप सें लुप्तोपम परिमान ॥ २४ ॥ टीका ॥ वाचक उपमेय धर्म और उपमान ये च्यारों होय सो पूर्णोपमा अलंकार है ॥ एक के दोय के तीन के लोप सें लुप्तोपमा को प्रमाण है ॥ २४ ॥ अथ साधारण नायिका पूर्णोपमा उदाहरण ॥

दोहा ॥ शशि सो उज्वल मुख सुभग अर्ध चंद सो भाल ॥ कनक लता सी छबि भरी बिहरत देखी बाल ॥ २५ ॥ टीका ॥ शशि सो उजलो मुख है ॥ आधा चंद्रमा सो सुन्दर भाल है ॥ सोना की बेलि सी छवि भरी जहँ नायिका डोलती देखी ॥ यहाँ शशि उपमान सो वाचक उज्वल धर्म मुख उपमेय है १ और अर्ध चंद उपमान सो वाचक और उपमेय सुभग धर्म है २ और कनक लता उपमान सी वाचक छबि भरी धर्म बाल उपमेय है ३ यातें पूर्णोपमा अलंकार है ॥ २५ ॥ वाचक लुप्ता १ धर्म लुप्ता २ धर्म वाचक लुप्ता ३ वाचकोपमेय लुप्ता ४ उपमान लुप्ता ५ वाचकोपमान लुप्ता ६ धर्मोपमान लुप्ता ७ धर्मोपमान वाचक लुप्ता ८ ये लुप्ता के आठ भेद हैं ॥ अथ स्वकीया आठों लुप्ता उदाहरन ॥ दोहा ॥ कर किसलय मृदु १ कंज से पाय २ नैन मृग नैन ३ ॥ भी छबि ४ कटि हरि सिंह सी ५ पिक मधुरे सिय बैन ॥ २६ ॥

टीका ॥ कर हैं सो नवीन पान से कोमल हैं याके मूल में से वाचक नहीं यातें वाचक लुप्ता है १ ॥ कंज से पाय हैं यामें धर्म लुप्ता है ॥ २ ॥ नायका के नैन मृग नैन से हैं याके मूल में धर्म वाचक नहीं यातें धर्म वाचक लुप्ता है ३ भी लक्ष्मी कीसी छबि है याके मूल में वाचक

उपमेय नहीं यातें धर्म वाचकोपमेय लुप्ता है ४ कटि सिंह सी पत-
ली है इहां सिंह की कटि नहीं कही यातें उपमान लुप्ता है ५ ॥ तिय
के बैन कोयल सें मीठे हैं याके मूल में पिकवानी उपमान और से
वाचक नहीं यातें वाचकोपमान लुप्ता ६ है ॥ २६ ॥ बरवै ॥ गि-
रिजा दृग मृग सम है गति गज राज ॥ सोधम लुप्ता आठ हि यों
कविराज ॥ २७ ॥ टीका ॥ पार्वती के नेत्र हरिन के समान हैं । यामें
मृग के दृग उपमान नहीं और धर्म नहीं यातें धर्मोपमान लुप्ता है
७ ॥ गति गजराज यामें नायिका की गति उपमेय तो है धर्म उपमान
वाचक नहीं यातें धर्मोपमान वाचक लुप्ता है ८ जानकी पार्वती-
स्वकीया नायिका हैं ॥ २७ ॥ अथ मुग्धा अनन्वय लक्षण ॥
दोहा ॥ जिहिं तनु जोवन अंकुरित मुग्धा तिय है सोय ॥ ताकी
उपमा जाहि सौं लगें अनन्वय होय ॥ २८ ॥ अथ मुग्धा अन-
न्वय ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ मुख सो मुख दृग से दृगहि कच से
कच दरसाहिं ॥ अल्प उरोज उरोज से जनक सुता के आंहि ॥ २९ ॥
टीका ॥ मुख सो मुख ही है दृग से दृग ही हैं कच से कच ही दी-
खे हैं जनक सुता के छोटे कुच से कुच ही हैं यहां छोटे कुच सें मु-
ग्धा है और मुख दृग कुच उरोजन कौ उनहीं की उपमा लगी यातें
अनन्वय है ॥ २९ ॥ अथ अज्ञात योवना उपमेयोपमा ल-
क्षण ॥ दोहा ॥ नहिं जानै निज योवनहि है अज्ञात सु जोय ॥
उपमा उपमेयोपमा लगें परस्पर होय ॥ ३० ॥ टीका ॥ जोवन कौं
नहिं जाने सो अज्ञात योवना यिका है ॥ परस्पर उपमा लगे सो उप-
मेयोपमा अलंकार होय है ३० ॥ अथ अज्ञात योवनोपमेयो-
पमा उदाहरन दो० ॥ सर कावत गुडि़याँ नवे लसत अमित छबि खा-
नि ॥ जलज पानि से जलज से जनक लली के पानि ॥ ३१ ॥ टीका ॥
गुडि़यां सर कावे है नव जनक लली के हाथ से जलज लसे है । सो

र जलज से हाथ लसें हैं। यहाँ मुदियाँ खोलि वासों अज्ञातयौ वना नायिका है॥ और जलजन की उपमा हाथन कों लगी हाथन की उपमा जलजन कों लगी यातें उपमेयोपमा अलंकार है ॥२१॥ अथ ज्ञात यौवना प्रतीप लक्षण॥ दोहा॥ जानें जोवन आप ही ज्ञात यौवन जान॥ भाषत प्रथम प्रतीप जहँ होय वर्ण्य उपमान॥२२॥ टीका॥ अपना जोवन कों आप ही जानें सो ज्ञात यौवना नायिका है हे जान॥ जहाँ उपमेय उपमान होय तहाँ प्रथम प्रतीप भाषत हैं प्रतीप नाम उलटा को है ॥२२॥ अथ ज्ञात यौवना प्रथम प्रतीप उदाहरन॥ दोहा॥ निरखत छाती छाँह जब दौरत दीठि दुराय॥ कीरति जा सी यौ जुरी तब ही जानी जाय॥२३॥ टीका॥ जब छाती छाँह देखती भई सखीन की दीठि बचायकरि के दौड़े है तब ही कीरति जा सीबी जुरी जानी जाय है॥ यहाँ छाती छाँह देखि वासों ज्ञात यौवना नायिका है कीरति जा सीबी जुरी मैं उपमेय उपमान भयो यह उलटो है यातें प्रथम प्रतीप है ॥२३॥ अथ नवोढ़ा द्वितीय प्रतीप लक्षण॥ दोहा॥ लज्जा भय बस रति न चह नारि नवोढ़ा मान॥ द्वितीय वर्ण्य उपमान ह्वै होय वर्ण्य अपमान॥ टी॰॥ लाज और डर के वससैं रति नहीं चाहे सो नवोढ़ा नायका के मेय है सो उपमान हो जाय और उपमेय को अनादर होय सो दूसरो प्रतीप है॥२४॥ अथ नवोढ़ा द्वितीय प्रतीप उदाहरण॥ दोहा॥ पिय कर तें छुटि भजत जब यों सजनी जु लसात॥ देखो तड़त दामिनी घन मैं चपल लखात॥ २५॥ टीका॥ पीतम का हाथ में सों छुटि करि के जब नायिका भाजे है तब सखी यों हरखावें हैं॥ देखो नायिका की समान

मेघ में बीजुरी चंचल दीखे है यहां नायक का पास सें नायिका भाजे है यातें नवोढ़ा है नायिका सी बीजुरी है यामें उपमेय उपमान भयो नायिका की अनादर भयो यातें दूसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ विश्रब्ध नवोढ़ा तृतीय प्रतीप लक्षण ॥ दोहा ॥ सो विश्रब्ध नवोढ़ है विश्वा सें कछु पीय ॥ बरायें बरायें रहि अबरायें हि अनादरे सु तृतीय ॥२६॥ टीका ॥ पीतम को कछु विश्वास करै सो विश्रब्ध नवोढ़ा नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमेय रहकरि के उपमान को अनादर करै सो तीसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ विश्रब्ध नवोढ़ा तृतीय प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥ केलि भवन कों भामिनी भीति भरी सी जाय ॥ दामिनि मन को दुति दरपति हि विरियाँ न रहाय ॥२७॥ टीका ॥ क्रीड़ा का भवन कों भामिनी है सो उर में भरी सी जाय है ॥ ता समय बीजुरी का मन को दुति को गर्व नहीं रहै ॥ यहां नायिका केलि भवन कों डरपती सी जाय है यातें विश्रब्ध नवोढ़ा नायिका है ॥ और नायिका उपमेय सें बीजली उपमान ने अनादर पायो यातें तीसरो प्रतीप है यह द्वितीय भेद सें उलटो है ॥२५॥ अथ मतांतरेण मुग्धा भेद ॥ चौपाई ॥ बयसंधि १ नव बधू २ प्रसंगा ॥ नव जोवन पुनि नवल अनंगा ४ ॥ रति बाम ५ मृदु माना ६ जानौं ॥ लज्जा प्राया सात बखानौं ॥२८॥ अथ वयःसंधि चतुर्थ प्रतीप लक्षण ॥ दोहा ॥ बयसंधि शिशुता झलक झलके जब तन तीय ॥ चवथ बरायें उपमान ह्वै अबरायें सम न नीय ॥२९॥ टीका ॥ जब तिय का तन में बालकपना की झलक झलके सो बयसंधि नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमान हो जाय उपमेय की समान उपमान नहीं गन्यों जाय सो चवथो प्रतीप है ॥२९॥ अथ बयसंधि चतुर्थ प्रतीप उदाहरन ॥ दो० ॥ सजि सिंगार जब तिय चलत मंद मंद गति त्यागि ॥ तब तब ससी

कुंज गति समता पावत नाहिं ॥३०॥ टीका ॥ जब तिय है सो सिंग[ार]
करिकै मंद तेज गति सो चलै है तब गज हाथी और हिरण की
गति समता नहीं पावै है इहां मंद तेज गति सें चलै है यातें वय-
संधि नायिका है और मंद तेज गति उपमेय है सो उपमान भयो
करी कुरंग की गति समता लायक नहीं यातें चवथो प्रतीप है ।३०
अथ नवल वधू पंचम प्रतीप लक्षण दोहा ॥ दिन दिन
छबी छवि बढ़ै नवल वधू अनुमान ॥ उपमेयतु उपमान के व्यर्थ हो
य उपमान ॥३१॥ टीका ॥ दिन दिन प्रति छबी सोभा बढ़ै यह नव-
ल बधू को अनुमान है उपमेय है सो उपमान हो जाय फेरि उपमान
व्यर्थ हो जावै सो पंचम प्रतीप है ॥३१॥ अथ नवल बधू पं-
चम प्रतीप उदाहरण ॥ दोहा ॥ दोयज के शशि लौं कला नि-
शि वासर सरसात ॥ जनक सुता तनु निरख तौं कनक लता दबि जा-
त ॥३२॥ टीका ॥ दोज का चंद्रमा की समान कला राति दिन सर
सावै है । जनक सुता का शरीर कौं देखतां कनक की लता दबि जा
वै है । यहां कला सरसावा सौं नवल बधू नायिका है और जनक
सुता उपमेय है सो उपमान भई ताके आगे कनक लता व्यर्थ भई या
तें पंचम प्रतीप है ॥३२॥ अथ रूपक लक्षण ॥ दोहा ॥
विषयी रंजै बिषय कौं है तद्रूप अभेद ॥ अधिक न्यून सम छहुन
करि पद रूपक है भेद ॥३३॥ टीका ॥ उपमान है सो उपमेय
कों रंजै तद्रूप और अभेद होकरि कै ॥ एक उपमान उपमेय मैं मि
ल्यो रहै एक उपमान न्यारो रहै सो तद्रूप ॥ उपमान उपमेय मैं भे
द नहीं रहै सो अभेद ॥ इन दोनू न के अधिक न्यून समता करिकै
छः भेद होने हैं ॥३३॥ अथ नव यौवना अधिक तद्रूप
लक्षण ॥ दोहा ॥ सो मुग्धा नव यौवना जोवन झलक लखाय
मु है अधिक तद्रूप जहं उपमेय हि अधिकाय ॥३४॥ टीका

जाके जोवन की झलक लखावे सो मुग्धा नव योवना नायिका है जहां उपमेय की अधिकता होय सो अधिक तद्रूप है ३४॥ अथ नव योवना अधिक तद्रूप उदाहरन ॥ दोहा ॥ सरसे चन्द्र प्रकास तें जोवन झलक प्रकाश ॥ सिय मुख शशि शशि ते सरस निश दिन करत प्रकाश ॥ ३५॥ टीका ॥ चंद्रमा का उजाला सें जोवन की झलक को प्रकाश अधिक है॥ सीता कोमुख चंद्रमा है सो चंद्रमासें अधिक है राति दिन उजालो करे है इहां तो जोवन का प्रकास सें नव योवना नायिका है और सीता का मुख चंद्रमा उपमेयसें राति दिन प्रकाश करवो अधिकता है यातें अधिक तद्रूप है ॥ ३५॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप लक्षण ॥ दोहा ॥ नवल अनंगा काम रुचि भोलापन में जानि ॥ होय न्यून तद्रूप जब उपमेयहि कम आनि ॥ ३६॥ टीका ॥ भोला पन सें काम की रुचि होवे सो नवल अनंगा नायिका जानो ॥ जब उपमेय कों कम ठानें तब न्यून तद्रूप होय है ॥ ३६॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनि रति की पिय विनय तिय नैन मूंदि मुसकाय ॥ तब झष की चप झषन में चंचलता न रहाय ॥ ३७॥ टीका ॥ तिय है सो पिय की रति की विनय सुनि करि के नैन मूंदि मुसकावे तब झष की सी चप झषन सें चंचला नहीं रहे यहां नैन मूंदि मुसकावा सें नवल अनंगा नायिका है और झषन की सी चंचलता चप झषन में नहीं यातें न्यून तद्रूप है ॥ ३७॥ अथ रति वामा सम तद्रूप लक्षण ॥ दोहा ॥ रति वामा वामा सुतौ सुरत अरुचि पहिचानि ॥ सम तद्रूप दुहून में समता भयें बखानि ॥ ३८॥ टीका ॥ रति वामा है सो तो सुरत में अरुचि पहिचानों ॥ दोनून में समता भया पे सम तद्रूप बखानों ॥ ३८॥ अथ रति वामा सम तद्रूप उदाहरण ॥ दोहा ॥ मौन धारि पिय पास

स जब बैठे दृग शिर नाय ॥ तब राधा रति अति लसत मानवती रति माय ॥ ३९ ॥ टीका ॥ जब मौंन धारि करि के पिय के पास दृग शिर नवाय करि के बैठे तब राधा रति है सो अत्यंत लसे है मानवती रति की समान ॥ यहाँ मौंन धारि शिर नवाय बैठि बासौं रति वासा नायिका है और राधा रतिमें मानवती रतिमें समता है यातें सम तद्रूप है ॥ ३९ ॥ अथ मृदु माना अधिक अभेद लक्षण ॥ दोहा ॥ मृदु माना जो मान के अवसर मृदुल रहात ॥ अधिक होय उपमेय तब अधिक अभेद कहात ॥ ४० ॥ टीका ॥ मान का अवसर में मृदुल रहावे सो मृदु माना नायिका है उपमेय अधिक होय तब अधिक अभेद कहावे है ॥ ४० ॥ अथ मृदु माना अधिक अभेद उदाहरण ॥ दोहा ॥ साप राध लखि पिय प्रथम मुसकानी रिस टारि ॥ हास्य जोन्ह तब सदन में आत रही विस्तारि ॥ ४१ ॥ टीका ॥ पीतम को पहिले सापराध देखि करि के रोस को टारि करि के हँसी तब हास्य रूपी चाँदनी सदन में सबेरे ही बिस्तारि रही यहाँ रोस टारि मुसकावा सौं मृदु माना नायिका है और हास्य में चाँदणी में भेद नहीं यह तो अभेद सबेरे विस्तारि रही यह अधिकता है यातें अधिक अभेद रूपक है ॥ ४१ ॥ अथ लज्जा प्राया न्यून अभेद लक्षण ॥ दोहा ॥ लज्जा जुत सुरतहि करै सो है लज्जा प्राय ॥ न्यून होय उपमेय तब न्यून अभेद कहाय ॥ ४२ ॥ टीका ॥ लाज सहित सुरत करे सो लज्जा प्राया नायिका है जब उपमेय न्यून होय तब न्यून अभेद कहावे है ॥ ४२ ॥ अथ लज्जा प्राया न्यून अभेद उदाहरन ॥ दोहा ॥ धीर धरत गुरुजनन नट जो गत दे व रसास पिय सौं भाषत भयभरी तिय रति सोभ प्रकास ॥ ४३ ॥ १ ॥

टीका ॥ धीरज धरो गुरु जन ननद देवर सास जगे हैं पिय सों आपतौं तिय रति की भय भरी सोभ प्रकासे है इहाँ गुरु जनादिकमें लाजे है यातें लज्जा आया है तिय रति की भय भरी सोभ प्रकासबो न्यूनता है यातें न्यून अभेद रूपक है ॥ ५३ ॥ अथ मध्या सम अभेद लक्षण ॥ दोहा ॥ लाज काम सम जासु के सो है मध्या तीय ॥ उपमानरु उपमेय सम होय अभेद तृतीय ५४ ॥ टीका ॥ जाके लाज काम समान होय सो मध्या नायिका है। उपमान उपमेय समान होय सो तीसरो अभेद है ॥ ५४ ॥ अथ मध्या सम अभेद उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखि लखि पिय दृग छबि तिया जब जब दीठि दुरात ॥ तब तब पिय मन बस करनि दृग कंजन छबि छात ॥ ५५ ॥ टीका ॥ पीतम का दृगन की छबि देखि देखि करि के तिया है सो जब जब दीठि दुरावे तब तब पीतम कामन कौं बस करवा वाली दृग कंजन में छबि छावे है देखि करि के दीठि दुरावे है यातें मध्या नायिका है दृगन के और कंजन के समता है यातें सम अभेद रूपक है ॥ ५५ ॥ मध्या भेद ॥ चौपाई ॥ इक आरूढ़ यावना १ बाला ॥ प्रगल्भ बचना २ द्वितिय ललामा ॥ प्रादुर्भूत अनंगा ३ सोई चौथी सुरत बिचित्रा ४ होई ॥ ५६ ॥ अथ आरूढ़ यौवना परिणाम लक्षण ॥ दोहा ॥ सु आरूढ़ जुवना कहो पूरन जोवन वाम ॥ उपमेयरु उपमान मिलि करे क्रिया परिणाम ॥ ५७ ॥ टीका ॥ जो वाम पूरन जोवन वान होय सो आरूढ़ यौवना नायका है उपमेय उपमान मिलि करि के क्रिया करे सो परिणाम अलंकार है ॥ ५७ ॥ अथ आरूढ़ यौवना परिणाम उदाहरन ॥ दोहा ॥ कुच कुंभन तें उर परसि भुज लतिकनि गहि लेत ॥ दृग कंजन से लखि प्रिया मन रंजन करि देत ॥ ५८ ॥ टीका ॥

कुच कुंभन सैं उर कौं परसि करि कै भुज लति कान सैं गहि लेहै दृग कंजन सैं देखि कै प्रिया है सो मन कौं राजी करि दे है यहाँ कुच कुंभन सैं आरुहू ओलना नायिका है और कुच कुंभ भुज लतिका दृग कंजन सैं परसिबो गहिबो देखिबो क्रिया-को यातें परिणाम अलंकार है ॥४८॥ अथ प्रगल्भ वंचना प्रथम उल्लेख लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रगल्भ वंचना वह बचन साधि जुदे चतुराय ॥ बहु मानें बहु एक कौं सो उल्लेख गनाय ॥४९॥ टीका ॥ जो वह बचन साधि करि कै डरावै सो प्रगल्भ वंचना नायिका है एक कौं बहुत   है सो बहुत प्रकार मानै सो प्रथम उल्लेख गनावो ॥४९॥ अथ प्रगल्भ वंचना प्रथम उल्लेख उदाहरण ॥ दोहा ॥ सापराध पिय लखि तिय बचन भाषत जुत अभिमान ॥ पिये पियूष कोकिल सखिन सौतिन जाने बान ॥५०॥ टीका ॥ पीतम कौं अपराध सहित देखि करि कै तिय कौं अभिमान सहित बचन भाषतां पीतम ने पियूष जान्या सखीन ने कोकिल जान्या सौतिन ने बाण जान्या यहाँ अभिमान का बचन भाषवा सैं प्रगल्भ वंचन नायिका है और एक बचन कौं पीतम ने पियूष जान्या सखीन ने कोकिल जान्या सौतिन ने बाण जान्या यातें उल्लेख अलंकार है ॥५०॥ अथ प्रादुर्भूत मनोभवा द्वितीय उल्लेख लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रादुर्भूत मनोभवा पूरित काम कलान ॥ बहु गुन सौं बहु बिधि कहै सुन उल्लेख प्रमान ॥५१॥ टीका ॥ काम कलान सैं पूरित होय सो प्रादुर्भूत मनोभवा है बहुत गुन सैं बहुत विधि करि कै कहै सो दूसरा उल्लेख को प्रमान है ॥५१॥ अथ प्रादुर्भूत मनोभवा द्वितीय उल्लेख उदाहरण ॥ दोहा ॥ काम कलान भरी तिया तन सैं चलि

दरसाय ॥ छबि मैं बिरिजा गुन गिरा पालन रमा लखाय ॥ ५२॥ टीका ॥ काम कलान की भरी जई तिय है सो रीत में रति द-रसावे है॰ छबि में बिरिजा है॰ गुन मे गिरा है॰ पालना रमाल रमा है॰ यहाँ काम कलान की भरी जई है याते आदभूत मनो भवा नायिका है और एक नायिका कौं अनेक गुरा सें अनेक तरह जानी याते दूसरो उल्लेष है ॥ ५२॥ अथ सुरत बिचित्रा सुमरन लछरा ॥ दोहा ॥ सुरत बिचित्रा नायिका॰ जो अद्भुत रत ठान ॥ सुमरन है इक वस्तु लखि सो सुमरन को मान ॥ ५३॥ टीका ॥ जो अद्भुत रत ठाने सो सुरत बिचित्रा नायिका है एक वस्तु कौं देखि करि के सुमरन होय सो सुमरन अलंकार है ५३ अथ सुरत बिचित्रा सुमरन उदाहरन ॥ दोहा ॥ केलि कला अद्भुत करत॰ जब पिय मन ललचात ॥ तब तब निरखि सखीन कौं मदन तिया सुधि आत ॥ ५४॥ टीका ॥ अद्भुत केलि कला करतें जब पीतम को मन ललचावे है तब तब निरखि करि के सखीन कौं मदन तिया की सुधि आवे है॰ यहाँ अद्भुत केलि कला सें सुरत बिचित्रा नायिका है और नायिका कौं देखि करि के सखीन कौं मदन तिया को स्मरण भयो याते स्मरण अलंकार है ॥ ५४॥ अथ प्रौढ़ा भ्रम लछरा ॥ दोहा ॥ प्रौढ़ा पति ही के विषय॰ केलि कलाप प्रबीन ॥ इक कौं लखि भ्रम होय जहँ है भ्रम भूषण बीन ॥ ५५॥ टीका ॥ पति के बिषय केलि कला में प्रबीन होय सो प्रौढ़ा नायिका है एक कौ देखि के भ्रम होय तहाँ भ्रम अलंकार हे है बीन ॥ अथ प्रौढ़ा भ्रम उदाहरन ॥ दोहा ॥ जब पिय संग सित्र चोढ़ अटा॰ हरषि हिये लपटानि ॥ तब लखि हर्ष मोर गन घन दामिनि मन आनि ॥ ५६॥ टीका ॥ जब सोना हेत

पीनस के संग अटा पै चढ़ि करि कै॰ हरषि करि कै हिया सौं लपटाई॰ तब देखि करि कै औरन के गन हर्षे॰ घन दामिनी मन में आनि करि कै॰ यहाँ हर्षि करि हिया सौं लपटायो है यातें प्रौढ़ा नायिका है। और औरन को घन दामिनी को भ्रम भयो यातें भ्रम अलंकार है॥ ५६॥ अथ प्रौढ़ा भेद॥ चौपाई॥ गाढ़तरुण्य कामा धौ काह॥ आबौस्नता ३ दर प्रौढा ४ ताह॥ अरु समस्त रत चतुरा ५ जानो॥ पुनि अक्रांत नायिका ६ मानो॥ ५७॥ दोहा॥ है समस्त रत कोविदा॰ चित्र विभ्रमा जोय॥ पुनि लब्धा पति नायिका प्रौढ़ा भेद नव होय॥ ५८ अथ गाढ़ तारुण्या संदेह लक्षण॥ दोहा॥ गाढ़तरुण्या नायिका पूरन जोवन वारि॥ इक कौं लखि संदेह ह्वै संदेहसु निर्धारि॥ ५९॥ टीका॥ जो पूरन जोवन वारी होय सो गाढ़ तरुण्या नायिका है॰ एक कौं देखि कै संदेह होय सो निश्चय ही संदेह है॥ ५९॥ अथ गाढ़तारुण्या संदेह उदाहरण॥ दोहा॥ लंक दीठि हग सद भरे कुच नितंब लखि पीन॥ अलि मानत यह रति रमा उमा गिरा कि प्रवीन॥ ६०॥ टीका॥ वाको दीठि मद के भरे जुग हग कुच नितंबन कौं पीन देखि कै॥ अलि माने है यह रति है कि रमा है कि गिरा है कि उमा है सो। प्रवीन - यहाँ कुच नितंब पीन है॰ यातें गाढ़तारुण्या नायिका है - और अलि का रति रमादिक को निश्चय न भयो॰ यातें संदेह अलंकार है ६०॥ अथ कामांधा मुग्धानुकूल लक्षण॥ दोहा॥ कामांधा अति काम वस॰ और पूरन रति साज॥ मुग्धानुकूलि आन धरि साँचो भाव दुराय॥ ६१॥ टीका॥ काम कै वस अत्यंत होय और पूरन रति साजै सो कामांधा है॥

और धोर करि कै साँचा भाव कों छिपावै सो मुद्रापन्हुति अलं-
कार है ॥ ६१ ॥ अथ कामांधा मुद्रापन्हुति उदाहरन ॥
दोहा ॥ नैनन याके मन सर. बैनन मद घर आँहिं ॥ तजे न पति
को छिनक यह डरै गुरुन सों नाँहिं ॥ ६२ ॥ टीका ॥ याके नेत्र
नहीं हैं. मैन के सर हैं. बचन नहीं है मद के घर हैं. यह पति
कों छिन भर भी नहीं त्यागै है. बड़ा आदमीन सें डरपे नहीं.
यहाँ पति कौं नहीं त्यागै है. यातें कामांधा है. और नैननकों
मैन सर ठहराया. बैनन कों मद घर ठहराया. यातें मुद्रापन
न्हुति है ॥ ६२ ॥ अथ भावोन्नता हेत्वपन्हुति लछ-
न ॥ दोहा ॥ उन्नत भावन तें तिया. भावोन्नता बखानि ॥ हेत्व
अपन्हुति जुक्ति सों वस्तु दुरावै जानि ॥ ६३ ॥ टीका ॥ उन्नतभा
वन तें भावोन्नता नायिका बखानो. जुक्ति सों वस्तु छिपावै पै हे-
त्व पन्हुति अलंकार जानो ॥ ६३ ॥ अथ भावोन्नता हेत्व
पन्हुति उदाहरन ॥ दोहा ॥ अति उन्नत भावन भरी. यह
नहिं नरी निदान ॥ सतनुपति धरी रति नहीं. रमा आहि छवि खा
न ॥ ६४ ॥ टीका ॥ अत्यंत उन्नत भावन की भरी है यह निश्चय
की नरी नहीं. तनु सहित पति धारी है. यातें रति नहीं. छवि की
खान रमा है यहाँ उन्नत भावन में भावोन्नता नायिका है. और ना
यिका कों जुक्ति करि रति सें बचाय रमा ठहराई यातें हेत्व पन्हु
ति है ॥ ६४ ॥ अथ दरप्रौढ़ा पर यस्तापन्हुति लछन ॥
दोहा ॥ जब है थोरी लाज तब दरप्रौढ़ा तिय आप ॥ पर यस्ता
पन्हुति धर्म पर को पर में थाप ॥ ६५ ॥ टीका ॥ जब थोरी लाज
होय तब दरप्रौढ़ा नायिका है. पैला को धर्म पैला में थापै सो पर
यस्तापन्हुति अलंकार है ॥ अथ दरप्रौढ़ा पर यस्ताप-
न्हुति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुनो चरन अब दुलारि हरा-

जब तिय बोलत कंद ॥ आहि सुधा धरते बचन नहिं न सुधा धर कंद ॥ ६६ ॥ टीका ॥ सुरत करता अध खुल्या नेनन सें जब तिय कंद बोले- ते बचन सुधा धरे है- चंद्रमा सुधा धर नहीं है- यहाँ अध खुल्या नेनन से रत प्रौढ़ा नायिका है- और चन्द्रमा को सुधा धर पनो छिपाय बचन में ठहरायो- यातें परयस्ताप न्हुति है ॥ ६६ ॥ अथ समस्त रत कोविदा भ्रांता पन्हुति लछन ॥ दोहा ॥ सो समस्त रत कोविदा सकल सुरत पर वीन ॥ भ्रांतापन्हुति आन की करे भ्रांति को छीन ॥ ६७ ॥ टी० संपूर्ण सुरत में प्रवीन होय सो समस्त रत कोविदा है- और की भ्रांति कों छीन करे सो भ्रांतापन्हुति अलंकार है ॥ ६७ ॥ ५ ॥ अथ समस्त रत कोविदा भ्रांता पन्हुति उदाहरन ॥ दोहा ॥ नाना बिधि निशि सुरत ते अलिकन प्रात लखि नाहि ॥ सखि पूछी कछु आधि है तिय कहि रति श्रम आहि ॥ ६८ ॥ टी० नाना प्रकार सें रात्रि में सुरत नें तातें सवेरे आलस देखि के सखी नें पूछी कछु आधि है तिय नें कही रति को श्रम है। यहाँ नाना प्रकार की सुरति तें समस्त रत कोविदा है- और नायिका का बचन सें सखी कों भ्रम जातो रह्यो- यातें भ्रांतापन्हुति अलंकार है ॥ ६८ ॥ अथ आक्रांत नायका छेकापन्हुति लछन ॥ दोहा ॥ सु आक्रांत नायक लिया निहि पति कुल बस भाव ॥ छेका पन्हुति आन के जानें सांच छिपाव ॥ ६९ ॥ टी० जो पति और कुल बस में होय सो आक्रांत नायिका है और का जान्या सें सांच कों छिपावे सो छेका पन्हुति अलंकार है ६९ अथ आक्रांत नायका छेका पन्हुति उदाहरण ॥ दोहा ॥ ननकंद मन मोरे नही भूषन बसन बनान ॥ सखि क हे पिय की है कथा नहिं सखि भ्रात की बात ॥ ७० ॥ टीका

भूषन बसन बनाना मन कौं तनक भी नहीं मोरे है- सखीने कहा पिय की कथा है- नायका नैं कही नहीं सखी- सखी की बात है य- हाँ भूषन बसन बनावा सौं आक्रांत नायका है और नायका नैं सखी सैं साँची बात छिपाई यातैं छेका पन्हुति है ॥ ७० ॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पन्हुति लक्षण

दोहा ॥ है समस्त रस कोबिदा पियहि सकल रस दाय ॥ पद मिसादि करि कैतवा पन्हुति सत्य दुराय ॥ ७१ ॥ **टीका** ॥ पीतम कौं संपूर्ण रस दायक होय सो समस्त रस कोबिदा है मिस पद करि के सत्य कौं दुरावै सो कैतवा पन्हुति अलंकार है ॥ ७१ ॥

अथ समस्त रस कोबिदा कैतवा पन्हुति उदाहरन

॥ दोहा ॥ हास बिलास कलान करि प्रेम पास मन खींचि ॥ पीतम कर में कर लियो चितवनि मिस रस सींचि ॥ ७२ ॥

टीका ॥ हास विलास कलान करि के प्रेम पासी सें मनकौं खींचि के पीतम कौं कर मे कर लियो चितवनि की मिस सौं रस सींचि करि के यहाँ कलान करि के पीतम कौं बस में कर लियो यातैं समस्त रस कोबिदा है- और चितवनि कौ मिस पद करि के रस सींचवो ठहरायो यातैं कैतवा पन्हुति अलंकार है **अथ चित्र विभ्रमा लक्षण ॥ दोहा**

चित्र बिभ्रमा नायका बिभ्रम जासु बिचित्र ॥ तन दुति पिय मन बस करनि बरनत बिबुध पवित्र ॥ ७३ ॥ **उदाहरन ॥ दो०** ॥ जिहि रद हासी मुख करत कुंद जोन्ह शशि मंद ॥ सोहिनि सखि राधिका मोहि लियो ब्रजचंद ॥ ७४ ॥ **अथ लब्धा पति लक्षन ॥ दो०** ॥ सो लब्धा पति नायिका प्रौढा भेद बखानि ॥ कानि करै जाकी सदा पति कुल प्रभु तासानि ॥ **उदाहरन ॥ दोहा** ॥ लखि ललचानी बाल कों लई लला उर लाय ॥ इक टक चितवत दुहुन मन रह्यो मैद सरसाय ॥

अथ धीरादि भेद ॥ दोहा ॥

मध्या प्रोढा मान से त्रिबिधि होत प्रत्येक ॥ धीरा और
पुनि धीरा धीरा एक॥ ७५ ॥ **अथ उत्प्रेक्षा लक्षण ॥**
दोहा ॥ वस्तु हेतु फल तीन में संभावना जब होय ॥
उत्प्रेक्षा ताकों कहत कबि गुलाब कवि लोय ॥ ७६
वस्तु हेतु फल इन तीन में जब संभावना होय ताकों
क्षा अलंकार कहे हैं- गुलाब कवि कहेहैंकबि लोग हैं सो
७६॥ **चौपाई** ॥ बस्तु एक उक्ता सपदा कहि ॥ दूजी अन
उक्ता सपदा लहि ॥ हेतु माँहि सिद्धा स्पदा है ॥ दोय
य असिद्धा स्पदा सदा है ॥ ७७॥ **टीका** ॥ वस्तु में एक उक्ता
दा कहि॥ दूसरी अनुक्ता स्पदा लहो अर्थात उक्ता स्पदा बस्तूत्प्रेक्षा
नुक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा हेतु के माँहि सिद्धा स्पदा है- दूसरी सदा अ
द्धा स्पदा है- हेतूत्प्रेक्षा दोय प्रकार की सिद्ध होय तो सिद्धा स्प
हेतूत्प्रेक्षा असिद्ध होय तो असिद्धा स्पदा हेतूत्प्रेक्षा है॥ ७७
दोहा ॥ फल सिद्धा सपदा सदा असिद्धा सपद दोय ।
वाचक मनु संकादि बिन गम्योत्प्रेक्षा होय ॥ ७८ ॥ **टीका**
फल में सदा सिद्धा सपदा है- असिद्धा स्पदा है ये दोय भेद
वाचक मनु संकादि बिना गम्योत्प्रेक्षा होय है अफल कों फल
ठहराय संभावना करे सो सिद्ध होय तो सिद्धा स्पदा फलोत्प्रेक्षा अ
सिद्ध होय तो असिद्धा स्पदा फलोत्प्रेक्षा है॥ ७८॥ **दोहा** ॥ है
जाकी संभावना सो संभाव्य बखानि ॥ है जामें संभावना से
आस्पद पहिचानि॥ ७९॥ **टीका** ॥ जाकी संभावना होय सो
संभाव्य मान बखानों जामें संभावना होय सो
ये दोनूं होय सो उक्ता स्पदा बस्तूत्प्रेक्षा संभाव्य मान होय
स्पद नहीं होय सो अनुक्ता स्पदा बस्तूत्प्रेक्षा है ॥ ७९ ॥
अथ मध्या धीरा उक्ता स्पदा बस्तूत्प्रेक्षा-

लक्षण ॥ दोहा ॥ रिस प्रगटे कहि ब्यंग्य बच मध्या धीरा नारि ॥ है संभाव्यरु आस्पद सु उक्ता स्पदा बिचारि ॥ ८०॥ टीका ब्यंग्य का बचन कहकरि के रोस कों प्रगटे सो मध्या धीरा नायिका है- संभाव्य मान और आस्पद होय सो उक्ता स्पदा बिचारो॥ ८०॥ अथ मध्या धीरा उक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ हर्षित कीनी मुहि दिखा लालन लोयन लोल ॥ मानहुँ मंजे मंजीठ रंग हैं जुग मीन अमोल ॥ ८१ ॥ टी० लालन मैं चंचल नेत्र दिखा करि के मोकों हर्षित करी मानों मजीठ का रंग मैं रंग्या हुया अमोल दो मीन हैं- यहाँ हर्षित शब्द मैं दूखन हा यो ब्यंग्य मैं कह्यो- यातें मध्या धीरा नायिका है और लोचन वस्तु मैं मीनन की तर्क है- यातें वस्तूत्प्रेक्षा है- और हांवे विद्य मान है- यातें उक्ता स्पदा वस्तू त्प्रेक्षा है॥८२ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ परुष बचन कहि ब्यंग्य बिन कोपै मध्या धीर॥ जहँ नहिं पद मैं आस्पद सु अनुक्ता सपद धीर ॥ ८२॥ टीका ॥ परुष बचन कह करि के ब्यंग्य बिना कोपे सो मध्या धीरा नायिका है- जहाँ पद मैं संभावना को ठिकानों नहीं होय सो अनुक्ता सपदा है हे धीर ॥ ८२॥ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा [illegible]क्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ अनल भाल मनु बिष अधर नैनन मौंहि मसाल ॥ जावो जहँ निशि जागि परे मौं मुहि करत बिहाल ॥ ८३॥ टीका ॥ भाल मैं अनल है अधर मैं बिष है नैनन के मौंहि मसाल है- जहाँ रीत मैं जागि करिके परे तहाँ जावो मोको विहाल क्यों करते हो- यहाँ जावक अंजन ललाई मैं अनल विष मसाल की तर्क है यातें वस्तूत्प्रेक्षा और जावक अंजन ललाई नहीं कही यातें अनुक्ता स्पदा वस्तू-

प्रेक्षा है ॥८३॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ व्यंग्य अव्यंग्य है बचन कोहि रोस प्रकासे रोय ॥ सिद्ध अहेतुहि हेतु कृत हेतू त्प्रेक्षा होय ८४ ॥ टीका ॥ व्यंग्य अव्यंग्य बचन कह कोर के रो कोर के रोस कों प्रकासे- सिद्ध अकारण कों कारण करे सो सिद्धा स्पदा हेतूत्प्रेक्षा होय ॥८४॥ अथ मध्या धीरा ऽधीरा सिद्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय लखि रोय रिसाय बकि कोने लोयन लाल ॥ तिन की रुचि लखि मनु भये लालन लोयन लाल ॥८५॥ टीका ॥ पिय कों देखि कोर के रो कोर के रोषकरि के- वकि कोर के लाल नेत्र करया तिनकी रुचि देखि के मानों लालन के लाल नेत्र भये यहाँ रोवा सों मध्या धीरा धीरा नायिका है- और लालन के लाल नेत्र ह्वो वाको कारण नायिका के लाल नेत्र नहीं तिस कों कारण ठहराया- यातें हेतू त्प्रेक्षा और लाल ह्वो वो सिद्ध है यातें सिद्धा स्पदा हेतूत्प्रेक्षा है ॥८५॥ अथ प्रौढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ कोप प्रकाशे व्यंग्य कोर रति तें रहे उदास ॥ होय असिद्ध तु दूसरी हेतू त्प्रेक्षा भास ॥८६॥ टीका ॥ व्यंग्य कोर के कोप कों प्रकाशे रति तें उदास रहे- सो प्रौढा धीरा नायिका है- सो असिद्ध होय तो दूसरी हेतूत्प्रेक्षा भासे है ॥८६॥ अथ- प्रौढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय लखि सुरति बिसारि तिय कोर कोर राते नैंन ॥ मदमाती यातें मनो बोलत हल वल वेंन ॥८७॥ टीका ॥ पिय कों देखि के सुरति बिसारि कोर के तिय है सो राते नैंन कोर कोर के मद मस्त भई- यातें मानों हल वल बचन बोले है यहाँ मद मस्ती का बहाना सों हल बल बचन बोले है याः-

तें प्रौढा धीरा नायिका है और मद मस्त हो वाको कारण छल बल बचन बोलवो नहीं ताकों कारण ठहरायो यातें हेतूत्प्रेक्षा है- मद मस्त हो वो असिद्ध है- यातें असिद्धा हेतूत्प्रेक्षा है ८७

अथ प्रौढा अधीरा सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ तर्जन ताडन आदि करि- व्यंग्य रहित करि कोप ॥ सिद्ध अफल कों फल करै सु फलोत्प्रेक्षा ओप ॥ ८८ ॥ टी० तर्जना ताडना आदि करि के व्यंग्य रहित कोप करै सो प्रौढा अधीरा नायिका है- सिद्ध अफल के नांई फल करै सो फलोत्प्रेक्षा ओपे है ॥ ८९ ॥ अथ प्रौढा अधीरा सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ गर्जत त्रासत डरत नहिं धरत न चित में चेत ॥ घूमत झुकि झुकि रहत मनु मदगज समता हेत ॥ ९० ॥ टीका ॥ गरजे है- त्रासे है- डरै नहीं है चित में चेत नहीं धरै है- घूमे है झुकि झुकि रहै है मानों मस्त गज की समता के वास्ते- यहां गर्जादिक सें प्रौढा अधीरा नायिका है- और गर्जवो त्रासवो नहीं डरवो चित में चेत नहीं धरवो- घूमवो- झुकिवो इनको फल मद गज की समता नहीं ताको फल ठहरायो यातें फलोत्प्रेक्षा गर्जादिक सिद्ध है यातें सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा है अ० प्रौढा धीराधीरा असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ ताडनादि करि रति बिरस कोप प्रकासे नारि ॥ जहं असिद्ध के अफल फल सु फलोत्प्रेक्षा धारि ॥ ९१ ॥ टीका ॥ ताडनादि करि के रति मे बिरस हो करि के तिय सों है सो कोप को प्रकासे सो प्रौढा धीरा धीरा नायिका है जहं अफल फल असिद्ध होय सो फलोत्प्रेक्षा धीरा है ॥ अथ प्रौढा धीराधीरा असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा उदाहरन ॥ दोहा ॥ जलग रहो पर सोन पद लखो आपने हाल

बूड़न मधवा छिन मनों रंगे नैन रंग लाल ॥ ८१॥ टीका ॥ अलग रहो पद अति परसो आपनो हाल देखो- बूड़न की ललना के वास्ते लालोँ लाल रंग में नेत्र रंग्यो है ॥ इहां अलग रहो पद नाति परसो या बचन सें सुरत सें बिरस रही यातें मध्या धीरा धीरा नायिका है ॥ और लाल नेत्र करवा को फल बूड़न को लखता नहीं ताको फल वहराव संभावना करी- यातें फलोत्प्रेक्षा है॥ नेत्र रंगावो असिद्ध है यातें असिद्ध स्पदा फलोत्प्रेक्षा है ॥ ८२॥ अथ जेष्ठा कनिष्टा रूप का तिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ द्वै ब्याही तिय होय जह- जेष्ठ कनिष्टा जुक्ति ॥ निकसै बरार्य अवनार्य सें- रूप का तिशय उक्ति ॥ ८३॥ टीका ॥ जहां दोय परणी हुई स्त्री होय तहां जेष्ठ कनिष्टा की जुक्ति है ॥ उपमान सें उपमेय निकसै सो रूप का तिशयोक्ति अलंकार है ॥ ८३॥ अथ जेष्टाकनिष्टा रूप कातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ कनक लता जुग में कमल असल प्रफुल्लित पाय ॥ अली रली इक में करत इक मे दीठि दुराय ॥ ८४॥ टीका ॥ दो कनक लतान में निर्मल कमल प्रफुल्लित पा करि के अली है सो एक सें रली करै है- एक सें दीठि दुराय करि केय हां दो नायिकान सें जेष्टा कनिष्टा है ॥ और दो कनक लतान में दो नायिका निकली और अली सें नायक निकल्यो यातें रूप कातिशयोक्ति अलंकार है ॥ ८४॥ इति स्वकीया

अथ परकीया लक्षण ॥ दोहा ॥ परकीया पर पुरुष सों गुप्त करै जो प्रेम ॥ तासु परोढा कन्यका द्वै विधि करि के नेम ॥ ८५

अथ परोढा सापन्हवातिसयोक्ति लक्षण ॥ दो० ऊढा ब्याही और की करै और सों प्रीत ॥ होय अपन्हव सहित यह

सापान्हव रीति ॥ ९६ ॥ टीका ॥ और की ब्याही और सों करे सो ऊढा नायिका है- यह अपन्हव सहित होय सो की रीति है ॥ ९६ ॥ अथ परोढा ।

उदाहरन ॥ दोहा ॥ सास जिठानी ननद क्यों तर बिना विचार ॥ मो तनु में नहिं मो भ्रमर रहत तमाल मकार ॥

टीका ॥ सास जिठानी ननद बिना बिचार क्यों तरजे है ॥ मेरा में भ्रमर नहीं तमाल में रहे है पर पुरुष में रत है- यातें पर- है- और भवरा सों मन को बोध भयो तमाल सें कृष्ण कों भयो यह रूप कातिशयोक्ति तनु में नहीं तमाल है- यह यातें सापन्हवा तिसयोक्ति अलंकार है ॥ ९७ ॥ अ-

अनूढा भेद का[illegible]योक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ अन ब्याही पर पुरुष सों रमें अनूढा जुक्ति ॥ व्याही कों और क- हें भेद कातिशयायुक्ति ॥ ९८ ॥ अथ अनूढा भेद काति

उदाहरन ॥ दोहा ॥ पितु वस तन मन कान क्यों पावे इक थान ॥ कत्ती करे तु ह्वे सके है विधि की विधि ॥ ९९ ॥ टीका ॥ तन है सो पिता के बस है-मन है सो के वस है ॥ एक स्थान कैसे पावें- कर्त्ता करे तो ह्वे सके है की बिधि और है- यहां बिना ब्याही कृष्ण सों रत है ॥ कों पति चाहती है- यातें अनूढा नायिका है ॥ बिधिकी और ही है यह भेद कातिसयोक्ति है ॥ ९९ ॥ अथ पर

भेद ॥ दोहा ॥ गुप्ता १ और विदग्ध २ पुनि लक्षिता कुलटा ४ नि ॥ अनुसयान ५ मुदिता ६ दिये पर कीया भेद ॥ १०० ॥ अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधातिशयो-

लक्षण ॥ दोहा ॥ भूत सुरत दुरवे जु तिय सो गुप्ता ॥ करे जु जोग अजोग को संबंधा तिशयोक्ति ॥ १०१ ॥

टीका ॥ जो उई सुरत कै ताई छिपावै सो पहिली गुप्ता कही है ॥ जो अजोग कौं जोग करै सो संबंधातिशयोक्ति अलंकार है

अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ शशि तें ऊँचे गिरि शिखर- चढी पुष्प की चाह उतरत यिचले तन वसन- कटक लगे अथाह ॥ १०२ ॥ टीका ॥ चन्द्रमा सें ऊँचे पर्बत की शिखर पै ऊपर पुष्प की चाह सें चढी उतरता शरीर का कपड़ा बिचल्या घणा का लागया- यहाँ भूत सुरत चिन्ह छिपाये यातैं भूत सुरत गुप्ता नायिका है ॥ गिरि शिखर अजोग कौं चन्द्रमा कै जोग्य करी- यातें संबंधातिशयोक्ति है ॥ १०२ ॥ अथ बर्तमान सुरत गुप्ता यो संबंधातिशयोक्ति लच्छन ॥ दोहा ॥ वर्तमान रत जोग मैं दूजी गुप्ता जोग ॥ असंबधातिशय उकति यो गहि करै अयोग ॥ १०३ ॥ टीका ॥ बर्तमान सुरत का छिपावा सें दूसरी गुप्ता कौ जोग है ॥ योग कौं अयोग करै सो असंबधाति शयोक्ति है १०३

अथ बर्तमान सुरत गुप्ता असंबधातिसयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सखि मुहि मुछित परत मोहि इन राखी भरि बाय ॥ पर उपकारी दीन हित नहिं इन सम सुरनाय ॥ १०४ ॥ टीका ॥ हे सखी मोकौं मूर्छित परता इनने बाय भरि कै राखी ॥ पैला का उपकार करवा वाला दीनन का हितकारी इन सम सुरनाय नहीं- यहाँ बाय भरि वासें बर्तमान सुरत गुप्ता है ॥ और इंद्र जोग है ताकौं अजोग कर्‍यो यातें असंबधातिसयोक्ति अलंकार है ॥ १०४ ॥ अथ भविष्यति सुरत गुप्ता अक्रमातिशयोक्ति लच्छन ॥ दोहा ॥ सुरत भविष्यति गोप तैं तीजी गुप्ता थाय ॥ अक्रमातिशय उक्ति जहँ हेतु कार्य को साथ ॥ १०५ ॥ टीका ॥ आगै हो वा वाली सुरत

के नाँई छिपावे सो तीसरी गुप्ता की गाथा है॥ जहाँ कारण कार ज को साथ होय सो अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है॥ २०५॥

अथ भविष्यति सुरत गुप्ता ✕ क्रमातिशयोक्ति उदा ✕ रन॥

दोहा॥ फूलन हित बन सघन में जैहों आली आ०॥ पग धरत हित नव सन वर कटि हैं कंटक साज॥ २०६॥ टीका॥ फूलन के वास्ते हे आली आज सघन बनमें जाऊँगी॥ पग धरती ही तन का सुन्दर कपड़ा कंटकन के साज सें कटेगा- यहाँ होवा वाला चिन्ह कह्या- यातें भविष्यति सुरत गुप्ता है॥ और पग धरतां ही कपड़ा कटेगा इसें कारन कारज संग है- यातें अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है॥ २०६॥

अथ बचन विदग्धा ✕ पला ✕ तशयोक्ति लक्षण॥

दोहा॥ बचन विदग्धा चातुरी करे बचन में साज॥ है चपलातिशयोक्ति जहं हेतु ज्ञान ते काज॥ २०७॥ टीका॥ बचन में चतुराई करे सो बचन विदग्धा नायिका है॥ जहाँ हो सें कारज होवे सो चपलातिशयोक्ति अलंकार॥ २० ✕॥

अथ बचन बिदग्धा चप ✕ ✕ शयो उदाहरन॥

दोहा॥ हरि ताखि सखि सें कहि अवहि जमुना न्हान॥ प्यारी बचन पियूष से सुनतहि हर्ष कान २०८॥ टीका॥ हरि कों देख करि के सखी सें कही जमुनान्ह कों अब ही जाऊंगी प्यारी का पियूष सा बचन सुनता ही कान हर्ष यहां नायिका कों सुनाकरि के सखी से कह्यो यातें ब चन विदग्धा नायिका है और स्नान हित जावो कारण है ताका सुन वासे ही कृष्ण को हर्षिवो कारज भयो यातें चपलातिश योक्ति अलंकार है॥ २०८॥ दोहा॥ बचन विदग्धा होय देषी सें अनुराग॥ स्वयं दूतका पथिक सें कहै बचन कीला

१०९॥ **अथ क्रिया विदग्धा अत्यंतातिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥** क्रिया विदग्धा चातुरी जबै क्रिया में सान ॥ अत्यंतातिशयोक्ति है पूर्व हेतु सें काज ॥ ११० ॥ **टीका ॥** जब क्रिया में चतुराई करे सो क्रिया विदग्धा नायका है ॥ हेतु सें पहिलें काज होय सो अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार है ११०

अथ क्रिया विदग्धा अत्यंतातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ कंज कली कर हाथ उर धरी तिया हरि हेरि ॥ भये प्रफुल्लित प्रथम ही कंज निहारयो फेरि ॥ १११ ॥ **टीका** कंज की कली करि के॰ हरि कौं देखि करि के तिया ने हृदा पै हाथ धरयो ॥ पहिले ही प्रफुल्लित भया कंज फेरि देख्यो ॥ इहां कंज की कली करि के रात कौं मिलवो जनायो ॥ हृदा पै हाथ धरि के यह जनायो तुम मेरा हृदा मैं वसो हो ॥ यातें क्रिया विदग्धा नायका है और पहिले प्रफुल्लित भया कंज फेरि निहारयो कारज पहिले है कारण पाछे है ॥ यातें अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार है ॥ १११ ॥ **अथ लक्षिता तुल्य योगिता लक्षण ॥ दोहा ॥** प्रीति लखे तें लक्षिता वरर्यन को इक धर्म ॥ होय अवरर्यन को प्रथम तुल्य योगिता मर्म ॥ ११२ ॥ **टीका ॥** प्रीति जान्या सौं लक्षिता नायका है ॥ उपमेय उपमेय को एक धर्म होय अथवा उपमान उपमान को एक धर्म होय सो पहिली तुल्य योगिता को मर्म है ॥ ११२ ॥ **अथ लक्षिता प्रथम तुल्य योगिता उदाहरन ॥ दोहा** नैन बैन बिफलात हैं आली तेरे आज ॥ क्यों मुकरत मुख लखि लगत शशि कंजन मन लाज ॥ ११३ ॥ **टीका ॥** हे आली आज तेरे नैन॰ बैन बिफलावे हैं ॥ क्यों मुकरे है मुख कौं देखि कैं चन्द्रमा॰ कमल का मन मैं लाज लगै है ॥ यहां

सखी ने रति के चिन्ह जानि लिये. याते लक्षित है॥ और नैन-बैन उपमेय हैं तिनको विकसावो एक धर्म है- यातें प्रथम तुल्य योगिता है और चन्द्रमा कमल उपमान को लाजवो एक धर्म है यातें प्रथम तुल्य योगता है॥११३॥ अथ कुलटा द्वितीय तुल्य योगिता लक्षण॥ दोहा॥ बहुत नरन सों जोरमें सो कुलटा तिय भाव॥ वृत्ति तुल्य हित अहित में तुल्य योगता आन॥११४॥ टीका॥ जो बहुत पुरुषन सों रमै सो कुलटा नियको प्रभाव है॥ हित अहित में समान वृत्ति होय सो दूसरी तुल्य योगिता है॥११४॥ अथ कुलटा द्वितीय तुल्य योगिता उदाहरन॥ दोहा॥ ऊंच नीच हित अहित में करे न तनक विचार॥ बालक पालक नरन में करै सुरत उपचार॥११५॥ टीका॥ ऊंच नीच में और हित अहित में तनक भी विचार नहीं करै मारवो वाला- पालवो वाला आदमीन में सुरत को जतन करे है॥ यहां बहुत पुरुषन सें सुरत चाहे है॥ यातें कुलटा नायका है॥ और मार वा-पालवा वारान सें रति करिवो समान व्यवहार है- यातें द्वितीय तुल्य योगिता है॥११५॥ अथ अनुशयाना तृतीय तुल्य योगिता लक्षण॥ दोहा॥ वर्त्तमान संकेत को विगरत होय दुखाय॥ कर गुन आन गुनन संग वर्नन तीसर कहाय॥११६॥ टीका॥ वर्तमान सकाम के ताईं बिगड़तो देख डरपे सो पहिली अनुशयना नायका है॥ कमगुनी को अत्यंत गुनी के संग वर्नन कीये तो तीसरी तुल्य योगिता है॥११६॥ अथ प्रथम अनुशयाना तृतीय तुल्य योगिता उदाहरन॥ दोहा॥ वृंदावन अरु चैत्र रथ नंदन सम सर सात॥ सब ऋतु सम हैं पै अली सुहि ऋतु राज न भात॥११७॥ टीका॥ यहां बसंत में

पतकार हो जासों संकेत बिगरयो यातें प्रथम अनुसयाना है और चैत्र पुष्प मदन बड़े हैं ॥ तिनकी समान वृंदावन को बने न है ॥ यातें तृतीय तुल्य योगिता है । अथ द्वितीय अनुसयाना दीपक लक्षण ॥ दोहा ॥ होनहार संकेतको को सोचे मानि अभाव ॥ दीपक वर्ण्य अवर्ण्य की धर्म एकता पाव ॥ ११८ ॥ टीका ॥ होवा वाला संकेत को अभाव मानि करि के सोचे सो दूसरी अनुसयाना है ॥ वर्ण्य अवर्ण्य का धर्म की एकता होय सो दीपक अलंकार है ॥ ११८ ॥ अथ द्वितीयानुसयाना दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ सखी तिहारे सासरे है वन ताल अपार ॥ तहँ मराल उत्तम पुरुष क्रीड़ा करत अपार ॥ ११९ ॥ टीका ॥ यहाँ नायिका ने आगला संकेत को सोच कर्यो ताकों सखी नें समुझाई यातें दूसरी अनुसयाना है ॥ और मराल उपमान उत्तम पुरुष उपमेय क्रीड़ा करवो एक धर्म है यातें दीपक है ॥ ११९ ॥ अथ तृतीयानुसयाना प्रथम दीपका वृत्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ पिय सहेट मों सैन गइ योंग नित्त्यारी धृति ॥ पद की आवति होय सो प्रथम दीपका वृत्ति ॥ १२० ॥ टीका ॥ पीतम सहेट में गयो में नहीं गई यों गौन करि के धीरज त्यागे सो तीसरी अनुसयाना नायिका है ॥ पद की आवृत्ति होय सो पहिली दीपका वृत्ति है ॥ १२० ॥ अथ तृतीयानुसयाना प्रथम दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ हरी छरी कर माल उर धरि आवत नंदलाल ॥ सरसाने लखि विकल भइ सरसाने लौ बाल ॥ १२१ ॥ टीका ॥ कर में हरी छरी हृदा में माला धरि करि कै नंदलाल कों सरसाया हुया आवता देख के लाक्या तीर की तरह विकल भई ॥ यहाँ नायक कों

हेट में सों आयो देखि के दुख पाई यातें तीसरी अनुसयाना है
और सरसाने सरसाने पद एक है अर्थ न्यारो न्यारो है यातें प्र
थम दीपका वृत्ति है॥२२१॥ **अथ मुदिता द्वितीय दी
पका वृत्ति लक्षण ॥ दोहा ॥** लखि चित चाही होत
मन हर्ष मुदिता मानि ॥ द्वितिय दीपका वृत्ति है अर्था वृत्ति पि
छानि ॥ १२२॥ **टीका ॥** चित की चाही होती देखि करि के
मन में हर्षे सो मुदिता नायिका मानों ॥ अर्थ की आवृत्ति हो
य सो दूसरी दीपका वृत्ति पिछानो ॥१२२॥ **अथ मुदिता
द्वितीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥** रहि है
इकली घर बधू जे हैं सगरे प्रात ॥ विकसे तिय के दृग सुनत फू
ले सगरे गात॥ १२३॥ बधू है सो इकली घर रहैगी सवेरे सब जावेगा सुनतां
ही तिय के नेत्र विकसे सब गात फूल्या यहां एकली रहवासें प्रसन्न भई
यातें मुदिता नायिका है और विकस्यो फूलवो पद न्यारा २ हैं अर्थ एक है
१२३॥ **अथ गनिका तृतीय दीपका वृत्ति लक्षन
दोहा ॥** धन दे जासों रति करे सो गनिका परिमान ॥ आवृ
त्ति जु पद अर्थ की तीजी जानि सुजान ॥ १२४॥ **टीका ॥**
धन दे जासें रति करे सो गनिका के परिमान है ॥ पद अर्थ की
आवृत्ति होय सो तीसरी दीपका वृत्ति जानो ॥ १२४॥ **अथ
गनिक तृतीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा**
धन दाय की बात सुनि श्रवन तृप्त हो जात ॥ घर आवत ल
खि नयन मन तृप्त होत हर्षात ॥ १२५॥ **टीका ॥** धन देवा
वाला की बात सुनि के श्रवन तृप्त हो जावे हैं घर आवता देखि
के नेत्र मन हर्षावें है यहां धन दायक सें हर्षावा तें गनिका है
और तृप्त तृप्त पदवी एक है॥ अर्थ वी एक है यातें तीसरी दीप
का वृत्ति है॥१२५॥ **अथ अन्य नायिका उदाहरन ॥**

द्वितीय दीपका वृत्ति

टीका ॥ मुग्धादिक चिह तीन जे स्वकीया परकीयाह ॥ सा-
मान्या मैं होत ये तीन नायिका चाह ॥१२६॥ चौपाई ॥
अन्य संभोग दुःखिता जानौं ॥ पुनि वक्रोक्ति गर्विता मानौं ॥
फक्यौं मान वती उर आनौं ॥ तीन नायिका ये सब जानौं ॥
१२७॥ अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति वस्तूप-
मा लक्षण ॥ दोहा ॥ निज नायक सौं आन तिय रमी सो
न मन माहि ॥ अन्य सुरत दुखिता कही दुखित होय लखि
ताहि ॥१२८॥ टीका ॥ अपना नायक सौं और स्त्री कौं रमी
जान वाके मन मैं दुखित होय सो अन्य सुरत दुःखिता ना-
यिका है ॥१२८॥ दोहा ॥ उपमानरु उपमेय जुग वाक्य धर्म
एक होय ॥ वरनत प्रति वस्तूपमा भिन्न भिन्न पद जोय ॥१२९॥
टीका ॥ उपमान उपमेय दोनूं वाक्यन को एक धर्म होय तासौं
प्रति वस्तूपमा कहै है न्यारा न्यारा पद देखिये ॥१२९॥
अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति वस्तूपमा उदा-
हरण ॥ दोहा ॥ विथुले भूषन वसन को सौतिन मोहि सुहा-
॥ अधिक तौन की हारि वर कैसे हू नाहि भात ॥१३०॥ टीका
कस्त्र ऊपा भूषन वसन की सौति मोको नहीं सुहावै ॥ अ-
॥ तौन की सुंदर हार कैसे भी नहीं भावे यहां सौति के सुरत
चिन्ह देख्या यातैं अन्य संभोग दुःखिता नायिका है और पू-
र्वार्द्ध मैं उपमेय वाक्य है उत्तरार्द्ध मैं उपमान वाक्य है ॥ तिन
मे न सुहात नहीं भात धर्म एक है पद न्यारे न्यारे हैं यातैं
प्रति वस्तूपमा है ॥१३०॥ अथ अन्य ॥ गर्विता ॥
दोहा ॥ मस्तुति कीने इन्दजन रीझे कबहुन कोय ॥ औस
वाले नर मनहि लोह समाना होय ॥१३१॥ आस्तुति हो
कि पुनि पुनही होय वे वस्ती ॥ होयाहि प्रति वस्तूपमा है

ष्टांत तुवे धर्म्म ॥२३२॥ अथ भूथरा चंद्रिकावे धर्म्म प्रति वस्तुपमा उदाहरन ॥ दोहा ॥ बुधही जानत बुधन को परम परीश्रम ताहि ॥ प्रबल प्रसव की पीर को बंध्या जाने नाहिं ॥२३३॥ टीका ॥ बुधन का घरा परीश्रम को पढ्यो ऊगो पंडित ही जाने है ॥ प्रबल जो संतान हो वाको पीड़ा है ताकों बाँझ स्त्री नहीं जाने ॥ यहाँ पूर्वार्द्ध मैं जाने उत्तरार्द्ध मैं नहीं जाने यह न्यारो धर्म है यातें वे धर्म प्रति वस्तूपमा है ॥२३३॥ दोहा ॥ गुणी वंश भव हू मनुज पुजे सुसंगति पाय ॥ तुंबी बिन जग मान नहिं बीणा दंड लहाय ॥२३४॥ टीका ॥ गुणवान बंश मैं भी ऊपयो आदमी संगति पाकरि के पुजे ॥ तुंबान बिना जगत मैं बीणा को दंड आदर नहीं पावे ॥ यहाँ पुजे और मान नहीं पावे यह बिरुद्ध धर्म है यातें वे धर्म्म प्रति वस्तूपमा है ॥२३४॥ अथ गर्विता भेद ॥ दोहा ॥ प्रेम गर्विता एक है रूप गर्विता होय ॥ निज रूप रु पति रूप को गर्व करे तें होय ॥२३५॥ षट तीन है गुन गर्विता निज पति विद्या बुद्धि ॥ पति सूरत्व उदारता आनि लेत मन शुद्धि ॥२३६॥ होय भाँति कुल गर्विता निजकुल पिय कुल गर्व ॥ कोरे कहे वको ति कारि हैं ग्यारह भेद सब ॥२३७॥ अथ प्रेम गर्विता दृष्टांत लक्षण ॥ दोहा ॥ गर्व करे पति प्रेम को प्रेम गर्विता गाय ॥ होय बिंब प्रति बिंब ते दृष्टांत सु दरसाय ॥२३८॥ टीका ॥ पति का प्रेम को गर्व करे सो प्रेम गर्विता गावे ॥ बिंब प्रति बिंब करि के होय सो दृष्टांत दरसावे है ॥२३८॥ अथ प्रेम गर्विता दृष्टांत उदाहरन ॥ दोहा ॥ सजनी पि-

च को प्रीति ज्ञाते मोहिं निरंतर भ्रात॥ जैसे शरद मयंक की मन की जोन्ह सुहात॥ २३८॥ **टीका**॥ हे सजनी पिय की अत्यंत प्रीति मोको निरंतर भावे है॥ जैसे सर्द का चंद्रमा की चाँदनी मन कौं सुहावे है- यहाँ पिय की प्रीति बहुत भावे है याते प्रेम गर्विता नायिका है- और नायक की प्रीति बिंब है चंद्रमा की चाँदनी प्रति बिंब है॥ याते दृष्टांत अलंकार है॥ २३९॥ **नीति चंद्र**॥ दोहा॥ सब जग के व्यवहार की नीति बिना थित नाहिं भोजन बिने प्राणीन की ज्यौं तनु थित नहिं आहि॥ २४०॥ **टीका**॥ सम्पूर्ण संसार का व्यवहार की नीति बिना थिति न हो॥ जैसे भोजन बिना प्राणीन का तनु की थिति नहीं॥ यहाँ नीति और व्यवहार की थिति बिंब है भोजन और प्राणीन के तनु थिति प्रति बिंब है॥ याते दृष्टांत अलंकार है॥ २४०॥ अथ

भूषण चंद्रिका वै धर्म्य दृष्टांत उदाहरन॥

दोहा॥ गर्व स सुख मन करत तुव अरि मन सकल नसात॥ जब लौं रवि को उदय नाहिं तब लौं तम ठहरात॥ २४१॥ **टीका** तेरे गर्व के सामने मन करता ही संपूर्ण बैरी नाश कौं प्राप्त होवे है॥ जब ताईं सूरज को उदय नहीं है तब ताईं तम ठहरावे है यहाँ नशावो ठहरावो विरुद्ध धर्म है याते वै धर्म्य दृष्टांत है॥ २४१॥ **अथ निज रूप गर्विता निदर्शना लक्षण॥**

दोहा॥ गर्व करै जब रूप को रूप गर्विता सोय॥ जुग वाक्यन की एकता निदर्शना सो होय॥ २४२॥ **टीका**॥ जब रूप को गर्व करै सो रूप गर्विता नायिका है दोनू वाक्यन की एकता होय सो निदर्शना अलंकार है॥ २४२॥ अथ निज रूप **गर्विता निदर्शना उदाहरन**॥ **दोहा**॥ जो मधुराई सुभगता राजत मो मुख माहिं॥ खेरी अली मयंक मैं ...

२४३॥ **टीका** ॥ जो मधुरता और सुभगता मेरा मुख में राजे है अरी सखी चंद्रमा में यही निर्मलता है ॥ यहां सुंदरता को अभिमान है ॥ यातें रूप गर्विता नायिका है और सुभगता मधुराई है सोई चंद्रमा में निर्मलता है यह दोनू वाक्यन की एकता है यातें निदर्शना अलंकार है ॥ २४३ ॥ **अथ द्वितीय निदर्शना लक्षण ॥ दोहा ॥** वृत्ति पदारथ की जहां और ठौर ठहराव ॥ यह निदर्शनो दूसरी कवि गुलाब मन भाव ॥ २४४ ॥ **टीका** ॥ जहां पदार्थ की वृत्ति और ठौर ठहरावे यह दूसरी निदर्शना गुलाब कवि का मन में भाव है अर्थात् पदार्थ वृत्ति नाम एक वस्तु की लीला गुन धर्म की है २४४ ॥ **अथ पिय रूप गर्विता द्वितीय निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥** पिय चष खंजन चरित गहि मन रंजन करि देत ॥ बचन पियूष बिलास लहि काहि मोल नहि लेत ॥ २४५ ॥ **टीका** ॥ पीतम का चष है सो खंजन का चरित गहि करि के मन कों राजी करि दे हैं ॥ पिय का बचन अमृत का बिलास कों प्राप्त हो करिके कौन कों मोल नही ले ॥ यहां पिय का रूप को गर्व है ॥ यातें पिय रूप गर्विता नायिका है ॥ और खंजन की लीला नैनन ने लीनी अमृत का गुन बैनन नें लीना यातें दूसरी निदर्शना है ॥ २४५ ॥ **अथ तृतीय निदर्शना लक्षण ॥ दोहा ॥** क्रिया असत सत करि करे औरन कों उपदेश ॥ तीजो द्विविधि निदर्शना बर्नत सकल बुधेश ॥ २४६ ॥ **टीका** ॥ असत सत क्रिया करि के औरन कों उपदेश करें सो तीसरी दो प्रकार की निदर्शना संपूर्ण बुधन के ईश बर्नते हें ॥ २४६ ॥ **अथ भूषण चंद्रिका नायिका रहित असत्य निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥** राज विरोधी नशत है

यों जग कौं दरसात॥ चंद उदय सैं तम निकर छिन छिन छीजत जात॥१४४॥ टीका॥ राज का विरोधीन से है॥ ऐसे जगत कौं दरसातो ज्यो चंद्रमा का उदय सैं तम को समूह छिन छिन मैं छीजतो जाय है यहां तम छीजिवो असत किरिया है यातें असत्यं निदर्शना है॥१४४॥ अथ निज गुन सांकेतास दर्शं निदर्शना उदाहरन॥ दोहा॥ निज गुन बस कौं पिय कैं सौतिन शिक्षा देत॥ सब ही पिय बस करन छिन सीखो गुन चित चेत॥१४५॥ टीका॥ अपना गुनसैं पीतम कौं वस कौर के सौतिन कौं शिक्षा द्यो है सब ही पीतम का वस कर वाके वास्ते चित का चेत सैं गुन सीखो यहां गुन सौं मैं पीतम कौं वस करौ हौं ऐसैं कहे वातें निज गुन गर्विता नायका है और गुन जो सत अर्थ तासौं सौतिन कौं शिक्षा दीनी यातें सत्यं निदर्शना अलंकार है॥१४५॥ अथ मान वती व्यतिरेक लक्षण॥ दोहा॥ अपर तिया के दरस तें नाम कहे तैं जा य॥ संगमादि करि मान सैं मानवती तिय होय॥१४६॥ टीका और तिया के दर्शन ते नाम कहवा ते ऐसा संगमादिक करि कै मान सैं मान वती नायका होय है॥१४६॥ दोहा॥ उपमान रु उपमेय मैं पै लखत॥ व्यतिरेक॥ अधिक न्यून सम भाव करि ताको त्रिविधि विवेक॥१४७॥ टीका॥ उपमान उपमेय मैं विशेषता होय सो व्यतिरेक अलंकार है॥ अधिक न्यून सम भाव करि कै ताकै तीन प्रकार को ज्ञान है॥१४८॥ अथ मान तिया संगिनी अधिक व्यतिरेक उदाहरन॥ दोहा॥ लखि तिया चितवति रिस भरी चितवे चंचल भाय॥ लख खंजन औ मीन की लाली अति छवि छाय॥१४९॥ टीका॥ पिय की चितवनी औरन के दिस रिस भरी चंचल भाय सैं चितवै॥

तब खंजन से दृगन में लाली अत्यंत छबि सैं छावे है यहाँ पिय की बीनती तैं रिस की भरी अई आंखें है याते स्वकीया मानिनी है ॥ और नेत्र उपमेय में लाली सैं घणी छबि छाई याते अधिक व्यतिरेक है ॥ १४८ ॥

अथ परकीया मानिनी न्यून व्यतिरेक उदाहरन

दोहा ॥ सापराध लखि पियहि तिय जब दृग देत नवाय ॥ तब खंजन से चखन मैं चंचलता न रहाय ॥ १४९

टीका ॥ तिय है सो पिय कौं अपराध सहित देखिके जब दृगन कौं नवा देहै तब खंजन से नैनन मैं चंचलता नहीं रहे ॥ यहाँ पीतम कौं अपराध सहित देखि के दृगन कौं नवावे है ॥ याते परकीया मानिनी है और नैनन मैं चंचलता नहीं यह न्यूनता है याते न्यून व्यतिरेक है ॥ १४९ ॥ **अथ गनिका मानिनी सम व्यतिरेक उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ सागस लखि धन दानि कौं मौन गहे मन मारि ॥ तव शशि सो मुख बाल को होय श्यामता धारि ॥ १५० ॥ **टीका** ॥ धन दानी कौं अपराध सहित देखि के मन कौं मारि के मौन कौं गहे ॥ तब चद्रमा शशी सो बाल को मुख श्यामता धारि के होय यहाँ धन दानी कौं देखि के मौन गहे है याते गनिका मानिनी ॥ और शशि के मुख के समता है ॥ याते सम व्यतिरेक अलंकार है ॥ १५० ॥ **अथ अष्ट विद्धा नायिका बरनना** ॥ **दोहा** ॥ प्रोषित पतिका खंडिता कलहंतरिता जानि ॥ विप्रलब्ध उत्कंठिता वासक सज्जा मानि ॥ १५१ ॥ रु स्वाधीन पतिका अपर अभिसारिका निहारि ॥ नवम प्रवत्स्यत्प्रेयसी कही कोविन निधारि ॥

१५२॥ चौपाई ॥ दशम आगमिष्यत पतिका कहि॥ एकादश आगत पतिका कहि॥ पति स्वाधीना द्वादश नामा॥ मैं वर्नी लखि ग्रंथ ललामा॥ १५३॥ अथ प्रोषित पतिका लक्षण॥ दोहा॥ गये पीय परदेश मे विरह विकल जो होय॥ सो है प्रोषित भर्तृका दशौं दशा जुत जोय॥ १५४॥ दश दशा नाम॥ दो॰ अभिलाष रु चिंता स्मरन गुन कथन रु उद्वेग॥ जड़ताव्याधि प्रलाप उन्माद मरन जुत वेग॥ १५५॥ अथ मुग्धा प्रोषित पतिका लक्षण॥ दोहा॥ ज्यौं पंचक मुग्धा दि को प्रथम लक्षण धारि॥ बर बर्नन है साथ करि सो सहोक्ति निर्धारि॥ १५६॥ टीका॥ यहां मुग्धा मध्या प्रौढा परकीया सामान्या को पहिलो लक्षण धारो॥ साथ शब्द करि के सुन्दर बर्नन होय सो सहोक्ति निर्धारो १५६॥ अथ प्रोषित पतिका सहोक्ति उदाहरन॥ दोहा॥ कछु दुवराई लखि परी पिय वियोग की पीर दुवराई संग सेतता छाई सकल शरीर॥ १५७॥ टीका थोरी सी दुवराई जानि परी पीतम का वियोग की पीड़ा से दुवराई के साथ सेतता सम्पूर्ण शरीर में छाई॥ इहां थोड़ी दुवराई सैं मुग्धा प्रोषित पतिका है॥ और दुवराई के साथ सेतता बर्नी यातें सहोक्ति है॥ १५७॥ अथ विनोक्ति लक्षण॥ दोहा॥ सो विनोक्ति प्रस्तुत जहां होवे कछुक विन हीन॥ द्वितिय विनोक्ति कछू बिना पावै सोभ नवीन॥ १५८॥ टीका॥ जहां प्रस्तुत कछु बिना हीन होय सो विनोक्ति है कछु बिना नवीन शोभा पावे सो दूसरी विनोक्ति है॥ १५८॥

अथ मध्या प्रोषित पतिका प्रथम विनोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ बिरहा नल रूल जर निमियरारवी री कि प्रवीन ॥ तउ जानी आलीन ने बिन लाली छबि छीन ॥ २५९ ॥ टीका ॥ बिरहा नल को रूलकी जरनि प्रवीन नेजी व मैं रोके राखी ॥ तौभी सखीन नने लाली बिना छीन छबि जानी ॥ यहां बिरह की रूर नायिका ने रोकी सखीन ने जानी याते मध्या प्रोषित पतिका नायिका है और ललाई बिन छीन भई याते पहिली विनोक्ति है ॥ २५९ ॥ अथ प्रोषित पतिका द्वितीय विनोक्ति उदाहरन ॥ सब तनु लाली दुरि गई जारि बिरहानल ताप ॥ त-मने मोहत आलिन को पीरी प्रभा अमाप ॥ २६० ॥ टीका ॥ तन में लाली छिपि गई बिरहानल की ताप से जरि के तोभी अलीन को मन मोहे है अमाप पीरी प्रभा है सो यहां पूरा बिरह सें प्रौढ़ा प्रोषित पतिका नायिका है लाली बिना पीरी प्रभा ने अधिक शोभा पाई याते दूसरी है ॥ २६० ॥ अथ समा शोक्ति परि कर लक्ष ॥ दोहा ॥ समा शोक्ति प्रस्तुत विषे अप्रस्तु फुरि जाय कढै विशेषणाहि सो परि कर ठहराय ॥ २६० ॥ टी ॥ प्रस्तुत पद के विषै अप्रस्तुत फुरै सो समा शोक्ति अ है विशेषण पद सें आशय कढै सो परिकर अलंका ठहरावो है ॥ २६१ ॥ अथ परकीया प्रोषित पतिका शोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उद्धव देखहु अलिय है कपटी वे पीर ॥ तजि वर बिमला मालती सेवत कला कनीर ॥ २६२ ॥ टीका ॥ हे उद्धव देखो यह अलि कपटी है वे पीर है श्रेष्ठ

वालो को सेवे है ॥ यहाँ कपटी वे पी.र कह वासों परकीया प्रोषित पतिका नायिका है॥ और भव रोमालती कनीर की-कली प्रासंगिक हैं याते सम शोक्ति अलंकार है ॥ २६२॥ अथ गनिका प्रोषित पतिका परि कर उदाहरन दोहा ॥ पाती प्रीतम धनद की बांचित प्रिया प्रवीन ॥ लखि तरिव हिम कर बदन तें सखि गन शीतल कीन ॥ २६३ ॥ टीका ॥ प्रीतम धनद की पाती प्रवीन प्रिया ने बाचतां हिम-कर बदन सें देखि देखि के सखीन को गन शीतल कखो यहाँ धनद की पाती से गनिका प्रोषित पतिका नायिका है और हिम कर विशेषण पद सें शीतल करवो आशय है याते परि कर अलंकार है ॥ २६३॥ अथ खंडिता लछन दोहा ॥ अन्य तिया संभोग के चिन्ह धारि निज गात ॥ हो य खंडिता जासु के आवे पिय परभात ॥ २६४॥ चिंता तृष्णी भाव पुनि अश्रु पात संताप॥ चेष्टा हैं निश्वास अरु आदि अस्कुटालाप ॥ २६५॥ अथ परिकरां कुर श्लेस लछ ना ॥ दोहा ॥ आशय सहित विशेष्य पद परि कर अंकुर होय॥ बहुत अर्थ पद सें कहे श्लेस अलंकृति होय॥ २६६ टीका ॥ विशेष्य पद आशय सहित होय सो परिकर अं कुर अलंकार है॥ पद सें बहुत अर्थ कहे सो श्लेष अ र होय है ॥ २६६॥ अथ मुग्धा खंडिता परिकुरांकु र उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात आय निशि वास को तायो धाम॥ भाल लाल लखि लाल को रही नाय शिर वाम। २६७॥ टीका ॥ सबेरे ही आ कोर के रात्रि में वस वाको र धाम बतायो लाल को भाल लाल देखि के वाम है सो

[illegible]

नायिका है और भाल विशेष्य पद में सापराध पराो आशय है ॥ याते परि करांकुर अलंकार है ॥ २६७ ॥ **दोहा** ॥ श्लेषसु वर्ण्य रु वर्ण्य करि॰ वर्ण्य अवर्ण्य विजोय ॥ तृतिय अव र्ण्य अवर्ण्य करि कवि गुलाब मत होय ॥ २६८ ॥ **टीका** श्लेष अलंकार है सो उपमेय उपमेय करि के उपमेय उपमा न करि के और तीसरा उपमान उपमान करि के गुलाब क विका मत में होय है ॥ २६८ ॥ **अथ मध्या खंडिता व र्ण्य वर्ण्य श्लेष ॥ दोहा ॥** दंपति कंपत बिरस बस- बोलत करत न लाग ॥ इक टक चितवत चलत नहि भरे खरे दृग राग ॥ २६९ ॥ **टीका** ॥ दंपति जो नायिका नायक है सो बिरस के वस में काँपते हैं ॥ बिरस को अर्थ नायिका में विना रस नायक में विशेष रस बोले नहीं मिलाप करे नहीं इक टक देखे है चले नही नेत्र खरे राग से भरे हैं राग नाम अस और रंग को है ॥ यहाँ नायक कौं सदोष देखि काम से भई लाज से बोलि नही सकी याते मध्या खंडिता है और दोनू उपमेय हैं बिरस और राग पद के दोय अर्थ हैं याते वर्ण्य वर्ण्य श्लेष है ॥ २६९ ॥ **अथ व- श्लेष ॥ दोहा ॥** द्विज कपि हित कर शील घर अरि हारक रण धीर ॥ पालक दीन अनंत के गौर रघुबीर ॥ २७० ॥ **टीका** ॥ गौर रघुबीर कैसे हैं ब्राह्मण कपि भगवान से हित करे है शील के घर अरिन के हारक हैं रण में धीर हैं घरा गरीवन के हैं ॥ श्याम रघुबीर कैसे हैं ॥ द्विज पक्षी जटायु क वानरान के हित कर हैं अनंत शेषावतार लक्ष्मण जो पालक हैं ॥ गौर उपमेय श्याम रघुबीर

उपमान हैं याते वराया वरार्थ श्लेष है ॥ १७० ॥ कपिर्नाग

त्स्ट के सारवा मृगेच मधुसूदने ॥ इति मेदिनी ॥ दो॰

सुखद मदन दर वीर्य घर राज राज हित धीर ॥ उपमा ज

लज शुचि भूति धर गिरिजा पति रघुवीर ॥ १७१ ॥ टीका

गिरिजा पति कैसे हैं सुख स्वर्ग का दाता है मदन कामदे

व का विदीर्ण करवा वाला है ॥ वीर्य जो शुक्र प्रभाव तेज

सामर्थ्य इनके घर हैं ॥ राज राज कुबेर सों हित हैं धीर धै

र्ज वान है ॥ उमा पार्बती जलज चन्द्रमा ॥ शुचि अग्नि ॥ भू

ति भस्म ॥ इन कों धारण करवा वाला है ॥ रघुबीर कैसे हैं ॥

सुख आनंद का दाता है मद नही है ॥ दर भय नहीं है ॥ वी

र्य जो तेज सामर्थ्य के घर है ॥ राजान के राजा जो सार्व भौम

जिनसें हित है ॥ धीर पंडित और धीरज वान है उमा जो की

र्त्ति कांति ॥ जलज मोती ॥ शुचि शृंगार शुद्ध मंत्री ॥ भूति संप

ति ॥ इन कों धारन करने वाले हैं ॥ यहां रघुवीर उपमेय हैं

गिरिजा पति उपमान हैं ॥ याते वराया वरार्थ श्लेष हैं ॥ १७२

सुखं शर्म्मणिाना केच ॥ वीर्य्यं शुक्रे प्रभावेच ॥ तेजः साम-

र्थ्य यो रपि ॥ राज राजः कुवेरे पि सार्व भौमे सुधा करे ॥ धीरो

धैर्य्या न्विते स्वैरे बुधे क्लीवंतु कुंकुमे ॥ उमा ॥ लसी हेम वती

हरिद्रा कीर्त्ति कान्ति सु ॥ शुचि ग्रीष्माग्नि शृङ्गारे प्यासा दे

शुद्ध मंत्रिणि ॥ इति मेदिनी ॥ चिंता तंत्रे अवरार्य

अवरार्य श्लेष ॥ दोहा ॥ वाहक वृष दाहक अवृष अ

ति अन चाहक काम ॥ अति चाहक वन चरन के सुमरे राम

न वास ॥ १७२ ॥ टीका ॥ राम कैसे हैं धर्म के चलावे वा

ले हैं ॥ अधर्म के दाहक हैं कामना के अत्यंत अन चाहक

हैं ॥ वानरान के अति चाहक हैं ॥ वाम कैसे हैं बैल के वा-

हक हैं। अ कल्यान के दायक हैं ॥ कामदेव के अत्यंत अ न चाहक हैं ॥ भूत पिशाचादिक के अति चाहक हैं ॥ अ से राम नाम मैने नहीं सुमरे ॥ यहां राम और शिव उपमान है याते अवरार्य अवरार्य श्लेष है ॥ १७२ ॥ अथ अप्रस्तुत प्रशंसा लक्षण ॥ दोहा ॥ जहँ प्रस्तुत के कारणै अप्रस्तुतहि प्रशंस ॥ होय तहां भूषन यहै अ प्रस्तुत प्रसंस ॥ १७३ ॥ टीका ॥ जहाँ प्रस्तुत के वास्ते अप्रस्तुत प्रसंसे तहाँ अप्रस्तुत प्रशंशा अलंकार होय है ॥ १७३ ॥ वर्णन अप्रस्तुतहि माँहि जहँ प्रस्तुत निकसै। संबंध हि माँहि अलंकृति यह निति विकसै ॥ समस्व के माँहि जहाँ सम रूप जु निकरै ॥ सो सारूप्य निबंध नाँहि भिद पहिलो उघरै ॥ निकसै विशेष सामान्य मैं सामान्य निबंधना ॥ सामान्य विशेषहि मैं कहै सु है निबंधना ॥ १७४ ॥ दोहा ॥ कारण मैं कारज के हेतु निबंधन सोय ॥ कारज मैं कारण कहे काय निबंध होय ॥ १७५ ॥ अथ प्रौढा खंडिता सारूप्य नि उदाहरन ॥ दोहा ॥ बक धरि धीरज कपट क जो बनि रहे मराल ॥ उघरै अंत गुलाब कबि अपनी बो चाल ॥ १७६ ॥ टीका ॥ बक है सो धीरज धरि करि कपट करिकै जो मराल बनिकै रहे है गुलाब कबि कहै अंत मैं उघडे अपनी बोली चाल सैं। यहां सदोष ना सौं नायिका चतुराई करि कहै है याते प्रौढा खंडिता । और बक हंस बरण वामैं समान रूप मूरख का पंडि बरण वो निकसे है। याते सारूप्य निबंधना है। १७६

परकीया खंडिता सामान्य निबंधना॥

उदाहरन ॥ दोहा ॥ सीख न माने गुरुन की अहितहि हित मन मानि ॥ सो पछितावै तासु फल ललन भये हित हानि ॥ २७६ ॥ टीका ॥ गुरुन की सीख नहीं माने मनमें अहित कों हित मानि करि के सीता का फल में पछितावे है! ललन हित की हानि भयापे यहाँ नायक कों सदोष देखि के नायिका कहे है ॥ जैसे घर कान की सीख नहीमानी तो दुख पाई याते परकीया खंडिता नायिका है और पहिले सामान्य वचन सब पे है फेरि पछितावो एक नायक को ही निकसे है यह विशेष है याते सामान्य निबंधना है ॥ २७७॥ अथ गनिका खंडिता विशेष निबंधना उदाहरन ॥ दोहा ॥ लालन सुर तरु धनद हू अनहित कारी होय ॥ तिन हू को आदर न है यों मानत बुध लोय ॥ २७८॥ टीका ॥ है! लालन सुर तरु और कुबेर भी अनहितकारी होय तिनको भी आदर नही होय ऐसे बुध लोग माने है ॥ यहाँ नायक कों सदोष देखि के धनवान की निंदा करे है याते गनिका खंडिता नायिका है और कल्प वृक्ष कुबेर को बरनन है यह विशेष है फेरि सब धनवानन पे लगे है याते विशेष निबंधना है ॥ २७८॥ अथ अज्ञात योवना कारन निबंधना ॥ दोहा ॥ तोनें राधा मुख रचन विधि ने सार तमाम ॥ तिहि सग होय अकाश यह शशि में दीखत स्याम ॥ २७९ ॥ टीका ॥ राधा को मुख रच वाको विधि ने तमाम सार लियो ताका मग में होकरि के यह चंद्रमा में कारो आकाश दीखे है यहाँ राधा को मुख बना वाका कारन को बरनन है ॥ तोमें सुख कारजकी बड़ाई

निकसे है याते कारन निबंधना है ॥ १७६ ॥ **अथ कार्य निबंधना उदाहरन ॥ दोहा ॥** पुव पद नख की द्युति कछुक गइ धोवन जल साथ ॥ तिहि कन मिलि दधि मथन में चंद भयो है नाथ ॥ १८० ॥ **टीका ॥** तुम्हारा पद का नख की कछुक द्युति धोवन जल के साथ गई ताका कनका मिलि कीं के दधि का मथवा में है नाथ चन्द्रमा वन्यो है ॥ यहाँ चंद्रमा कारज को बनन में नख द्युति कारन की बड़ाई है याते कार्य निवंधना है ॥ १८० ॥ **अथ कलहाँ तरिता लछन ॥ दोहा ॥** पिय आये मानैं नहीं फिरि पाछे पछिताय ॥ कलहाँ तरिता नायिका कही कविन सुख पाय ॥ १८१ ॥ भ्रांति और संताप पुनि संमोहरु निश्वास ॥ ज्वर रु प्रलापादिक सकल याकी चेष्टा भास ॥ १८२ ॥ **अथ प्रस्तुतांकुर लछन ॥ दोहा ॥** प्रस्तुत वर्णन करि अपर प्रस्तुत द्योतन होय ॥ तहाँ प्रस्तुतांकुर कहत कवि गुलाब बुध लोय १८३ ॥ **टीका ॥** प्रस्तुत को बर्णन करि के प्रस्तुत को प्रकास होय गुलाब कवि कहे हैं बुध लोग है सो तहाँ प्रस्तुतांकुर अलंकार कहे है १८४ ॥ **अथ मुग्धा कलहाँ तरिता प्रस्तुतांकुर उदाहरन ॥ दोहा ॥** अली न रोके मालती अली अनत जब जाय ॥ ना पाछे मन मानि दुख कली काहि कुम्हिलाय ॥ १८५ ॥ **टीका ॥** हे अली अली और ठौर जावे जब मालती नहीं रोके ताके पाछे मन में दुख मानि करि के कली क्यों कुम्हिलावे ॥ यहाँ नायक गये पै पछिताती नायका सौं सखी ने कली कही याते मुग्धा कलहाँ तरिता नायिका है ॥ और कली सी विद्यमान है ता प्रस्तुत में नायिका प्रस्तुत निकसे है याते प्रस्तुतांकुर अलंकार है ॥ १८६

अथ पर्यायोक्त लक्षण ॥ दोहा ॥ जहँ रचना सौं बात सौं पर्यायोक्त प्रकार ॥ जहँ मिस कोर कारज करै द्वितिय भेद निर्धार ॥ १८६॥ टीका ॥ जहाँ रचना सौं बात होय सो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ जहाँ मिस करि के कारज सधे सो दूसरो भेद है निर्धार निश्चय ॥ १८६॥ अथ मध्या कलहांतरिता उदाहरन ॥ दोहा ॥ नम्बर दर्शन लाख लघु आदि अंक को भाव ॥ सादर राख्यो ते नसो भली आज नहि आव ॥ १८७॥ टीका ॥ नंबर दर्शन लाख लघु इन च्यारौन का आदि अंक को भाव तैने आदर सहित नहीं राख्यो सो है भली आज नहीं आवे ॥ यहाँ नायिका नें नायक को बुलावो चाह्यो यातें मध्या कलहांतरिता नायका है और नंबर को नं। दर्शन को द। लाख को ला। लघु को ल। या में नंदलाल नामनिकस्यो यह रचना सौं बात कही यातै पर्यायोक्त अलंकार है ॥ १८७॥ अथ प्रौढा कलहांतरिता द्वितीय पर्यायोक्त उदाहरन ॥ दोहा ॥ जब नहि मान्यौ मोर मत क्यों अब नचत निकास ॥ मो शिरभर घात शीतसे लै औ हों घन श्याम ॥ १८८॥ टीका ॥ जब मेरो मत नही मान्यो अब बिना काम क्यों तचे है मेरो शिर भरके है आराम भया पै घनश्याम कौं लियाऊंगी यहाँ तब वासों और सखी को कह्यो नही मानि वासों प्रौढा कलहांतरिता भई क वाको मिस कोर के नहीं जावो कारज साध्यो यातें दूसरो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ १८८॥ अथ व्याज स्तुति लक्षण ॥ दोहा ॥ इक की निंदा स्तुति मिस स्तुति निंदा जहं जोय ॥ पर की निंदा स्तुति सें पर स्तुति निंदा होय ॥ १८६॥ टीका ॥ जहां एक की निंदा और

ना वाको कारन ...

अस्तुति को मिस करि के वाही की अस्तुति निंदा देखो पैला की निंदा अस्तुति से पैला की अस्तुति निंदा होवे- १८८॥ **दोहा**॥ पर की अस्तुति से जवै पर की अस्तुति साज॥ व्याज स्तुति यौं पांच बिधि कहत सकल कविरा ज॥१८०॥ **टीका**॥ पैला की अस्तुति से जब पैला की अस्तुति साजे ऐसैं व्याज अस्तुति पाँच प्रकार सें सम्पूर्ण कबिराज कहे हे॥१८०॥ **अथ वाही की निंदा सें वाही की स्तुति॥ दोहा**॥ रंक सुदामादिकन के भरि दीने भंडार॥ कंसादिक कीने निधन हे हरि बिनहि बिचार॥ **टीका**॥ हे हरि सुदामादिक कंगालन कों घणो धन दीनो कंसादिक कों नाश कर्यो बिना ही बिचार यहाँ कृष्ण की निंदा में स्तुति हे याते प्रथम व्याज स्तुति हे॥१८१॥ **अथ परकीया कलहाँ तरिता वाही की स्तुति सें वाही की निंदा दोहा**॥ तेरी सुघराई सखी मो पे कही न जाय॥ पर भय भरि बोलो न तब अब कर मलि पछिताय॥१८२॥ **टीका** हे सखी तेरी चतुराई मो पे कही नही जाय॥ तब पेला का भय में भरि करि के बोली नही अब हाथ मसलि करि के पछितावे हे॥ यहाँ पर भय सें परकीया कलहाँतरिता हे और सुघराई स्तुति में सरस्वता निंदा निकसे हे याते द्वितीय व्याज स्तुति हे॥१८२॥ **और की निंदा सें और की स्तुति॥ दोहा**॥ दश शिर कुमति कराल ने कर्यो राम अपकार॥ तज्यो विभीषन ताहि सो कीनों काम उदार॥१८३॥ **टीका**॥ कराल कुमति वालो दश शिर हे ऊने राम को अपकार कर्यो॥ ताको विभीषन ने तज्यो सो बडो काम कर्यो यहाँ रावन की निंदा से विभीषन की अस्तुति हे याते तीस

ती व्याज स्तुति है ॥ २६३ ॥ और की स्तुति सें
और की निंदा ॥ दोहा ॥ धन्य विभीषन राम की जो
यो सरन सुजान ॥ धिक है जाने अनुज जस दियो निकासि
निदान ॥ २६४ ॥ टीका ॥ विभीषन कौं धन्य है सुजान रा
म के सरनैं आयो ताकौं धिक्कार है जानें ऐसा भाई कौं नि
श्चय निकासि दियो यहाँ विभीषन की अस्तुति सें रावण
की निंदा है यातें चौथो व्याज अस्तुति है ॥ २६५ ॥ और की
स्तुति सें और की स्तुति ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य है
राधिका पायो पति भगवान ॥ धन्य राधिका मात जिहिं जाई
सुता सुजान ॥ २६५ ॥ टीका ॥ राधिका कौं धन्य है धन्य है
भगवान पति पायो राधिका की माता कौं धन्य है जाने सु
जान सुता जाई यहाँ राधिका की स्तुति सें राधिका की माता
की स्तुति है यातें व्याज अस्तुति को पांचवों भेद है ॥ २६६ ॥
अथ व्याज निंदा लक्षण ॥ दोहा ॥ पर की निन्दा
सें जहाँ पर की निंदा होय ॥ तहाँ व्याज निंदा एकहि भेद कहि
न कवि लोय ॥ २६६ ॥ टीका ॥ जहाँ पेला की निंदा सें पेला
की निंदा होय तहाँ व्याज निंदा को एकही भेद कवि लोग क
हे हैं ॥ २६६ ॥ अथ गनिका कलहाँतरिता व्या
ज निंदा उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुर तरु सम प्रिय तजि
गयो करि बिनती उपचार ॥ भाल मोर तू निंद्य है निंद्य तोहि
धिकार ॥ २६७ ॥ टीका ॥ कल्प वृक्ष की समान प्रीतम हो सो
तजि करि कै गयो बीनती जतन करि को है मेरा भाल तू निंद्य है
और तेरी निंदा करवा वालो निंदा लायक है यहाँ धन वान प्री
त या पै पछितावै है यातें गनिका कलहाँतरिता है और भाल
की निंदा तें ब्रह्मा की निंदा है यातें व्याज निंदा अलंकार है ॥

॥ ताको कारन

१९७॥ अथ विप्रलब्धा लक्षण ॥ दोहा ॥ तिय संकेत निकेत में जाय न देखै पीय ॥ कही विप्रलब्धा यहै दुखित होय अति जीय ॥ १९८ ॥ निर्वेद रु निश्वास पुनि संखिन उराहन मानि ॥ अश्रुपात चितादि ही याकी चेष्टा जानि ॥ १९९ ॥ अथ प्रथम द्वितीयाक्षेप लक्षण ॥ दोहा ॥ आक्षेप सु कहि आपु ही फेरै बात विचारि ॥ कहि बच करै निषेध सो द्वितिया क्षेप निहारि ॥ २०० ॥ टी॰ आपही कह्ह कारि के विचार करि के बात कों फेरै सो प्रथमा क्षेप है ॥ बचन कह्ह कारि के निषेध करै सो दूसरो आक्षेप है ॥ २०० ॥ अथ मुग्धा विप्रलब्धा प्रथमाक्षेप उदाहरन ॥ दोहा ॥ अबही घर चलि कै अली उदय होन दै चंद ॥ यों कहि भोरी भामिनी परी सेज दुति मंद ॥ २०१ ॥ टीका ॥ अबही घर चलि कै अली चंद्रमा को उदय होवा दे ॥ ऐसे कह्ह कारि के भोरी भामिनी है सो मंद दुति सै सेज पै परी ॥ यहां अबही चलि कै चंद्रमा को उदय होवा दे या पराधीन बात सैं मुग्धा विप्रलब्धा नायिका है ॥ और अब ही चलि यों बात कह्ह करि के फेरी चंद्रमा उदय होवा दे याते प्रथमा क्षेप है ॥ २०१ ॥ अथ मध्या विप्रलब्धा उदाहरन ॥ दोहा ॥ आई नहीं सहेट में आली भूली चाल ॥ भाषि बचन कछु कोप करि मौन गही बर बाल ॥ २०२ ॥ टीका ॥ सहेट मैं नहीं आई है आली चाल भूली हौं यों बचन भाषि करि के कछु कोप करि के सुंदर बाल ने मौन गही यहां काम सैं थोड़ो कोप कर्यो और लाज सैं मौन गही याते मध्या विप्रलब्धा नायिका है और सहेट मैं आली कह्ह करि के निषेध कर्यो

याते दूसरो आक्षेप है ॥२०२॥ **अथ तृतीया क्षेप बिरोधा भास लक्षण ॥ दोहा ॥** गुप्त निषेध प्रकाश बिधि तृतिया क्षेप निकास ॥ है न विरोध विरोध सो भास बिरोधा भास ॥२०३॥ **टीका ॥** छिपि वा तो मने करि वो होय जाहर में कर वो होय सो तृतीया क्षेप को निकास है बिरोध तो नहीं होय बिरोध सो भासै सो बिरोधा भास अलंकार है २०३॥ **अथ प्रोढा विप्र लब्धा तृतीया क्षेप उदाहरन ॥ दोहा ॥** आली घर चलि चलतही करि हैं प्रान पयान ॥ पहुंचत ही घर होय गो येरी मोहि मसान ॥२०४॥ **टीका ॥** हे आली घर चलि चलतो ही प्रान पयान करेगा पहुंचत ही येरी मोकों घर मसान होय गो यहाँ उत्कर्ष बचन बोले है याते प्रोढ़ा विप्र लब्धा नायिका है और घर चलि यह बिधि बचन है घर चलती ही मरि जाऊं गी याते मति चलै यह निषेध छिप्यो है याते तीसरो आक्षेप है ॥२०४॥ **अथ पर कीया बिप्र लब्धा बिरोधा भास उदाहरन ॥ दोहा ॥** सास ननद याता न कों आई नींद वाय ॥ अब आली घर गमन की सुधि आयें सुधि जाय ॥२०५॥ **टीका ॥** सास ननद द्यौरानी जिठानी नकों नींद सुवा करि कै आई है आली अब घर चलि वाकी सुधि आया सों शरीर की सुधि जाय है ॥ यहां द्यौरानी जिठानीन कों सुवा करि के आई ऐसे कह वासों परकीया विप्र लब्धा नायिका है ॥ और सुधि आवा से सुधि जावो विरोध सो भासे है विरोध नहीं याते बिरोधाभास अलंकार है ॥२०५॥ **अथ गनिका विप्र लब्धा विरोधा भास उदाहरन ॥ दोहा ॥** आई वर सनवाना वाको कारन ...

रि मैं करि घन आसा धाम॥भई बिहाल निरास लखि घन श्यामन घन श्याम॥२०६॥ टीका॥बरसता जलमै धन की आसा करि के ई धाम में आई विहाल भई निरास भई घन श्याम जो मेघ हे उनको देखि के घन श्याम जो श्री कृष्ण उनकों नहीं देखि के यहां धन की आसा करि के धाम में आई याते गनिका विप्र लब्धा नायिका हे और घन श्याम हे सो घन श्याम नही यह विरोध सो दीख्यो याते विरोधा भास अलंकार हे॥२०६॥ अथ उत्कंठिता लछण॥दोहा॥संकेत स्थल मैं गई पीव न आयो होय॥ताको कारन चित वे उत्का कहिये सोय॥२०७॥जंभा अगराई अरति कंप रुदन संताप॥स्वावस्था कथनादि ये याकी चेष्टा थाप॥२०८॥अथ विभावना लछण॥दोहा॥कारन बिन जह काज व्है तहं विभावना मानि॥लघु कारण ते काज व्है दूजो भेद सुजानि॥२०९॥ टीका॥जहां कारन बिना काज होय तहां विभावना मानो॥छोटो कारण में कारज होय सो दूसरो भेद जानों॥२०९॥ अथ मुग्धा उत्कंठिता विभावना उदाहरन॥दोहा॥पिय ऐहें ऐहें न वा सोचत रहित उमंग॥पिय रानी लाये बिना केसर के सर रंग॥२१०॥ टीका॥पीतम आवे गा अथवा नही आवे गा उमंग रहित सोचतां केशर लगाया विना केशर के रंग सी पीली हुई यहां पीतम आवे गा अथवा नही आवे गा ऐसें उमंग रहित सोचे हे यातें मुग्धा उत्कंठित नायिका हे॥और केसर कारन हे ताका लगाया बिना केसर के रंग पोली होवो कारन भयो याते प्रथम विभावना हे

२१०॥ अथ मध्या उत्कंठिता द्वितीय विभावना
उदाहरन ॥ दोहा ॥ खानि सनेह सकोच की सूनौं सद
न निहारि ॥ भई विकल म्रदु शशि किरनि भई पार उ
र फारि ॥ २११ ॥ टीका ॥ सनेह सकोच की खानि है
सो सूनौं घर देखि कै विकल भई चंद्रमा की कोमल कि
रनि है सो हृदय कौं फाड़ि करि कै पार भई यहाँ सकोच
सनेह की खानि सैं मध्या उत्कंठिता नायिका है ॥ और चं
द्रमा की कोमल किरनि थोड़ा कारण सैं पार होवो बड़ो
कारज भयो यातै दूसरी विभावना है ॥ २११ ॥ अथ तृती
य चतुर्थ विभावना लक्षण ॥ दोहा ॥ कारज पूर
न होय जहँ प्रति बंधक हू होत ॥ चवथ अकारन वस्तु
तैं कारज जै उदोत ॥ २१२ ॥ टीका ॥ जहाँ प्रति बंधक
जो रोकबा वालो है ताकै होता संता वी पूरन कारज होय
सो तीसरी विभावना है ॥ अकारन वस्तु तैं कारज उदोत क
र सो चौथी विभावना है ॥ २१२ ॥ अथ प्रौढा उत्कंठि
ता तृतीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ बरसत
बारि बयार तउ झुरसि गई विन नाह ॥ आये पिय किहिं
हेतु नहिं यौं सोचत चित चाह ॥ २१३ ॥ टीका ॥ बारि
बरसै है बयार चलै है तौभी नाह बिना बालि गई पी
तम कौई वास्तै नही आयो ऐसे चित्त की चाह सैं सो
चै है ॥ यहाँ झुरसि वासैं चित की चाह सैं प्रौढा उत्कं
ठिता नायिका है ॥ और बरसिबो बयार चलिबो रोक
बा वालो है तैभी झुरसिबो पूरन कारज भयो यातैं तीसरी
विभावना है ॥ २१३ ॥ अथ परकीया उत्कंठिता
चतुर्थ विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ मै आई घर

घर काम तजि आये नहिं नंदलाल ॥ यों कहि सोवत कलिन पे बाढे स्वेद विशाल ॥ २१४ ॥ **टीका** ॥ मैं घर को काम तजि करि के आई नंदलाल नहीं आये यों कह करि के फूलन की कलीन पे सोवता घणा स्वेद बढ्या यहां घर को काम तजि वासौं परकीया उत्कंठिता नायिका हे ॥ और फूलन की कली अकारन वस्तु तें पसेव कारज भयो यातें चौथी विभावना हे ॥ २१४ ॥ **अथ पंचम छठी विभावना लक्षण ॥ दोहा ॥** कारज हेतु विरुद्ध ने होय सु पंचम पाव ॥ कारज तें कारन जनम षट विभावना भाव ॥ २१५ ॥ **टीका** ॥ विरुद्ध कारण सें कारज होय सो पंचम विभावना हे ॥ कारज सें कारन को जनम होय सो छठी विभावना को भाव हे २१५ ॥ **अथ परकीया उत्कंठिता पंचम विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥** कुल नारिन भय ताप सहि आई शीतल धाम ॥ ह्यां पिय विन हिमकर अली जारत मोहि निकाम ॥ २१६ ॥ **टीका** ॥ कुल की स्त्रीन को डर और दुख सह करि के सीतल घर में आई हे अली यहां पीतम विना हिमकर चन्द्रमा हे सो मोकों विना काम जलावे हे ॥ यहां कुल नारीन का भय औ ताप सह वासौं परकीया उत्कंठिता नायिका हे और हिमकर सें जलावो विरुद्ध कारज भयो यातें पंचम विभावना हे ॥ २१६ ॥ **अथ गणिका उत्कंठिता तृतीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥** धन दायक आयो नहीं कोंहिं कारन ईहिं याम ॥ यों आपत चपकन तें सरिता बही अमान ॥ २१७ ॥ **टीका** ॥ धन का-

देवा वालो है घर मैं काई कारना सैं नहीं आयो जैसें आपना स्वच्छ भवन सें अज्ञान सरिता वहाँ यहाँ धन को देवा वालो नहीं आयो जैसें कह वासों गनिका उत्कंठिता नायिका है ॥ और सच्चौ कारज सें सो मीर का कारन भयो यातें छठी विभावना है ॥२१७॥ अथ आगतपतिका नायका लक्षण ॥ दोहा ॥ पिय आवन को यह दिवस मेरो औहै आज ॥ वासक सज्जा जानि सो सजे सुरत को साज ॥ २१८ ॥ दूती प्रश्न मनोरथरु चारन दर्शन भास ॥ सामग्री संपादन रु जानि सखी परिहास ॥ २१९ ॥ अथ विशेषो असंभव लक्षण ॥ दोहा ॥ विशेषोक्ति अति हेतु है तऊ काज नहि होय कारज बिन संभावना होय असंभव सोय ॥ २२० ॥ टी० अत्यंत हेतु होय तो भी काज नही होय सो विशेषोक्ति अलंकार है ॥ विना संभावना कारज होय सो असंभव अलंकार है ॥ २२० ॥ अथ मुग्धा वासक सज्जा विशेषोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सोई सोहन सेज पै लोयन मूंदि बिशाल ॥ पिय लख देखन चाहत पै खोले नैन न बाल ॥ २२१ ॥ टीका ॥ सोभाय मान सेज के ऊपर सूती विशाल नेत्रन कों मूंदि करि के पीतम को मुख देख वाकी चाह है तो भी वाल हँसो नेत्रन कों नहीं खोले ॥ यहाँ नैन नहीं खोले यातें मुग्धा वासक सज्जा नायिका है और पीतम की मुख देखिवे की चाह कारन है तो भी देखिवो कारज नही भयो यातें विशेषोक्ति अलंकार है ॥ २२१ ॥ अथ मध्या वासक सज्जा असंभव उदाहरन ॥ दोहा ॥ को जाने हो यह दिवस को

है है आज ॥ सावन तीज उछाह दिन तीज धर सौतिस साज ॥ २२२ ॥ **टीका** ॥ कौन जाने है आज चन्द्र दिन मेरो होय गो सावन में तीज का उछाह का दिन में श्रेष्ठ सौतिन का समाज को तीज करी के यहां काम सें उत्तम हु मान्यो लाज सें सौतिन को श्रेष्ट मानी याते मध्यावासक सज्जा हे और ई काम को हो वो संभव नही हे सो भयो याते असंभव अलंकार है ॥ २२२ ॥ **अथ प्रथम द्वितीय २ असंगति लक्षण ॥ दोहा** ॥ प्रथम असंगति कारण रु कारज न्यारी ठोर ॥ द्वितीय और थलका स कों करे और ही ठोर ॥ २२३ ॥ **टीका** ॥ कारण न्यारी ठोर होय कारज न्यारी ठोर होय सो पहली असंगति हे और थल का काम कों और ठोर करे सो दूसरी असंगति हे २२३ ॥ **अथ प्रौढ़ा वासक सज्जा प्रथम असंगति उदाहरन ॥ दोहा** ॥ सखिन सहित साजत सयन बिमल बनावत वास ॥ देत दान लखि बाल कों थकी सौति श्रम तास ॥ २२४ ॥ **टीका** ॥ सखीन में हित सयन साजता निर्मल वास बनावता बाल को दान देती देखि के ताका श्रम से सौति हे सो थकी। यहां दान देवासें प्रौढ़ा वासक सज्जा नायिका हे और दान को परिश्रम कारन नायिका में हे थकिवो कारज सौतिन में हे याते पहिली असंगति है ॥ २२४ ॥ **अथ परकीया वासक सज्जा द्वितिय असंगति उदाहरन ॥ दोहा** ॥ हरे हरे सीजे सेज वर करि नव सत सिंगार ॥ हाथि हाथ में धरि दियो दियो बयार मकार ॥ २२५ ॥ **टीका** ॥ हरे हरे श्रेष्ट सेज साजि के सोलह सिंगार करि के ॥ हाथि के हा-

य सें दियो पवन में धरि दियो ॥ यहाँ दियो बयार में धरि वासें पर कीया वासक सज्जा नायिका है ॥ और दिया को काम विना पवन की ठौर में धरि वाको है सो पवन की ठौर में धर्यो यातें दूसरी असंगति है ॥२२५॥ अथ तृतीय असंगति प्रथम बिषम लक्षण ॥ दोहा ॥ आन करत आनहि करै तृतिय असंगति जानि ॥ अन मिलते के संग में प्रथम विषम मन मानि २२६॥ टीका ॥ और करतां और करै सो तीसरी असंगति जानों ॥ अन मिलते के संग में मन में प्रथम बिषम मानों २२६॥ अथ गनिका वासक सज्जा तृतीय असंगति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सेज साजि भूषन वसन पहिरि हरषि मन मांहि ॥ नथ पहरत किहिं कारने धरी उतारि उमाहि ॥ २२७ ॥ टीका ॥ सेज साजि के मन में हरषि के भूषन वसन पहिर के नथ पहरता का ई वास्तें उमंग करि के उतारि धरी । यहाँ नथ ले वाके वास्ते उतार धरी यातें गनिका वासक सज्जा है नथ पहरता उतारि धरिबो और काम कर्यो यातें तीसरी असंगति है ॥२२७॥ अथ स्वाधीन पतिका लक्षण ॥ दोहा ॥ आशय में सनि रहै सदा आज्ञाकारी पीय ॥ सु स्वाधीन पतिका कही कविन नियम करि तीय ॥ २२८॥ वन बिहार आदिक जिते मदनोत्सव में प्रीति ॥ मद रु मनोरथ प्राप्ति पुनि अहंकार है रीति ॥२२९॥ अथ मुग्धा स्वाधीन पतिका प्रथम विषम उदाहरन ॥ दोहा ॥ सकल कला निधि लाल कित कित यह भोरी बाल ॥ अन मिल को मेल क्यों अली लख्यो लिपि भाल ॥ २३० ॥

टीका ॥ सम्पूर्ण कल्मन की खानि लाल कहाँ यह भोरी वाल कहाँ यहाँ अन मिल को अत्यंत मेल है सो है अली भाल की लिपि सें जान्यों यहाँ भोलापन सें मुग्धा है औ मेल हो वासे स्वाधीन पतिका नायिका है ॥ और अन मिलता को संग है याते प्रथम विषम है ॥२३०॥ **अथ द्वितीय तृतीय विषम लक्षण ॥ दोहा ॥** कारन कारज भिन्न रंग द्वितिय विषम गण नीय ॥ भलेउद्यम ते अभल फल होय सु बिषम तृतीय ॥२३१॥ **टीका ॥** कारन को और रंग होय कारज को और रंग होय सो दूसरो विषम गणो भला उद्यम सें बुरो फल होय सो तीसरो बिषम है २३१॥ **अथ मध्या स्वाधीन पतिका द्वितीय विषम उदाहरण ॥ दोहा ॥** खुले अन खुले चष निरखि रंगो लाल रंग श्याम ॥ ता लाली की झलक ते भयो सौति मुख श्याम ॥२३२॥ **टीका ॥** खुल्या अन खुल्या चषन सें देखि करि के श्याम को लाल रंग से रंग्या तिस लाली की झलक से सौतिन को श्याम मुख भयो यहाँ खुल्या अन खुल्या चषन से मध्या स्वाधीन पतिका नायिका है ॥ और लाली की झलक कारन को रंग लाल है सौतिन को मुख श्याम कारज श्याम रंग है याते दूसरो बिषम है २३२॥ **अथ प्रौढा स्वाधीन पतिका तृतीय विषम उदाहरण ॥ दोहा ॥** केलि कला रस रीति करि मैं बालम बस कीन ॥ अब अलि संतत मेल तें बोलि न सकों अलीन ॥२३३॥ **टीका ॥** केलि कला रस की रीति करि के मेने वालम कों वस कर्यो हे अली अब निरंतर मेल सें अलीन से नहीं बोलि सकों यहाँ केलि कला करि

के प्रीतम कौं वस कर्यो यातें औढा स्वाधीन पतिका नायि का है और चालन कौं वस करि वो भलो काम है तासौं स खीन कौं नहीं मिलवो बुरो फल भयो यातें तीसरो विष म है ॥२३४॥ अथ प्रथम द्वितीय लछण ॥ दोहा ॥ वर्नन दो सम रूप को ताहि प्रथम सम जाय ॥ कारन के गुन काज में मिलें द्वितिय सम होय ॥२३५॥ टीका ॥ दो समान रूप को वर्नन होय ताकों प्रथम स म देखो ॥ कारन के गुन काज में मिल्या सों दूसरो सम होय है ॥२३५॥ अथ परकीया स्वाधीन पति का प्रथम सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रेम पास गसि वस कियो दे दधि दान रसाल ॥ गुन गर्वीली बाल ने विद्या निधि नंदलाल ॥२३५॥ टीका ॥ प्रेम की पासी से पकड़ि करि के वस कर्यो सुंदर दधि दान दे करि के गुन की गर्वीली बाल ने विद्या का निधि नंदलाल कौं यहां दधि दान दे करि के वस कर वासों परकीया स्वा धीन पतिका नायिका है ॥ और बाल गुन गरबीली क न्या विद्या निधि हैं दोनूं समान हैं यातें प्रथम सम है ॥२३६॥ अथ परकीया स्वाधीन पतिका द्वितीय सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ विहरत कुंजन में फस्यो जाय राधिका जाल ॥ यामें अचिरज कौन सखि आहि बिहारी लाल ॥२३७॥ टीका ॥ कुंजन में डोल तो फस्यो राधिका का जाल में पड़ि गयो है सखी यामें कौन अचिरज है विहारी लाल है ॥ यहां डोलता कृष्ण कौं वस कर्यो यातें परकीया स्वाधीन पतिका नायि का है ॥ और डोलवा कारन का गुन विहारी लाल का

ज मे पायो याते दूसरो सम है ॥ २३७ ॥ अथ तृतीय सम बिचित्र लक्षण ॥ दोहा ॥ काज सिद्धि निर्विघ्न ह्वै जतन करत सम तीन ॥ इच्छा फल बिपरीत को जतन बिचित्र प्रवीन ॥ २३८ ॥ टीका ॥ जतन करतो ही निर्विघ्न कारज सिद्ध ह्वो जाय सो तृतीय सम है ॥ और विपरीत फल की इच्छा को जतन करे सो विचित्र अलंकार है हे प्रवीन ॥ २३८ ॥ अथ गनिका स्वाधीन पतिका तृतीय सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ हंसि हसाय वरषा परस आज वाल भरि वाथ ॥ तीनो सदन बसाय हरि सुरतरु गोपीनाथ ॥ २३९ ॥ टीका ॥ हंसि कै हसाय कै रस बरषाय कै आज बाल ने बाथ भरि कै सुरतरु गोपीनाथ हरि कों घर में बसा लियो यहां सुरतरु का वस कर नासे गनिका स्वाधीन पतिका नायिका है- और हंसि हसावा जतन सैं कृष्ण को वस करि वो कारज निर्विघ्न सिद्ध भयो याते तीसरो सम है ॥ २३९ ॥ अथ अभिसारिका लक्षण ॥ दोहा ॥ पिय पे जाय कि पीतमहि आप बुलावे जोय ॥ पाय प्रेम मद मदन वस सु अभिसारिका होय ॥ २४० ॥ होय समय अनुरूप ही भूषण शंका जानि ॥ प्रज्ञा ने पुन्य रु कपट पहिचानि ॥ २४१ ॥ ये छे अपर नारि की है स्वी की नाँहि ॥ कृष्ण शुक्ल दिवा दि भिद हैं पर कीया माँहि ॥ २४२ ॥ निज गातन मैं लीन ह्वै रोकि सु भूषण ध्वान ॥ द्रति गात्र वसनन बिमल कुल जाकरत पयान ॥ २४३ ॥ मद सैं विह्वल वोलती प्रफुलित नैन विलास ॥ हँसती सवलती भय रहित चेटी ॥ २ ॥

अद्भुत उज्जल वेष धर कारे नूपुर झनकार ॥ अमुदित मुकुलित मुख प्रगट यार मुग्धी अभिसार ॥ २४५ ॥ अथ मुग्धा अभिसारिका बिचित्रा उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय पै जात सखीन संग सलाज सलोनी जोय ॥ ज्यौं ज्यौं नीचो होत अति त्यौं त्यौं ऊंचो होय ॥ २४६ ॥ टीका ॥ सखीन का संग सें पिय पै जाता लाज सहित नायिका जैसे जैसे अत्यंत नीची होय है वैसे तैसे ऊंची होय है यहां सलज जावा सें मुग्धा अभिसारिका नायिका है और नीचा हो वासौं ऊंचो होवो उलटो फल भयो यातें विचित्र अलंकार है ॥ २४६ ॥ अथ प्रथम द्वितीय अधिक लक्षण ॥ दोहा ॥ अधिक अधिक आधार तें आधे वस्तु अधिकाय ॥ द्वितिय अधिक आधेय तें जब आधार बढ़ाय ॥ २४७ ॥ टीका ॥ बड़ा आधार सें आधेय अधिकावे सो पहिलो अधिक है ॥ जब आधेय सें आधार बढे सो दूसरो अधिक है ॥ २४७ ॥ अथ मध्या अभिसारिका प्रथम अधिक उदाहरण ॥ दोहा ॥ सानी लाज सनेह की तिया पिया पै जात ॥ लिहि लखि वढ्यो अलीन मन त्रिभुवन मे न समात ॥ २४८ ॥ टीका ॥ लाज सनेह की सनी ऊई तिया है सो पिया पै जाय है ताकौं देखि करि कै अलीन को मन बढ्यो सो तीनौं भवन मैं नही मावे यहां लाज और सनेह की भरी ऊई तिया है सो पिया पै जाय है यातें मध्या अभिसारिका नायिका है ॥ और त्रिभुवन आधार है तामैं अलीन को मन आधेय नही भयो यातें प्रथम अधिक है ॥ २४८ ॥ अथ प्रौढा प्रेमाभि

सारिका द्वितीय आधिक उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रेम पगी अति मंद गति चली अलीन मकार ॥ उजियारी सुख चंद की भरी गलीन अपार ॥ २४९ ॥ टीका ॥ प्रेम की पगी ऊई अत्यंत मंद गति सें अलीन का वीचि मे चली सुख चंद्रमा की उजियारी गलीन मे अपार भरी यहाँ प्रेम से चली याते प्रौढा प्रेमाभिसारिका नायिका है और सुख चंद्रमा की उजाली आधेय है सो गली आधार मे मा गई याते दूसरो आधिक है ॥ २४९ ॥ अथ अल्प अन्योन्य लक्षण ॥ दोहा ॥ अल्प अल्प आधेय सें अल्प होय आधार ॥ अन्योन्य हि उपकार ते अन्योन्यालंकार ॥ २५० ॥ टीका ॥ अल्प जो आधेय है उसू आधार अल्प होय सो अल्पालंकार है परस्पर उपकार से अन्योन्यालंकार है ॥ २५० ॥ अथ प्रौढा गर्वाभिसारिका अल्प उदाहरन ॥ दोहा ॥ कीरति जा निज भवन मे तुम्हे वुलावत आहि ॥ सुनि सुख भयो सु लाल के मन मे मायो नाहि ॥ २५१ ॥ टीका ॥ राधिका अपना मकान मे हे लाल तुमकों वुलावे है ॥ सुनि कीर के सुख भयो सो लाल के मन मे नहीं माघो यहाँ पति कों अभिमान के वस से वुलावे है याते प्रौढा गर्वाभिसारिका नायिका है ॥ और सुख है सो आधेय है मन आधार है सो सुख छोटा आधेय तें छोटो है याते अल्प अलंकार है ॥ २५१ ॥ अथ प्रौढा कामाभिसारिका अन्योन्य उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलत लली के लगि गये कीच लपटि अहि पाय ॥ अहि छबि छाई पगन तें तिन तें छबि भइ पाय ॥ २५२ ॥ टी० लली के चलता कीच मे लपटि कारे के अहि हें सो पगन

मे लागा गया पगन से सपन की छबि छाई सपन से प गन की छबि छाई यहाँ कामांधा तासे पगन मे सर्प लग्या को टांक नही पड्यो याते प्रौढा कामाभिसारिका है और परस्पर उपकार है याते अन्योन्यालंकार है॥ २५२॥ अथ प्रथम द्वितीय विशेष लक्षण॥ दोहा॥ विना ख्यात आधार के रहे आधेय विशेष॥ एक वस्तु कौं वहुत ठौं वरनत दूजो वेष॥२५३॥ टीका॥ विख्यात आधार विना जहाँ आधेय रहे सो प्रथम विशेष अलंकार है॥एक बस्तु कौं बहुत ठाम वरनै सो दूसरो विशेष है ॥२५३॥ अथ परकीयाभिसारिका उदाहरन॥ दोहा॥ दुरि दुरि गुरु वनितान से चली लली हित धारि॥ पै डरि डरि पग मग धरत वन नभ कुसुम निहारि॥२५४॥ टीका॥ गुरु बनितान सें छिपि छिपि कोर के लली है सो हित धारि के चली॥ परन्तु डरि डरि के मग मे पग धरे है वन में आकास को फूल देखि के यहाँ दुरि दुरि के जा वासों परकीया भिसारिका नायिका है और आकास का फूल को बिना आधार वर्नन है याते पहिलो विशेष है ॥२५४॥ अथ कृष्णाभिसारिका द्वितीय विशेष उदाहरन॥ दोहा॥ स्याम वसन भूषन पहरि चली अमावस राति॥ घन वन तम निज मनन में सखिन लखी छबि काति॥२५५॥ टीका॥ काला वसन और भूषन पहरि कै अमावस की राति में चली तव नायिका है सो घन से वन मे तम से अपना मनन मे सखीन ने छबि की छाई ऊई देखी यहाँ काला कपड़ा पहरि वासों कृष्णाभिसारिका नायिका है और

एक वस्तु नायिका की छबि है सो घन बनादि में बरनी याते दूसरो विशेष है ॥ २५५ ॥ अथ तृतीय विशेष प्रथम व्याघात लक्षण ॥ दोहा ॥ अलघु लाभ लघु जतन तें तीतय विशेष सु ख्यात ॥ वरनै हित कर वस्तु सें अहित सु है व्याघात ॥ २५६ ॥ टीका ॥ छोटा जतन सें बडो लाभ हो जाय सो तीसरो विशेष है हितकारी वस्तु सें अहित बने सो व्याघात है ॥ २५६ ॥ अथ शुक्लाभिसारिका तृतीय विशेष उदाहरन ॥ दोहा ॥ रजनी राका सरद की चली सेत सजि साज ॥ जिहि लखि जानी सखिन ने लखी शारदा आज २५७ ॥ टीका ॥ सरद की पून्यों की राति में सुपेद साज साजि कै चली यहाँ जिसकौं देखि कै सखीन ने जानी आज शारदा देखी ॥ यहाँ सेत साज साजि के चली याते शुक्लाभिसारिका नायिका है और नायिका का देखि वासों सारदा को देखिवो अधिक लाभ भयो यातें तृतीय विशेष है ॥ २५७ ॥ अथ दिवाभिसारिका प्रथम व्याघात उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुरंग वसन आभरन साजि चली मध्य दिन बाल ॥ मग में घन आये घुमड़ि लखि कुम्हिलानी हाल ॥ २५८ ॥ टीका ॥ लाल वसन आभरन सजि करिके बाल है सो दुपहरा चली गैला में घन घुमडि आया तुरत ही देखि करि के कुम्हिलाई ॥ यहाँ दिन में चल वासों दिवाभिसारिका नायिका है और घन घुमडिवो हित कर वस्तु सें अहित वन्यो यातें प्रथम व्याघात है ॥ २५८ ॥ अथ द्वितिय व्याघात प्रथम कारण माला लच्छन ॥ दो०

काज विरोधी सैं सधै जुग व्याघात बखानि ॥ पुनि पुनि कारन काज ह्वै कारन माला जानि ॥ २५९ ॥ टी० विरोधी सैं कारज सधै सो दूसरो व्याघात बखानो ॥ फेरि फेरि कारन है सो काज होय सो कारन माला अलंकार जानो ॥ २५९ ॥ अथ प्रेष्याभिसारिका उदाहरन ॥ दोहा ॥ मदमाती हँसि बोलती चलती इत उत जोय ॥ मग बतावत चलत सँग हँसि निशि जामिक लोय ॥ २६० ॥ टीका ॥ मद सैं मस्त भई हँसि करिकै बोलती भई इत उत कौं देखती चलती भई नायिका के सँग मैं मारग कौं बतावता भया हँसि करिकै रात्रि मैं जामिक लोग हैं सो सँग चले है ॥ यहाँ हँसती भई इत उत कौं देखती चले है यातें प्रेष्याभिसारिका नायिका है ॥ और चौकीदार मारग का रोकवा वाला नैं मारग कौ बतावो कारज कयौ यातें दूसरो व्याघात है ॥ २६० ॥ अथ गनिकाभिसारिका प्रथम कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलती सजि भूषन बसन यौं कहती पति धाम ॥ श्रम सैं गुन गुन सैं धन रु धन सैं होत सु काम ॥ २६१ ॥ टीका ॥ भूषन बसन सजि करिकै पति का धाम कौं चलती भई ऐसैं कहे है श्रम सैं गुन होय है गुन सैं धन होय है धन सैं सुंदर काम होय है ॥ यहाँ भूषन बसन सजि करिकै पति का धाम कौं जाय है यातें गनिकाभिसारिका नायिका है और श्रम कारन है गुन काज है फेर गुन कारन है धन कारज है फेरि धन कारन है सुकाम कारज है यातें पहिली कारन माला है ॥ २६१ ॥

अथ द्वितीय कारन माला एकावली लछन

दोहा ॥ कारन माला दूसरी कारज कारन माल ॥ गहि गहि पद छोंडे जहाँ एकावली रसाल ॥ २६२ ॥ **टीका** ॥ कारज और कारन की माल होय सो दूसरी कारन माला है जहाँ पद कों गह गह करिकै छोड़े सो एकावली है सुंदर ॥ २६२ ॥ **अथ गर्विताभिसारिका द्वितीय कारन माला उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ जानी मन उलसावती कहती भरी उमंग ॥ गुन श्रम संग धन गुन संग हि सकल काम धन संग ॥ २६३ ॥ **टीका** ॥ जानी उई मन की उलसावती उई उमंग की भरी उई कहती है गुन है सो श्रम के संग है धन है सो गुन के संग है संपूर्ण काम है सो धन के संग है ॥ यहाँ धन की बड़ाई करै है यातै गर्विताभिसारिका नायिका है ॥ और पहिले गुन कारज कह्यो फेरि श्रम कारन कह्यो फेरि धन कारज कह्यो गुन कारन कह्यो यातै दूसरी कारन माला है ॥ २६३ ॥ **अथ प्रवत्स्यत्पतिका**

लछन ॥ **दोहा** ॥ अगले छिन में जाहि को जैहे पति परदेश ॥ ताहि प्रवत्स्यत्प्रेय सी बरनत सु कवि असेश ॥ २६४ ॥ कातर प्रेछन काकु बच निवेदन संताप ॥ संभ्रम निश्वास पुनि गमन विघ्न को थाप ॥ २६५ ॥ **अथ मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका एकावली उदाहरन**

दोहा ॥ आली पीव पयान दुख लखि पारि है परभात ॥ मन तैं मुख मुख तैं नयन अधिक अधिक मुरझात ॥ २६६ ॥ **टीका** ॥ हे आली पीतम का पयान को दुख सबेरे ही जानि पड़ैगा ॥ मन तैं मुख मुख तैं नयन अधि

क अधिक मुरझावे है ॥ यहाँ मुरझावो थोड़ो दुख है या ने मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है और मन को छोड़ि करि के मुख मुख को छोड़ि करि के नयन गहे याने एकावली है ॥ २६६ ॥ **अथ माला दीपक अथ स सार लक्षण ॥ दोहा ॥** मिलि दीपक एकावली माला दीपक चार ॥ सरस सरस बरनैं अपर निरस निरस सो सार ॥ २६७ ॥ **टीका ॥** दीपक और एकावली मिल्या पै माला दीपक अलंकार है चार सुंदर ॥ अधिक अधिक बनैं और कम कम बनैं सो सार अलंकार होय है ॥ २६७ ॥ **अथ मध्या प्रवत्स्यत पतिका माला दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥** आन गमनपिय को कहत भो सखि मुख छबि छीन ॥ सखि मुख लखि भो तुरतही राधा बदन मलीन ॥ २६८ ॥ **टीका ॥** सवेरे ही पीतम को गमन कहता सखी को मुख छीन छबि भयो सखी को मुख देखि करि के राधा को मुख तुरत ही मलीन हो गयो यहाँ काम से मुख मलीन भयो लाज से कछु बोली नही याते मध्या प्रवत्स्यत पतिका नायिका है ॥ और सखी को मुख राधा को मुख यह तो एकावली दोनून की अन्वय मलीनता से है ॥ याते माला दीपक है ॥ २६८ ॥ **अथ प्रौढा प्रवत्स्यत्पतिका अथ सार उदाहरन ॥ दोहा ॥** मांगत विदा विदेश कौं सुनि भइ प्रिया उदास ॥ चिंता बढि दृग जल बढे तिन ते अधिक उसास ॥ २६९ ॥ **टीका ॥** पीतम कौं विदेश की विदा मांगतो सुनि करि के प्रिया उदास भई चिंता बढि करि के दृगन मे

जल वढे तिन सें अधिक उसाँस वढे ॥ यहाँ पीतम से बिछुटेवा सों प्रौढा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है और चिंता से हग जल अधिक है तासौं उसास अधिक है याते प्रथम सार है ॥ २६९ ॥ **अथ परकीया प्रवत्स्यत्पतिका द्वितीय सार उदाहरन ॥ दोहा ॥** प्रात परोसी गमन को सुन्यों नारि नै नास ॥ भई भूष तें प्यास सुधि तातें मति अति छाम ॥ २७० ॥ **टीका ॥** सबेरे ही परोसी का गमन को नारि ने नाम सुन्यौं भूष ते प्यास की सुधि छाम भई ताते मति अत्यंत छाम भई ॥ यहाँ परोसी को गमन सुनि वासौं परकीया प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है और भूष तै प्यास छाम भई प्यास तै सुधि छाम भई ताते मति अत्यंत छाम भई याते दूसरो सार है ॥ २७० ॥ **अथ यथा संख्य लछरा ॥ दोहा ॥** क्रम से कहे पदार्थ को क्रम से कथन जु होय ॥ यथा संख्य तासौं कहत कवि गुलाव बुध लोय ॥ २७१ ॥ **टीका ॥** जो क्रम से कहे ज्ञये पदार्थ को क्रम से कथन होय ॥ गुलाव कवि कहे है वुध लोग है सो तासौं यथा संख्य अलंकार है ॥ २७१ ॥ **अथ गणिका प्रवत्स्यत्पतिका उदाहरन ॥ दोहा ॥** माँगी विदा विदेश पिय गहि तिय कर कार बीच ॥ केरा मुदरी लीन तिय कर अँगुरिन ते खींचि ॥ २७२ ॥ **टीका ॥** पिय ने विदेश की विदा माँगी तिय का कर को कार का बीचि मे गहि करि के तिय ने करा मूदरी ले लिया कर अंगुरिन से खांचि करि के यहाँ करा मूदरी ले

सौं गारिका अवत्स्यत्पतिका नायिका है॥ और कर मुंदरी कह्या जाही क्रम सौं कर अंगुरी कह्या यांतें यथासंख्य अलंकार है॥२७२॥ अथ आगामिष्यत्पतिका लक्षण॥ दोहा॥ जैहै पिय परदेश में यों गनि दुषित होय॥ सु आगमिष्यत्पे यसी बरनत सब कोइ लोय॥२७३॥ अथ पर्याय लक्षण॥ दोहा॥ क्रम से आश्रय एक के बहु है सो पर्याय॥ क्रम से बहु के एक ही आश्रय द्वितिय गनाय॥२७४॥ टीका॥ क्रम से एक के बहुत आश्रय होय सो पर्याय अलंकार है॥ क्रम से बहुत के एक ही आश्रय होय सो दूसरो पर्याय गनावो॥२७५॥ अथ मुग्धा आगमिष्यत्पतिका प्रथम पर्याय उदाहरन॥ दोहा॥ फरकत भुज दृग वाम बाम भई मुदित मन बाल॥ पियराई मुख को गई आई लाली हाल॥ २७२॥ टीका॥ बाई भुजा बांया नेत्र फरकता गनि कोरे के बाल है सो मन में प्रसन्न भई॥ मुख की पियराई गई तुरत लाली आई यहां वाई भुजा बांया नेत्र फरक्या यांते मुग्धा आगमिष्यत्पतिका नायिका है और पियराई ललाई को मुख एक आश्रय भयो यांते प्रथम पर्याय है॥२७५ अथ मध्या आगमिष्यत्पतिका द्वितीय पर्याय उदाहरन॥ दोहा॥ फरकत भुज पुनि काक ह्वै बोल्यो तिय घर आय॥ लगी दीठि भुज बाम पुनि जमी काक मे जाय॥२७६॥ टीका॥ बांई भुज फरकी फेर काक ही तिय के घर आ करि के बोल्यो बांई भुजा मे दीठि लगी फेर काक मे जा करि के जमी यहां पीतम आवाका

सगुन देखि काम के वसतें दीठि लगाई लाज के वस से अधिक नही रुषाई याते मध्या आगामिष्यत्पतिका नायिका है ॥ और एक दीठि भुजा मे और काक मे लगी याते दूसरो पर्याय है ॥ २७६ ॥ **अथ परिवृति परीसंख्या लक्षण ॥ दोहा ॥** परिवृत्ति सु पलटो करे अधिक न्यून को कोय ॥ परिसंख्या थल आन तजि इक थल जो थित होय ॥ २७७ ॥ **टीका ॥** अधिक न्यून को कोई पलटो करे सो परिवृत्ति अलंकार है ॥ जो और थल कौं तजि करि के एक थल मे थित होय सो परिसंख्या अलंकार है ॥ २७७ ॥ **अथ प्रौढा आगामिष्यत्पतिका परिवृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥** उवतोंह प्रात उमंग भरि बोली प्रिया प्रवीन ॥ आली अधिक उछाह दे विदा काक ने लीन ॥ २७८ ॥ **टीका ॥** सवेरे उवतों होउ संग मे भरि करि के प्रवीन प्रिया बोली हे आली अधिक उछाह दे करि के काक ने बिदा लीनी यहाँ अधिक उछाह सो प्रौढा आगामिष्यत्पतिका नायिका है और काक ने अधिक उछाह दे करि के विदा लीनी याते परिवृत्ति अलंकार है ॥ २७८ ॥ **अथ परकीया आगामिष्यत्पति ॥ परिसंख्या उदाहरन ॥ दो॰** सुनत परोसिनि को पिया ऐहै आजहि साँझ ॥ रही कंचन ही श्यामता कृशता करि ही माँझ ॥ २७९ ॥ **टी॰** परोसिनि को पिया आज ही साँझ कों आवेगो कालापनो है सो बालन ही मे रह्यो दुबराई कमरि में ही रही यहाँ परोसिनि का पति से परकीया आगामिष्यत्पतिका नायिका है ॥ और कंचन मे श्यामता रही कटि मे कृशता

रही ॥ यातै परिसंख्या अलंकार है ॥ २७९ ॥ **अथ विकल्प अथवा समुच्चय लक्षण ॥ दोहा ॥** सम बल जुगल विरोध को कथन विकल्प बखानि ॥ बहु भावन को संग कथन प्रथम समुच्चय जानि ॥ २८० ॥ **टीका** समान बल दोनूं विरोध को कथन होय सो विकल्प बखानो ॥ बहुत भावन को संग कथवो होय सो प्रथम समुच्चय जानो ॥ २८० ॥ **अथ गनिका आगत मिथ्यपतिका विकल्प उदाहरन ॥ दोहा ॥** अवधि दिवस गनि गावती बोली हिय हर्षानि ॥ आज राति दुख भानि है जमराज कि धन दानि ॥ २८१ ॥ **टीका ॥** अवधि का दिनन कौं गनि करि के गावती जइ हिया मे हर्षा करि के बोली आज राति मैं दुख भाने गो जमराज के धन दानी कष्णा यहाँ गावसौं गनिका आगत मिथ्यत्पतिका नायिका है ॥ और जमराज धन दानी समान बल है तिन मे मारिवो जिवावो विरोध है यातै विकल्प है ॥ २८२ ॥ **अथ आगत पतिका लक्षण दोहा ॥** जाको पिय परदेश तै आयो तबही होय ॥ आगत पतिका नायिका हर्षित जिय मे जोय ॥ २८३ ॥ **टीका ॥** जाको पीतम परदेश तै **तबही** आयो होय सो आगत पतिका नायिका जीव मे हर्षती देखो ॥ २८४

अथ मुग्धा आगत पतिका प्रथम उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय आये लखि नवल तिय भी हंसी जंभाय ॥ कंपी अनुरागी बहुरि बैठी सि मटिल जाय ॥ २८३ ॥ **टीका ॥** पिय कौं आयो देखि कै नय है सो हर्षी हँसी जंभायो ली कंपी अनुरागी फेरि

टि लज्जा करि कै बेठी यहाँ लाज वासै मुग्धा आगत पतिका नायिका है ॥ और नायिका मे हर्षादिक बहुत भाव है यातै प्रथम समुच्चय है ॥ २८३ ॥ अथ द्वितीय समुच्चय लक्षण ॥ दोहा ॥ हौं पहिले हौं पहल यों बहुत मानि मन माँहि ॥ करै सिद्धि इक काज को द्वितिय समुच्चय आहि ॥ २८४ ॥ टीका ॥ हम पहिलैं हम पहिले ऐसे बहुत है सो मन मे मानि कोर के एक काज को सिद्ध करै सो दूसरो समुच्चय है ॥ २८४

अथ मध्या आगत पतिका द्वितीय समुच्चय उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय आये परदेश सें भेटत परिजन भीर ॥ तनु चष श्रवनन चाह ने वढ़ि तिय करी अधीर ॥ २८५ ॥ टीका ॥ पीतम परदेश तें आये कुटुंब का समूह सों मिलतां तनु चष श्रवन की चाह ने वढि करि कै तिय कों अधीर करी यहाँ पहिले लाज सें धीर धरि रही फेरि काम से शरीरादि की चाह नें वढि कोर के अधीर करी ॥ याते मध्या आगत्पतिका नायिका है और तनु चष श्रवनन की चाह ने वढ़ि करि के अधीरता एक कारज कर्यो यातै दूसरो समुच्चय है ॥ २८५ ॥

अथ कारक दीपक समाधि लक्षण ॥ दोहा ॥ कारक दीपक बहु क्रिया क्रम ते कारक एक ॥ आन हेतु सैं काज की सिद्धि समाधि विवेक ॥ २८६ ॥ टीका ॥ क्रम से बहुत क्रियान को कारक एक होय सो कारक दीपक अलंकार है ॥ और हेतु सें कारज की सिद्धि होय सो समाधि है ॥ २८६ ॥ अथ प्रौढा आगत पतिका का कारक दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ सजनी क

तो विदेश तें प्रिया पिया ज्यौं आत ॥ दोरी फिरी खरी कही पुनि पूंछी कुशलात ॥ २८७॥ टीका ॥ सजनी ने कही विदेश तें हे प्रिया ज्या पिया आवे हे दोरी फिरी खरी रही फेर कुशल पूछी यहां थरी हर्षी या तें प्रोढा आगत पतिका नायिका है ॥ और दोरी आदि अनेक भाव एक नायिका मे भये याते कारक दीपक अलंकार हे ॥ २८७॥ अथ परकीया आगत पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥ पारोसी परदेश तें आयो जिहि निशि मांह ॥ घर के सब उत्सवन मे गये राखि घर नाह ॥ २८८॥ टीका ॥ पारोसी परदेश तें आयो जो रात्रि मे घर के सब उत्सवन मे गये ता नायिका कौं घर राखि के जाकी पारोसी सें प्रीति ही ॥ यहां पारोसी का परदेश सें आवा मे परकीया आगत पतिका नायिका हे ॥ और घर कान को जावो अन्य कारज सें मिलाय कारज भयो याते समाधि अलंकार हे ॥ २८८॥ अथ प्रत्यनीक का अर्थापत्ति लछन ॥ दोहा ॥ प्रवल शत्रु के मित्र पै प्रत्यनीक बल घात ॥ यों है तो यह है कहा सो का अर्थापत्ति ॥ २८९॥ टीका ॥ प्रवल शत्रु के मित्र पे बल की घात होय सो प्रत्यनीक अलंकार हे ॥ यों हे तो यह काई हे कैसे होय सो का अर्थापत्ति अलंकार है ॥ २८९॥ अथ गनिका आगत पतिका प्रत्यनीक उदाहरन ॥ दोहा ॥ आवत पति परदेश तें लखि सासरल अनंद ॥ भे प्रसन्न मुख नैन नव घनसार मैंने चंद ॥ २९०॥ टीका ॥ पतिका परदेश से

आवतो गहगान सोहत देखि कै मुख नैन प्रसन्न भये तब चंद्रमा ने कमल मूंदे यहाँ नायक कौं गहगान सोहत देखि वासौं ग निका आगत पतिका नायिका है और चंद्रमा ने सुख का पद्मी कमल न कौं मूद्या याते अल्पनीक अलंकार है ॥२८०॥ **अथ पति स्वाधीना लक्षण ॥ दोहा ॥** रूप प्रेम गुन आदि करि है पति के वस नारि ॥ पति स्वाधीना कहत तिहिं कवि कोविद निर्धारि ॥ २८१॥ **टीका ॥** रूप प्रेम गुन आदि करि कै नारि पति के वस होय ताकौं पति स्वाधीना कहैं हैं कवि कोविद निर्धारि करि के ॥ २८१॥ **अथ मुग्धा पति स्वाधीना काव्यार्थापत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥** आली मुख लखि लाल को रति ह्वै रहे लुभाय ॥ मैं वस भइ तजि लाज सो गिनती गिनी न जाय ॥२८२॥ टी० हे आली लाल को मुख देखि के रति ह्वै लुभा करि कै रहे ॥ मैं लाज कौं तजि करि कै वस भई सो गिनती नहीं गिनी जाय यहाँ लाज कौं मुख माने है पति के वस है याते मुग्धा पति स्वाधीना नायिका है और जी कौं देखि के रति भी लुभा रहे तो मैं काँई ह्वौं ऐसे कह वासौं काव्यार्थापत्ति अलंकार है ॥ २८२॥ **अथ काव्य लिंग लक्षण ॥ दोहा ॥** अर्थ समर्थन योग्य जो तासु समर्थ न होय ॥ काव्य लिंग भूषन तहाँ कवि गुलाब मन होय ॥२८३॥ **टीका ॥** समर्थन योग्य जो अर्थ ताको समर्थन होय तहाँ गुलाब कवि कहै ते काव्य लिंग अलंकार है ॥२८३॥ **अथ मध्या पति स्वाधीना काव्य लिंग उदाहरन ॥ दोहा ॥** मोति लई सी लखि रहो बोलि सकौ सचेत ॥ मोते रीत प्रति [illegible]

या छंत ॥ २८४ ॥ टीका ॥ भोलि लई सी लाखि रहौं हौं
चेत संहित नहीं बोलि सकौं मोसे पति अत्यंत न्यून
है मोहन पति है या वास्ते यहाँ भोलि लई सी काम
है बोलि न सकौं यह लाज है याते मध्या पति स्वाधी
ना नायिका है और मेते रति अति न्यून है यह बात
समर्थन योग्य है ताको समर्थनकियमेरो पति मोहन
है या वास्ते काव्य लिंग अलंकार है ॥ २८४ ॥ अथ
अर्थांत रन्यास लक्षण ॥ दोहा ॥ है सामान्य
विशेष जब तब अर्थांत रन्यास ॥ दूजो गुण वत संग
तें लघु गुरु होय प्रकास ॥ २८५ ॥ टीका ॥ सामान्य
होय फेरि विशेष होय तब अर्थांत रन्यास अलंकार
है ॥ गुण वत संग तें लघु गुरु प्रकास होय सो दूसरो
अर्थांत रन्यास है ॥ २८५ ॥ अथ प्रौढा पति स्वा
धीना प्रथम अर्थांत रन्यास उदाहरन ॥ दो
हा ॥ सब के पति है सुभग पर मो पति सम कहुँ हैन
देखत स्याम सुरूप मुख मो चख तनक रूपैन ॥ २८६
टीका ॥ सब के पति सुंदर है परंतु मेरा पति की स
मान कोई भी नहीं है प्रयास को स्वरूप और मुख
देखतां मेरा चख तनक भी नहीं रूपे यहाँ पति को
इक टक देखि वासौं प्रौढा पति स्वाधीना
और सब के पति सुंदर है यह सामान्य वचन है
मेरा पति की समान कोई भी नहीं है यह
वचन है याते प्रथम अर्थांत रन्यास है ॥ २८६
अथ परकीया पति स्वाधीना द्वितीय
...न ॥ दोहा ॥ रहौं ध्यान धरि

सुनें सुनें हियो ऊलसाय॥ येरी मुरली लाल की मो चित लियो चुराय॥ २८७॥ टीका॥ बिना ही सुन्य ध्यान धरि के रह्यो हो सुन्या सो हियो ऊलसावे है येरी लाल की मुरली नें मेरो चित्त चुरा लियो यहां मुरली का सुन वासें वस भई याते परकीया पति- स्वाधीना नायिका है और कृष्ण के जोग सें मुरलीनें बडाई पाई याते दूसरो अर्थात रन्यास है॥ २८७॥

अथ विकस्वर प्रोढोक्ति लक्षण॥ दोहा॥ विकस्वरस्तु विशेष पुनि है सामान्य विशेष॥ प्रो- ढोक्ति जु कारन करें अकारनहि गनि वेष॥ २८८॥ **टीका॥** विशेष होय सोमान्य होय फेरि विशे- ष होय सो विक स्वर अलंकार है॥ अकारन कों वे ष गनि के कारन करे सो प्रोढोक्ति अलंकार है॥ २८८

अथ गनिका पति स्वाधीना विकस्वर उदा हरन॥ दोहा॥ आली लावत लाल धन जगजन की अनुहारि॥ तिहिं ले वारों दुगुनु धन आनन अमल- निहारि॥ २८९॥ **टीका॥** हे आली लाल धनल्या वे है जगत काजन की अनुहारि ताको ले करि वेदु गुन धन वारोंनि मल मुख देखि करि के यहां दुगुनू धन वार वासों गनिका पति स्वाधीना नायिका है और लाल धन लावत यह विशेष है जगत काजन की अनुहारि यह सामान्य है फेरि लाल पै दुगुनू धन वार वो यह बिशेष है यातें विकस्वर है॥ २८९॥

अथ उत्तमा लक्षण॥ दोहा॥ अन हित कारी पीय पे हित ही करे जु वाम॥ याकी चेष्टा उत्तम हि

जानि उत्तमा नाम ॥३००॥ **टीका** ॥ अनहित कारी पीय पै जो वाम अहित करै॥ याकी चेष्टा उत्तम है याते उत्तमा नाम जानौं ॥३००॥ **अथ उत्तमा प्रौढोक्ति उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ आये प्रीतम प्रात घर लाय महावर भाल॥ तउ तनु जमुन तमाल द्युति लखि भइ हर्षित बाल ॥३०१॥ **टीका** ॥ प्रीतम है सो सवेरे ही घर आया भाल मे महावर लगा करि के तो भी तनु मे जमुना कातमाल की द्युति देखि कै बाल हर्षित भई ॥ यहाँ सापराध नायक कौ देखि के हर्षित भई याते उत्तमा नायका है और जमुना को तमाल अधिक श्यामता को कारन नहो ताकों कारन कर्‌यौ याते प्रौढोक्ति अलंकार है ३०१ **अथ मध्यमा लक्षण** ॥ **दोहा** ॥ पिय के हित तेहित करै अहित अहित तें होय ॥ चेष्टा है व्यवहार सम जानि मध्यमा सोय ॥३०२॥ **अथ संभावना मिथ्या ध्यवसित लक्षण** ॥ **दोहा** ॥ जो यौं होय तु होय यौं सु संभावना जानि ॥ मिथ्या हित मिथ्या कथन मिथ्या ध्यवसिति मानि ॥३०३॥ **टीका** ॥ जो यौं होय तो यौं होय ऐसे होय सो संभावना अलंकार है मिथ्या के वास्ते मिथ्या को कहवो होय सो मिथ्या ध्यवसित मानौं ॥३०३॥ **अथ मध्यमा संभावना उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ प्रात पिया पा परत लखि बोली रिसहि नशाय॥ राति जो न उत जावते तो क्यौं परते पाय॥३०४॥ **टीका** ॥ सवेरे ही पीतम कौं पगन मे पड़तो देखि के रिस कौं नशा करि के बोली जो राति मे उत कौं नही जावते तो पगन मे क्यौं पड़ते।

यहाँ पीतम नै अपराध कर्यो तब रोस कर्यो और पी तम पायन मे पड्यो तब राजी भई यातै मध्यमा नायिका है और जो गति मे उनकौं नही जावते तो पगन मे क्यौं पडते ऐसे कहवासौं संभवना अलंकार है ॥ ३०४ ॥ **अथ अधमा लक्षण ॥ दोहा ॥** हितकारी हू पीय पै अहित करै जो नारि ॥ चेष्टा याकी अधम यों अधमा कही विचारि ॥ ३०५ ॥ **टीका ॥** हितकारी सो पीतम पै जो नारि अहित करै याकी चेष्टा अधम है ऐसैं विचारि करि कै अधमा कही है ॥ ३०५ ॥ **अथ अधमा मिथ्या ध्यवसित उदाहरन ॥ दोहा ॥** पिय कर विनती भाषता वोली अधिक रिसाय ॥ नभ फूलन की माल जोय दै सु तुम्हे पल्याय ॥ ३०६ ॥ **टीका ॥** पीतम कौं सुदर बीनती भाषता अधिक रिस करि कै वोली जो नभ का फूलन की माल कौं धारण करै सो तुमकौं पल्यावै ॥ यहाँ बीनती भाषता कठिन बोली यातै अधमा नायिका है और नायक कौं विश्वास मिथ्या मानि नभ फूलन की माल को धरवो मिथ्या है याते मिथ्या ध्यवसित है ॥ ३०६ ॥ **अथ ललित लक्षण ॥ दोहा ॥** जो कछु प्रस्तुत धर्म से वर्नेनीय ह्वतात ॥ अप्रस्तुत प्रति विंब करि वर्नत ललित सुख्यात ॥ ३०७ ॥ **टीका ॥** जो कछु प्रस्तुत को धर्म को वर्नीवा जोग्य वृतांत होय ॥ अप्रस्तुत को प्रति विंब करि कै वर्नन होय सो ललित है ख्यात जाहर ३०७ ॥ **अथ उत्तमा ललित** [illegible]

दोहा ॥ वर्जंत निशि मैं गवन करि दीनों माल गमाय ॥ और भये वर्जकन के कांहें पकरे पाय ॥ ३०८
टीका ॥ वर्जंता निशि में गमन करि के माल गमाइयो और भया पै वर्जवा वालान के पगन में पड्या सो काई है यहाँ नायक नै पग पकड्या तो भी नही मनी यातै अधमा नायिका है ॥ और माल गुमावा वाला प्रस्तुत को वर्णन करि कै नायक को वृत्तांत जनायो याते ललित अलंकार है ॥ ३०८ ॥ अथ नायक लक्षण ॥ दोहा ॥ सुन्दर शील जु वासु घर केलि कला कुल वान ॥ शुचि उदार गुन वानि तिंहि नायक कहत सुजान ॥ ३०९ ॥ अथ प्रथम द्वितीय प्रहर्षन लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रहर्षन सु विन जतन ही वांछितार्थ हो जाय ॥ वांछित तें अधिकार्थ की सिद्धि सु द्वितिय गनाय ॥ ३१० ॥ टीका ॥ बिना जतन ही वाँछित अर्थ हो जाय सो प्रहर्षन है ॥ वाँछित सें अधिक अर्थ की सिद्धि होय सो दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३१० ॥
अथ नायक प्रथम प्रहर्षन उदाहरन ॥ दोहा ॥ कर मुरली पट पीत धर शीश मुकट उर माल ॥ वन तैं आवत मग निरखि अति हर्षित व्रज वाल ॥ ३११ ॥ टीका ॥ हाथ में मुरली पीला कपड़ा कौ धारण कर्या अर्या शीश पै मुकट हृदा में माला धरा अर्या वन तै आवता मग में देखि के व्रजवाल अत्यंत हर्षी यहाँ जतन बिना ही नायक कौं देखिवा वाँछित अर्थ होगयो यातैं प्रथम प्रहर्षन है ॥
ति म उ ... ॥ दोहा ॥

परन्यौ पति उपपति सुनौ पर नारिन मे लीन ॥ वैसिक गनिका नाह यौं भाषत त्रिविध प्रवीन ॥ ३१२ ॥ टीका परन्यौं ज्ञयो पति है पेला की स्त्री न मे लीन होयसो उप पति नायक है वेश्या को पति वैसिक है यों तीन प्रकार को भाषे है प्रवीन है सो ॥ ३१२ ॥ अथ पति नायक द्वितीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दो०

धनुष भंजि सब से सरस लखि वाढे निज पीय ॥
प्रापत दुर्लभ लाभ में अति हर्षानी सीय ॥ ३१३ ॥

टीका ॥ सब से सरस धनुष भंजि के अपना पीतम कौ वाढा देखि के दुर्लभ लाभ में प्राप्त हो के सीता अत्यंत हर्षाई ॥ यहां राम चंद्र पति नायक है और राम चंद्र की प्राप्ति वांछित से अधिक है यातैं दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३१३ ॥ अथ पति भेद ॥ दो०

अनुकूल रु दक्षिण रु शठ धृष्ट चारि पति मूल ॥ परनी इकही नारि को हितकारी अनुकूल ॥ ३१४ ॥ टी० अनुकूल दक्षिण शठ धृष्ट ये चारि पति के भेद हैं परनी हुई एक ही स्त्री को हितकारी होय सो अनुकूल है ॥ ३१४ ॥ अथ तृतीय प्रहर्षन विषादन लक्षण ॥ दोहा ॥ जतन वस्तु जिहि हेर तें वही मिले सु तृतीय ॥ वांछित तें उलटो मिले विषादन सु गुनानीय ॥ ३१५ ॥ टीका ॥ वस्तु को जतन हेरतां वाही वस्तु मिले सो तीसरो प्रहर्षन है ॥ वांछित सें उलटो मिले सो विषाद न गाणी ॥ ३१५ ॥ अथ अनुकूल तृतीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दोहा ॥

सिय पिय वल वन हित सखी सो ...

तवहीं सने सनेह में आत लखे अग राम ॥ ३१५ ॥ टी० त्रिय है सो पिय कौं बुलावा के वास्ते धाम में सखी को संग देखे ही तवहीं सनेह में सने भये राम मम मैं आते देखे यहाँ राम अनुकूल नायक है और राम का बुलावा कौं सखी की वाट देखता राम ही मिले यातैं तीसरो प्रहर्षन है ॥ ३१५ ॥ अथ दक्षिण विषादन उदाहरन ॥ दोहा ॥ गई बुलावन निजभवन बहुत प्रिया पिय धाम ॥ सब को सम सनमान करि गे वन मैं घनश्याम ॥ ३१७ ॥ टीका ॥ अपना भवन मैं बुलावा के वास्ते बहुत प्रिया है सो पिय के धाम गई ॥ सब को बराबर सन्मान करि कै घन श्याम हैं सो वन मैं गये यहाँ सब को सनमान समान कर्यो यातैं दक्षिण नायक है ॥ और कृष्ण कौं बुलावा गई वे उलटा बन कौं चल्या गया यातैं विषादन है ॥ ३१७ ॥ अथ उल्लास लक्षण ॥ दोहा ॥ गुन दोषन करि एक के आनहि है गुन दोष ॥ चारि भेद उल्लास के वर्नत कवि मति कोष ॥ ३१८ ॥ टीका एक के गुन दोष करि के और कौ गुन दोष होय ॥ उल्लास के चारि भेद वर्ने है ॥ मति के भंडार कवि हैं सो ॥ ३१८ ॥ अथ शठ प्रथम उल्लास लक्षण दोहा ॥ मिठ वचनी कपटी वहै शठ नायक परकास ॥ इक के गुन सें आन कौं गुन होय सु उल्लास ॥ ३१९ ॥ टीका ॥ मीठा वचन बोलवा वाला होय ॥ कपटी होय सो शठ नायक है प्रकास जाहर ॥ नें गुन सें और कौं गुन होय सो प्रथम उल्लास

है ॥३१९॥ अथ शठ प्रथम उल्लास उदाहरन ॥ दोहा ॥ तुव अधरा मृत ध्यान धरि बचे प्रिया निशि प्रान ॥ अब अधरा म्रत ध्यान धरि व्है हो अमर निदान ॥३२०॥ टीका ॥ तेरा अधरन का अम्रत को ध्यान धरि कै हे प्रिया राति में प्रान बचे अब अधरा म्रत पान करि कै अमर होऊंगो निदान निश्चय यहां कपट सें सीधी बात करे है यातैं शठ नायक है और नायिका का अधरा म्रत का गुन सें नायक कों गुन भयो यातैं प्रथम उल्लास है ॥३२०॥ अथ धृष्ट द्वितीय उल्लास लक्षण ॥ दोहा ॥ निलजनि उर अपराध कर नायक धृष्ट गनीय ॥ होय दोष पर दोष सें सो उल्लास द्वितीय ॥३२१॥ टीका ॥ लाज रहित डर रहित अपराध करै सो धृष्ट नायक गनों ॥ पेला का दोष सें दोष होय सो दूसरो उल्लास है ॥३२१॥ अथ धृष्ट द्वितीय उल्लास उदाहरन ॥ दोहा ॥ पायनमारत पाय परि बोले लाल सुजान ॥ तो वियोग मो भाल मैं क्यों विधि लिख्यो अयान ॥३२२॥ टीका ॥ पायन की मारता थका पगान में पडि के सुजान लाल बोल्या तेरा वियोग मेरा भाल मैं अयान विधि ने क्यौं लिख्यो यहां निलजनि उर है यातैं धृष्ट धृष्ट क है और मारिवो नायिका का दोष सें ब्रह्मा का दोष है यातैं दूसरो उल्लास है ॥३२२॥ अथ तृतीय चतुर्थ उल्लास लक्षण ॥ दोहा ॥ इक कारन सें आन की दोष सु तृतिय प्रकास ॥ होय दोष सें [illegible] न जहां है चौथो उल्लास ॥३२३॥ [illegible]

गुन से ग्रौर कौं दोष होय सो तीसरो उल्लास है ज
हां दोष से गुन होय सो चौथो उल्लास है॥३२३॥

ग्रथ उपपति तृतीय उल्लास उदाहरन॥

दोहा॥ प्रेम रूप गुन रस भरी है वृषभानु किशोरि॥
मिलै निकुंजन एकली सो न सीब की खोरि॥३२४॥

टीका॥ प्रेम रूप गुन रस की भरी ग्रई वृषभानु की
बेटी है सो निकुंजन में येकली नहीं मिलै सो भाग
को दोष है यहाँ राधिका से निकुंजन मे मिलवा की
चाहे है यातै उपपति है ग्रौर राधिका का गुन से
नसीब को दोष है यातै तीसरो उल्लास है॥३२४॥

ग्रथ वैसिक चतुर्थ उल्लास उदाहरन॥

दो॰ पति में ग्रति रागी रहे धन लालच लगि बाल॥ याही
कारन तै मुदित रहे विहारी लाल॥३२५॥ टीका॥
पति से ग्रत्यंत रागी रहे है धन का लालच मे लगि
कारि के बाल है सो याही कारन से विहारी लाल प्र
सन्न रहे है यहाँ धन लालच वाली से मुदित रहे या
तै वैसिक नायक है ग्रौर धन लालच दोष से विहा
री लाल मे मुदित हो वो गुन है यातै चौथो उल्लास है
३२५॥ दोहा॥ ग्रौर त्रिविधि नायक कहौं मानी
प्रथम [illegible]॥ वचन चतुर है तीसरो [illegible] चतु
र [illegible]॥३२६॥ ग्रथ मानी [illegible] लक्ष
न॥ दोहा॥ मान करै [illegible] मानी नायक सो
[illegible]॥ [illegible] गुन दोष करै जहै गुन दोष न होय
३२७॥ टीका॥ [illegible] से मान करै सो मानी नाय
क [illegible] करि के गुन दोष नहीं होय सो

ज्ञा है ॥ ३२७॥ **अथ मानी अवज्ञा उदाहरन॥**

दोहा ॥ दोष गनि हठ ठानिवो कित सीखे ये ख्या ल॥ रीझ खीज वर बाल की मन नहिं आनौं लाल॥ ३२८॥ **टीका ॥** दोष ठानि करिके हठ ठानिवो ये ख्याल कहाँ सीखे सुंदर वाल की रीझ खीज है ला-लनमैं नहीं आनौं यहाँ हठ सौं मानी नायक है औ-र नायिका का रीझ खीज गुन दोष नहीं लख्या याते अवज्ञा अलंकार है ॥ ३२८॥ **अथ बचन चतुर अनुज्ञा लक्षण ॥ दोहा ॥** करे बचन में चातुरी बचन चतुर पहिचानि ॥ दोषहि कौं गुन मानि चहै नहाँ अनुज्ञा जानि ॥ ३२९॥ **टीका ॥** बचन में चातु राई करे सो बचन चतुर पहिचानौं दोष कौ गुन मानि के चाह करे तहाँ अनुज्ञा जानौं ॥ ३२९॥

अथ बचन चतुर अनुज्ञा उदाहरन॥ दो॰ गये सकल घर के अनत मैं हौं रह्यो निदान॥ अब डरि जगि हरि सुमिरि हौं मानि याहि कल्यान॥ ३३०॥ **टीका ॥** सब घर के और ठौर गयेमें ही र-ह्यो निदान निश्चय अब डरपि के जागि के हरि कौं सुमरौं गो याकौं कल्यान मानि के यहाँ पर कोया नायिका कौं सुनावे है मैं अकेलो हौं याते बचनच तुर है ॥ और यकला रहवा डरवा दोष कौं गुन मा नि अंगीकार कर्यो याते अनुज्ञा है ॥ ३३०॥ **अथ क्रिया चतुर लक्षण ॥ दोहा ॥** करे क्रि या मे चातुरी क्रिया चतुर सो वेस ॥ गुन दोषन मे दोष गन कल्यान स है लेस ॥ ३३१॥ [illegible]

राई करै सो क्रिया चतुर नायक है॥ गुन दोषन मैं दो
ष गुन को कल्पना होय सो लेस अलंकार है॥ ३३१॥
**अथ क्रिया चतुर गुन मे दोष लेस उदाहर
न॥ दोहा॥** आली बहुत तियान मे मोहि निरखि
नंद लाल॥ बिहसि कौल शिर धरत निति रूप भयो जं
जाल॥ ३३२॥ **टीका॥** हे आली बहुत तियान मैं मो
को देखि के नंदलाल हैं सो बिहसि के नित्य शिर पै
कमल धरै है ऐसो रूप है सो जंजाल भयो यहाँ ना
यक ने कमल माथा पै धरि के अस्तास जनायो याते
क्रिया चतुर नायक है और चतुराई गुन है ताको दो
ष मान्यो याते लेस है॥ ३३२॥ **अथ प्रोषित दो
स मे गुन लेस उदाहरन॥ दोहा॥** प्यारी बिन
परदेश मे करते प्रान पयान॥ पै यह सोर कठोरता
नित्य जिवावत मान॥ ३३३॥ **टीका॥** प्यारी बिन
परदेश मे प्रान पयान करते परन्तु यह सोर कठो
रता नित्य जिवावै है न प्रान और नही जिवावै है
यहां परदेश मे है याते प्रोषित नायक है॥ और क
ठोरता दोष से जीवो गुन है याते लेस अलंकार
है॥ ३३३॥ **अथ अनभिज्ञ मुद्रा लक्षण॥
दोहा॥** नहि समुझै तिय रसन मैं सो अनभिज्ञ वखा
नि॥ प्रकत अर्थ मे और हू कढै सु मुद्रा मानि॥
३३४॥ **टीका॥** तिय के रसन मैं नहीं समुझै सो अन
भिज्ञ बखानौ॥ प्रकृति अर्थ से और भी कढै सोमुद्रा
अलंकार जानौ॥ ३३४॥ **अथ अनभिज्ञ उदा-
हरन॥** [illegible] चलै प्रवाल नग वन से कोन

भय वैन॥ श्याम कह्यौ क्यौं गर गहत ह्यांतन क-
छू भय है न॥३३५॥ टीका॥ राधिका है सो श्या
म का गला सौं लपटी वन मे भय का वचन कह्
करि के॥ श्याम ने कह्यौ गलो क्यों गहे है ह्यांत
नक भी भय नही है॥ यहां राधा को प्रेम कृष्ण
ने नही जान्यौ सो अनभिज्ञ नायक है॥ और श्य
म गर वन मे॥ इन अक्षरन मैं कारो जहर पानीसे
यह अर्थ निकसे है याते मुद्रा है॥३३५॥ अथ
उत्तम नायक रत्नावली लक्षण॥ दोहा॥
करै जतन तिय मान हर सो उत्तम जिय जानि॥
प्रस्तुत पद क्रम से कहै रत्नावली वखानि॥३३६॥
टीका॥ तिय है सो मान कों हर वाको जतनक
रै सो जीव मे उत्तम जानों क्रम से प्रस्तुत पद कहै
सो रत्नावली वखानों॥३३६॥ अथ उत्तम ना-
यक रत्नावली उदाहरन॥ दोहा॥ वानी श्री
वदली निरखि गौरी को नंदलाल॥ भाषि बचन स-
धुरे सरल खुस करि लीनी हाल॥३३७॥ टीका॥
गौरी की वानी और श्री वदली देखिके नंदलाल
ने मधुरे और सरल बचन भाषि के तुरत खुस कर
ली यहां वाल को प्रसन्न करि लीनी याते उत्तम ना
यक है और बानी श्री गौरी उत्पति पालन प्रलय
के क्रम से निकसी याते रत्नावली अलंकार है॥३३
अथ मध्यम नर्द्धन लक्षण॥ दोहा॥ कर
त न रस रिस रिस वती तिय सौं मध्यम सोय॥
निज गुन तजि संगति गलहि गने सो ...

य ॥ ३३८ ॥ **टीका** ॥ रस वाली तिय सौं प्रेम रोसु नहीं करे सो मध्यम नायक है ॥ अपना गुन कों तजि के संगति का गुन कौं गहे सो तद्गुन अलंकार है ॥ ३३८ ॥ **अथ मध्यम तद्गुन उदाहरन ॥ दोहा ॥** तिय अन वोली लखि तुरत ठठकि रहे व्रजनाथ। पुनि हसती लखि जाय ढिंग भये हरित भरि बाथ ॥ ३३९ ॥ **टीका** ॥ तिय कों तुरत अन वोली देखि के व्रज नाथ ठठकि रहे फेरि हसती देखि के ढिंग जा करि के वाथ भरि के हरित भये यहाँ अनवोली देखि ठठके वोली तब मिले याते मध्यम नायक है और वाथ भर वासे हरे भये सो पीला से कालो मिले तब हरयो होय है याते तद्गुन है ॥ ३३९ ॥ **अथ अधम पूर्व रूप लच्छन ॥ दोहा ॥** केलि समय अधमन लखै लाज भीति तजि देय ॥ पूर्व रूप गहि संग गुन तजि पुनि निज गुन लेय ॥ ३४० ॥ **टीका** ॥ केलि का समय मे लाज भीत तजि दे सो अधम नायक है ॥ संगति का गुन लेकरि फेरि ऊंकूं तजि के अपना गुन कों ले सो पूर्व रूप अलंकार है ॥ ३४० ॥

अथ अधम पूर्व रूप उदाहरन ॥ दोहा

पिय लखि शशि वरनी प्रिया होत लाल रंगि राग। पुनि कर पकरत सखिन ने होत सेत तजि राग ॥ ३४१ ॥ **टीका** ॥ पिय कों देखि करि शशि वरनी प्रिया है सो राग मे रंगि के लाल होय है फेरि सखिन ने कर पकरता राग कौं तजि के सेत होय है

यहाँ बिना समय हाथ पकोड़ वासौं अधम ना
यक है और पीतम का रारा का संग सौं लाल रंग
लियो फेर हाथ पकीड़ते आप को सेत रंग लि-
यो याते पूर्व रूप है ॥३५१॥ अथ धीर लालि
ताद्वितीय पूर्व लक्षण ॥ दोहा ॥ सुखी कला नि-
धि निः फिकर धीर ललित जिय जोय ॥ मिटें व-
स्तु तिंहिं गुन रहे पूर्व रूप भिद दोय ॥३५२॥
टीका ॥ सुखी होय कला निधि होय निः फिक
र होय सो जीव मे धीर ललित देखौ जो वस्तु का
मिल्या सूं गुन रह जाय सो पूर्व रूप को दूसरो भे
द है ॥३५२॥ अथ धीर ललित पूर्व रूप
उदाहरन ॥ दोहा ॥ धीर कला निधि सुख स-
दन राम प्रताप प्रकास ॥ अस्त भये रवि के रहत
छाय धरा आकास ॥३५३॥ टीका ॥ धीर और
कलान की निधि सुख का घर जो राम हैं उनका
प्रताप को प्रकास है सो सूरज के अस्त भये पैं
पृथ्वी आसमान में छायो रहे है यहाँ धीर लल
त नायक है और रवि अस्त तम हो वाको कारन
भयो तो भी तम न मिल्यो यातें दूसरो पूर्व रूप
है ॥३५३॥ अथ धीरोद्धत अ तदगुन लक्ष
ण ॥ दोहा ॥ धीरोद्धत गर्वी छली निज गुन वक्ता
होय ॥ अतद्गुन सु संग ऊ भये गुन ताके नहि लेय ॥
३५४॥ टीका ॥ धीरोद्धत है गर्वी है छली है अ-
पना गुन को वक्ता जानौं ॥ संग भी भया पैं ताके गुन
नही लेय सो अतद्गुन अलंकार है ॥३५५॥ अथ

धीरोद्धत अनदगुन उदाहरन ॥ दोहा ॥ गर्वी ललावड़ाय लाहौ शिर मौर कुलीन ॥ वसत राग घर बाल मन तउ अनुराग न लीन ॥ ३४५ ॥ टीका ॥ हे लला गर्वी हौ वड़ाय लाहौ कुलीन को शिर मोर हौ राग को घर जो बाल को मन है उंमें वसे हौ तो भी अनुराग नहीं लियो यहाँ गर्वी कुली है याते धीरोद्धत नायक है ॥ और राग को घर जो बाल को मन है तामें वसै है तो भी अनुराग न ही लियो याते अतद्गुन अलंकार है ॥ ३४५ ॥ अथ धीर शांत अनु गुण लक्षण ॥ दोहा ॥ धीर शांत शुचि श्रुति गुनी विनयी नायक गाय ॥ अनुगुन सो संगति भये पूरव गुन अधिकाय ॥ ३४६ ॥ टीका ॥ शुचि होय श्रुति होय गुनी होय विनयी होय सो धीर शांत नायक गावो संगति भयें पै पूरव गुन अधिकावे सो अनु गुन है ॥ ३४६ ॥ अथ धीर शांत अनु गुण उदाहरन दोहा ॥ धीर शांत शुचि नय सदन लहि संगति रघुवीर ॥ विनयी और हर लखन भो अति विजयी रण धीर ॥ ३४७ ॥ टीका ॥ धीर धीरज वान शांत शुचि पावन नीति के घर लक्षमण है सो रामचंद्र की संगति पा करि कै विनय वान भयो वैरीन को मारवा वारो भयो अत्यंत विजयी भयो रण धीर भयो यहाँ नायक धीर शांत है और लक्ष्मण मैं रघुवीर की संगति सें पहिला गुन अधिक भया याते अनु गुन अलंकार है ॥ ३४७ ॥ अथ धीरोदा-

त्तमी लित लत्तरा॥ दोहा॥ छमी गंभीर सत
ब्रत रु विजयी धीरो दात॥ मीलि नमीलित मैं जहाँ
भेद न तनक लखात॥३४८॥ टीका॥ छमावान
होय गँभीर होय अच्छया ब्रत सहित होय विज
यी होय सो धीरो दात है॥ मीलित मैं जहाँ तनक
भेद नहीं लखावै सो मीलित अलंकार है॥३४८॥
अथ धीरो दात्त मीलित उदाहर॥ दोहा
विजयी छमी गँभीर अति कोप्यो समर मझार॥
तब न लखन के लखि पर्यो चंदन लाल लिलार॥
३४९॥ टीका॥ विजयी विजयवान छमी छमा
वान अत्यंत गंभीर समर का बीचि मे कोप्यो त-
व लछमरा का लिलार मे लाल चंदन को तिलक न
ही देखि पर्यो यहाँ नायक धीरो दात है॥ लिलार
का रंग से चंदन मिलि गयो यातै मीलित है।३४९
अथ दर्शन॥ दोहा॥ देखै तिय पिय हित स
हित दर्शन ताहि बिचारि॥ श्रवन स्वप्न पुनि चि-
त्र कहि सात्तात सु विधि चारि॥३५०॥ अथ सा
मान्य उन्मीलित लत्तरा॥ दोहा॥ सो सा-
मान्य समान मैं नहि न विशेष लखाय॥ जब मी
लित में भेद है उन्मीलित तव गाय॥३५१॥ टीका
समान में विशेषन हो लखावै सो सामान्य है जब-
मीलित मे भेद होय तब उन्मीलित गावो॥३५१॥
अथ श्रवरा दर्शन सामान्य उदाहरन॥
दोहा॥ सुनि गुपाल गुन वाल के सुख अति लाली
गात॥ तब मसाल सुख [illegible]

त ॥३५२॥ टीका ॥ गुपाल के गुन सुनि करि कैबा ल के मुख मैं अत्यंत लाली आवै है तब मसाल ओर वाल को मुख न्यारो नही जान्यो जाय यहां मसाल वाल मे भेद नही याते सामान्य है ॥३५२॥

अथ स्वप्न दर्शन उन्मीलि उदाहरन ॥ दो॰ जागत-स्वप्न सेत ते मिलि रहे केसर लागी भाल ॥ जागत ही जानी परे होत सेत रंग वाल ॥३५३॥ टीका ॥ स्वप्ना का सेत सौं भाल मैं लगी केसर है सो मिलि रहे जागतां ही वाल को सेत रंग होता जानी परे है यहां मिली केसर जानि परी याते उन्मीलित है ॥३५३॥

अथ विशेषक गूढोत्तर लछन ॥ दोहा ॥ है विशेष सामान्य मैं वहे विशेषक मानि ॥ उत्तर दीनें भाव तें गूढोत्तर पहिचानि ॥ ३५४॥ टीका ॥ सामान्य मे विशेष होय वहे विशेषक मानों भाव सैं उत्तर दिया पै गूढोत्तर पहि-चानो ॥३५४॥

अथ चित्र दर्शन विशेषक उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत चित्र नंद लाल को भई चित्र वत नारि ॥ नीठि पिछानी जाति है आवत सास निहारि ॥३५५॥ टीका ॥ नंद को चित्र देखता नारि है सो चित्र की नांई भई उसासन कौं आवता देख के नीठि पिछानी है यहां दो चित्रन मे उसास ले वासौं नी यातें विशेषक अलंकार है ॥३५५॥

अज्ञात दर्शन गूढोत्तर उदाहरन ॥ दो॰

लाल लगाव न लैर वा ज्ञाज हमारी गाय ॥ ३ ५ ६ ॥
टीका ॥ पहल पहल देखि के अभिलाखिनी है सो हिया में हर्ष करि के बोली हे लाल आज हमारी गाय हे सो वछड़ान कों नहीं लगावे ॥ यहां वाछरान कों ने लगावो नाम ले करि भीतर आयो चाहे है याते गूढोत्तर है ॥ ३ ५ ६ ॥ अथ सखी वर्णन ॥ चौपाई ॥ जासें प्रिया दुरावन राखे ॥ ता तिय कों सजनी सम भाखे ॥ मंडन सिक्षा नाके काम उपालंभ परि हास ललामा ॥ ३ ५ ७ ॥ अथ चित्र सूक्ष्म लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रश्नहि में उत्तर कढे सो चित्रा लंकार ॥ पर आशाय लखि जहं क्रिया करे सु सूक्ष्म विचार ॥ ३ ५ ८ ॥ टीका ॥ प्रश्न मे उत्तर कढे सो चित्रा लंकार है ॥ पेला का आशय कों देखि के जहाँ क्रिया करे सो सूक्ष्म अलंकार विचारो ॥ ३५८ अथ मंडन चित्र उदाहरन ॥ दोहा ॥ अंजन दे बिंदुली दई नथ पहिराय सुढार ॥ नख सिख साजि सिंगार पुनि का कीनें उपहार ॥ ३ ५ ९ ॥ टीका ॥ अंजन दे करि वे बिंदुली दई सुढार सुंदर नथ पहरा करि के नख सों लेकरि के सिखताई सिंगार साजि के काई उपहार कर्यो हार यहां का उपहार कर्यो हार उपहार कर्यो यह उत्तर निकस्यो याते चित्र अलंकार है ॥ ३ ५ ९ ॥ अथ सिक्षा सूक्ष्म उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलि आलि पिय सों मिलन हित करि अति रति हित साधि ॥ यों सुनि सजनी ओर तिय चितई भ्रकी बांधि

३६० ॥ टीका ॥ हे अलि पिय सों मिल वाके वा
स्ते चलि ह्रित कों साधि करि के अत्यंत रति करि
ऐसे सुनि करि के सजनी को ओर तिय हे सो मूं-
दी वाँधि करि के कांकी यहाँ मूँदी वाँधि वासोंये
जनायो कमल मुदैगा जब मिलोंगी याते सूक्ष्म
अलंकार हे ॥ ३६० ॥ अथ पिहित व्याजोक्ति
लक्षण ॥ दोहा ॥ पिहित जानि पर बात को आ
शय सहित जनाव ॥ व्याजोक्ति सु पर हेतु कहि-
जहँ आकार दुराव ॥ ३६१ ॥ टीका ॥ पैला की
बात कों आशय सहित जनावे सो पिहित अलं
कार हे ॥ पैला को हेतु कह करि के जहाँ आकार
कों छिपावे सो व्याजोक्ति अलंकार हे ॥ ३६२ ॥
अथ उपालंभ पिहित उदाहरन ॥ दोहा ॥
प्यारी प्यारी सखिन सों मुकुर भूलि कहाय ॥ यों
कहि अति हर्षाय हिय दीनों मुकुर दिखाय ॥ ३६२
टीका ॥ हे प्यारी प्यारी सखीन सों मुकुर वो हे
सो भूलि कहावे हे ॥ ऐसे कह करि के हिया में अ-
त्यंत हर्षा करि के काच दिखा दियो यहां दर्पन
दिखा के सुरत चिन्ह दिखाया याते पिहित अलं
कार हे ॥ ३६२ ॥ अथ परिहास व्याजोक्ति
उदाहरन ॥ दोहा ॥ पान खवावत बिन सम-
य कह्यो पिया गहि सार ॥ सीत पवन तें परिग
ई आली अधर दरार ॥ ३६३ ॥ टीका ॥ विना-
समय पान खवावता पिया ने सार गह करि केक-
ह्यो शीत का पवन से हे आली अधरन मे दरार

परि गई यहां सखी ने दंत च्छात देखि विना समय पान खवायो यह सखी को परिहास जानि नायिका ने सोन भवन की दरार कह करि आकार छिपायो याते व्याजोक्ति अलंकार है ॥३६३॥ दूती वर्णन ॥ दोहा ॥ तिय पिय के संदेश वच कहै सु दूती बाम बिरह निवेदन मिलव नाहि दै दूती के काम ॥३६४॥ अथ उत्तम दूती गूढोक्ति लक्षण ॥ दो० उत्तम दूती मन हरै भाषि मधुर वर बात ॥ गूढोक्ति तु मिस आन के कहै आन से बात ॥३६५॥ टीका ॥ मधुर और सुन्दर बचन भाषि करि के मन कौं हरै सो उत्तम दूती है ॥ और के मिस से औरसैं बात कहै सो गूढोक्ति अलंकार है ॥३६५॥ अथ उत्तम दूती गूढोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखि राधे कौं मात ढिंग कहि कीरति से बाम ॥ स्वामिनि आज निकुंज मे करि है कौतुक श्याम ॥३६६॥ टीका ॥ राधिका कौं माता के ढिंग देखि के बाम ने कीरति सें कही है स्वामिनि आज निकुंज मे श्याम कौतुक करै गे यहां मधुर बचन से उत्तम दूती है और राधा की माता से कहै है राधा कौं सुनावै है याते गूढोक्ति अलंकार है ॥३६६॥ अथ मध्यम दूती विवृतोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ मध्यम दूती परुष मृदु बोलै बचन बनाय ॥ श्लेष छिप्यो प्रगटाय जब तहं विवृतोक्ति कहाय ॥३६७ टीका ॥ कठोर और कोमल बचन बना करि के बोलै सो मध्यम दूती है जब छिप्या हुया श्लेष कौं

प्रगटावे नहीं विवृतोक्ति कहावे है ॥ ३६७ ॥ अथ मध्यम दूती विवृतोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उमगि उमगि बहु दिनन से घेरि रहे सब ठाम ॥ बिषम वात उतपात ते अब हटि हैं घन श्याम ॥ ३६८ ॥ टीका ॥ बहुत दिनन से उमगि के सब ठाम घेरि रहे भयंकर पवन और उतपात ते अब घन श्याम हटेगे यहाँ मीठा कठिन बचन से मध्यम दूती है और घन श्याम काला बादल बिषम पवन से हटे या अर्थ में श्लेष छिप्यो रह्यो परंतु उत्पात शब्द से घन श्याम को अर्थ कृष्ण और बिषम वात को अर्थ निन्दा के वचन निकसे याते विवृतोक्ति है ॥ ३६८ ॥ अथ अधम दूती युक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ कठिन वचन ता परुष कहि अधमा दूती सोय ॥ मर्म छिपावे करि क्रिया युक्ति अलंकृति होय ॥ ३६९ ॥ टीका ॥ कठोर बचन कहि करि के दूतता करे सो अधमा दूती है ॥ क्रिया करि के मर्म कों छिपावे सो युक्ति अलंकार होय है ॥ ३६९ ॥ अथ अधमा दूती युक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ अमित देखि पिय सों रमी मानि रही अनखाय ॥ वेग चली कहि दूतिका कर की सास बढाय ॥ ३७० ॥ टीका ॥ श्रमित देखि के पिय सों रमी मानि के अनखा रही जलदी चली ऐसे कहि करि के दूतिका है सो सास बढा करि के कही यहाँ सास बढा के कही याते अधमा दूती है और पीतम सों रमिवो सास बढावो क्रिया करि के पीतम सों रमिवो छिपायो याते युक्ति अलंकार है ॥

३७०॥ अथ विरह निवेदन लो- ोक्ति ल-
च्छन॥ दोहा ॥ तिये पिय को जु वियोग दुख भा
षे मन हित मानि ॥ कथे लोक कहना वती सो लोको
क्ति वखानि ॥ ३७१॥ टीका ॥ जो तिय पिय का वि
रह को दुख मन से हित मानि करि के भाषे लोककी
कहना वती कथे सो लोकोक्ति वखानो ॥ ३७१ ॥ अथ
प्रिय विरह निवेदन ोको क्ति उदाहरन
दोहा ॥ निरखत मग तेरो लली तो विन दुखित गुपा
ल॥ चलि जलदी मिलि मति चले आज काल की
चाल ॥ ३७२ ॥ टीका ॥ हे लली तेरो मग देखे हैं तो
बिना गोपाल दुखी हैं जलदी चलि के मिलि आज
कालि की चाल मति चले यहां आज कालि लोको
क्ति है ॥ ३७२ ॥ अथ छेकोक्ति ोक्ति ल-
च्छन ॥ दोहा ॥ और अर्थ लोकोक्ति मे कढै होय
छेकोक्ति ॥ अर्थ फिरै स्वर स्लेष सौं जानि लेऊ व-
क्रोक्ति ॥ ३७३ ॥ टीका ॥ लोकोक्ति मे और अर्थ क
ढै सो छेकोक्ति अलंकार है ॥ स्वर सों स्लेष सों अ-
र्थ फिरै सो वक्रोक्ति जानि ल्यो ॥ ३७३ ॥ अथ प्रि
या विरह निवेदन उदाहरन ॥ दोहा ॥ भई
विकल अति दूवरी बिरह वावरी वाल ॥ भूलिऊ ला
ल लखो न तुम शुक लोचन को चाल ॥ ३७४ ॥ टीका
विकल भई अत्यंत दूवरी भई वाल है सो विरह से
वावरी भई हे लाल तुम भोलापन मे भी नही देखी
हो तो ताका नेत्रन की सी चाल है यहां शुक लो
चन की चाल यह लोकोक्ति है और ई मे यह अर्थ

निकस्यो जैसे सुवो नेत्र वदल ले है तैसे तुम बदल न्यो हो यह छेकोक्ति है ॥ ३७४ ॥ अथ मिलाप वक्रोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लाई आज दृग ज मति रति से लौनी वाल ॥ इहि रस वस ह्वै रमि नि-शा याहि भूलि हो लाल ॥ ३७५ ॥ टीका ॥ आज बडी मति कीरति से सुंदर वाल लाई हों ई का रस मैं वस होकरि के रात्रि मै रमि करि के हे लाल याको भूलो गा अर्थात् नही भूलो गा यह स्वर सौं श्लेष फेर्यो याते वक्रोक्ति है ॥ ३७५ ॥ अथ सखा बर्रानं ॥ दोहा ॥ पीठ मर्द्द विट चेटक रु कर्म सचिव पहिचानि ॥ बहुरि विदूषक पांच बिधि नायक सखा वखानि ॥ ३७६ ॥ अथ पीठ मर्द स्वभावोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ मानवती हिम नासके पीठ मर्द्द निर्धारि ॥ वर्नन जाति स्वभाव को स्वभावोक्ति लंकार ॥ ३७७ ॥ टीका ॥ मान वती के नाई मनासके सो पीठि मर्द्द नायक है ॥ जाति को और स्वभाव को वर्नन होय सो स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ३७७ ॥ अथ पीठि मर्द्द स्वभावोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ मुकुट लकुट पट पीत धरलय ललो घर हाल ॥ पायन पारि मुरारि कौं हर्षित कीनी वाल ॥ ३७८ ॥ टीका ॥ मुकुट और लाकड़ी पीत पट कौं धारण करि के लली के घर तुरत ही ला करि के मुरारि कौं पगन मे पटकि के वालकौं हर्षित करी यहाँ जाति को वर्नन है याते जाति अलंकार है ॥ ३७८ ॥

[illegible] ॥ [illegible] धरि लखि वैठी शिर नाय [illegible] पवन [illegible] ॥

बात बनाय विनोद की लीनी बेग बुलाय ॥ ३७६ ॥ टीका ॥ त्योरी ओर मौंन मरोरि धरि के शिर नवाये ग्रय बैठी देखी के विनोद की बात बना करि केउ लदी बुला लीनी यहां त्योरी मौंन मरोरि धरि वो सुभाव है याते स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ३७६ ॥ अथ विट भाविक लक्षण ॥ दोहा ॥ बिट सो काम कथान मे चतुराई सरसात ॥ भाविक भावी भूत को जहँ वर्णन साक्षात ॥ ३८० ॥ टीका ॥ काम कथान मे चतुराई सरसावे सो विट है भावी भूत को जहाँ साक्षात वर्णनहोय सो भाविक अलंकार है ॥ ३८० ॥ अथ विट भाविक उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलौ लाल लालच भरी ललना तुम्है बुलात ॥ लखौ लाडली सदन मे रमा सदन छबि छात ॥ ३८१ ॥ टीका ॥ हे लाल चलौ लालच की भरी भई ललना तुमकों बुलावे है देखौ लाडली का सदन मे रमा कासा सदन की छबि छावे है यहाँ रमा को सदन पहिले हो और आगे रहेगो सो राधिका का भवन मे वर्त्तमान काल मे बन्यो याते भाविक अलंकार है ॥ ३८१ ॥ अथ चेटक नर्म सचिव लक्षण ॥ दोहा ॥ चेटक चतुर मिलाप मे जानि कार तिय चित्त ॥ नर्म सचिव हरि को सखा दे मिलाय तिय मित्त ॥ ३८२ ॥ अथ उदात्त लक्षण ॥ दोहा ॥ पर के श्लाघ्य चरित्र को चिन्ह जनावन हार ॥ बर्नन संपति चरित को द्विविध उदात्त उदार ॥ ३८३ ॥ टीका ॥ पेला का श्लाघ्य चरित्र का चिन्ह को

नन होय सो उदात्त है सो दो तरह को है है उदार॥
३८३॥ अथ चेटक प्रथम उदात्त उदाहरन॥
दोहा॥ लली चली कित जात है भूलि गैल मग मांहि॥ भली भांति घसि देखि हरि रास ठाम यह आहि॥
३८४॥ टीका॥ हे अली कहां चली जाय है गैल भूलि के मग के मांहि भली भांति सों धसि करि के देखि यह हरि को रास ठाम है यहां रास स्थान कृष्ण का श्लाघ्य चरित्र को बर्नन है यातें प्रथम उदात्त है॥
३८४॥ अथ नर्म सचिव द्वितिय उदात्त उदाहरन॥ दोहा॥ ले गोरो रस लेन मिस राधे कों भुलवाय॥ रमानाथ सम सदन थित हरि लखि रही लुभाय॥ ३८५॥ टीका॥ गोरस लेवा का मिस सों राधे कों भुलवाय के ले गयो॥ विष्णु का भवन समान भवन में कृष्ण कों बैठ्या देखि के ललचा रही यहां गोरस लेवा का मिस सों भुलवा करि ले गयो यातें नर्म सचिब है॥ और कृष्ण का संयोग चरित्र को बर्नन है यातें दूसरो उदात्त है॥ ३८५॥ अथ विदूषक अत्युक्ति लछन॥ दोहा॥ वेष रूप बचनादि कों बदलि करे जो हास॥ हरि राधा के मेल में कहत विदूषक तास॥ ३८६॥ टीका॥ बेष रूप बचनादिक कों जो बदलि करिके हास्य करे हरि राधिका का मेल में ताकों विदूषक कहें हैं॥
३८६॥ दोहा॥ अद्भुत कूठ उदारता सूरतादि को होय॥ जहं बर्नन अत्युक्ति सो बहु प्रकार की जो-
... सो बर्नन में है और ... सूरतादि को कूठो अद्भु

वर्नन होय सो बक्जत प्रकार की अत्युक्ति है ॥ ३८७ ॥ अथ विदूषक अत्युक्ति उदाहरन ॥ दो० चढ़ घालीगी निकुंज के वन मे अति शोय लाय ॥ वे वो मूंदि किवार तुम मे कोढ देक्त भुजाय ॥ ३८८ ॥ टीका ॥ वन मे निकुंज के च्यारो ओर मे घणी-लाय लगी है तुम किवार जुडि करि के वेठो मे क-ढि के बुरा द्यो हो यहा लाय को अति शय वर्नन है याते अत्युक्ति है ॥ ३८८ ॥ अथ दूत बर्नन ॥ दोहा ॥ दूत निसृष्टार्थ तु प्रथम द्वितिय मितार्थ उदार ॥ सु संदेश हारक तृतिय कवि गुलाव निर्धार ॥ ३८९ ॥ अथ निसृष्टार्थ निरुक्ति लच्छण ॥ दोहा ॥ जानि दुक्तन को भाव वर दे उत्तर शुभ उक्ति ॥ अन्य अर्थ ह्वै योग तें नामन को सुनिरुक्ति ॥ ३९० ॥ टीका ॥ दोनून को अष्ट भाव जानि के शुभ बचन सें उत्तर दे और का जोग सें नामन को और अर्थ होय सो निरुक्ति है ॥ ३९० ॥ अथ निसृष्टार्थ निरुक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ तू अति चाहत राम को तोहि अति चाहत राम ॥ तुम हर्षे हो होयगो सांचो रावन नाम ॥ ३९१ ॥ टीका ॥ तू राम को अत्यंत चाहती है तोको रा-म अत्यंत चाहते हैं तुम प्रसन्न हो वो गो सांचो रावन नाम होय गो यहां जानकी का हरन जोग सें रावण को रोवणो सांचो नाम भयो याते निरुक्ति है ॥ ३९१ ॥ अथ मितार्थ प्रतिषेध लच्छण ॥ दोहा ॥ कोथ प्रमाणा काज है बोर सो मितार्थ मा[illegible]

चानि॥ कथन निषेध असिद्ध को प्रति षेध सु उर-
आनि ॥३८२॥ टीका॥ प्रमाण कहि करि के काज
करे सो सिताई है असिद्ध निषेध को कथन होय
सो प्रति षेध हृदा मे आनों॥३८२॥ अथ मित
बे प्रति षेध उदाहरन॥ दोहा॥ चलि निकु-
ज में लखि ताली नाचत दे दे तार॥ सोहन नंद कुमा
र नहि है मन्मथ अवतार॥३८२॥ टीका॥ हे
आली निकुंज में चलि के देखि ताल दे दे करि के नाचे है मोह
न है सो नंद कुमार नहीं हैं कामदेव का अवतार है यहां कृष्ण
को निषेध करि के कामदेव को अवतार ठहरायो यातें ऽतिषेध
अलंकार है॥३८३॥ अथ संदेश हारक विधि लक्षण॥
दोहा॥ सु संदेश हारक कहैं कही बात है सोय॥
सिद्ध करे जब सिद्ध कौं तब बिधि भूषण होय॥
३८४॥ टीका॥ कही बात कौं कहे सो संदेश हा
रक है॥ जब सिद्ध कों सिद्ध करे तब बिधि अलंका
र होय है॥३८४॥ अथ संदेश हारक विधि
उदाहरन॥ दोहा॥ लाल कह्यो करि लालसा
आज रास में आज॥ प्यारी प्यारी होयगी जब दे
है तजि लाज॥३८५॥ टीका॥ लाल ने चाह करि के
कह्यो आज रास में आवो हे प्यारी लाज कौं तजेगी
तब प्यारी होयगी यहाँ प्यारी सिद्ध अर्थ को फेरि
सिद्ध करी यातें बिधि अलंकार है॥३८५॥ अथ हे
तु लक्षण॥ दोहा॥ कारन कारज संग ह्वै हेतु सु
प्रथम पिछानि॥ कारन कारज एक ह्वै हेतु द्वितीय ब-
खानि॥३८६॥ टीका॥ कारन कारज साथ होय सो

पहिलो भेद पिछानौ ॥ कारन कारज एक होय सो दूसरो भेद बखानौं ॥ ३८६ ॥ दोनून के उदाहरन ॥ दोहा ॥ होत दूर दुख तुरत ही लेत श्याम को नाम ॥ हे गुलाब हरि जनन के कृष्ण कृपा सुख धाम ॥ ३८७ ॥ टी० ॥ श्याम को नाम लेना ही तुरत दुख दूर होय है गुलाब कवि कहे है हरि जनन के कृष्ण की कृपा है सोई सुख को घर है यहाँ श्याम को नाम लेना ही दुख दूर होय है ई में कारन कारज संग है यातें प्रथम हेतु है और कृष्ण की कृपा है सोई सुख को घर है ई में कारन कारज एक है यातें दूसरो हेतु है ॥ ३८७ ॥ छप्पय ॥ रसवत १ प्रेयस २ दोय तृतिय ऊर्ज ३ स्वित जानौं ॥ चवथ समाहित ४ नाम पचम भावोदय ५ मानौं ॥ भाव संधि ६ षट भाव शबलता ७ शप्तम कहिये प्रत्यक्ष ८ अनुमान ९ दशम उपमान ११ निर्वाहिये ॥ पुनि शब्द १२ अर्थापत्ति पुनि अनुपलब्धि संभव लहो ॥ रीतिहु १५ सहित सब पंच दश कबि गुलाब भूषण गहो ॥ ३८८ ॥ रस वत लक्षण ॥ दोहा ॥ इक रस रसको अंग है कै स्थाई को होय ॥ कै व्यभिचारी भाव को अंग सु रस वत जोय ॥ ३८९ ॥ टीका ॥ एक रस दूसरा रस को अंग होय अथवा स्थाई भाव का अथवा व्यभिचारी भाव को अंग होय सो रस वत अलंकार है ॥ ३८९ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ जयति जयति योगींद्र मुनि कुंभज महा अनूप ॥ देखे तां के चुलुक में कच्छप मत्स्य स्वरूप ॥ ४०० ॥ टीका ॥ जोगींद्र महा अनूप अगस्त्य मुनि सर्वोत्कर्ष वर्तो ॥ जां की चुलु में कच्छप मत्स्य स्वरूप [illegible]

सुनि विषय करीत भाव को अंग अद्भुत रस है या-
तें रसवत है ॥ ५०० ॥ प्रेय लक्षण ॥ दोहा ॥ भा-
व होय अंग भाव को कै रस को अंग चार ॥ सु है प्रेय
कहै याहि कों कवि भावा लंकार ॥ ५०१ ॥ टीका ॥ भा-
व को अंग भाव होय अथवा रस को अंग भाव होय
सो प्रेयो ऽ लंकार है याही कों कवि हैसो भावालंकार कहे है
है ॥ ५०१ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ कब वसि मधि
वाराणसी धरि कोपीनहि चीर ॥ हे हर शिव शंकर ज
पत फिरि हौं गंगा तीर ॥ ५०२ ॥ टीका ॥ कोपीन मात्र
चीर धारण करि के कासी मैं वसि के ‚ हे हर ‚ हे शिव हे
शंकर ‚ असे जपतो जवी तीर पै कब फिरौं गो ॥ इहाँ-
शांत रस को चिंता संचारी अंग है यातै प्रेयस है ॥
५०२ ॥ ऊर्जस्वित लक्षण ॥ चंद्रायण ॥ रसा भा
स जँह अंग भाव को होय वर ॥ अथवा भावा भास भाव
को अंग तर ॥ सो ऊर्जस्वित होय भाव रस अनुचितहि
भावा भास रु रसा भास तास सहित लहि ॥ ५०३ ॥
टीका ॥ जहाँ भाव को अंग रसा भाव होय अथवा
भाव को अंग भावा भास होय सो ऊर्जस्वित अलंकार
होय है ॥ अनुचित भाव है सो भावा भास है ॥ और अ
नुचित रस है सो रसा भास है ॥ ५०३ ॥ उदाहरण ॥
दोहा ॥ वन वन भीलन संग रमत तुव बैरिन की बाम ॥
अरु भरि तुव गुन गनत निति प्रबल प्रतापी राम ॥ ५०४
टीका ॥ हे प्रबल प्रतापी राम तेरे बैरीन की स्त्री भी-
लन के संग वन वन में रमती है यहाँ प्रभु विषय कर-
ति भाव को अंग रसा भास है यातें ऊर्जस्वित है ॥ और

तेरे और तेरे गुन सदा गावते हैं ॥ इहाँ प्रभु विषयक रति भाव को अंग भावाभास है। यातें ऊर्जस्वित अलंकार है ॥ ९०४॥ **समाहित लक्षण ॥ दोहा ॥** अंग होय रस को जहाँ भाव शाँति के होय ॥ भाग शाँति अंग भाव को जानि समाहित सोय ॥ ९०५॥ **टी०** जहाँ रस को अंग भाव शाँति होय अथवा भाव को अंग भाव शाँति होय सो समाहित जानो ॥ ९०५॥ **उदाहरन ॥ दोहा ॥** पिय ठाढे भे मान लखि तिय इत रही विजोय ॥ देखत हँसि दीनौं ललन तिय तब दीनों रोय ॥ ९०६॥ **टीका ॥** मान देखि करि के पिय है सो ठाढे ह्वै रहे इत कों तिय है सो विसेस देखि रही ॥ देखते पिय ने हँसि दियो तब तिय ने रोय दियो इहाँ शृंगार रस को अंग कोप शाँति है याते समाहित है ॥ ९०६॥ **भावोदय लक्षण ॥ दोहा ॥** होय अंग रस को जहाँ भावोदय के होय ॥ भावोदय अंग भाव को है भावोदय सोय ॥ ९०७॥ **टीका ॥** भाव को उदय होय सो भावोदय ॥ जहाँ रस को अंग भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो भावोदय अलंकार है ९०७॥

उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनि गुन सोहन के रहे हिय ऊलसी अति वाम ॥ चहत विचारि बिचारि उर कब मिलि है घन श्याम ॥ ९०८॥ **टीका ॥** सोहन के गुन सुनि के बाम है सो हिया में ऊलसी रहे है ॥ उर में विचारि विचारि के चाहती है घन श्याम कब मिलैं गे ॥ इहाँ शृंगार रस को अंग है औत्सुक्य संचारी को उदय है याते भावोदय है ॥ ९०८॥

भाव संधि लक्षण ॥ चंद्रायण ॥ भाव संधि जहँ अंग रसहि को कै जहाँ ॥ भाव संधि के अंग भाव को बर तहाँ ॥ भाव संधि है जुरें विरुद्ध जु भाव ही ॥ भाव संधि तिहिं नाम समस्त बतावही ॥ ५०९ ॥ टीका ॥ जहाँ रस को अंग भाव संधि होय ॥ अथवा भाव को अंग भाव संधि होय तहाँ भाव संधि अलंकार है ॥ जो विरुद्ध भाव जुरें तिस को सम्पूर्ण कवि भाव संधि नाम बतावे हैं ॥ ५०९ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलत वीर संग्राम कौं लोष विलषी निज वाल ॥ अरुन वरन तन में उठे विपुल पुलक ततकाल ॥ ५१० ॥ टीका ॥ बीर नैं संग्राम को चलतें विलषी जई अपनी स्त्री देखी ताही समय अरुन वरन तन में बहुत रोम उठे। इहाँ प्रभु विषय करति भाव को अंग रसणी प्रेम रस उतकंठा की संधि है याते भाव संधि है ॥ ५१० ॥ भाव शावलता लक्षण चंद्रायण ॥ भाव शावलता होय अंग रस को मता ॥ कै भावहि को अंग भाव की सवलता ॥ भाव शावलता सो बहु भाव जहँ बहुत ही ॥ उपजें तहाँ सुभाव शावलता कवि कही ॥ ५११ ॥ टीका ॥ रस को भाव अंग भाव शावलता होय अथवा भाव को अंग भाव शावलता होय सो भाव शावलता अलंकार है ॥ जहाँ बहुत भाव उपजें तहाँ कविन नें भाव शावलता कही है ॥ ५११ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ बंशीधर बन माल धर हरि उर मोहि रिझाय ॥ कित मैं कित वह कित मिलन सजनी व्है त बनाय ॥ ५१२ ॥ टीका ॥ बंशीधर वनमाल धर हरि ... रहे हैं ॥ ... मैं कहाँ वह । कहाँ मिलाप है

हे सजनी तू क्यौंत बताय हाँ वंशीधर बनमाल धर यह-तो स्मरण॥ कहाँ मैं कहाँ वह यह वितर्क॥ कहाँ मिलन यह दीनता॥ तू क्यौंत बता यह उत्कंठा यह भाव शवलता है सो विप्र लंभ शृंगार रस को अंग है याते भाव शवलता अलंकार है॥४१२॥ अथ प्रमाणालंकार निरुप्यते॥ प्रत्यक्ष लक्षण॥ दोहा॥ इंद्रिय अरु मन ये जहाँ विषय आपनौं पाय॥ ज्ञान करें प्रत्यक्ष तिँहिँ कह गुलाब कवि राय॥४१३॥ टीका॥ जहाँ इंद्रिय और मन ये हैं सो अपनौं विषय पाकरि के ज्ञान करें तिसकौं गुलाब कहे है कविराज है सो प्रत्यक्ष अलंकार कहे है ४१३॥ उदाहरन॥ दोहा॥ लषन सुनहु जिँहिँ कारनैं होत जेज्ञ धनु धारि॥ मन मानत है देखि यह है वह जनक कुमारि॥४१४॥ टीका॥ रामचंद्र की उक्ति हे लक्ष्मण सुनौं॥ जाके वास्ते धनुष उठायवे को जज्ञ होत है मेरा मन मानै है देखि यह वही जनक कुमारी है इहाँ मन नेत्रन सौं प्रत्यक्ष है यातें प्रत्यक्ष अलंकार है ४१५॥ अनुमान लक्षण॥ दोहा॥ कारण के जानैं जहाँ कारज जान्यौं जाय॥ है अनुमान अलंकृति सु कवि गुलाब के भाय॥४१५॥ उदाहरन॥ दोहा॥ चटकाली दधि मथन ध्वनि चरणायुध ध्वनि पाय॥ जानि सर्वरी अंत तिय रहि पिय हिय लपटाय॥४१६॥ टीका॥ चिरीन की ध्वनि दधि मथन ध्वनि मुर्गा की ध्वनि सुनि के राति को अंत जानि के तिय है सो पिय का हिया सौं लपटाय रही॥ इहाँ चटकाली दधि मथन मुर्गा की ध्वनि कारन जानैं ते निशांत कारज जान्यौं

याते अनुमान है ॥ ५२६ ॥ उपमान लक्षण ॥ दो
हा ॥ उपमा को सादृश्य तैं बिन देख्यो उपमेय ॥ जानि
परै उपमान सो अलंकार है ज्ञेय ॥ ५१७ ॥ टीका ॥ उ-
पमान को सादृश्य सैं बिना देख्यो उपमेय जानि परै सो
जानिवे जोग्य उपमान अलंकार है ॥ ५१७ ॥ उदाहर
ण ॥ दोहा ॥ मन्मथ सम सुन्दर लसै रवि सम तेज
विशाल ॥ सागर सम गंभीर है सो दशरथ को लाल ॥
५१८ ॥ टीका ॥ कामदेव की समान सुंदर लसै है सू-
र्य समान विशाल तेज है समुद्र समान गंभीर है सो रा-
म चंद्र है इहाँ कामादि उपमानन सैं रामचंद्र जाने गये
याते उपमान है ॥ ५१८ ॥ शब्द लक्षण ॥ दोहा ॥
जहाँ शास्त्र अरु लोक को बचन प्रमाण वखानि ॥ सो
शब्दालंकार है भाषत सु कवि सुजान ॥ ५१९ ॥ टीका
जहाँ शास्त्र और लोक का बचन का प्रमाण को बरख
न होय सो शब्दाऽलंकार है सु कवि सुजान हैं सो भाष
ते हैं ॥ ५१९ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ धर्म विना न-
हि सुख लहै गुरु बिन लहै न ज्ञान ॥ ज्ञान बिना नहि
मुक्ति है पचि पचि मरै अजान ॥ ५२० ॥ टीका ॥
धर्म विना सुख नहि मिलै गुरु बिना ज्ञान नहि मिलै
ज्ञान बिना मुक्ति नहि होय । अजान है सो पचि पचि
के मरै है ॥ इहाँ शास्त्र प्रमान है । यातैं शब्द
है ॥ ५२० ॥ अथ अर्थापत्ति लक्षण ॥ दोहा
जहाँ व्यर्थ भे अर्थ को और जोग सें थाप ॥ अर्थाप-
त्ति अलंकार सु भाषत सु कवि सदाप ॥ ५२१ ॥ टी०
जहाँ व्यर्थ भये अर्थ को और जोग सें थापै सो अर्था

पत्ति अलंकार गर्व सहित सु कवि भाषते हैं ॥३२॥

उदाहरण ॥ दोहा ॥ तिय तेरे कटि है यहै मैं की नौं निर्धार ॥ जो न होय तो को धरै विपुल पयोधर-भार ॥५२१॥ टीका ॥ हे तिय तेरे कटि है यह मैंनें निश्चय कियो है जो नहि होय तो भारी कुच भार कों कौंन धारै है इहाँ नहि यह व्यर्थार्थ कुच धारण योग करि ठहरायो याते अर्थापत्ति है ॥५२१॥ अ-

थ अनुपलब्धि संभव लक्षण ॥ दोहा ॥ जानि परै नहि वस्तु कछु अनुपलब्धि है सोय ॥ जँहँ संभव है वस्तु को संभव नाम सु होय ॥५२२॥ टीका ॥ जहाँ कछु वस्तु नहि जानि परै सो अनुप-लब्धि अलंकार है जहाँ वस्त को संभव होय सो संभ व नामक अलंकार होय है ॥५२२॥ अथ अनुपलब्धि

उदाहरन ॥ दोहा ॥ नहि तेरे कटि सब कहत कुच थिति बिन आधार ॥ इन्द्रजाल यह काम को लोक कर त निर्धार ॥५२४॥ टीका ॥ तेरै कटि नहि है ॥ सब कहते हैं कुचन की स्थिति बिना आधार है ॥ यह का मदेव को इंद्रजाल है यातें लोक निश्चय करते हैं इ-हाँ कटि को अभाव है ॥ यातें अनुपलब्धि है ॥५२४

अथ संभव को उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनी न देखी तुव सदृश हे वृषभानु कुमारि ॥ जानत हो कहुँ होयगी विपुला धरनि विचारि ॥५२५॥ टीका ॥ हे वृषभानु कुमारि । तो समान देखी है न सुनी है परंतु पृथ्वी बड़ी विचारि के जान्यौं हौं कोई हो-यगी । इहाँ वस्तु को संभव है याते संभाव[illegible]

४२५॥ अथ रीतरूप लक्षण ॥ दोहा ॥ सु रीति रूप प्राचीन की उचलि आई जु कहानि ॥ ताको वक्ता प्रथम को नीके न परै पहिचानि ॥ ४२६॥ टीका ॥ जो कोई प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रथम वक्ता न ही पहिचान्यो परै सो रीति रूप अलंकार है ॥ ४२६॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ हे सीता उर धीर धरि जनि धरि मन अपघात ॥ जीवत सो नर सुख लहै यहै लोक की वात ॥ ४२७॥ टीका ॥ त्रिजटा की उक्ति ॥ हे सीता हृदय में धीरज धरि मन में अपघात मति धरै ॥ जो आदमी जीवे सो सुख पावे यह लोक की बात है इहां जीवत सो नर सुख लहै यह लोक कहानी है ॥ यातें रीतिरूप है ॥ ४२७॥ इति प्रमाणालंकाराः ॥ अथ संसृष्टि शंकर लिख्यते ॥ दोहा ॥ शब्द रु अर्थ के आपस में मिलि जाहि ॥ संसृष्टि रु शंकर तहां ये जुग नाम कहाहिं ॥ ४२८॥ टी० ॥ जहां शब्द और अर्थ के अलंकार आपस में मिलि जाहि तहां संसृष्टि और शंकर ये दो नाम कहावे हैं ॥ ४२८॥ अथ संसृष्टि लक्षण ॥ दोहा ॥ एक अलंकृति को रहे नहि दूसर की चाह ॥ बाँध कहू इक आन को होय नहि किहू राह ॥ ४२९॥ जुदे जुदे भासे सकल अपनी अपनी वास ॥ तिल तंडल की रीति करि है संसृष्टि सु नाम ॥ ४३०॥ टीका ॥ एक अलंकार को दूसर अलंकार की चाह नही रहे और एक अलंकार दूसरे अलंकार को बाधक भी किसी राह सें नहीं

 ॥४३०॥ तिल तंडुल की रीति करि के सब अपनी

अपनी ठोर पर जुदे जुदे भासैं सो संस्टीष्ट नाम है॥४३०॥ अथ संस्टीष्ट भेद॥दोहा॥ अर्थ अर्थ के भूषण रु शब्द शब्द के होय॥ अर्थ अर्थ के होय यौं त्रय संस्टीष्ट विजोय॥४३१॥ टीका॥ अर्थ अर्थ के अलंकार होय और शब्द शब्द के अलंकार होंय और अर्थ शब्द के अलंकार होंय ऐसे तीन संस्टीष्ट देखो॥४३१॥ अथ संकर लक्षण॥दोहा॥ पय पानी की रीति करि होंय परस्पर लीन॥ ताकौं संकर नाम ही भाषत परम प्रवीन॥४३२॥ टीका॥ दूध जल की रीति करि के अलंकार परस्पर लीन होंय ताकौं परम प्रवीन है सो संकर नाम भाषते हैं॥४३२॥ अथ संकर भेद॥ दोहा॥ है अंगा गी भाव १ अरु सम प्राधान्य २ वखानि॥ संदेह ३ रु इकवाचकानुप्रवे ४ चव मानि॥४३३॥ टीका॥ अंगागी भाव संकर है और सम प्राधान्य संकर वखानौं संदेह संकर ३ और एक वाचकानुप्रवेश संकर जानौं ये च्यारि भेद हैं॥४३३॥ अथ अंगागी भाव लक्षण॥ दोहा॥ वीज वृक्ष के न्याय करि इक इक को अंग होय॥ सो अंगागी भाव है कवि गुलाव सोतिजोय॥४३४॥ टीका॥ वीज वृक्ष के न्याय करि के एक अलंकार दूसरे अलंकार को अंग होय सो अंगागी भाव संकर है गुलाब कवि के मत में देखो॥४३४॥

अथ सम प्राधान्य संकर लक्षण॥ दोहा॥ दिन दिन पति के न्याय करि संग प्रगटै सम भासै॥ नाम सम प्राधान्य ही कवि गुलाव कह तास॥४३५॥ टीका॥ दिन स न्याय करि अलंकार साथ ही प्रगटै-

सार्द्र है। भासें गुलाब कोंब है सो ताकौं त्रास सम भा-
सान्त यहै है ॥ ४३५॥ अथ संदेह संकर लक्ष-
ण ॥ चंद्रायण ॥ प्रथम मिटाये द्वितिय अलंकृति
भास हो ॥ द्वितिय मिटाये प्रथम विशेष प्रकास हो ॥ वा
अन इक कौं एक राति दिन न्याय कारि ॥ तिहि शंकर सं
देह कहत कवि मोद धारि ॥ ४३६॥ टीका ॥ पहिलो अ
लंकार मिटाये सें दूसरो अलंकार भासे दूसरो अलंकार
मिटायें सें पहिलो अलंकार भासे राति दिन न्याय करि
क कौं एक बाधै नही ताकौं संदेह शंकर कहत हैं॥ कवि
मोद धरि के ॥ ४३६॥ अथ एक वाचकानुप्रवे
श शंकर लक्षण ॥ दोहा ॥ न्याय नृसिंहा कार
कार पद रु वाक्य इक माँहि ॥ जुग भूषण इक वाचका
प्रवेश कहि ताहि ॥ ४३७॥ टीका ॥ नृसिंहाकार न्या
य करि एक पद और एक वाक्य मे दोय अलंकार है
य ताकों एक वाचकानु प्रवेश संकर कहो ॥ ४३७॥ अ
थ अर्थ को प्रथम संसृष्टि को उदाहरन
दोहा ॥ शशि सो उजल मुख लसे खंजन हैं मनु नैं
अधर नासिका बिंब शुक मधुर सुधा सें बैन ॥ ४३८॥
टीका ॥ शशि सो उजलो मुख लसे है ॥ नैंन हैं सो मानों
जन हैं ॥ अधर और नासिका हैं सो किं दूरी और शुक
सुधा से मीठे बचन हैं यहाँ उपमा उत्प्रेक्षा यथा संख्य
यौ लंकार और संसृष्टि है ॥ ४३८॥ द्वितिय संसृ
को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कर की कर की बर चुरी
धूसरि देह ॥ जल बुकरत परयो पवन सुख सौं
४३९॥ टीका ॥ सुंदर कर की चुरी करीके गई है धू

रिके धूसरी देह है॥ क्यों नटे है। पिछानी परे है॥ सुख सों सनेह मैं सनी है॥ इहां यम कछेकानु प्रास शब्दालंकारन को संसृष्टि है॥५३९॥ तृतीय संसृष्टि को उदाहरन॥ दोहा॥ दृग से दृग हैं याहि के मुख सो मुखही आहि॥ कर से कर कुच से कुचहि उपमा उपजे काहि॥५४०

टीका॥ याके दृग से याके ही दृग हैं॥ मुख सो मुख ही है कर से कर ही हैं॥ कुच से कुच ही हैं॥ उपमा कौन कों उपजैं॥ यहां छेकानु प्रास अनन्वय शब्दार्थालंकार की संसृष्टि है॥५४०॥ इति संसृष्टि॥ अथ अंगांगी भाव शंकर उदाहरन॥ दोहा॥ हलत पवन तें तरुन तर दीखत छांह अनूक॥ शशि हरि ने नस गज हने मानहु तिनके टूक॥५४१॥ टीका॥ पवन सें हालते वृक्षन के नीचे जो अनूक छाया दीखती है सो मानों शशि सिंह नें नस रूप हाथी मारे हैं तिनके टूक हैं॥ यहां शशि हरि नस गज रूपक है सो उत्प्रेक्षा को अंग है याते अंगांगी भाव शंकर है॥५४१॥ अथ सम प्राधान्य शंकर उदाहरण॥ दोहा॥ लंघत तुंग पयोधर सुर विनु रण वलि चार॥ मध्य अरुण नायक मनुज नभ श्री मरकत हार॥५४२॥ टीका॥ ऊंचे मेघन कोंउलांडती भई सूर्य्य का घोडान की पंति है सो हमारी रक्षा करो सो मानों मध्य में है लाल मणि जाके ऐसो आकाश लक्ष्मी को पन्ना को हार है॥ इहां श्लेष उत्प्रेक्षा सम सोंति साथ ही प्रगटते हैं साथ ही भासते हैं याते सम प्राधान्य शंकर है॥ नभ श्री में नायिका व्यवहार को आरोप है॥ सो समा सोक्ति है॥ नायक नाम सा-

की और हार की ओप्ता को है ॥ नायको नेतरि अधि हार
मध्यम संग व प्रीति विच्छा ॥ ५५२ ॥ अथ संदेह सं
कर उदाहरण ॥ दोहा ॥ अमृत सिंधु मथि काम
तीन विधि अनुसासन जोय ॥ काढें ससि अकलंक तो
राधा मुख सम होय ॥ ५५३ ॥ टीका ॥ काम और रति है
सो ब्रह्मा की आज्ञा देय के अमृत के समुद्र को मथि
के कलंक रहित चंद्रमा को काढे तो राधा के मुख की समा
न होय ॥ यहां जो यों होय तो यों होय ऐसा
संभावना अलंकार है और ऐसो चंद्रमा होय न राधा
का मुख की बराबरि होय यह मिथ्या वरनि है या
तें मिथ्याध्यवसिति है ॥ ५५३ ॥ पुनः ॥ दोहा ॥
...र्प महा विष उगलतो बसत मूल के मांहि ॥ तो वर फल
जुत सुतरु तें कहा प्रयोजन आहि ॥ ५५४ ॥ टीका ॥
बहुत जहर कों उगलतो ज्यो सर्प मूल में बसे है तो श्रे
ष्ट फल सहित सुंदर वृक्ष सों कांई प्रयोजन है ॥ यहां
प्रस्तुत सर्प वृतांत वरनि में अप्रस्तुत राजा के पास रहि
वे वारे खल को वृतांत की प्रतीत होय है यातें समासो
क्ति है ॥ अथवा प्रस्तुत खल वृतांत जनायवे वा
स्ते अप्रस्तुत सर्प वृतांत कथन है यातें अप्रस्तुत प्र
शंसा है ॥ अथवा वराय सान सर्प के वृतांत कहिवे तें
पास रहिवे वारे खल को वृतांत प्रगट होय है ये दोनू
प्रस्तुत हैं यातें प्रस्तुतांकुर है निश्चय न भयो यातें सं
देह संकर है ॥ ५५५ ॥ अथ एक वाचकानु प्र
वेश संकर ॥ दोहा ॥ हे हरि दीन दयालु में यह मां
गों सिर नाय ॥ तुव पद पंकज आसरे मन मधुकर लगि

जाय ॥ ९६५ ॥ टीका ॥ हे हरि दीन दयाल मैं यह शिर नवाय कैरि कै माँगो हों तुम्हारे चरणकमलके आसरे मेरो मन भ्रमर लगि जाय ॥ इहां पद पंकज मन मधुकर मैं रूपक छेकानुप्रास है यातें एक वाचकानु प्रवेश संकर है ॥ काहू के मत मैं शब्दार्थालंकार को ही एक वाचकानु प्रवेश होय है काहू के मत मैं अर्थालंकारन कोवी होय है ॥ जहाँ शब्दार्थालंकार जुदा जुदा होय तहाँ संसृष्टि है अरु जहां एक पद मैं दोनूं होय तहाँ एक वाचकानु प्रवेश शंकर है ॥ ९६५ ॥ दोहा ॥ चंद्रकला टीका करी मोती-लाल सहाय ॥ मोती शंकर ने लिख्यो सोधि ग्रंथ सुख [illegible] ॥ ९९६ ॥

इति वनिता भूषण सम्पूर्णम् शुभम् ॥

वनिताभूषण का शुद्धाशुद्ध पत्र लिख्यते ॥

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	नह्या	नहीं	१२	२३	सेवा	सेवा
३	१०	अनन्यत्र	अन्यत्र	१२	६	बाहेनक्या	बाहेवारांया
५	३	नायका की	नायका को	१३	२१	सांदेह	संदेह
५	१२	उरमैं	डरमैं	१३ १४	२३ २५	कामुधा साचो	कामांधा सोचो
५	२०	अवगर्द	अवरार्द्ध	१३	३	मन	मेन
७	४	अलक	कलक	१३	४	पातिको	पति कौं
७	१०	न्यनत द्रूप	न्यूँनत द्रूप	१३	१२	छिपावे	छिपायें
८	२४	जोगत	जागत	१३ १४	२५ २७	दरचोड़ सखा को	दरबोड़ा सखी को
९	२५	देवर	देवर	१५	२८	तिहिंपति	जिहिं पति
९	२६	मध्यी	मध्या	१५	३०	जाने	जाने
९	२६	यावना	योवना	२७	७	नानड़	मानड़
१०	७	दुराय	डराय	२७	२५	आसपसु	आस्पद सु
११	९	रमा लखा	रमा लखावे	२७	२२	अधर मैं	अधर मैं

१७	२३	रीति मैं	रीति मैं	२३	२०	न्हवा कों	न्हावा कों
१७	२४	मसाल की प्र-	मसाल की प्र-	२३	२१	नायिका कौं	नायक कौं
		कासै	कासै सो सध्या	२५	१८	कुराय	उराय
			धीरा धीरा ना-	२६	१७	आवीत	आहीत
			यिका है	२६	२२	लो	लौं
१८	१६	कोय	कोय	२७	५	हर्षै	हर्षै
१९	३	असिद्धास्पद	असिद्धास्पद	२७	१६	यानिक	यानिका
१९	११	चंल	चेल	२७	२०	दायकी	दायक की
१९	२२	तिय सो है सो	तिय है सो	२८	२३	कुल जल	कुल जल
१९	२३	धीरा है	धारे	२८	२४	आसे	आसैं
२०	१	रूबन	रूबन	२९	४	पीर को	पीर कौं
२०	३	रंयो है	रेख्यो है	२९	२५	रूप रु	रूप रु
२०	१६	इकसै	इकसैं	३०	१	ऐसे	ऐसैं
२०	२५	प्रीति	प्रीति	३०	२४	आरि मान	आरिमान
२१	१	सापान्हव	सापन्हव	३१	१०	धर्म की	धर्म को
२१	१३	आयो उरोज	आय उरोज	३४	४	गाये	गायें
२१	१५	कान्ह	कान्ह	३५	१६	संग से नला	संग से तना
२२	५	कटक लगे	कंटक लगे	३५	२३	सोस	ओस
२२	१०	कुम्हा को	कुम्हा	३५	२	सिय	जिय
२२	१२	जोय है	जोय हैं	३५	१६	सखा सोनि	सखा सोनि
२२	१२	अभंव धातिस	अभांव धा अ-	३५	२३	कला	कली
		य	तिशय	३६	५	बांचित	बांचत
२२	१६	मुर्छित	मूर्छित	३६	२२	हेय	होय
२३	५	पंग	पग	३६	२०	पोर कुराकुर	पौर...
२३	५	खीर है	कीर हैं	३८	२	उपला	डला

३९	१५	काय	कार्य	५३	७	ते	
३९	१६	सारूप निवंधन	सारूप्य निवंधना	५३	२३	संगे	सं
५०	५	सीता का	सीता का	५३	२५	सुख	मुख
५०	६	नायक	नायिका	५५	५	द्वितीयलक्षण	द्वितीय
५०	२१	लिवंधनं	निवंधना				सखा
५२	२	बात सो	बात सौं	५५	६	बरषापरस	बरषाय रस
५२	२२	लाख को ल	लाख को ला	५५	२१	कृष्णा	कृष्णा
५२	१२	कया मैं	यामैं	५५	२५	सबलती	सबलती
५२	२७	सांति भै	सांति भे	५६	५	नीचो	नीची
५३	३	से	सैं	५६	१८	समाव	समान
५३	६	कसादिक	कंसादिक	५७	२५	सायो	मायो
५४	२	से	सैं	५८	११	बनीता	बनिता
५५	४	च्चितादि	च्चितादि	५९	१२	यहां जिसको	जिसकों
५६	२७	वाच	सुवाच	५९	१७	सुबा	सुँआ
५७	१०	चितवे	चितवे	६०	७	बतावत	बतावते
५७	१०	उक्का	उल्का	६१	८	सेत	सेंत
५७	२१	अगराई	अँगराई	६२	७	भूव तें	भूप तें
५८	१२	वरतुने	वस्तु तें	६३	२१	केरा मुंदरी	करा मूँदरी
५८	२५	घर घर	घर	६५	२१	कारि ही	कलि ही
५९	२४	याम	याल	६६	२२	हँसी जभाय	हँसी जँभाय
६०	८	सजे	सजे	६८	२	पूंछी	पूछी
६०	२१	क्रांति हेतु हे	क्रांति हेतु है	६८	२४	साभरन	साभरन
६१	२३	सीजसेज	सोजसेज	६९	२४	मुख	मुख्य
६२	२३	उसाहि	उमाहि	७१	१	झलसाप	झलसाय
६३	१	कल्सन की	कलान की	७१	२५	जगत न	जग जन
×	×	×	×	७३	४	संभवना	संभावना
×	×	×	×	७३	२१	वृतान्त	[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	आवें	८०	२२	वारि के कडला	वारिके काड़ली
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गाँ है	८२	२५	नाईं	नाईं
[illegible]	[illegible]	सुनवान	सुनाखानि	८२	२६	नायक है	सखा है
[illegible]	[illegible]	नोङ्नाचें	गोन्हिराची	८३	३	ज्य	ज्ये
	७	साह	साहे	८३	५	चरीन	छरीन
[illegible]	[illegible]	कुकला	कुरली	८३	२२	श्लाघ्र	श्लाघ्य
[illegible]	[illegible]	ठिले	ठिलें	८५	२०	सोरे	सोगो
[illegible]	[illegible]	पुरा	गाउ	८५	१८	विदूषैक	विदूषक
[illegible]	[illegible]	सच	सचे	८५	३	लीगी	लगी
[illegible]	२०	निडर	निडर	८५	१९	हर्षे हो	हर्षे हो
[illegible]	[illegible]	वयान	भयान	८७	१५	रातिह्य	रीतिह्य
[illegible]	२५	ज्ञान कौ	ज्ञान कौं	८७	२०	भाव का	भाव को
[illegible]	[illegible]	चाहे हो	चाहे है	८८	५	आग प्रांति	भाव प्रांति
[illegible]	२६	रहे	रहे	१०१	२४	सदाप	सदाप
[illegible]	५	सुंदर	सुंदर	१०३	३	तै कीनों	सैं कीनों
[illegible]	२६	डोर	डारि	१०३	२२	जानत हो	जानत हों
[illegible]	२१	इकला	अवेला	१०४	७	अपघात	अपघात
[illegible]	२२	काल्याना	कल्पना	१०४	११	कौ	कौं
[illegible]	२२	जान्यी	आनौं	१०४	१९	बाँधक	बाधक
[illegible]	२५	गहे से	गहे सु	१०४	२०	नहि किंफ	नहीं किंफ
८२	२२	सखिन ने	सखिन सै	१०५	२०	आसे	आसें
८३	५	पूर्व	पूर्व रूप	१०५	२१	लंडल	लंड़ल
८४	६	वैसे हो	वसो हो	१०५	१३	नुप्रवे	नु प्रवेश
८५	७	उदाह्र	उदाहरन	१०५	१६	अंगांगी	अंगांगी
८५	२५	जान्यौं न	जान्यौं जात	१०५	१८	अंगांगी	अंगांगी
८६	५	उन्सील	उन्मीलित	१०५	२५	सुन्याय	सर्वे न्याय
८६	२५	वोला	वोली	१०६	२८	सैं वैन	से वैन
[illegible]	[illegible]	सदन्त	सुदन्त	१०६	२५	धूसरि	धूसरित
[illegible]	[illegible]	ओर	ओर	१०७	१८	तुरगावाल	तुरगा वोल
[illegible]	४	कौ	कौं	१०८	२	विप्लाः	विप्लवः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	दंतच्छद	१०८	८	औसो	न औसो

नामसिंधुकोशको

प्रथमभाग

अर्थात

गुलावकोशको संक्षेप अमरकोशको प्रथमकाण्ड

विद्विशेष

श्रीयुत चहुवाण वंशावतंस हड्डुकुल कलश

बुन्दीन्द्र महाराजाऽधिराज महारावराजाजी

श्री श्री श्री श्री श्री १०८ रामसिंहजी के कवि

रावजी श्री गुलावसिंहजी कृत ॥

आगरा

नगरे वेलनगंजे श्री पण्डित केशवप्रसाद

शर्म्म द्विवेदि प्रबंधेन विद्यारत्ना

करयंत्रे मुद्रितः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीसरस्वत्यै नमः॥

अथ नामसिंधुकोशलिः

दोहा

गणपति गिरिजा गिरिश गुरु गंग गिरा गोपाल।
रवि रविजा वृषभानुजा कविता करहु कृपाल॥१॥

अथ गुरु प्रशंसा यांद्ग्रंथिका। दोहा॥

विबुधईश द्विजराज कुल ईश सुवोधक वीश॥ करुणाकर करुणा करहु जगन्नाथ जगदीश॥२॥ न्टप प्रशंसा यां द्ग्रंथिका दोहा॥ ईश दिगीशन वीचि अरु दानिन माहि महान॥ प्रणत अभय कर अपर शिव राम सिंह चहुवान॥ ३॥ बुंदीपति न्टप मुकुटमनि गुन सागर मति थान॥ ... सिंह नै अति कियो कवि गुलाव को मान॥ ...॥ ग्राम नीति ताजीम गज भूषन वसन विशाल॥ अति धन सादर दे करी परम कृपा प्रति पाल॥५॥ पुनि कारि पंच मुसाहिवरु सामिल राखि सलाह॥ दियो प्रकृति अधिकार मुहि रामसिंह नरनाह॥ ६॥ श्रीजत जस जुत विजय जुत जुत मन वांछित काम॥ राजौ महि सिर शेष लौं सुतन सहित न्टप राम॥७॥

अथ ग्रन्थ नियम लिख्यते॥

दोहा

रामाश्रम मत जुत अमर शेष त्रिकाण्डहु लीन ॥ देखि मेदिनी आदि किय कोश गुलाब नवीन ॥ ८ ॥ विस्तर कोश गुलाब को तजि तिहिं सारहि लेय ॥ नाम सिंधु कीनो विशद चारि भाग तिहिं ज्ञेय ॥ ९ ॥ संवत शशि दिशा निधि अवनि सैत्र मास गुरुवार ॥ कृष्ण पक्ष तिथि पंचमी भयो ग्रन्थ अवतार ॥ १० ॥ तुस्तु सुतो सो तोस तू अन्त माहिं जिहिं आय ॥ अथो अगे अथ आदि जिहिं तोपर माहिं मिलाय ॥ ११ ॥ पूरब पर संयोग मे पुनि अरु औरहु आदि ॥ हीहू हिहु नामंत मे कहुं निजार्थ ये वादि ॥ १२ ॥ संयोगी को आदि लघु गुरु विकल्प करि देखि ॥ क्वचित टापड़ी बादि को दीरघ घु पेखि ॥ १३ ॥ नाम विशेषण कहुं क्रिया सम्बोधन कल हीन ॥ करि स्वरव्यंजन एक को कहुं तुकांत रचि दीन ॥ १ ... धाट तिष्ठ रु वर्ण हृष्टि गणय अरु बादि ॥ एन पाठप ... रु शवद घस्रूप अंकादि ॥ १५ ॥ साधु सोतु अरु को कीन उकार अकार ॥ भाषा विधि कहु अविधिहू धस्यो तुकांत मकार ॥ १६ ॥ अथ दोहाया लक्षण ॥ दोहा ॥ षट कल द्वै कल द्वि कल पुनि इक लघु द्वै कल जोय द षट कल द्वि कल गुरु इक लघु दोहा होय ॥ १७ ॥ कहुं षट कल चौ कल त्रि कल हीन कीन जाति भंग ॥ जगन ... धन कीन कहुं शब्द शुद्ध के संग ॥ १८ ॥ अनेकार्थ

त्नीव सो अन्त स्थान मधि जोय॥ रामाश्रम मतसैं धस्यौ रव र्यांत में सोय॥ १९॥ वर्षाभ्वीजल वर्ग को वर्षा भू करिलीन ॥अमर शब्द इत्यादि कहुं वदलि अधिक कम कीन॥ २०॥ सुर नर वानी माहि जो है है परम प्रवीन॥ सो या श्रम कौं जानि है नाहि जनि है इक हीन॥ २१॥

अथ नाम सिंधु को प्रथम भाग लिख्यते। दो०

स्वर्ग व्योम दिश काल धी शब्दादि कतिहि संग॥ नाट्य भोगि पाताल दश नरक रु वारि तरंग॥ २२॥ अथ स्वर्ग तरंग लिख्यते॥ स्वर्ग नाम॥ दोहा॥ स्वर्ग नाक स्वर त्रिदिव पुनि त्रिदशालय सुरलोक॥ दिव रु त्रिविष्टप द्यो नभ रु शक्र भवन स्वर्लोक॥ २३॥ देवलोक अवरोह पुनि मंन सेरिभ मानि॥ वृहरिफलोदय अरु ख" जुत अष्टादश उर आनि॥ २४॥ देव। देव माता नाम॥ दोहा॥ सुर सुमन स निर्जर अमर त्रिदश दिवोकस देव॥ सुपर्वा रु दिविषद विबुध रु ऋभु त्रिदिवेश सुभेव॥ २५॥ आदितेय रु निलिंपं पुनि, अमृतांधस आदित्य॥ क्रतुभुज लेख रु देवता व हिंमुख रु, अमर्त्य॥ २६॥ वृंदारक अ स्वप्न पुनि दानवारि गीर्वाण॥ देवत स्वाहाभुक वसुल पूजित शोभ प्रमाण॥ २७ स्वर्गी द्युषद चिरायुध रु जानि नभस्सद सोय। अदितिनंदन रु अदिति तो सुरमाता रु इहु होय रु देव गण नाम॥ दोहा ॥ रुद्र महाराजिक"तुषित आभास्वर" आदित्य"॥ अनिल"

विश्वे वसु साध्य येन वहि देव गरा नित्य ॥ २९ ॥ क्रमतें रु
द्रादि गरान की संख्या ॥ दोहा ॥ ग्यारह" दोसै वीस" अ
रु छत्तीस" चौसठि" जोय ॥ द्वादश उनचास" रुदश" सु आठ"
रु द्वादश" होय ॥ ३० ॥ देवयोनि नाम ॥ दोहा ॥ सिद्ध" पिशा
च" रु गंधर्व" किन्नर राक्षस" यक्ष" ॥ गुह्यक" विद्याधर" दशहि
भूत" अप्सरा दक्ष ॥ ३१ ॥ असुर नाम ॥ दोहा ॥ शुक्र शिष्य
दिति सुत असुर दैत्य दनुज इंद्रारि ॥ पूर्वदेव दैतेय दशासुर
द्विषे दानव" धारि ॥ ३२ ॥ बुद्धि नाम ॥ दोहा ॥ धर्मराज
षडज्ञ जिन तथागत रु भगवान ॥ सुगत मारजित लोक
जित अद्वयवादी आन ॥ ३३ ॥ बुद्ध विनायक श्रीघन
दशबल मुनि षडभिज्ञ ॥ शास्ता और मुनीन्द्र पुनि समंत
भद्र ॥ ३४ ॥ शाक्यमुनि नाम ॥ दोहा ॥ अर्कबंधु
र्थ सिद्ध मायादेवीपुत्र ॥ शाक्यसिंह शौद्धोदनि रु गौतम
जुत षट् अत्र ॥ पितामह । चतुर्भुज नाम ॥ दोहा ॥
गर्भ रु आत्मभू परमेष्ठी विधि जानि ॥ सुज्येष्ठ लोकेश
वेधा धाता मानि ॥ ३६ ॥ द्रुहिण विधाता विश्वसृज
लासन रु विरंचि ॥ अब्जयोनि चतुरानन रु स्रष्टा स्वयंभू
वंचि ॥ ३७ ॥ कंज प्रजापति हंसरथ ब्रह्मा अब्जज धारि ॥
विष्णु कृष्ण विष्टरश्रवा दामोदर दैत्यारि ॥ ३८ ॥
वैकुंठ विधु हृषीकेश गोविन्द ॥ पीताम्बर गरुडध्वज
इन्द्रावरज उपेन्द्र ॥ स्वभू पुंडरीकाक्ष अज केशव माधव सो

य ॥ विष्वकसेन जनार्दन रु शौरि अधोक्षज होय ॥ ४० ॥ चक्र
पाणि शार्ङ्गी हरि रु पद्मनाभ उरधारि ॥ वासुदेव श्रीपति
अजित वनमाली कंसारि ॥ ४१ ॥ विश्वंभर पुरुषोत्तम रु मधुरिपु
अच्युत मानि ॥ कैटभजित देवकीसुत सु वलिध्वंसी जानि
॥ ४२ ॥ वसुदेव । वलदेव नाम ॥ दोहा ॥ कृष्णजनक व
सुदेव सो आनकदुंदुभि तीन ॥ प्रलंबघ्न वलभद्र अरु अच्यु
ताग्रज सुवीन ॥ ४३ ॥ राम रेवतीरमण वल हलायुध रु वल
देव ॥ कामपाल मुसली हली रौहिणेय तिहिं भेव ॥ ४४ ॥
सीरपाणि नीलांवर रु संकर्षण विख्यात ॥ कालिंदीभेदन
रु लखिताला कहु दरसात ॥ ४५ ॥ काम । अनिरुद्ध । ना
म ॥ दोहा ॥ मदन मार मन्मथ अतनु मीनकेतन रु काम ।
प्रद्युमन रु मनसिज रु स्मर दर्पक रतिपति नाम ॥ ४६ ॥
पुष्पचाप अरु पंचशर शंवरारि कंदर्प ॥ आत्मभू रु कुसु
मेषु पुनि मकरध्वज सो थर्प ॥ ४७ ॥ कंतु अनन्यज ब्रह्मसू
विश्वकेतु हू शुद्ध ॥ विश्वकेतु चव ब्रह्मसू उषापति रु अनि
रुद्ध ॥ ४८ ॥ लक्ष्मी । हरि शंख नाम ॥ दोहा ॥ श्री लक्ष्मी
पद्मालया पद्मा कमला मानि ॥ हरिप्रिया हरिशंख तो पां
चजन्य जिय जानि ॥ ४९ ॥ हरि चक्र । गदा । खड्ग । मणि ना
म ॥ दोहा ॥ चक्र सुदर्शन अथ गदा कौमोदकी विचारि ॥
खड्ग तु नंदक कौस्तुभं तु मणि उरकी निर्धारि ॥ ५० ॥ गरुड
नाम ॥ दोहा ॥ तार्क्ष्य खगेश्वर विस्नुरथ गरुत्मान रु सुप

णी ॥ वैनतेय नागांतक सु पन्नगाशन हु वरणी ॥ ५१

देवनाम ॥ दोहा ॥ शंभु महेश्वर शर्व शिव शूली ईश्वर

ईश ॥ खंड परशु मृत्युंजय रु शंकर गिरिश गिरीश ॥ ५

भीम रु उग्र कपालभृत शशिशेखर श्री कंठ ॥ महादेव

भव धूर्जटी रु प्रमथाधिप शिति कंठ ॥ ५३ ॥ गंगाधर

ंतक रु त्र्यंबक पशुपति जाणु ॥ रुद्र वृषध्वज स्मरहर रु

गिरिजापति पुनि स्याणु ॥ ५४ ॥ कपर्दी रु ...

तु ध्वंसी ईशान ॥ विरूपाक्ष अंधकरिपु रु नील लोहि

त सु आन ॥ ५५ ॥ कृत्तिवासस रु त्रिलोचन व्योमकेश भू

तेश ॥ मृडकृशानुरेता भर्ग पंचानन रु वृषेश ॥ ५६ ॥ शि

व की जटा । धनुष । पारिषद नाम ॥ दोहा ।

सु जटा मुकुट, अजगव धनुष, पिनाक ॥ प्रमथ तु कहिये

पारिखद, मात तु सप्त हि ताक ॥ ५७ ॥ सप्त मातानाम ॥

हा ॥ ब्रह्माणी माहेश्वरी कौमारी वाराहि ॥ इन्द्राणी

रु वैस्नवी चामुंडा जुत आहि ॥ ५८ ॥ ऐश्वर्य । अष्ट सिद्धि

पार्वती नाम ॥ दोहा ॥ भूति विभूति रु ऐश्वर्य तासु भेद

अठ जोय ॥ अणिमा लघिमा प्राप्ति रु महिमा गरिमा ...

य ॥ ५९ ॥ प्राकाम्य रु ईशत्व पुनि जुति वशित्व ।

॥ उमा अपर्णा ईश्वरी चंडिका सु गौरी रु ॥ ६० ॥ काली

भवती शिवा शक्ति मृडानी सोय ॥ रुद्राणी कात्यायनी

ती भवानी होय ॥ ६१ ॥ सर्वमंगला पार्वती दुर्गा आर्या

खि॥ सर्वाणी दाक्षायणी मेनकात्मजा देखि॥ ६२॥ एकदंत नाम॥ दोहा॥ गणपे विनायक गजवदन लंबोदर रु द्विदेह॥ विघ्नराज हेरंब अठ द्वैमातुर मति गेह॥ ६३॥ स्वामि कार्तिक। इन्द्र नाम॥ दोहा॥ कार्तिकेय शरजन्म पुनि महासेन गुहस्कंद॥ सेनानी शिखिवाहने सुवह्निरिषा पतीनंद॥ ६४॥ क्रौंचदारणो रु षड्वदन तारकजित रु कुमारं॥ वाहुलेय पुनि शक्तिधर षाणमातुर निर्धार॥ ६५॥ स्वामि विशाख रु अग्निभू सिद्धसेन हू थाट॥ इन्द्र विडौजा वज्रधर सुनासीर स्वाराट॥ ६६॥ मरुत्वान मघवा द्यवा सुरपति सूत्रामा रु॥ वास्तोष्पति संक्रंदन रु सोय दिवस्पति चारु॥ ६७॥ जिष्णु पुरंदर गोत्रभिद लेखवर्षभ पुरहूत॥ आखंडल दृढश्रवा वासव मातलि सूत॥ ६८॥ पाकशासन रु दुश्च्यवन नमुचिसूदन रु सोय॥ सहस्राक्ष शतमन्यु पुनि मेघवाहन सु होय॥ ६९॥ वलाराति कौशिक खदिर रु जंभभेदी थाट॥ ऋभुक्षा रु वज्री पुनि हरिहय रु तुराषाट॥ ७०॥ प्राची। नगरी। हय। नाम॥ दोहा॥ ताकी प्रिया पुलोमजा शची इन्द्राणी साजि॥ नगरी तो अमरावती उच्चैश्रवा तु वा[illegible]॥ ७१॥ सूत। वन। सदन। सुत। गजनाम॥ दोहा॥ सू[illegible] मातलि वन सुतो नंदन मनमें मानि॥ है जयंत प्रासाद है सुत जयंत उर आनि॥ ७२॥ वह्नि पाकशासनि जुगल गज तु अभ्रमातंग॥ ऐरावत ऐ

रावत्तो रु अमृत सुवल्लभ संग ॥७३॥ वज्रनाम ॥ दोहा ॥ वज्र ह्रादिनी कुलिश पवि भिदुर अशनि दंभोलि ॥ शंव स्वरु रु शत कोटि दश नाम शस्त्र के बोलि ॥७४॥ विमानादि पी यूषांत ४ के नाम ॥ दोहा ॥ व्योम यान तु विमान जुग सुर ऋषि नारद आदि ॥ सभा सुधर्मा ही अथो सुधा अमृत जुग वादि ॥७५॥ वियद्गंगा । सुमेरु नाम ॥ दोहा ॥ स्वर्नदी तु मंदा किनी सुरदीर्घिका ऽथ मेरु ॥ अरु हेमाद्रि सुरालय रत्न सानु रु सुमेरु ॥७६॥ देवतरु नाम ॥ दोहा ॥ देवतरु तु हरिचंद न रु परिजात संतान ॥ कल्पवृक्ष मंदार जुत पांच वखानन जान ॥७७॥ सनत्कुमार । स्वर्वैद्य । अप्सरा नाम ॥ दोहा ॥ सनकादिक वैधात्र अरु सनत्कुमार द्विधारि ॥ स्वर्वैद्य तु नासत्य अरु आश्विन दस्र विचारि ॥७८॥ आश्विनेय अश्वि नी सुत ये षट जुग जुग जानि ॥ स्वर्वेश्या तो अप्सरा जुग अथ भेद पिछानि ॥७९॥ अप्सरा भेद ॥ दोहा ॥ सात घृताची मेनका सुकेशी रु रंभा हि ॥ पुनि तिलोत्तमा उर्वशी रु मंजुघो षा आहि ॥८०॥ गन्धर्व । अग्नि । वडवानल नाम ।
॥ हाहा हूहू आदि हैं सुर गन्धर्व हि मित्त ।
रु वीतिहोत्र अप्पित्त ॥८१॥ अनल धनंजय वायुसख आश्र याश सोमानु ॥ जातवेद पावक
॥८२॥ वर्हि शुष्मा हुतभुक रु तनूनपाद रु वन्हि ॥ शुक्र ... न र्मी दहन आशुशुक्षणि रु अग्नि ॥८३॥ हव्यवाहन

रु दमुनस सुशुचि रु उषर्बुध होय ॥ शिखावान सप्तार्चि औ हिरण्यरेतो सोय ॥ ८३ ॥ चित्रभानु पुनि विभावसु राहिताश्वं तेतीस ॥ और्व तु बाडव तीन जुत, वडवानल हैं दीस ॥ ८४ ॥ झलादि तीन के नाम ॥ दोहा ॥ अर्चि ज्वाल कील रु शिखा हेति रु दम, झल थाप ॥ स्फुलिङ्ग सो तो अग्नि कण औ संज्वर तौ संताप ॥ ८५ ॥ काल । राक्षस । नाम । दोहा ॥ धर्मराज यम दंडधर अन्तक यमुनाभ्रात ॥ शमन प्रेतपति पितृपति रु वैवस्वत रु कृतान्त ॥ ८७ ॥ श्राद्धदेव यमराज अरु समवर्त्ती दश तीन ॥ अस्त्रप कौणप रात्रिचर रात्रिंचर सु प्रवीन ॥ ८८ ॥ आशर नैर्ऋत पुण्यजन यातुधान क्रव्याद ॥ यातु रक्षस रु कर्वुर सुनिकषात्मज मनुजाद ॥ ८९ ॥ पाशी । वायु । शरीर वायु नाम ॥ दोहा ॥ वरुण प्रचेत्ता अप्पति रु यादःपति चव पाठ ॥ वायु मातरिश्वा पवन स्पर्शन दश जुत आठ ॥ ९० ॥ वात प्रभंजन नभस्वत पृषदश्व रु पवमान ॥ अनिल समीरण गंधवह गंधवाह जगजान ॥ ९१ ॥ मारुत मरुत रु आशुग सु, जगत प्राण रु समीर ॥ प्राण अपान समान चव व्यान उदान शरीर ॥ ९२ ॥ भिन्न भिन्न शरीर वायु स्थान नाम ॥ दोहा ॥ उर मै प्राण अपान गुद नाभि हि मांहि समान ॥ अरु कंठस्थ उदान है सब शरीर गत व्यान ॥ ९३ ॥ झंझानिल के मलयानिल के वेग के नाम ॥ दोहा ॥ झंझानिल प्रावृषिज जुग मलय

निर्त च सन्त ॥ वेगं तुरंहंसं तुरसे रयं स्यद अरुजवं घट सन्त ॥ ९४ ॥ शीघ्र नाम ॥ दोहा ॥ शीघ्र त्वरितं लघु क्षिप्रं अरं अनिलं वितं द्रुत सोय ॥ सत्वरं तूर्णं तुच्छ पलं पुनि आशु एक दश होय ॥ ९५ ॥ निरन्तर नाम ॥ दोहा ॥ सन्ततं नित्यं अनारतं रु अविरतं अनिशं अश्रान्तं ॥ सततं निरन्तरं अनवरतं दश अज सं सुत शांत ॥ ९६ ॥ अतिशय के । कुबेर के । नाम ॥ दोहा ॥ अतिशयं भर अतिवेल भृश तीव्र गाढं उद्गाढं ॥ अत्यर्थ अति मात्रं दृढं पुनि एकान्तं रु बाढं ॥ ९७ ॥ निर्भर और नितांतं ये चौदह नाम बखानि ॥ धनदं धनाधिपं वैश्रवणं श्रीदं ऐलविलं मानि ॥ ९८ ॥ पुण्य जनेश्वरं यक्ष पतिं त्र्यंवक सखं रु कुबेर ॥ किन्नरेश पौलस्त्यं पुनि नरवाहनं तिहिं टेर ॥ ९९ ॥ गुह्यकेश्वरं रु कुतनुं वसु राज राजे शनेधीशं ॥ एक पिंग रु पिशाच की मनुष्य धर्मा वीश ॥ १०० ॥ कुबेर बन । सुत । पदापुरी । यान । नाम ॥ दोहा ॥ वन कुबेर को चैत्ररथं नलकूवरं तो पूत ॥ पद, हरगिरिं अलका पुरी पुष्पकं यान अभूत ॥ १०१ ॥ किन्नर । निधि नाम ॥ दोहा ॥ किन्नरं तौ किंपुरुषं मयुं तुरंग वदनं हु चारि ॥ निधि शेवधिं जुग भेदनं वपद्मादिक उर धारि ॥ १०२ ॥ निधि भेद नाम ॥ दोहा ॥ पद्मं शंखं कच्छपं मकरं नीलं खर्वं मुकुन्दं ॥ शाब्दाराव मै हैं लिखे महापद्मं अरु कुन्दं ॥ १०३ ॥

॥ इति स्वर्गतरङ्गः ॥

॥ अथ व्योम तरङ्ग लिख्यते ॥

॥ आकाश नाम ॥ दोहा ॥

अभ्र व्योम पुष्कर वियत अंवर गगन अनन्त ॥ सुर वर्त्म रु आकाशं नभ अन्तरिक्ष दिव सन्त ॥ १ ॥ द्यौ रु विहायस दिवु पद मरुत कुनाभि पिछानि ॥ मेघ वर्त्म अक्षर ख जुत वीस हि नाम बखानि ॥ २ ॥ इति व्योम तरङ्ग ॥

अथ दिक तरंग लिख्यते ॥ दिशा दिश्य नाम ॥ दो॰

दिक काष्ठा आशा हरित ककुभ पाच ही जानि ॥ प्राची पूर्वा दक्षिणा दिशा अवाची मानि ॥ १ ॥ प्रतीची तु दिश पश्चिमा उत्तर उदीची होय ॥ जो कछु उपजे दिशान मे दिश्य कहावे सोय ॥ २ ॥ क्रमतें पूर्वादि दिक पति नाम ॥ दोहा ॥ इन्द्र वन्हि पुनि पितृपति रु नैऋत वरुण विचारि ॥ मरुत कुवेर रु ईश ये आठौ दिकपति धारि ॥ दिग्गज नाम ॥ दोहा ॥ ऐरावत पुंडरीक रु वामन कुमुद सुनीक ॥ अंजन रु पुष्पदंत पुनि सार्व भौम सुप्रतीक ॥ ४ ॥ दिक करिणी नाम ॥ दोहा अभ्रमु कपिला पिंगला अनुपमा ताम्र कर्णि ॥ रु शुभ्र दन्ती अंगना अंजनावती वर्णि ॥ ५ ॥ विदिश ॥ मध्य ॥ नाम ॥ दो॰ दिशा विचि अपदिश विदिश अरु प्रदिश तीन ही मानि ॥ अंतराल अभ्यन्तर सु मध्यम अन्तर जुग जानि ॥ ६ ॥ मण्डल के मेघ के मेघ पंक्ति के नाम ॥ दोहा ॥ चक्र वाल मण्डल जुग ल गोलाकार अभूत ॥ मेघ अभ्र वारिद मुदिर तडित्वान जी

वृते ॥ ७ ॥ धूमयोनि जलमुक् अपर, धाराधर घनमानि ॥ वारि वाह स्तनयित्नु जलधर रु अंबुभृत जानि ॥ ८ ॥ कंधर गाडव नातरथं वलाहक हु दस आठ ॥ मेघवृन्द कादंबिनी घनमाली त्रय पाठ ॥ ९ ॥ मेघोत्पन्न वस्तु के । गर्जने के । बीजुरी के । नाम ॥ दोहा ॥ मेघभवं तु अभ्रियं इक हि रसित तु गर्जित चारु ॥ स्तनित मेघनिर्घोष चव ह्रादिनी तु शंपा रु ॥ १० ॥ शतह्रदा रु ऐरावती क्षणप्रभा चपला रु ॥ चंचला रु सौदामिनी तडित दामिनी चारु ॥ ११ ॥ वज्रघोष के । मेघज्योति के । नाम ॥ दोहा ॥ स्फूर्जथु तौ इक शब्द यह वज्र घोष मे जानि ॥ मेघज्योति इरंमद सुपरमै मिली पिछानि ॥ १२ ॥ इन्द्रधनुष के । वर्षा के । रुंड के नाम ॥ दोहा ॥ इन्द्रायुध है शक्रधनु रोहित तौ ऋज्जु आह ॥ बर्ष वृष्टि वर्षन विना अवग्रह रु अवग्राह ॥ १३ ॥ निरन्तर मेघधारा के । फुहारा के । ओला के । नाम ॥ दोहा ॥ त्रय धारा संपात पुनि आसार रु करि आहि ॥ शीकर सो तौ अंबुकण वर्षोपल करका हि ॥ १४ ॥ दुर्दिन के । अन्तर्धान के । चन्द्रमा के । कला के । बिंब के । नाम ॥ दोहा ॥ घनछाया दिन दुर्दिनौ हि अपवारण अपिधान ॥ अंतर्द्धा व्यवधा बहुरि तिरोधान अपिधान ॥ १५ ॥ आच्छादन अंतर्हि ये आठौं अंतर्द्धान ॥ चन्द्र चन्द्रमा इन्दु विधु कुमुदबंधु शशि जान ॥ १६ ॥ नक्षत्रेश कलानिधि रु जैवातृक ग्लौ अणु ॥ अब्ज सुधाकर निशापति सोम मृगांक सुधांशु ॥ १७ ॥

ओषधीप्रौ द्विजराज पुनि ग्लौ स हिमांशु हुबीस ॥ कला तु षोडषा सो वटहि विंब तु मण्डल दीस ॥ १८ ॥ टूक के । आधा के । चाँदनी के । नाम ॥ दोहा ॥ खण्ड अर्द्ध भित्ते रु प्रा कलं अर्द्ध तु आधहु जानि ॥ ज्योत्स्ना सो तो कौमुदी त्रतिय चंद्रिका मानि ॥ १९ ॥ निर्मलता के । चिन्हके । नाम । दोहा ॥ दोय प्रसाद प्रसन्नता चिन्ह तु लांछन लेखि ॥ लक्षण लक्ष्म कलंक अरु अंक सहित षट देखि ॥ २० ॥ अति छ्बि के ॥ छबि के ॥ पाला के । नाम ॥ दोहा ॥ सुखमा अति छबि कांति तो छबि द्युति शोभा च्यार ॥ अवश्याय नीहार हिम मिहिका तुहिन तुषार ॥ २१ ॥ महा पाला के । जाड़ा के । नाम ॥ दोहा ॥ हिमानी तु हिम संहति हि शिशिर तु शीतल शीत ॥ हिम रु सुषीम तुषार जड अठम जूड जगमीत ॥ २२ ॥ ध्रुव के । अगस्त्य के । अगस्त्य नारि के । तारान के । नाम ॥ दोहा ॥ जु औत्तानपादि सु ध्रुव रु ध्रू जी लोकिक तीन ॥ अथो कुंभसंभव सुतो कलशीसुत रु प्रवीन । २३ ॥ मैत्रावरुणि अगस्त्य तिहिं लोपामुद्रा नारि ॥ भ तु तारा नक्षत्र उडु ऋक्ष तारका धारि ॥ २४ ॥ दाक्षायणी के । अश्विनी के । द्विशाखा के । नाम ॥ दोहा ॥ अश्विनी आदि जु तारका दाक्षायणी हि आहि ॥ अश्वयुज तु अश्विनी जुग विशाखा तु राधा हि ॥ २५ ॥ पुष्य के । धनिष्ठा के । पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा के । नाम । दो॰

पूर्व निम्बं अरु सिघ्यै त्रय श्रविष्ठा तुदै धनिष्ठ ॥ प्रोष्ठपदा तौ
पूर्वा भाद्रपदा ही तिष्ठ ॥ २६ ॥ मृगशिर के ॥ नाम ॥ दोहा
मृगशीर्ष तु मृगाशिर त्यतिय आग्रहायणि हु दीस ॥ इल्वल
तारा पांनते वसन सु मृगशिरसीस ॥ २७ ॥ वृहस्पति । ना
म ॥ दोहा ॥ सुराचार्य गुरु त्रात्ति धिषण जीव वृहस्पति
जानि चित्रशिखंडिज आंगिरस वाचस्पति गुरु मानि ॥ २८
शुक्र के । मंगल के । नाम ॥ दोहा ॥ शुक्र दैत्यगुरु
काव्य कवि उशना भार्गव होय ॥ लोहितांग अंगार कुज भौ
म महीसुत सोय ॥ २९ ॥ बुध के । शनि के । राहु के ।
नाम दोहा ॥ रौहिणेय बुध सौम्य त्रय मंद शनैश्चर सौ
रि ॥ सैंहिकेय स्वर्भानु तम राहु विधुंतुद जोरि ॥ ३० ॥ सप्त
ऋषि ॥ नाम ॥ दोहा ॥ अत्रि पुलस्त्य वशिष्ठ क्रतु पु
लह मरीचि वखानि ॥ सहित अंगिरा सप्तऋषि चित्र शिखं
डी जानि ॥ ३१ ॥ राशि के । सूर्य के । नाम ॥ दोहा ॥ राशि उ
दय तौ लग्न है ते तु मेष वृष आदि ॥ मिथुन कर्क सिंह कन्य
का तुल वृश्चिक धनु वादि ॥ ३२ ॥ मकर कुम्भ मीन हु द्वि द
श अंश अर्यमा सोय ॥ सूर सूर्य आदित्य अरु द्वादशात्म र
वि होय ॥ ३३ ॥ ब्रध्न प्रभाकर दिवाकर उस्ररश्मि हरि दश्व ॥
मित्र विकर्तन अहस्कर चित्रभानु सप्ताश्व ॥ ३४ ॥ द्युमणि
अरुणा भास्कर तरणि ग्रहपति अरु विवस्वान ॥ अर्क अह
र्पति विभावसु मार्तण्ड रु भास्वान ॥ ३५ ॥ सहस्रांशु पूषा

तपन भानु त्विषांपति हंस ॥ मित्र विरोचन विभाकर सविता सप्त रुचि त्रिंस ॥ ३६ ॥ **माठर सूरसूत । नाम ॥ दोहा ॥** माठर पिंगल दंड त्रय पारिपार्श्वक जु सूर ॥ अरुण अनूरु रु काश्यपि सु गरुड भ्रात गुन पूर ॥ ३७ ॥ **परिवेष के । किरण के । भा के । आतप के । कोष्ण के नाम ॥ दोहा ॥** उप सूर्यक मंडल परिधि परिवेष इ चत्वारि ॥ किरण मयूख गभस्ति कर उस्र अंशु घृणि धारि ॥ ३८ ॥ दीधिति भानु मरीचि पुनि धाम्नि एक दश होय ॥ भा तु भास रुचि रुक् प्रभा छवि द्युति दीप्ति दिजोय ॥ ३९ ॥ रोचि शोचि त्विष ही अथो आतप द्योत प्रकाश ॥ कोष्ण कवोष्ण कदुष्ण पुनि मंद उष्ण चव भास ॥ ४० ॥ **ती-क्ष्ण के । मृग तृष्णा के । नाम ॥ दोहा ॥** तिग्म तीक्ष्ण खर तीन ये आत उष्ण हि के नाम ॥ मृग तृष्णा तु मरीचिका सिकता मधि जो घाम ॥ ४१ ॥ **इति दिक् तरंगः**

अथ काल तरंग लिख्यते ॥ समय के । पर्याय के नाम । दो॰

काल तु दिष्ट अनेह अरु समय नाम हैं चारि ॥ पक्ष ति प्रतिपद दोय अथ तादिक तिथि उर धारि ॥ १ ॥ **दिन के । प्रभात के । नाम ॥ दोहा ॥** घस्र अहन वासर दिवस दिन अथ स्त प्रभात ॥ प्रत्युष दिनमुख ल्प उष प्रत्यूष रु काहि प्रात ॥ २ ॥ **सायं । संध्या प्रातर ध्यादि नाम ॥ दोहा ॥** सायं तु साकं दिनांत ही पितृप्रसू तु संध्या हि ॥ सो प्राह्ण रु मध्या

न्ह पुनि त्रय अपराह्न हि आहि॥ ३॥ त्रिसंध्य। रात्रिनाम।
दोहा॥ ये तीनों तु त्रिसंध्यं इक अथ शर्वरी विचारि॥ निशा
रात्रि निशीथिनी क्षणदा क्षपा निहारि॥ ४॥ तमी त्रियामा
यामिनी रजनी द्वादश सोय॥ तमस्विनी रु विभावरी अथो
अंध्यारी होय॥ ५॥ अंध्यारी। चांदनी। पक्षिरणी। नाम।
दोहा॥ दोय तमिस्रा नाम सों ज्योत्स्नी चांदनि जानि॥ दत्तमा
न आगम दिवस निशि पक्षिरणी बखानि॥ ६॥ गणरात्र।
रजनीमुख। अर्द्धरात्र। याम नाम॥ दोहा॥ गणरात्र तु
बहु रात्रि हैं रजनीमुख तु प्रदोष॥ अर्द्धरात्र तु निशीथ कहिया
मं तु प्रहर अदोष॥ ७॥ पर्वसंधि। पंचदशी नाम॥ दो०
अन्तर प्रति पद पंचदशि पर्वसंधि सो जोय॥ पंचदशी पक्षां
त जुग पून्यौ मावस होय॥ ८॥ पून्यौ। अमावास्या। नाम
दोहा॥ द्वि पौर्णमासी पूर्णिमा अनुमति शशि कलहीन॥
शशि पूरण राका अथो अमावास्या प्रवीन॥ ९॥ रु सूर्येन्दु
संगम दर्श अमावस्या चौ चीन॥ सो यसिनी वाली कुहू श
शि जुत शशि कलहीन॥ १०॥ ग्रहण के। उपरक्त के। ना
म॥ दोहा॥ ग्रह रु ग्रहण उपराग त्रय अथ उपरक्त प्रमा
न॥ सो पप्लव जुग नाम ये राहु ग्रसित शशि भान॥ ११॥ आ
काशादि में अग्नि विकार। पुष्पवंत नाम॥ दोहा॥ अ
ग्न्युत्पात्त उपाहित सु अग्नि विकार नभादि॥ एक उक्ति मे
सूर शशि पुष्पवन्त इक वादि॥ १२॥ निमेषादि अयनांत

समयनाम॥दोहा॥अष्टादशहिनिमेष'कीकाष्ठा'होतनिदा
न॥तीसहिकाष्ठाकीकला'कलातीसक्षण'जान॥१३॥द्वाद
श क्षिनको जग विदित एक मुहूर्त 'हि होय॥तिन तीसन को प्र
गट हीएक रैन दिन'जोय॥१४॥निशवासरपंदरहन को एक
पक्ष'जियजानि॥पूर्वशुक्लपक्ष'दूसरोकृष्ण पक्ष'मनमानि॥
॥१५॥जुगपक्षन कोमास'है तिन द्वैकी ऋतु'जोय॥तिनती
नन को अयन'सो उत्तर'दक्षिण होय॥१६॥वत्सर।तुलामे
ष संक्रांतिके अगहन के।नाम॥दोहा॥ ॥ ते जुग
वत्सर" विषुवत तु विषुव'समजु दिन रैन॥मार्ग'मार्गशी
र्ष रु सहा आग्रहायणिक'अैन॥१७॥पूष।माह।फागुन
नाम।दोहा॥पोषतु तैष सहस्य"त्रयमाघ'तु तपा'द्विमा
नि॥फाल्गुनसो तो फाल्गुनिक'तृतिय तपस्य'वखानि॥
१८॥चैत्र।वैशाख।ज्येष्ठ।आषाढ।नाम॥दोहा॥
चैत्रतु चैत्रिक मधु'त्रयहि माधव'तौ वैशाख"॥राध'हु जेष्ठ'
तु शुक्र'जुग आषाढ'तु शुचि भाष॥१९॥श्रावण।भाद्र।
आसोज।नाम॥दोहा॥श्रावणिक'तु श्रावण'नभस"भा
द्रपद'स्तु नभस्य॥भाद्रपोष्ठपद"आश्विन'तु इष'रु आश्व
युज'पस्य॥२०॥कार्तिक के।हेमंतादि षट्ऋतु के।
नाम॥दोहा॥कार्तिक'सो तो कार्तिकिक'ऊर्ज'रु वाहुल"
चारि॥ऋतु तो षट हेमंत"अथ शिशिर"एक निर्धारि॥२१॥
पुष्प समय तो सुरभि अरु तृतिय वसन्त'वखानि॥ग्रीष्म तु

उत्तकांतप उक्तोपगम पिक्कानि ॥ २२॥ उत्तागमरुनिदाघजु
त सप्त हि नाम प्रमान ॥ वर्षी प्राट्ट दोय अथ शरद तुरकानि
दान ॥ २३॥ संमतादि मन्वंतरांत समय नाम ॥ दोहा
संवत्सर वत्सर समा हायन संरत रु अब्द ॥ नरइक मास प्र
सिद्ध है पितर रैन दिन शब्द ॥ २४॥ एकवर्षमान वन को
जानि देव दिन रैन ॥ श्याम सेत नर पक्ष ते पितरन के दि
न रैन ॥ २५॥ उत्तर दक्षिण अयन ते देवन के दिन राति ॥
देवन के जुग सहस युग जानि ब्रह्म दिन राति ॥ २६॥ ब्रह्म
के दिन रैन ते कल्प नरन के जानि ॥ इकहत्तर युग सुरन के
मन्वंतर मन मानि ॥ २७॥ प्रलय के। पाप के। पुराय के।
नाम ॥ दोहा ॥ प्रलय कल्प संवर्त्त क्षय कल्पांत रु पच हो
य ॥ किल्विष कल्मष पाप मा पाप पंक है सोय ॥ २८॥ क-
षं वृजिन दुष्कृत दुरित अंह एन अघ जानि ॥ धर्म पुराय वृष-
य सरु सुकृत पांच ये मानि ॥ २९॥ आनन्द नाम ॥ दोहा॥
आनन्दथु आनन्द सुख प्रीति प्रमद मुद मोद ॥ शर्म शात सं
मत हर्ष द्वादश नाम प्रमोद ॥ ३०॥ कल्याणनाम ॥
दोहा ॥ श्व श्रेयस शुभ भद्र शिव कुशल
शस्त भव्य भावुक भविक मंगल द्विदश सुजान ॥ ३१॥
अच्छे शुभ द के नाम ॥ दोहा ॥ तल्लज उद्ध मतल्लिका
अरु मच्चर्चिका मानि ॥ और प्रकांड प्रशस्त अ
पि, अर्थ जानि ॥ ३२॥ पूर्व कर्म के। कारण के। आदि-

कारण के नाम ॥ दोहा ॥ भागधेय दैव रु नियति दिष्ट भाग्य विधि जान ॥ कारण बीज रु हेतु त्रय कारण आदि निदान ॥ ३३ ॥ शरीराधिदैवत के । सत्वादिगुणसाम्यावस्था के । अवस्था के । गुण के । नाम ॥ दोहा ॥ क्षेत्रज्ञ तु आत्मा पुरुष प्रकृति प्रधान सुदोय ॥ जानि अवस्था काल कृत सत्व रज तम गुण होय ॥ ३४ ॥ जन्म के । प्राणी के । नाम ॥ दोहा ॥ उद्भव जन्म रु जनन जनु जनि उत्पत्ति प्रमानि ॥ चेतन जन्मी जन्यु षट् जंतु शरीरी प्रानि ॥ ३५ ॥ जाति के । व्यक्ति के चित्त के । नाम ॥ दोहा ॥ जाति जात सामान्य त्रय व्यक्ति तु पृथगात्म रूप ॥ चित्त चेत हृद हृदय मन मानस स्वान्त अनूप ॥ ३६ ॥

इति कालतरंगः

अथ धीतरंग लिख्यते । बुद्धि के । मनस्काम का नाम ।

दोहा ॥ प्रज्ञा धिषणा शेमुषी बुद्धि मनीषा सोय ॥ धी मति संवित चेतना प्रज्ञा प्रतिपत होय ॥ १ ॥ ज्ञप्ति चित रु उपलब्धि अथ धारण वाली धीय ॥ मेधा ही संकल्प तो मानस कर्म गनीय ॥ २ ॥ मनस्कार के । चर्चा के । वासना के । तर्क के । नाम ॥ दोहा ॥ मन सुखादि में लीन है चित्ताभोग सुजानि ॥ मनस्कार जुग ही अथो चर्चा संख्या मानि ॥ ३ ॥ द्विय विचारणा वासना सु तो भावना चार ॥ त्रितिय विमर्श हि ऊह तो तर्क रु अध्याहार ॥ ४ ॥ संदेह के । निर्णय के । नास्तिकता के । द्रोह चिंतन के । नाम ॥ दोहा ॥ संदेह तु संशय चतुर्द्वापर वि

चिकित्सा हि ॥ निर्णय तौ निश्चय जुगल मिथ्यादृष्टि तु आ हि ॥ ५ ॥ नास्तिकता जुग जहँ गनै परलोकादिअभाव ॥ द्रोह चिंतन तु दूसरो व्यापाद हि ठहराव ॥ ६ ॥ सिद्धान्त के भ्रम के नाम ॥ दोहा ॥ सिद्धान्त तु राद्धांत जुग निर्णय अन्त प्रमान ॥ भ्रम मिथ्यामति भ्रांति त्रय समुझै आन हि आन ॥ ७ ॥ अंगीकार नाम ॥ दोहा ॥ अभ्युपगम आश्रव नियम प्रतिज्ञान रु समाधि ॥ आगू संवित संश्रव रु नवम प्रतिश्रव साधि ॥ ८ ॥ ज्ञान के । विज्ञान के । मोक्ष के । अहंमति के नाम ॥ दोहा ॥ मुक्ति बुद्धि तौ ज्ञान है शिल्प शास्त्र विज्ञान ॥ मोक्ष मुक्ति कैवल्य पुनि निःश्रेयस निर्वाण ॥ ९ ॥ श्रेय अमृत अपवर्ग अथ अहंमति रु अज्ञान ॥ तृतिय अविद्या ही अथो पंच विषय ये जान ॥ १० ॥ रूपादि विषय के । इन्द्रियार्थ के । नाम ॥ दोहा ॥ रूप शब्द गंध रु रस सु पंच स्पर्श पिछानि ॥ इन्द्रियार्थ तौ विषय अरु गोचर तीन बखानि ॥ ११ ॥ इन्द्रिय नाम ॥ दोहा ॥ इन्द्रिय सो तौ विषयि अरु तृतिय हृषीक हि होय ॥ तासु भेद जुग कर्म अरु ज्ञान इन्द्रियहु जोय ॥ १२ ॥ कर्म इन्द्रिय के । ज्ञान इन्द्रिय के । नाम ॥ दोहा ॥ कर पद वाणी लिंग गुद इन्द्रिय कर्म निदान ॥ नयन करण त्वच नासिका रसना मन षट ज्ञान ॥ १३ ॥ षट रस के । जनमनहारी सुगंध के । नाम ॥ दोहा ॥ तुवर कषाय हि अथ मधुर लवण तिक्त कटु मानि ॥ अम्ल हु गंध

तु परिमल सुमलैंऽपजत जानि ॥ १४ ॥ **आमोद के । निर्हारी के नाम ॥ दोहा ॥** आमोद तु अति मन हरन निर्हारी तौ ख्यात ॥ द्वितीय समाकर्षीय है गंध दूरितें आत ॥ १५ ॥ **अत्युत्तम गंध को कपूर तांबूलादि मुखसोधक गंध के नाम । दोहा ॥** घ्राण तर्पण तु सुरभि पुनि है सुगंध चत्वारि ॥ इष्ट गंध मुखवासन तुआमोदी जुगधारि ॥ १६ ॥ **आमोदादि चार के स्थान ॥ नाम ॥ दोहा ॥** आमोद तु कस्तूरि मैं मुखवासन तु कपूर ॥ वकुल माहि परिमल गनत सुरभि तु पंचकपूर ॥ १७ ॥ **अनिष्ट गंध युक्त के । अपक्व मांसादि गंध के । श्वेत के नाम । दोहा ॥** पूतगंधि दुर्गन्धि जुग आम गंधि तौ जोय ॥ विस्र हि श्वेत तु शुक्ल शुचि शुभ्र विशद सित सोय ॥ १८ ॥ अवलक्ष रु अवदात पुनि पांडर अर्जुन गौर ॥ धवल श्येत ही हरिण तौ पांडुर पांडु न ओर ॥ १९ ॥ **धूसर के । श्याम के । नाम ॥ दोहा ॥** ईषत्पांडु तु धूसर हि श्यामल मेचक श्याम ॥ काल नील कृष्ण रु असित ये हैं सातत माम ॥ २० ॥ **पीत के हरित के । रक्त के शोण के । नाम ॥ दोहा ॥** पीत गौर हरिद्राभ मैं त्रय हरित हरित पालश ॥ रोहित लोहित रक्त त्रय शोण को कनदभास ॥ २१ ॥ **अरुण के । पाटल के । श्याव के । धूमल के । नाम । दोहा** गुप्तराग सो अरुण है पाटल श्वेत रु लाल ॥ श्याव कपिश धूमल सुतो धूम्र हु लोहित काल ॥ २२ ॥ **अत्यन्त गौर वालक के केश सम रंग के चित्र कबरा के ॥ नाम ॥ दोहा ॥**

कपिल पिंगल कपिल षट हि पिसंग कडार ॥ रात चित्र कबु
कन्माष हि निर्धार ॥ २३ ॥ इति द्वी तरंगः
अथ शब्दादि तरंग लिख्यते ॥ वाणी के उक्ति के नाम ॥ दो
सरस्वती गी भारती ब्राह्मी भाषा वाक उक्ति लपित भाषित व
चन वच व्याहार हि ताक ॥ १ ॥ बिगरे शब्द सुधरे शब्द
वाक्यार्थ ॥ दोहा ॥ अपभ्रंश अपशब्द जुग शब्द तु शुद्ध कह
त ॥ नाम क्रिया चय वाक्य कै कारक क्रिया मिलाव ॥ २ ॥ वेद के
त्रयी धर्म अथवा धर्म के भिन्न २ वेद के त्रयी का नाम
दोहा ॥ आम्नाय तु श्रुति वेद त्रय त्रयी धर्म विधि तास ॥ ऋ
क अरु साम रु यजुष इक त्रयी तु तीनो भास ॥ ३ ॥ वेदांग के ।
प्रणव के । नाम ॥ दोहा ॥ शिक्षा कल्प रु व्याकरण ज्योति
ष छन्द निरुक्त ॥ वेद अंग षट प्रणव तौ ओंकार हु जुग उक्त ॥
४ ॥ इतिहास के । स्वर के । आन्वीक्षिकी के । दंडनी
ति के । नाम ॥ दोहा ॥ पुरावृत्त इतिहास जुग स्वर इक भे
द तु तीन ॥ उदात्त ऽनुदात्त रु स्वरित आन्वीक्षिकी तु वीन ॥ ५ ॥
गौतमादिक रचित यह विद्या तर्क विचारि ॥ दंडनीति शुक्र
आदिकृत अर्थ शास्त्र निर्धारि ॥ ६ ॥ अनुभव के । पुराण
के । नाम ॥ दोहा ॥ अथ दोय तु आख्यायिका उपलब्धार्थ
मानि ॥ चिद्दिन पुराण जु नाम सत पंच लक्षण हु जानि ॥ ७ ॥ पं
च लक्षण ॥ दोहा ॥ वंश सर्ग प्रति सर्ग अरु मन्वंतर परम
न ॥ मन्वादिक संस्थापना लक्षण पंच पुरान ॥ ८ ॥ कथादि

५ के नाम ॥ दोहा ॥ रचना दिस्तर वाक्य की कथा नाम इक हो
त ॥ प्रवल्हिका तु प्रहेलि का धर्म संहिता सोत ॥ ९ ॥ दूजी स्मृति तै
संग्रह सुतौ समाहृति हि निर्धार ॥ असमास तार्थो समास्यौ नुक
कवि पारि रवकार ॥ १० ॥ लोक प्रवाद के । वार्ता के । नाम ।
दोहा ॥ किंवदंति किंवदंती त्फतिय जनश्रुति आंत ॥ वार्ता सु
तो प्रवृत्ति चक्र जुन उदंत वृत्तान्त ॥ ११ ॥ नाम के नाम । दोहा
संज्ञा सो तौ गोत्र पुनि आह्वय अरु अभिधान ॥ आख्या आह्वो
नाम अरु नामधेय जुत नान ॥ १२ ॥ हेला का । वृहृतन का
हेला का । मुकदमा के । नाम ॥ दोहा ॥ हूति सुतौ आक
रणा आह्वान सु त्रय धार ॥ वहुतन कृत संहूति है जुग विवाद व्य
वहार ॥ १३ ॥ वचनारंभ के । उपोद्घात के । सोगन्द के । प्र
श्न के । नाम ॥ दोहा ॥ उपन्यास तौ वाङ्मुख रु वचनारंभ वि
मानि ॥ उपोद्घात तौ दूसरो उदाहार सो जानि ॥ १४ ॥ कहि हैं जो उ
पयोगि तिहिं अर्थहि वर्णन जोग ॥ प्रापन तु शापथ हि प्रश्न तौ
प्रच्छा त्रय अनुयोग ॥ १५ ॥ उत्तर के । अभ्याख्यान के ।
नाम ॥ दोहा ॥ उत्तर तौ प्रति वाक्य जुग अभ्याख्यान तु देय
॥ सुमिथ्याभियोग जु कहै तैं धन लियो सु देय ॥ १६ ॥ अभि
शाप नाम ॥ दोहा ॥ जु मिथ्याभिसंशान सुतौ है अभिशा
प दूभाय ॥ पाप सुरापानादि को मिथ्या जहां लगाय ॥ १७ ॥
प्रशाद के । यश के । स्तुति के । नाम । दोहा । प्रशाद
स्तु अनुराग सैं उपजे शब्द बखानि ॥ कीर्ति समज्ञा यश स्तुति तु

...स्तोत्रं स्तुति जानि॥ १८॥ आम्रेडित के। घोषणा के ना
म॥ दोहा॥ दोयतीन वर उक्त सो आम्रेडित निर्धारि॥ उ
च्चधुष्ट तो घोषणा घोषणा तीनि निहारि॥ १९॥ काकु। दोहा
काम क्रोध मद शोक भय आदिक करि कहुं होय॥ जो बोली
को बदलि तो काकु कहावे सोय॥ २०॥ निंदा नाम॥ दोहा
कुत्सा गर्हणा जुगुप्सा निर्वाद रु परिवाद॥ अवर्ण आक्षेप रु न
वल उपक्रोश अपवाद॥ २१॥ निष्ठुर वचन के। दोष लग
के डराने के। खिजाने के। नाम॥ दोहा॥ पारुष्य तु अति
वाद अथ भर्त्सन वच अपकार॥ उपालंभ जुत निंद सो परिभा
षणा निर्धार॥ २२॥ पर स्त्री मैथुन निमित्त वचन के। संबो
धन पूर्वक वार्ता करने के। अनर्थ वचन के। नाम॥ दोहा
मैथुन प्रति आक्रोश सो आह्वारणा कुजाप॥ आभाषण आलाप
जुग वच बिन अर्थ प्रलाप॥ २३॥ अभिशोक युक्त भाषण के
विलाप के। परस्पर विरुद्ध भाषण के नाम॥ दोहा॥ अ
नुलाप तु मुहु भास है परिदेवन तु विलाप॥ विरोधोक्ति विप्रला
प हि मिथु भाषण संलाप॥ २४॥ सुन्दर वचन के। छिपे हुये
वचन के। संदेश के। अमंगल वाक्य के नाम॥ दोहा॥
सु प्रलाप तो सु वचन हि निन्हव तो अपलाप॥ वाचिक तो संदे
श वच रुशती अशुभ हि जाप॥ २५॥ शुभ वचन का। अति
मिष्ट वचन का। योग्य वचन का। नाम॥ दोहा॥ क
ल्या तु वच शुभात्मिका सांत्व तु अतिशय मीठ॥ संगत तो हृदय

गर्म सुमिलित जुक्ति वच इठ॥२६॥कठोरवचन के।शिथिल वचन के।प्रियसत्य वचन के।पूर्वापर विरुद्ध वचन के नाम॥दोहा॥परुषतु निष्ठुर ग्राम्यतौ अश्लील हु जुग जानि॥सूनृत तौ प्रियसत्य अथ संकुलक्लिष्ट द्वि मानि॥२७॥अथक हे वचन का।थूक सहित वचन का।हल वल हे वचन का।नाम॥दोहा॥पूर्वापरसु विरुद्ध अथ लुप्तवर्णपद ग्रस्त॥सनिष्ठेव अंबूकृत हि त्वरित तौ दित तु निरस्त॥२८॥अग्राम्य वचन का।अकथन योग्य के झुठाई का।झूठ का नाम॥दोहा॥अवद्द्य सो तु अनर्थ जुग अन अक्षरं स्तु अवाच्य॥आहत सु तौ म्लेच्छार्थक हि वितथ तु अन्तत हि वाच्य॥२९॥उपहास सहित वचन का।रति समय का शब्द का नाम॥दोहा॥सोल्लुंठन सोत्प्रास जुग वच उपहास समेत॥रति कूजित तौ मणित जुग रवरति समय सचेत॥३०॥अप्रगट वचन के।सत्य के नाम।दो॰ अविस्पष्ट तौ म्लिष्ट जुग ओठन मांधि की वानि॥सत्य सुतौ ऋत तन तथ्य अरु सम्यक चारि वखानि॥३१॥शब्द मात्र के पत्र वस्त्रन के शब्द के।आभूषणन के शब्द के नाम॥दोहा॥शब्द निनद ध्वनि ध्वान रव स्वन निर्घोष निनद॥निर्ह्राद रु निस्वान पुनि निस्वन आरव नाद॥३२॥अरु विराव आराव [illegible] संराव मर्मर स्वन दल वस्त्र कौ शिंजित भूषण भाव॥३३॥वीणा शब्द नाम॥दोहा॥काणक

गानै नि ग्रामो अरु ग्राम है जो चीन ॥ क्रमतें आदि प्रकारो अ है मूर्छना दिग नितीन ॥ ३४ ॥ बडे हल्ला के । पक्षीनकी बोली के । गूंज के । गाने के नाम ॥ दोहा ॥ कोलाहल कोल कल जुगल आशितरुत तिरचान ॥ मति श्रुति लुप्तनि ध्वनि है अथ जुग गीत रु गान ॥ ३५ ॥

इति शब्दादि तरंगः ॥

अथ नाट्य तरंग लिख्यते ॥ सप्तस्वर नाम ॥ दोहा ॥ ऋषभ षड्ज गांधार पुनि मध्यम धैवत मानि ॥ पंचम और निषाद स्वर सप्त राग के जानि ॥ १ ॥ क्रमतें सप्त स्वरन के आलापक नाम ॥ दोहा ॥ गौर रु मयूर अजादि पुनि क्रौंच अश्व निर्धार ॥ कोकिल गज इन स्वरन के क्रमतें करत उच्चार ॥ २ ॥ काकली । कल । मन्द्र । तार ॥ नाम ॥ दोहा ॥ काकली तु सूक्षम सु ध्वनि कल तो अस्फुट नीठ ॥ मंद्र सु तो गंभीर ध्वनि तार उच्च अति ईठ ॥ ३ ॥ एकताल । वीणा । परिवादिनी नाम ॥ दोहा ॥ एकताल तो नीक अति जु स्वर लय है निर्धार ॥ वीणा विपंची वल्लकी परिवादिनि मुनि तार ॥ ४ ॥ तत । आनद्ध । सुषिर । घन । नाम ॥ दोहा ॥ तत वीणादिक वाद्य है अनद्ध तु मुरजादि ॥ वंशादिक तो [illegible] है घन तु कांस्यतालादि ॥ ५ ॥ वाद्य । मुरज । मुरजभेद । मुरज स्वरूप नाम ॥ दोहा ॥ ये चारिहुं तो वाद्य पुनि आ[illegible] रु वादित्र ॥ मुरज म्रदंग रु दो यति हिं भेद अंक्य है मित्र

॥२६॥ आलिंग्य रु ऊर्द्धक त्रयहि अंक्य तु हरडै रूप॥ आलिंग्य तु गो पुच्छ सम यवसम ऊर्द्धक ऊप॥७॥ **ढक्का के। भेरी के। नगारा के। नाम॥** दोहा॥ जसहित जो आगै बजे, यशः पटह ढक्का हि॥ भेरी दुंदुभि दोय अथ आनक पटरु द्विआ हि॥८॥ **कोण। वीणा दंड। वीणा दंड के नीचे जो दारु भांड ता के नाम॥** दोहा॥ वीणादिक जाते बजे, कोण क हावे सोय॥ वीणादंड, प्रवाल अथक कुंभ प्रसेवक होय॥९॥ **तार रहित वीणा सर्वांग के। जामें तार बंधै ता के भिन्न भिन्न बाजान के। नर्त्तक के। नाम॥** दोहा॥ कोलंब क तो काय है निबंधन तु उपनाह॥ बाजा, डमरु डमड्डु पुनि डिंडिम झर्झर आह॥१०॥ मर्द्दल पणव दिक अपर बाजा भेद विचारि॥ नर्त्तकी जुगल लासका नाचन हारि निहारि॥ ११॥ **धीरो। तेज। समनाच। ताल।** दोहा॥ विलंबित तु है तत्त्व गसि द्रुत तो ओघ निदान॥ मध्यम गति घन ताल तो काल क्रिया को मान॥१२॥ **लय। तांडव। तौर्यत्रिक। नाम॥** दोहा॥ गीत वाद्य पादादि थिति क्रिया काल सम होय॥ सो लय एका हि तांडव तु नटन रु नर्त्तन जोय॥१३॥ नृत्य नाट्य लास्य रु पट हि अथ तौर्यत्रिक सोय॥ नाट्य जुगल ये नृत्य अरु गीत वाद्य मिलि होय॥१४॥ **नाच के। नाम** दोहा॥ भ्रुकुंस और भ्रूकुंस है भ्रूकुंस हु त्रय जानि॥ नर्त्तक नारी वेष धर पुरुष नाम मन मानि॥१५॥ **नाट्य उक्ति नाम।**

॥दोहा॥ गणिका कहिये, अज्जुका नाट्य उक्ति मैं जान॥ भगिनी पति आवुत्त है भाव जानि. विद्वान॥१६॥ जनक तु आवुक जानि पे युवराज तौ कुमार॥ भर्त्तदारक हुन्यपति तौ भट्टारक निर्धार॥१७॥ देव हू ताकी सुता तौ भर्त्तदारिका होय॥ देवी तौ अभिषेक कृत इतर भट्टिनी जोय॥१८॥ अब्रह्मण्य अवध्य है राष्ट्रिय तौ न्टप श्याल॥ अम्बा माता अनत हू वास्त कहिये बाल॥१९॥ आर्य तु मारिष अत्तिका भगिनी वडी वखानि॥ निष्ठा तौ निर्वह ण है संधि पंचमी मानि॥२०॥ पंच संधि नाम॥ दोहा॥ मुख अरु प्रतिमुख गर्भ कहि पुनि अवमर्श पिछानि॥ अरु निर्वहण हु पांच ये नाटक संधि वखानि॥२१॥ नीचादि उ बुलाने के नाम॥ दोहा॥ हंडे हंजै हला नय यथा संख्य आ ह्वान॥ नीचा चेटी सखी प्रति नाट्य उक्ति इति जान॥२२॥ अंगविक्षेप। व्यंजक। आंगिक। सात्विक। दोहा॥ दो ऊ अंगविक्षेप अरु अंगहार है सोय॥ न्टत्य विशेष हि तु अभिनय हू सर जोय॥२३॥ हस्तादिकरि मनगत हि अर्थ प्रकाश न होन॥ भट कै वौ भ्रू आदि को आंगिक सात्विक सोत॥२४॥ सात्विक भाव यथा॥ दोहा॥ स्तंभ स्वेद र भंग कंप पहिचानि॥ अश्रु प्रलय वैवर्ण्य अठ सात्विक मा व वखानि॥२५॥ नव रस। श्टंगार। वीर। नाम॥ दोहा॥ रस श्टंगार रु वीर पुनि करुणा रौद्र रु हासि भय पुनि अद्भुत आठ विकासि॥२६॥ नवम शांत रस काव्य

में होत नाट्य में नाहि॥ शुचिउज्वल शृंगार त्रय वीर वृद्धि उत्साह॥ २७॥ करुणा। हास्य। नाम॥ दोहा॥ कारुण्य तु करुणा घृणा कृपा दया अनुकंप॥ अनुक्रोश अथ हास हस हास्य तीनये जंप॥ २८॥ वीभत्स। अद्भुत। भयानक। रौद्र। त्रास। नाम। दोहा॥ विकृत सुतौ वीभत्स है अद्भुत विस्मय चित्र॥ आश्चर्य हु अथ भयानक दारुण प्रतिभय मित्र॥ २९॥ भैरव भीषण भीष्म अरु भीम भयंकर घोर॥ रौद्र उग्र जुग त्रास डर साध्वस भीति न औरं॥ ३०॥ भाव। अनुभाव। अहंकार। नाम॥ दोहा॥ मन विकार तौ भाव है तिंहि बोधक अनुभाव॥ अहंकार अभिमान पुनि गर्व तीन दरसाव॥ ३१॥ मान। अवमान। लज्जा। नाम॥ दोहा॥ चित्तसमुन्नति मान अथ तिरस्क्रिया अवमान॥ परिभव रीढा अवज्ञा अरु अवहेल सुजान॥ ३२॥ असूक्षा रु परिभाव पुनि नवम अनादर होय॥ लज्जा हू व्रीडा त्रपा मंदाक्ष हु पच जोय॥ ३३॥ अपत्रपा। क्षांति। नाम॥ दोहा॥ लज्जा परसैं होय सो अपत्रपा इक धारि॥ क्षांति तितिक्षा हो बरखु सपर को उन्व निहारि॥ ३४॥ अभिध्या। ईर्ष्या। असूया। नाम॥ दोहा॥ अभिध्या तु परधन चहसु ईर्ष्या तो अक्षांति॥ असूया तु परगुनन मे दोष धरण मन कांति॥ ३५॥ वैर के। मन्यु के। पछितावने के। नाम॥ दोहा॥ वैर विरोध विद्वेष त्रय मन्यु शोक शुक थाप॥ पश्चात्ताप तु विप्रतीसार त्रतिय अनुताप॥ रोष के। शील

के ॥ चित्त विभ्रम के । प्रेम के । तर्ष के । लालसा के । नाम ॥ दोहा ॥ प्रतिघा रोष अमर्ष रुट् कोप क्रोध क्रुध सात ॥ प्रीति शुद्ध चारित्र है चित्त विभ्रम तु तात ॥ ३७ ॥ उन्माद हु प्रेमा सुनौ प्रयता हार्द बषानि ॥ प्रेम स्नेह अथ तर्ष त्वड इच्छा वांछा जा नि ॥ ३८ ॥ स्पृहा ईहा मनोरथ दोहद कांक्षा काम ॥ लिप्सा अ भिलाष हि अति तु सोय लालसा नाम ॥ ३९ ॥ धर्म चिन्ता के । आधि के । स्मरण के । कामादि सें उत्पन्न स्मरण के । उत्साह के । अति उत्साह के । नाम ॥ दोहा ॥ हि, धर्म चिन्ता उपाधि हि व्यथा मानसी आधि ॥ आध्या न तु चिन्ता रु स्मृति अथ उत्कलिका साधि ॥ ४० ॥ उत्कण्ठ उत्साह तो अध्यवसाय हि मानि ॥ उत्साह जु अति शक्ति जुत सो ऊर्ज वीर्य बखानि ॥ ४१ ॥ कपट के । अकर्तव्य के । नाम ॥ दोहा ॥ कपट शाठ्य कैतव उपधि कुसृति निकृति अरु व्याज ॥ दम्भ रु छद्म प्रमाद तो अनवधान तौ साज ॥ ४२ ॥ कौतूहल के । हाव के । क्रीडा मात्र के । नाम ॥ दोहा ॥ कौतूहल कौतुक कुतुक कुतूहल इ चत्वारि ॥ हेला लीला कुट्टमित विभ्रम ललित विचारि ॥ ४३ ॥ किलकिंचित विव्वोक म द विच्छित्त विहृत विलास ॥ तन क्षोभ विक्षेप पुनि मोट्टा यित सुप्रकास ॥ ४४ ॥ हाव संजोग सिंगार भव दम्पति क्रिया ब खानि ॥ क्रीडा खेला परिहसन नर्म केलि द्रव मानि ॥ ४५ ॥ कोदर के । बाल लीला के । नाम ॥ दोहा ॥ लक्ष्य व्याज

उपदेशौ त्रय आच्छादनजुस्वरूप॥ क्रीडा खेला कूर्दनं सुबालक लीलारूप॥४६॥ साधारण मूर्छाके। स्वेदजा गर्मी के। शोक में मुखादि झांपने के। नाम॥ दोहा॥ नष्ट चेष्टत्व प्रलयं जुग घर्म निदाघ रु स्वेद॥ जु आकार गुप्ति सुगनो अवहित्थौ जुग भेद॥४७॥ हर्ष सैं शीघ्र कार्य करने आदि ३ के। नाम॥ दोहा॥ सम्भ्रमतौ संवेग जुग आच्छुरितक तौ हास॥ अभिप्रायजुत वेगजुत स्मित तौ थोरो हास॥४८॥ मध्य महास्य के। रोमांच के। रोने के। जमुहाई के। नाम॥ दोहा॥ समविहसितं रोमांच तौ रोम हर्षण हि दोय॥ क्रंदित रुदित रुक्रुष्ट त्रय जृंभ नु जृंभण होय॥४९॥ अयोग्य वचन अथवा स्वीकार कारि वदलबा के। स्वधर्म सैं डिगवो अथवा गुढ लियें चलिवो अथवा रिपटपडवा के। नींद के नाम॥ दोहा॥ विसंवाद विप्रलंब हि स्खलन तु रिंगण दोय॥ स्वप्न स्वाप निद्रा शयन संवेश हु पच होय॥ ५०॥ ऊंगवा के। भ्रूभंग के। क्रूर दृष्टि के। स्वभाव के। कंपके। उत्सव के। नाम॥ दोहा॥ प्रमीला तु तंद्री भ्रकुटि भ्रूकुटि भृकुटि त्रिरूप॥ होय अदृष्टि असौम्य दृग सांसिद्धि सुस्वरूप॥५१॥ प्रकृति स्वभाव निसर्ग पच वेपथु कंप सु दोय॥ क्षण मह उद्धव उद्धर्ष उत्सव पच मह होय॥५२॥

इति नाट्य तरंगः॥

७ अथ पाताल ९ मो तरंग लिख्यते॥ पाताल के। छेद

के। खाडा के। नाम॥ दोहा॥ नाग लोक बलि सद्म पुनि
अधो भुवन पाताल॥ पंच रसातल कुहर तो शुषिर रु बिवर रसा
ल॥१॥ छिद्र निर्व्यथन रोक बिल रंध्र श्वभ्र शुषि होय॥ वपा रु
कादर अवट तो गर्त भूमि बिल दोय॥२॥ छिद्री वस्तु के। त
म के। अति तम के। नाम॥ दोहा॥ शुषिर रु रंध्र बखानि
अथ अंधकार तम ध्वांत॥ तिमिर तमिस्र सु पंच अथ अंधत
मस अति ध्वांत ३॥ क्षीण तम के। संतमस के। नाग
के। नाग स्वामी के। नाम॥ दोहा॥ क्षीण ध्वांत तो अवत
मस संतमस तु तमजाल॥ काद्रवेय तो नाग जुग शेष अनं
त सुपाल॥४॥ वासुकि आदि ४ के। नाम॥ दोहा॥
वासुकि तौ अहिराज अथ गोनस तिलिन्स थर्प॥ अजगर वाह
स त्यु त्वतिय अलगर्द तु जलसर्प॥५॥ राजिल के। चीत
ल के। बीन्पली उतार के। नाम॥ दोहा॥ राजिल डुंडुभ
द्विमुख पुनि चाकरैंड चव उक्त॥ मालुधान मातुलसर्प सुक कंचु
कीनि सु उक्त॥ सर्प नाम॥ दोहा॥ भुजग भुजंगम गूढपद व्या
ल सरी सृप सर्प॥ आशीविष विषधर फणी पन्नग भोगी थर्प॥
७॥ दंदशूक चक्षुश्रवा जिह्मग उरग भुजंग॥ अहि मदाकुंद
वी कर रु काकोदर तिहिं संग॥८॥ दीर्घपृष्ठ अरु कुंडली पव
नाशन मन मानि॥ चक्री औ बिलेशय सुपंच विंश उर आनि॥
९॥ आहेयादि ३ के। नाम॥ दोहा॥ विषास्थ्यादि आहे
यं अथ स्फटा रु फणा निहारि॥ कंचुक अरु निर्मोक जुग सर्प

कांचली धारि ॥१०॥ विषके । स्थावरविषभेदके । नाम ॥
दोहा ॥ क्ष्वेड गरल विष तीन अथ कालकूट काकोल ॥ हलाहल
रु सौराष्ट्रिक रु शौक्लिकेय वधवोल ॥११॥ वत्सनाभ दारदवह्
रि ब्रह्मपुत्र उरआनि ॥ और प्रदीपन सहित ये नव विषभेद व-
खानि ॥१२॥ गारुड़ के । अहिग्राहके । नाम ॥ दोहा ॥ विष
वैद्य रु जांगुलिक जुग गारुड़ जग में जोय ॥ व्यालग्राहि अहि
तुंडिक रु आहितुंडिक हु होय ॥१३॥

इति पातालभोगितरंगः

अथ नरकतरंग लिख्यते ॥ नरकादि ३ के । नाम ॥ दो०
दुर्गति नारक नरक पुनि निरय जानि चत्वारि ॥ तपन अवीचि
रौरव रु महारौरव सुधारि ॥१॥ काल सूत्र संहार षट आदि
भेद वहु जोय ॥ प्रेत तु प्राणी नरक के वैतरणी नदि होय ॥२॥ निर्ऋ
त के । हठसैं नरक में पटकने के । अथवा वेगारि के । अ
थवा भद्राख्य करण के । तीव्रदुःखके । नाम ॥ दोहा ॥
निर्ऋत सो तो अलक्ष्मी अजू विष्टि विगारि ॥ तीन कारणा या
तना तीव्र वेदना धारि ॥३॥ मनव्यथा । तनुव्यथा । नाम ॥
दोहा ॥ आमनस्य पीडा व्यथा वाधा दुःख सुशील ॥ कृछ्रमप्र
सूतिज तीन तो कष्ट कृच्छ्र आभील ॥४॥

इति नरकतरंगः

अथ वारितरंग लिख्यते ॥ सिंधु । सिंधुभेद । आप । ना
म ॥ दोहा ॥ सिंधु अब्धि अर्णव उदधि जलनिधि सागर जोय

अकूपार कलाकर केसरितें आपांपति होय॥१॥सतस्वान्यप दः
पति कसमुद्र पारावार॥उदन्वान अथ भेद लिहि दधिमंड
उदार॥२॥क्षीरोद कलवणोदपुनि इक्षुसोद सुरोद॥अरु
घृतोद स्वादूद अथ आप कसलिल सवोद॥३॥वार सर्व तो
मुख अमृत पुष्कर शंवर क्षीर॥मेघपुष्प कीलाल वने अ
र्णस अंभस नीर॥४॥जीवन घनरस अंबु पय कमल पाथ
जल तोय॥वारि उदक पानीय पुनि भुवन कावंधक होय॥
॥५॥जाल विकालि। वीचि। नाम॥दोहा॥ आपक अ
भ जल विकाति वीचि तु भंग तरंग॥ऊर्मि वारि कल्लोल
तो कल्लोल कु अतिभंग॥ दो॥भौंर, पृषत। नाम॥दो०
जल भ्रम आवर्त है भौंर जगत में जोय॥पृषत बिंदु विपु
व पृषत जलकन वेंचप होय॥७॥ वक्र। नाम। नाम॥
दोहा॥वक्र रु जल अथ असे तो पको रुपट भेद॥
तो जल निर्गम जुगल जलगत काढे आखेद॥८॥कूला
दि द्वे। नाम॥दोहा॥कूल तुतो धन रोधस कतट पु
नि तीर प्रतीर ओलो तीर अवार इक पार तु पेलो तीर॥९
टापू पुलिन। नाम॥दोहा॥तिनको अन्तर पात्र है
अंतरीप तो द्वीप॥जल तें निकस्यो तट सु तो
विकुल दीप॥१०॥सैकत। निषद्वर। नाम॥
थ अयस्कृटसिकतामय जो पौना ... जंवाल।
... थ सागर जोय ... उपराके

दिखुत्कोमेंजल निमित्त खाडाके। नाम॥ दोहा॥ जलोच्छ्वास पारवाहजुग दृढ़ वारिग तराह॥ कूपक तीन विदारक रुवेरी है कविनाह॥ १२॥ नाव्यादि ३के। नाम॥ दोहा॥ नाव्य तु नाव उतार जल नौ तु तरारी तरि तीन॥ उडुप तु प्लव अरु कोलै त्रय त्वरा कृत नौका वीन॥ १३॥ सोतके। उतराईके। पत्थर वा काष्ठकी नौका कार वेडीके॥ नाम॥ दोहा॥ सोतस स्वत रु प्रवाह जल आतर नौ तरपण्य॥ उतराईको मोल जुग द्रोणी सोतौगराप॥ १४॥ अंबुवाहिनी काष्ठकी सांयात्रिक नौ जानि॥ पोत वारिकं जुग नाविक तु करण धार भनमानि॥ १५॥ जलजीवादिसे वचाय नौकाकों चलावै ताके। नाव रज्जुबांधवाके काठके। नाम॥ दोहा॥ पोतवाह अरु नियामक मगलरवाथित मुखकाठ॥ कूपक गुण वृक्षक जुगल रजु बंधन नौ काठ॥ १६॥ नावके वगल वंधे। पीठवे वंधे चालन काष्ठके। नाम॥ दोहा॥ नौका दंड रु क्षेपणी नाव वगल गत काठ॥ केनिपातक रु अरित्र मुचालन पीठहि काठ॥ १७॥ अभ्रि। सेकपात्र। नाम॥ दोहा॥ अभ्रि काष्ठ कु[illegible]जुग नाव मैल कुन्चर हन॥ सेकपात्र सेचन जुगल नौ गत जल निकसान॥ १८॥ आधीनाव। अतिनु। नाम दोहा॥ अर्द्धनाव यह नाम तौ आधी नौका जोय॥ करै उलंघन नावको अतिनु कहावै सोय॥ १९॥ निर्मल। मलिन। नाम॥ दोहा नितरौ लन तौ अच्छ अरु द्वितिय प्रसन्न वखानि॥ कलुष अन

चरु आंवलहु तीन मलिन जलजानि ॥ २० ॥ गहिरेके । उत्ता
नके । अथाहके नाम ॥ दोहा ॥ निम्न सुतौ गंभीर अरु त्यति
य गभीर हु साध ॥ सोउलटो उत्तान अथ अतलस्पर्श अगाध
॥ २१ ॥ मल्लाहके । जालके । प्राणसूत्रके । नाम ॥ दोहा ॥
धीवर तौके वर्त्तक रु दास हु जाल तु जोय ॥ आनाय हि प्राणसूत्र
तौ द्वितिय पवित्रक होय ॥ २२ ॥ मत्स्यस्थापन पात्रके । कां
टाके । मीनके । मीनवालके । नाम ॥ दोहा ॥ मत्स्याधानी
कुवेणी मत्स्य वेधन तु चार ॥ वडिश अंडज तु मीन झष पृथुरो
मा रु विसार ॥ २३ ॥ वैसारिण प्राकुली अठम मत्स्य नाम ही होत
॥ प्राकुलार्भक तौ गडक जुग मीन मात्रके पोत ॥ २४ ॥ वहुत दांत
वाली मच्छीके । ढूंसके । वेगसाके । सहरीके । नाम ॥ दो
हा ॥ सहस्रदंष्ट्र पाठीन जुग शिशुक उलूपी दोय ॥ नलमी
नं तुन्दिल चिंम जुगल प्रोष्ठी सफरी दोय ॥ २५ ॥ वरवे ॥ सु
द्र अंड मत्स्यन को संघ जु होय ॥ पोताधान वखाने ताकौं लो
य ॥ २६ ॥ भिन्न भिन्न मत्स्य नाम ॥ दोहा ॥ रोहित मद्गु
र शाल तिमि प्राकुल तिमिंगिल होय ॥ राजीवादिक एकइक
मत्स्य विशेष हि जोय ॥ २७ ॥ जलजीव । भिन्न भिन्न जल
जीव । नाम ॥ दोहा ॥ यादस तौ जल जीव तिनके भेद अपार ॥ उद्र
शंकु कुंभीर अरु ग्राह मकर शिशुमार ॥ २८ ॥ कुलीर । कमठा
दि । ४ के । नाम ॥ दोहा ॥ कर्कट कस्तु कुलीर जुग कूर्म तु क
च्छप धीर ॥ ग्राह सुतौ अवहार जुग नक्र सुतौ कुंभीर ॥ २९ ॥

केंचुवाके। गोहके। नाम॥ दोहा॥ महीलता गंडूपदरु है किंचुलक भवीन॥ चवथ केचुका निहाका गोह गोधिका तीन॥ जोंक। सिंधुसीप। शंख। नाम॥ दोहा॥ जोंक जलोका रक्तपा और जलौकस होय॥ मुक्तास्फोट तु शुक्ति जुग शंख कंबु जुग जोय॥ ३१॥ क्षुद्रशंखादि ५ के नाम॥ दोहा॥ क्षुद्रशंख तो शंखनख शंबूका जलशुक्ति॥ भेक तु प्लव मंडूक पुनि बर्षाभू जुत जुक्ति॥ ३२॥ दर्दुर दादर मीडका शालूर है अथ दूहि॥ गंडूपदी शेली जुगल भेकी वर्षाभू हि॥ ३३॥ कमठी आदि ३ के नाम॥ दोहा॥ कमठी तो कूर्मी डुलि हि प्टंगी मद्गुरु नारि॥ दीर्घकोशिका तो द्वितिय दुनीमा जल चारि॥ ३४॥ जलाधारादि ३ के। नाम॥ दोहा॥ जलाधार तु जलाशय हि ह्रद अगाध जल जानि॥ आहाव तो निपान जुग कोठा खेल वखानि॥ ३५॥ कूप। त्रिका। वीनाहा नाम॥ दोहा॥ अंधु कूप उदपान प्रहि चारि त्रिका इक आह॥ दारुयंत्र सु धरगा हित. मुख वंधन वीनाह॥ ३६॥ चौकोने तालके। अकृत्रिम तालके। सकृत्रिम तालके। नाम॥ दोहा॥ पुष्करिणी तौ खात अयदेव खात तु अखात। पद्माकर तु तडाग जुग अनि जल जुन जलजात॥ सामान्य तडाग के। तलाईके। नाम॥ दोहा॥ सरसी सर कासार त्रय कृत्रिम ताल निहारि॥ पल्वल सो तो अल्पसर त्रपदे शत्ते विचारि॥ ३८॥ वावडीके। खाई के। नाम॥ दोहा॥ वापी सो तो दीर्घिका

तीन नाकडी जानि ॥ खेयं तु परिखा जगा बिदित खाई नाम बखानि ॥ ३९ ॥ बंधके । थांवलाके । नाम ॥ दोहा ॥ आधार तु सुगबंध अय आलवाल ओ वाप ॥ आवाल हु जगथांवलो तरु जड जलहित थाप ॥ ४० ॥ नदी नाम ॥ दोहा ॥ शैवलिनी तुनरंगिरागी ह्रदिनी नदी निहारि ॥ द्वीपवती तटिनी धुनी सरित आपगा धारि ॥ ४१ ॥ स्रोतस्वती रु निम्नगा रोधोवक्रा देखि ॥ निर्झरिणी कूलंकषा और स्रवंती पेखि ॥ ४२ ॥ गंगा । यमुना । नाम ॥ दोहा ॥ गंगा तो धर्मद्रवी विष्णुपदी उर आनि ॥ त्रिस्रोता भागीरथी सुरनिम्नगा बखानि ॥ ४३ ॥ जन्हु सुता अरु भीष्म सू आठ त्रिपथगा धारि ॥ कालिंदी शमन स्वसा यमुने रवि सुता चारि ॥ ४४ ॥ रेवा ॥ नाम ॥ दोहा ॥ रेवा सोनो नर्मदा सोमोद्भवा रु सोय ॥ चौथे मेकलकन्यका मेकलद्रिजा गिरि होय ॥ ४५ ॥ करतोया ॥ नाम ॥ दोहा ॥ करतोया तो दूसरी तु सदानीरा जानि ॥ गौरी कन्या दान के जल भव सरिता मानि ॥ ४६ ॥ सतलज बाहुदा नदी को व्यासा को । सतलज को नाम ॥ दोहा ॥ सैतवाहिनी बाहुदा द्विविपासा स्तु विपाट ॥ तीन शतद्रु शुतुद्रि ज० नाम सु चाट ॥ ४८ ॥ सोनभद्र को । नहर को । नाम ॥ दोहा ॥ सोनभद्र तो शोण त्रय हिरण्यबाह हु होय ॥ कन्या तो कारिमा आदि नदी जन जोय ॥ ४७ ॥ वेत्रवती आदि के भिन्न भिन्न । नाम ॥ दोहा ॥ वेत्रवती रु पारावती रु

चन्द्रभागा जानि ॥ कावेरी रु सरस्वती भिन्न भिन्न पहिचानि ॥ ४८ ॥ नदी संगम के ॥ पनारे के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ संभेद तु मिलनौ सरित सिंधु संगम ऊ सोय ॥ जलनि कढन को मग सुतौ एक प्रनाली होय ॥ ४९ ॥ छोटी नदी के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ नदी देविका मैं जु है सो देविक उर जानि ॥ सरयू सरिता मैं जु है सो सारवै उर आनि ॥ ५० ॥ संध्याविकासी श्वेत कमल के ॥ रक्त कल्हार के ॥ कुमुद के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ सौगंधिक कल्हार जुग रक्तसंधिक तु हेरि ॥ हल्लक हू है कुवलय तु उत्पल दोय निवेरि ॥ ५१ ॥ काले कमल के ॥ उज्ज्वल कमल के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ नीलांबुज इंदीवर सु नील रंग में मानि ॥ सित मैं कैरव कुमुद अथ इनके कन्द बखानि ॥ ५२ ॥ कमल कन्द के ॥ जलकुंभी के ॥ सिंवाल के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ शालूक द्वि अथ कुंभिका सु वारिपर्णी दोय ॥ जलनीली शैवाल पुनि शैवाल ऊ त्रय होय ॥ ५३ ॥ कुमुदिनी ॥ वा कुमुद युक्त देश के ॥ कमलिनी के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ कुमुद्वती तो कुमुदिनी ठौर कुमुद जुत धारि ॥ बिसिनी नलिनी कमलिनी जुत सरोजिनी चारि ॥ ५४ ॥ कमल ॥ नाम ॥ दोहा ॥ पंकेरुह सारस कमल सहस्र पत्र शतपत्र ॥ पद्म कुशेशय तामरस बिस प्रसून रु अत्र ॥ ५५ ॥ पुष्कर अम्भोरुह नलिन अरविंद रु राजीव ॥ जानि महोत्पल सोलवौं पुंडरीक सितसीव ॥ ५६ ॥ लाल कमल के ॥ कमल की डांडी के ॥ मृणाल के ॥ न॰

रक्तोत्पल तौ कोकनद रक्त सरोरुह जोय॥ नालो नाल मृणाल तौ बिस तुग मूल हि होय॥५७॥ कमलादि के गन के। कमल की जड के। कमल पुष्प मध्य में जो काल रहे तो है उसके॥ नाम॥ दोहा॥ खण्ड तु पद्म समूह अथ बिसप्रसूनं करहाट॥ किंजल्क तु केसर त्रतिय केशर सहित सुघाट॥५८॥ कमल के नव्य पत्रन के। कमलाक्ष के। नाम॥ दोहा॥ नवदल तौ संवर्त्तिका पद्मादिकन व पान ॥बीजकोश को नाम तौ द्वितिय वराटक नान॥५९॥

इति वारि तरंगः स॰

इति गुलाव सिंहस्य कृतौ नामानुशासने॥ स्वर्गादिभागः प्रथमः साङ्गः एव समर्थितः॥१॥

श्लोक

युग्माढ्यङ्क निशाकरैर्विरहिते वर्षे शुभे वैक्रमे
ज्येष्ठे मासि सिते दले हरितिथौ श्रीसौम्यवारे शुभे॥
कोशे यो हि गुलावसिंह रचित स्त्वीपे शिलायन्त्र
के श्रीमत्केशवशर्म्मणा ऽर्गलपुरे मुद्राङ्कितोऽर्पि

पितः॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	द्यर्थिक	द्व्यर्थिक	१४	१९	मानु	भानु
३	१	लीव	क्लीव	१४	२१	अहर्वति	अहर्पति
३	१	अंतस्थान	अंतस्थन	१५	६	गमस्ति	गभास्ति
३	१५	ऋदजु	ऋभु	१५	१९	कल्प	कल्य
४	५	रासष	रासस	१६	१०	सर्वसंधि	पर्वसंधि
४	८	वृद्धि	वृद्ध	१७	१५	शुल्क	शुक्र
६	१३	पारिखद	पारिषद	१७	१७	पोष्ट	पौष्ठ
६	१८	ज्रुति	ज्रुत	१८	१	डमरुकेतप	डमरुकंउत्मेतप
७	६	पार्पतीनंद	पार्वतीनंद	१८	३	सम्मतादि	संवतादि
७	११	गोत्रमिद	गोत्रभिद	१८	१२	ऋ्वे	ऋभु
८	७	सुरालयरत्न	सुरालयरुरल	१८	१७	मद्र	भद्र
८	९	परिजात	पारिजात	१९	१९	चिय	चय
८	२१	कुस्मवर्त्मी	कुस्मवर्त्मा	१९	२०	निरार्य	निराय
९	२	रोहिताश्व	रोहिताश्व	२१	१	मलें	मसलें
९	७	प्रेतिपति	प्रेतपति	२१	२	आमोदतनु	आमोदनु
९	१९	नामि	नाभि	२१	३	द्वितीय	द्वितिप
१०	१	वसंत	वासंत	२१	६	चारके	च्यारके
१०	१	रंहसंतुरसं	रंहसतुरस	२१	७	कर्पूर	कपूर
१०	७	अत्यर्थं	अत्यर्थरु	२१	८	पंचकपूर	चंपकपूर
१०	९	चोदय	चोदह	२१	९	मासांति	मासादि
१०	१०	यज्ञपाति	यक्षपति	२१	१०	विस्व	विस्त
१०	२०	कंद	कुंद	२२	२	कर्दुरेकल्माष	कर्वुरशवलकल्माष
१२	२	जलधार	जलधर	२२	१५	उदताऽनुदात्त	उदाताऽनुदात्त
१२	९	सुर्जयु	[illegible]जयु	२३	९	आकरण	आकारण
१२	१२	त्रष्टि	वृष्टि	२३	१६	स्रेय	ज्ञेय
१२	१९	निध	विधु	२३	१७	मिथ्यामियोग	मिथ्याभियोग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२१	आरणादस्तु	प्रणादस्तु	२९	२१	विम्रतीतार	बिभ्रतीसार
२४	३	नीनि	तीन	३०	६	अभिलाव	अभिलाष
२४	१९	मिथ्युमावरण	मिथ्युभाषण	३०	११	उत्साहं	उत्साह
२४	२१	हृदय	हृदयं	३०	१८	तनप	तपन
२५	३	निष्टर	निष्ठुर	३०	२०	परिरुसन	परि हसनं
२५	४	क्लिप्ट	क्लिष्ट	३२	१९	ओविलेषाय	ओरविलेशाय
२५	५	अथकहे	अधकहे	३३	१०	दंर्गति	दुर्गति
२५	८	अथशून्य	अर्थशून्य	३३	१५	अजू	आज
२५	१३	खरति	रवरति	३४	१	यदःपति	यादःपति
२६	१	अरुकरण	करणनिकारण	३४	३	इक्षुसोद	इक्षुरसोद
२६	८	ऋषम	ऋषभ	३५	७	स्वतरु	स्वलः
२६	१०	गौररु।	गौरु	३५	२१	लज	जल
२६	१८	अनाढ	आनढ	३६	१४	संधजु	संघजु
२७	४	पटरु	पटह	३६	१८	जीवतिनके	जीव हैं तिनके
२७	११	अधर	अपर	३७	३	सिंधुसीथ	सिंधुसीप
२७	१२	नर्तकी	नर्तकी तु	३७	१३	वीनाहा	वीनाह।
२७	१४	गसि	गति	३७	१६	सकलमताल	सकमलताल
२७	२०	भकुंस	भुकुंस	३७	१७	अय	अभ्र
२८	३	भर्त्तदारक	भर्तृदारक	३७	१९	क्राचिम	कत्रिम
२८	७	मारिख	मारिष	३८	६	स्रोस्वती	स्रोतस्वती
२८	१०	नीचादि ३	नीचादि ३ के	३८	६	निम्नागा	निम्नगा
२८	११	वुलोनेके	वुलानेके	३९	७	कमलाधारण	कमलासाधारण
२८	१२	हुंडे हुंजे	हुंडे हुंजे				
२८	१५	हस्तादिकारे	हस्तादिककारे	४०	३	कालर	झालर
२८	१९	भटकेवो	भटकेवो				
२८	२७	स्वात्विक	सात्विक				
			स्तंभ				

नाम सिंधुकोशको

द्वितीयभाग

अर्थात

गुलाव कोश को संक्षेप अमरकोश द्वितीय कांड

कविद्विपोष

श्रीयुत चहुवाण वंशावतंस हड्डुकुल कलशवुंदी

न्द्र महाराजाऽधिराज महा राव राजा जीश्रीश्री

श्री श्री श्री १०८ रम्मसिंह जी के कवि राव जीश्री

गुलावसिंह जी कृत

आगरा

गरे बेलनगंजे श्री॰ पंडित केशव प्रसाद शर्म्म

वेदि प्रबंधेन विद्यारत्नाकर यंत्रे मुद्रितः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ ॥

अथ नामसिंधुको द्वितीय

भाग लिख्यते



दोहा

उमा रमा सीता गिरा राधा रमन मनाय ॥
रचौं भाग दूजो गुरुहि वार २ शिर नाय १ ॥
तजि गुलाव निज कोशको विस्तर सार सम्हारि
.. चौ भाग दूजो समुझि तिलक अमर .. चारि २

अथ तुकांतनियम दोहा

होतुरु लाभि असुप्ति गुन कीट संज्ञुडक्कीसु ॥
धीजरु मिल्ल अछन्न अति शुक्र कहातुरु दीसु ३ ॥
भज्जसज्जु अरु धत्ति पुनि ध्वत्ति आदि पहिचानि
भाषा वदलरु स्वर वदल कि यतुकांत हित जानि ४
भूमि रूपुर गिरि वनोषधि सिंहादि करुन्द मानि ॥ ब्रह्म दान
.. ये दशतरंग ह्यां जानि ॥ ५ ॥ अथ भूमितरंग लि
ख्यते .. ॥ २७ । मिट्टी के २ । अच्छी मिट्टी के ३ । नाम
दोहा ॥ भूं अचला विश्वंभरा भूमि अनंता .. उव

धरणी क्षिति धरा क्षोणी वसुधा होय॥ ६॥ उर्वी पृथिवी ज्या
रसो सर्वसहा कु जानि॥ क्ष्मा रु धरित्री काश्यपी अवनि
नीमानि॥ ७॥ पृथ्वी गोत्रा वसुमती वसंधरा महि पेषि
तु, म्टत्तिका सुन्दर तु, म्टत्सो म्टत्स्न उ देखि। ८। सवसस्य
युक्त को १। लोनी मट्टी के २। ऊषरके २। नाम
ऊर्वरा तु, सवसस्य प्रद, क्षार म्टत्तिका सोतु,॥ ऊषै हि
तो। द्वितिय ऊषवान ही होतु॥ ९॥ स्थान के २।
के २। विन जोते के २। भूतल के ५॥ नाम॥ दोहा॥
स्थली स्थल धन्वा तु, मरु खिल तु, अप्रहत दोय॥ जगत लो·
क। विष्टप भुवन जगती पांचहि होय॥ १०॥ हिन्दुस्तान को
१। प्राच्यको १। नाम॥ दोहा॥ भारतवर्ष तु लोक यह अ
थ शरावती कार॥ पूर्व रु दक्षिण
॥ ११॥ उदीच्य को १। म्लेच्छ देश के २
त्तर हिमालय सैं दक्षिण कुरु क्षेत्र सैं पूर्व प्रयाग सैं प
श्चिम देश के २। नाम॥ दोहा॥ अथ ...
पश्चिम उत्तर देश॥ म्लेच्छ देश तत्यंत जुग मध्यम
॥ १२॥ आर्य्यावर्त्त के २। राज्य वा देश के २। देश
के ३। नडाधिकादि ३ के। नाम॥ दोहा॥
र्य्यावर्त्त विंध्य हिमाचल माहि॥ नीवृत जनपद
देश तविषय रु आहि॥ १३॥ अप वर्त्तन नड्वल सु तो नड प्राय,
... प्राय, कुमुदान वकुवेत सवेत स्वान

घासजुत देश को १ कीचजुत को १ सजल के २ नाम ॥ दोहा ॥ शादहरित, शाद्वल इकहि पंकिल तु सजंबाल ॥ जलप्राये तु अनूप अथ त्यौंही कच्छ रसाल ॥ १५ ॥ कंकरीजुत देश के २ । देशादि के २ । वालूजुत देश के २ । देशादि के २ । नाम ॥ दोहा ॥ शर्करा तु शार्करिल जुग दोय शर्करावान ॥ शार्कर सिकता सिकतल हि सैकत सिकतावान ॥ १६ ॥ नदीमात्रिक । देवमात्रिक । नाम ॥ दोहा ॥ नदी वृष्टि जल तैं भई कृषि कर पालित देश ॥ नदीमातृक रु क्रम सहित, देवमातृक हि देश ॥ १७ ॥ सुनृपदेश । सामान्य नृप देश ॥ नाम दोहा ॥ उत्तम नृप जुत देश सो राजन्वान बखानि ॥ राजवान तौ और सब देश नृपन के जानि ॥ १८ ॥ ग्वाडा के २ । पहिले ग्वाडा को १ । नदी पर्वतादि के समीप की भूमि के २ । पूल के २ । नाम ॥ दोहा ॥ गोस्थानक तौ गोष्ठ है सु भोर ५ गोष्ठीन ॥ परिसर तौ पर्यन्त भू सेतु तु आलु प्रवीन ॥ १९ ॥ बांबी के ४ । मार्ग के १७ । नाम ॥ दोहा ॥ वामलूर वल्मीक पुनि, नाकु रु, बांबी चारि ॥ मार्ग अयन पदवी सरणि पद्धति पंथा चारि ॥ २० ॥ एकपदी स्रुति वर्त्मनि सुवर्त्म रु अध्वा देषि ॥ वाट रु पद्या पथ विदित, गैल राह मग पेषि ॥ २१ ॥ सुमार्ग ३ । कुमार्ग के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ सत्पथ अतिपंथा त्यौं तिय सुपंथा इक रु के ३ विपथ कदध्व कापथ रु व्यध्व दुरध्व कुराह ॥ २२ ॥ चौराहा के ९ ॥ ऊव

ट के २। दूर और सूना को १। कठिन को। नाम॥ दोहा॥
ऋंगाटक जु गन्तु पथ अपथ अपंथा चारि। प्रांतर तौ सू
नौ परै दुर्गम मग, कांतार॥ २३॥ द्वे कोश को १। च्यारसै
हाथ को १। राजमार्ग के २। पुरमार्ग को। नाम। दो॰
गव्यूति स्त्री क्रोश युग नल्व तु कर शत चारि॥ घंटा पथ
संसरण जुग उपनिष्कर पुर धारि॥ २४॥

इति भूमि तरंगः

अथ पुर तरंग लिख्यते॥ राजधानी के ७। नाम॥ दो
हा॥ पूः पत्तन नगरी पुरी पुटभेदन स्थानीय॥ निगम
सात न्रप नगर तैं भिन्न जु पुर गरानीय॥ २॥ उपनग
र को १। वेश्याघर के २। बाजार के ४। नाम॥ दोहा॥
शाखा नगर हि वेश तौ है वेश्याजन स्थान॥ हट्ट निषद्या
आपण हु सो बाजार जिहान॥ ३॥ गुदड़ी के २। गली के
४। नाम॥ दोहा॥ पण्य वीथिका विपणि जुग वस्तु दिकै
घर हीन॥ प्रतोली तु विशिखा गली रथ्या चारि प्रवीन॥ ३
॥ खाई सैं निकसी मट्टी के कूढा के। वा प्राकार ग्धा
र के २। ईंडा के। वा। कोट के ३। बाडि के २। भीति के
नाम॥ दोहा॥ चय तु वप्र जुग शाल तौ वरण त्रितय प्रा
कार॥ प्रचीन तु प्राचीर जुग भित्ति तु कुड्य उदार॥ ४॥ हाड
जुत भीति को १। मंदिर के २१। नाम॥ दोहा॥ एडूक
[illegible] सद्म मंदिर तौ आगार। वेश्म उदवसित सद्म गृह

सादनं सदन अगार ॥ ५ ॥ भवन निकाय्य निकेतन रु निशां तपस्त्य रु गेह ॥ आलये निलये सभा कुटी शाला वास हु लेह ॥ ६ ॥ चौसाला के २ । मुनि घर के २ । यज्ञ शाला के ३ । हय शाला के १ । नाम ॥ दोहा ॥ चतुश्शाले संजवन जु गउवज परां शाला हि ॥ चैत्य आयतनं मख सदनं, मन्दुरी तु हय ठांहि ॥ ७ ॥ सुनारादि घर के ३ । जलशाला के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ होय शिल्पि शाला द्वितिय आवेशने सु दुकानं ॥ जु पानीय शाला सु तो प्रपा रु प्याऊ नान ॥ ८ ॥ विद्यार्थी पारे [illegible] दि स्थान के १ मद्य घर के १ । घर भीतर घर के २ । नाम ॥ दोहा ॥ मठं तु थान शिष्यादि को गंजा मदिरा स्थान ॥ गर्भागारं तु वास गृह भाग मध्य घर जान ॥ ९ ॥ जन्म स्थान के २ झरोख के २ । मंडप के २ । धनवान के घर के १ । नाम ॥ दो० अरिष्टं तो सूति का गृह वातायन तु गवाक्ष ॥ मंडप सु तो जनाश्रयं हि हर्म्य धनिक गृह दक्ष ॥ १० ॥ सुरन्द्र घर के १ । राज सदन के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ सुरन्द्र गृह प्रसाद ही राज सदन तो सौध ॥ उपकार्या उपकारिको अथ नृप घर भिद शोध ॥ ११ ॥ चतुर्द्वार तोरण के १ अनेक मजला को १ गोलाकार को १ । विस्तीर्ण सुन्दर के १ । १ । नाम ॥ दोहा ॥ स्वस्तिक एक हि सर्वतोभद्र हि नंद्यावर्त्त ॥ अथ विच्छंदक आदि हू ईश्वर गृह भिद वर्त्त

॥१२॥ रानिवास के ४। अटारी के २। दरवाजे सें बाहर का चौंतरा। वा चौपारि के ३। नाम॥ दोहा॥ अन्तःपुरं अवरोध पुनि अवरोधनं शुद्धान्त॥ अट्ट तु क्षौम प्रघाण तो प्रघण आलिंद विशांत॥१३॥ देहली के २। अंगना के ५। चौकठ मैं नीचले काठ को १। नाम॥ दोहा॥ गृहावग्रहणी देहली अंगन अंगण चारु॥ प्रांगण चत्वर अजिर पचाशिला तु नींचल दारु॥१४॥ चौकठ मैं ऊपर के काठ को १। खिडकी के २। गुप्तद्वार के २। नाम॥ दोहा॥ नासा दारु जु ऊपरि को अंतर्द्वार तु दोय॥ प्रछन्न हु पक्षक सु तौ पक्षद्वार हि होय॥१५॥ चैलाली के ३। छानि के २। नाम॥ दोहा॥ नीध्रं वलीक रु नीस्रैं पटल प्रांत वखानि॥ पटल सु तौ छदि लोक मैं जाहर छानि पिछानि॥१६॥ छावने के अर्थ जो वक्र काष्ठ ताके २। कबूतर आदि के घर के २। नाम॥ दोहा॥ वलभी तो गोपानसी वक्र जु छादन दारु॥ है कपोत पालिका सु तु द्वितिय विटंक हि चारु॥१७॥ द्वार वा पौलि के ३। द्वार के बाह्य भाग के २। वेदी वा चौंतरा के २। नगर द्वार के २। नाम॥ दोहा॥ प्रतीहार द्वा द्वार त्रय तोरण तु बहिद्वार॥ वितर्दि सो तो वेदिका गोपुर जु पुरद्वार॥१८॥ पुरद्वार का द्वार को १। किंवाड के ३। आगल को १। सींढी पगथ्या के २। नाम॥ दोहा॥ तहां खुरो

सो. हस्तिनख अरर कपाट किवार॥अर्गल इक आरोहण तु, सोपान हि निर्धार॥१९॥नसेनीकोभ्वारीभाडूके२ ।कूजोडाके२।नाम॥दोहा॥निश्रेणितुअधिरोहिणी संमार्जनीतुजानि॥शोधनी द्वअवकर सुतोसंकर कूडामानि॥२०॥निकलने द्वारके२।अच्छास्थानके २।गांवके२।घरवनाने कीभूमिके२।नाम।दोहा॥सुखनिःसरण निकषणतुसन्निवेश दोदोय॥ ग्राम सुतौ संवसथजुगवास्तुवेश्म भूहोय॥२१॥गोरवें।वा।पडोसके२।हदके२।अहीरकागांवके२ नाम॥दोहा॥उपशल्यंतुग्रामांतजुगसीमासीमन धीर॥जुआभीरपल्ली सुतोघोषहिग्राम अहीर॥२२॥जंगलियोके गांवके२नाम॥दोहा॥पक्कणतोशवरालयहिभिल्लग्रामजुगजोय॥शवरतुवन चांडाल ही कविगुलव मत होय॥२३॥

इतिपुरतरंगः

अथशैलतरंगलिख्यते॥५॥

पर्वत१३नाम॥दोहा॥शैल महीध्र अहार्यं गिरिशिखरी क्ष्माभृतग्राव॥अचलशिलोच्चयगोत्रधर पर्वतअद्रि कहाव॥१॥जोपर्वतपृथ्वीकोघेरेंहैताके२।लोकागिरिके२।अस्ताचलके२।उदयाचलके२ पर्वतभेद भिन्न भिन्न१।पत्थरके६नाम।दोहा

पर्वत लोका लोक सो चक्रवाल हू जानि ॥ त्रिककुत द्विति य त्रिकूट अथ चरम स्मास्त मानि ॥ २ ॥ अस्त जुगल उदय तु द्वितिय पूर्व पर्वत हि जानि ॥ पारियात्रिक रु विंध्य गिरि माल्यवान हिमवान ॥ ३ ॥ निषध गंधमादन अपरजानि हे म कूटादि ॥ अश्म ग्राव प्रस्तर उपल शिला दृषद षट वादि ॥ ४ ॥ गिरि की चोटी के ३ । पर्वत सैं जल गिरने का स्थान के ३ । गिरि मध्य के २ नाम ॥ दोहा ॥ कूट तु शि खर रु शृंग त्रय भृगु तो अतट प्रपात ॥ कटक तु अद्रि नितं ब सो मध्य भाग गिरि तात ॥ ५ ॥ पर्वत की समान पृथ्वी के ३ । झरना का स्थान के २ झरना के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पर्वत सम भू भाग तो सानु प्रस्थ स्नु हि आह ॥ उत्स प्रस्रवण निर्झर तु झर त्रय वारि प्रवाह ॥ ६ ॥ बनाई गुफा के २ । बिना बनाई गुफा के ७ । भारी पत्थर को १ ना म ॥ दोहा ॥ दरी कंदरा मनुजकृत देव खात बिल सो तु ॥ गुहा और गह्वर अथो गंडशैल इक होतु ॥ ७ ॥ खानि के २ । पर्वत पास के छोटे पर्वत के २ । पहाड़ी की नीच ली भूमि को १ ऊपरली भूमि को १ नाम ॥ दोहा ॥ खनि आकर जुग पाद तो प्रत्यन्त पर्वत आहि ॥ गिरि तर भू तो २ । तु वा ह का अधित्यका उर्ध्वा हि ॥ ८ ॥ पहाड़ सें उत्प कार ॥ १ ॥ धातु को १ । कुंज को २ नाम ॥ दोहा ॥ धातु मनः को १ । सो ८ ... गैरिक हू त्यों जोय ॥ कुंज निकुंज लता दिक

रि आच्छा दिन हीं होय ॥९॥

इतिशैलतरंगः

अथ वनौषधितरंग लिख्यते॥

वन के ६ बडे वनके १ नाम॥ दोहा॥ काननं गहनं अरण्यं वनं अटवी विपिनं कमानि॥ दोय अरण्यानी अपर महारण्यं हू जानि॥ १॥ ग्रहके समीप बागके २ बागके २ राज मंत्री ओर वेश्या का बागको १ नाम दोहा॥ निष्कुट ग्रह आरामं जुगउ पवनं तो आरामं॥ वाग जुगनि कामंत्रिन को वृक्ष वाटिका नाम॥ २॥ राजक्रीडा बागके २ राजा राणी क्रीडा के बाग को १ नाम॥ दोहा॥ आक्रीड तु उद्यानं जुग साधारण वन राज॥ सोय प्रमद वन होय जहं क्रीडत राणी राज॥ ३॥ पांतिके ११ लकीरके २ वन समूह को १ नाम॥ दोहा॥ श्रेणी आवलिं पांक्तिं पुनि वीथी आलिंवं खानि॥ लेखा राजीं जुगल अथवन्या वनगनं मानिं॥ ४॥ अंकुरके २ वृक्षके १३ नाम॥ दोहा॥ अभिनवोद्भिदं अंकुरं द्विटक्ष ... रुहं होय॥ शाखीं विटपीं शालं तरु पादपं कुटं द्रुमं ... ॥ अगम पलाशी अनोकहं द्रुं जुत त्रयो दश ... वल्लिके ... म तनी लता अतति रु बल्लि वखानि॥ ... नाम॥ दोहा॥ के ३॥ वृक्षादि की उचाई के ३ नाम॥ छं ... ॥ उलप तु वीरुत गुल्मनी फैलीलता वलाय॥ उच्च ... तु उत्सेध पुनि उच्छ्रायं

अरु उच्छ्राय॥७॥वृक्षकी पीडके ३ शाखाके ३ प्र
धान शाखाके ३ नाम॥दोहा॥स्कंध प्रकांड रु पीड
त्रय लता तु शाखा डार॥ स्कंध शाख डाहला शाल तीन
उदार॥८॥जरके २ मूलसौं शिरलौं गई लताको
१ शिरके ३ मूलमात्रके ३ नाम॥दोहा॥शिफ
जटी अवरोह नो शाखा शिफा बखानि॥शिखर अग्र शि
र मूल तो बुध्न अंघ्रि त्रय जानि॥९॥गूदाके २ वक्कल
के ३ काष्ठमात्रके २ दलीताके ३ नाम॥दोहा॥
सार तु मज्जा ही त्वक तु वल्क रु वल्कल तीन॥काष्ठ तु दा
रु हिंड धनं तु एध सइध्म प्रवीन॥१०॥वृक्षादिके वल्ली
ता के २ वृक्षविलके ३ तुलसी आदिकी वालके
१ पानके ३ कौंपलके २ शाखादि विस्तारके १
फलके २ डांडको १ नाम॥दोहा॥एध तु समित हु
कोटर तु निष्कुह स्कोरवर आप॥वल्लरि मंजरि पत्र तो दल
छद पर्ण पलाश॥११॥दलन रु पल्लव किसलय हि विटप
तु तो विस्तार॥फलतो शस्य हि वृंत तो प्रसव बंधन हि चार
॥१२॥काचे फलको १ सूके फलको १ नई कली
के २ कलीके ३ नाम॥दोहा॥काचा फल तु सलाटु
सी सूके फल तो वान॥क्षारक जालक जुग अर्थ कलिका
री नान॥१३॥गुच्छाके २ अधफूली कलीके २ फू
लके ५ नाम॥दोहा॥स्तवक गुच्छक हि कुड्मल तु मुकु

लौं हि जुग जुग जानि॥ पुष्प तु सुमनसं कुसुम पुनि फूल प्रसूनं बखानि॥ २४॥ फूल के रस के २। फूल की धूलि के २। पीप ल के ३। बकायिनि के ५। नाम॥ दोहा॥ पुष्प रसं तु मकरं दं है सुमन सरज तु परागं॥ कुंजराशन तु पिप्पल रु बोधिद्रुमं वड भाग॥ २५॥ चलदल अरु अश्वत्थ अथ पारिभद्र मन्दारं॥ पारिजातक रु निंब तरु जगत बकायिनि चार॥ २६॥ बिल्व के ४। पाकरि के ४। नाम॥ दोहा॥ शांडिल्य तु शैलूष श्रीफल रु बिल्व मालूरं॥ जटी पर्कटी प्लक्ष ये पाकरि नाम मसूर॥ २७॥ वड के ३। आम के ३। अति सुगंधित आम को १। नाम॥ दोहा॥ न्यग्रोध तु वहु पाद वट वड है लौकि क चार॥ आम्र तु चूत रसालं त्रय अति सौरभ सहकार॥ २८ कदंब के ३। अर्जुन वृक्ष के ५। नाम॥ दोहा॥ नीप तु प्रियक कदंब प्रिय है इन्द्रद्रुत पहिचानि॥ नदी सर्ज अर्जुनं ककुभ वीरतरु हि पंचम ॥ २९॥ खैरा। बा। खिरनी के ३। आंवरा के ४। नाम॥ दोहा॥ फलाध्यक्ष तौ क्षीरिका राजादनं त्रय आहि॥ तिष्यफला तौ वयस्था आमलकी अमृता हि॥ ३०॥ बहेरा के ६। हरीतकी के ११ नाम॥ दोहा॥ भूतवास कलिद्रुम तु तुष रु कर्ष फल अ क्ष॥ विभीतक हु अभया हरी पथ्या अमृता दक्ष॥ ३१॥ हैमवती पूत श्रेयसी अरु व्यथा सोय॥ हरर पूतना चेत कीं रु हरि अव्यथा होय॥ ३२॥ नींव के ७। सीसम के ३।

कालीसीसमको १ चम्पाके ४ नाम ॥ दोहा ॥ मेवेस
वै तो भद्र पिचु मंद हिंगनिर्यास ॥ मालके नीव अरिष्ट अ
ख अगुरु शिंशपा भास ॥ २३ ॥ पिच्छिला कु कापिला तुस
रका भस्मगर्भा हि ॥ हैं पुष्प चांपधंपुलि चंपक चंपा आहि
॥ २४ ॥ चम्पा की कली को १ वौलसिरी के २ आस
पाला के २ अनार के ३ तमाल के ३ दुपहरियों के २ ज
म ॥ दोहा ॥ गंधफली चंपाकली बकुल तु केसर जानि ॥
कंजुल सुतो अशोक अब दाडिम करक बखानि ॥ २५ ॥ शु
कवल्लभ हू तीन अथ कालस्कंध तमाल ॥ तापिच्छ हु
श्री हरिनी भूरुंडी हैं रसाल ॥ २६ ॥ जूही के ५ । पीले फू
ल की जूही को १ चमेली के ३ नाम ॥ दोहा ॥ जुही
मागधी यूथिका अंबष्ठा गणिका हि ॥ हेम पुष्पिका जाति तो
मालती सुमना हि ॥ २७ ॥ कुन्द के २ दुपहरया के ३ ।
कनेर के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ कुन्द तु माध्य हि रक्तक तु बंधु
जीवक सुधीर ॥ बंधूक हू हय मारक तु शत प्रास करवीर ॥
२८ ॥ करीर के ३ । धतूर के ७ नाम ॥ दोहा ॥ ग्रंथिल क्र
कर करीर ॥ आधा कितव धुत्त धत्तूर ॥ कनकाह्वय मातुलम
दन अरु उन्मत्त मसूर ॥ २९ ॥ धत्तूर के फल को १ ।
के २ । आक के ७ श्वेत आक के २ नाम ॥ दोहा ॥ ति
हि फल मातुल पुत्रक हि वन्हि संज्ञक तु चार ॥ पाठी चित्रक
न ५ । गे अर्काह्वय मंदार ॥ ३० ॥ अर्कपर्ण
...ल...

विकीरणा रु गरा रूप ॥ श्वेत अर्क तो अलर्क रु द्वितिय प्रता
पस रूप ॥ ३१ ॥ गिलवे के ९ । नाम ॥ दोहा ॥ छिन्नरुहा
वत्सादनी मधुपर्णी अम्रता रु ॥ सु सोम वल्ली विशल्या
जीवंतिका रु चारु ॥ ३२ ॥ पीपर के ९ नाम ॥ दोहा ॥ क
ष्णा उपकुल्या करणा वैदेही चपला रु ॥ शौंडी कोला ऊष
णा नवम मागधी चारु ॥ ३३ ॥ गज पीपर के ५ । चव्य
के २ । नाम ॥ दोहा ॥ कपि वल्ली करिपिप्पली वशिर
श्रेयसी जोय ॥ सु कोल वल्ली पंचमी चव्य तु चविका दो
य ॥ ३४ ॥ दाख के ५ । बडी इलायची के ५ । छोटी इ
लायची के ३ । नाम दोहा ॥ द्राक्षा स्वादी मधुरसा गो
स्तनी म्रद्वीका हि ॥ एला बहुल निष्कुटी रु चंद्रवाला आ
हि ॥ ३५ ॥ पृथ्वीका तुत्था सुतो उपकुंचिका बखानि ॥ को
रंगी हु इलायची दीरघ लघु पहिचानि ॥ ३६ ॥ गुलाब के
३ । नाम ॥ दोहा ॥ शपौंडरीक तु पौंडर्य अरु थलपद्म प्र
काश ॥ ओषधि फल बांकांत मे ओषध रोग विनाश ॥ ३७
शाक को १ । चौलाई के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ शाक तु दल
पुष्पादि सो भाजन साधन जानि ॥ तंडुलीय चौलाई अरु
अल्पमारिष हु मानि ॥ ३८ ॥ प्याज के २ । लशुन के ६ । बे
हला के ३ । ककडी के २ । नाम ॥ दोहा ॥ सुकंदक स्तु
पलांडु हौ जनताके दु द्रुम दोय ॥ महाकन्द रुजन लशुन
जानि रसोनक सोय ॥ ३९ ॥ वहुरि अरिष्ट महौषध हि रूप्ता
...ना ॥ हि

ई नुकाची के॥ कोहली हिओषकाकड़ी कर्कटी सुई बोर॥
४०॥ जवी कन्द के ३। दूबके ५ नाम॥ दोहा॥ सूरन
तो अर्शोघ्न अरु कन्द है दूर्वा सोम॥ रुहा अनन्ता भार्गवी
शतपर्विका सु होय॥ ४१॥ मोथा के ४। नागरमोथा
के २। नाम॥ दोहा॥ मेघनाम कुरुविन्द अरु मुस्ता मु
स्तक जानि॥ गुन्द्रा नागरमोथ त्रय भद्रमुस्तक हु मानि॥
बांसके १० नाम॥ दोहा॥ वेणु वंश त्वकसार पुनि शत
पर्व करमार॥ यवफल मस्कर तेजनं रत्थ्या ध्वज रत्व चिसा
र॥ ४३॥ कीचक को १ जबके २। उखभेद के २ ना
म॥ दोहा॥ बजत पवन बस बांस ते कीचक नाम विद
ित॥ इक्षु रसाल हि भेद तिहिं कांतार कै पुण्ड्र दि॥ ४४॥
गोंडर के ३। ताकी जड़को १। डाभके ४। बालत्रण
के २ नाम। दोहा॥ गोंडर बीरण बीरतर ताकी जड़ तु उ
शीर॥ दर्भ तु कुश रु पवित्र कुश अथ बालत्रण धीर॥
४५॥ घासके २। त्रणमात्र के २। त्रण समूह को १
नारियल के २। सुपारी के। ताके फलको १। ताली
आदिके ७ नाम। दोहा॥ घास यवस अर्जुन सु त्रण ह
त्या त्रणा ताक॥ नालिकेर तो लांगली क्रमुक तु पू
गी घुवाक॥ ४६॥ घोंटा खपुर हि ताल फल उद्वेग हि मारूर
ताल खजूरी इक्षि केतकी रु खजूर॥ ४७॥

इति वनौषधि वर्गः

अथसिंहादितरंगलिख्यते॥ ७ ॥

सिंहके ५। वघेराके ४। नाम॥ दोहा॥ हरिम्रगेन्द्रपंच
स्यपुनि केसरी हर्यक्ष॥ व्याघ्रंतुद्वीपीबाघअरु शार्दूल"
हप्रत्यक्ष॥ १॥ तेंदुवाके २। शूकरके १२। वानरके १०।
नाम॥ दोहा॥ म्रगादनंस्तुतरक्षु अथशूकरघृष्टिवराह
॥ पोत्री दंष्ट्री कोल किरि रु स्तब्धरोमांराह॥ २॥ घोणीकि
रिभूदारपुनि क्रोडहु वानरकीश॥ प्लवग वनोक वलीमुख
रु शाखाम्रगकपि दीस॥ ३॥ रीछके ५। गैंडाके ३। भैंस
के ५। श्याल के १०। बिलावके ४। नाम॥ दोहा॥ भल्लू
कंतुभालूकंपुनि ऋक्षंभल्लअरु अच्छ॥ गंडकंखड्गी"
खड्ग अथ कासरसैरिभस्वच्छ॥ ४॥ वाहद्विषत लुलायपु
नि महिष हि जंवुकसोतु॥ भूरिमायंगोमायुम्रगधूर्त्तके
फेरवहोतु॥ ५॥ वंचकक्रोष्टुश्रृगालपुनि शिवाफेरु दशाठ
र॥ ओतुबिडालरु आखुभुकंवृषदंशकमार्जार॥ ६॥ चंद
न गोहके ४। सेहीके २। ताकेरोमके ३। नाम॥ दोहा॥
गोधेयंतुगोधिकात्मज गौधेर रु गौधार शल्यंतुश्वाविधं
शललंशलंशललीत्रयतिहिं वार॥ ७॥ वातप्रमीके २।
भिडहाके ३। हीराके ४। नाम॥ दोहा॥ वातप्रमीतु
वातम्रगवृक ईहामृग कोक म्रग कुरंग वातायु पुनि अजि
नयोनि विनशोक॥ ८॥ एणाय २। रोशा १। नाम॥ दोहा॥
हरिणीके चर्मादितैं एणायहि पहिचानि॥ हरिणादिके

र्नाादिसो ऐसा एकही जानि ॥ ९ ॥ हरिराभेदों के ९ ना
म ॥ दोहा ॥ प्रियकं तु कदली कंदली चीन चमूर वखानि
अरु समूरु पद हरिरा ये अजिन योनि उर आनि ॥ १० ॥ ह
रिराभेद के १२ । नाम ॥ दोहा ॥ शंबर रौहिष रंकु रुरु
कृष्णसार गोकर्ण ॥ न्यंकु चमर रोहित पृषत न्यरध
एण मृगवर्ण ॥ ११ ॥ मृग भेद के ७ नाम ॥ दोहा ॥
शरभ राम सृमर रु गवय प्राणकों प्रशहे गंधर्व ॥ इत्यादि
रु सिंहादि मृगनि गो आदिक पशु सर्व ॥ १२ ॥ मूसों के ६
मूसी के २ । किरकांट के २ । नाम ॥ दोहा ॥ मूषिक उं
दुरु आखु वृंदके वृषध्वज खनक हि मास ॥ गिरिका तु बाल
मूषिका सरट सुतो कृकलास ॥ १३ ॥ कापकी के २ म
करी के ४ नाम ॥ दोहा ॥ मुसली तो गृहगोधिका मर्क
टक तु लूतास ॥ ऊर्णानाभ मकरी जगत तंतुवाय हू चा
र ॥ १४ ॥ सोनकिरवा के २ । कानखजूरे के २ । कस
ीके २ । बिच्छू के ३ । नाम । दोहा ॥ नील गु तु ह्रामे शत
पदी करा जलौका होय ॥ द्रुककीट वृश्चिक अलि तु द्रु
रा वृश्चिक त्रय होय ॥ १५ ॥ कबूतर के ३ । बाज के ३ । उ
ल्लू के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पारावत तु कपोत त्रय कलरव प
त्री सो तु ॥ श्येन शशादन पेचक तु घूक उलूक हि होतु ॥ १
खंजन के २ । भर्दुल के २ । कंक कड के २ । चास के २ ।
ना[illegible] दोहा ॥ खंजरीट खंजन अथो भरद्वाज्या व्रात ।

तोहरष्ट तौ कंक जुग चाषे किकीदिवि घाट ॥१७॥ भुजकपले
वोभुजैटाके ३ काठ कोराके २ पपीहाको ३ नाम ॥ दो
हा ॥ धूम्याट लु कालिंग पुनि भृंगहु दार्वा घाट ॥ शत पत्रके
सारंग तौस्तोकक चातके घाट ॥१८॥ कूकड़ाके ४ चिड़ा
को १ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ ताम्रचूड चरणायुध रु कुक्कुट पुनि
कृकवाकु ॥ चटक तु कालविंक हि तियाताकी चटका ताको ॥
तिनके बच्चा १ बच्चीको कंकारैट के २ कारकके २ ना
म ॥ दोहा ॥ चाटकैर बच्चो तिनहि चटकी बच्चीतास ॥ ककेर
दंती करेटु हि कृकर तु क्रकरा हि मास ॥२०॥ कोकिलके ४
काकके १० डोडकाकके २ कालेकाकके २ नाम ॥
दोहा ॥ वन प्रिय तु परभृत रु पिक कोकिल ध्वांक्ष तु का
क ॥ करट अरिष्ट सकृत्प्रजा वायस वलिभुक ताक ॥ २१ ॥
आत्मघोष वलिपुष्ट द्रश परभृत अथ का कोल ॥ ॥ द्रोण
काक दात्यूह तौ कालकण्ठ कहु बोल ॥ २२ ॥ चीलके २ गी
धके २ सुवाके २ क्रौंचके २ बुगलाके २ ॥ नाम ॥ दो
हा ॥ आतापी तौ चिल्ल अथ गृध्र द्वितिय दाक्षाय्य ॥ कीर शु
क हि कुड़ क्रौंच जुग वक तौ कंक कहाय ॥ २३ ॥ सारसके २
चकवा चकवीके ३ नाम ॥ दोहा ॥ पुष्कराह्व तौ सारस हि
चक्रवाक तौ कोक ॥ रथांगाह्वकादंव तौ जुग कलहंस अरो
क ॥ २४ ॥ कुररीके २ हंसके ४ हंसभेदके ३ ॥ नाम ॥
दोहा ॥ कुररत उत्क्रोश हि अथो श्वेतगरुत चक्रांग ॥ हंस

मान सोकसं चोरज हंस सर्वांग ॥२५॥ श्वेतहि लालसु चूंचप
ग मल्लिकाक्ष तु गनाय॥ मलिन चूंचपग श्याम तौ धार्तरा
ष्ट्रं सुखपाय॥२६॥ आडीके ३। बगुला की दूसरी जातिके
२। हंस की स्त्रीको नाम॥ दोहा॥ राटि तु राडि शरारि त्रय
बिसकंठिका तु दोय॥ बलाकाँ हि तिय हंसकी वरटा नाम
हि होय॥२७॥ सारसकी स्त्रीको १। बागल के २। चामचि
रीके २। नाम॥ दोहा॥ सारस की तिय लक्ष्मणा तैल पायि
का आहि॥ परोस्णी हुजतुका सुतौ द्वितिय आजिन पत्रा हि
॥२८॥ मांखीके ३। सहत की मांखीके २। मधुमक्षि
का विशेष के २। नाम॥ दोहा॥ तीन वर्वरा मक्षिका नी
ला सरघा सोतु॥ मधुमक्षिका हि पुत्तिका पतंगिका जुग हो
तु॥२९॥ डांसके २। लघुडांसके २। झींगुरके ४। नाम॥
दोहा॥ दंश सु तौ वन मक्षिका लघु दंश तु दंशी हि॥ चारि झि
ल्लिका चीरु का चीरी भृंगारी हि॥३०॥ बरड़ के २। फानिगा
के २। जुगुनूके २। भंवरके १२। नाम॥ दोहा॥ वरटा गं
धोली जुगल शलभ द्वितीय पतंग॥ खद्योत तु ज्योतिरिंगण
मधुकर मधुलिह भृंग॥३१॥ भ्रमर मधुव्रत मधुप अलि अ
ली पुष्पलिह और॥ षटपद वहुरि द्विरेफ सब द्वादश लौकि
क भौर॥३२॥ मोरके ८। ताकी वाणी को १। नाम॥ दो
हा॥ केकी शिखी भुजंगभुक नीलकंठ रु मयूर॥ वर्हीव
र्हिणा शिखावल तिहिं बचके कीश्वर॥३३॥ चंदोवाके २।
... [illegible] ॥ ...

ताकी चोटीके २। ताकी पांख के ३। नाम ॥ दोहा ॥ चन्द्रकं मेचकं दोय अथ. चूडा शिखाँ बखानि ॥ वर्ह तु. पिच्छ. शिखण्ड त्रय मोर पंख जग जानि ॥ ३४ ॥ पक्षीके २७ नाम ॥ दोहा ॥ पक्षी विहग विहंगमं रु. शकुन विहायस मानि ॥ शकुनि शकुंति शकुंत खग पतनं पत्त्ररथ जानि ॥ ३५ ॥ वाजी पत्री द्विज पतगं वि ष्किर विकिर वि सोय ॥ नभसंगमं नीडोद्भवं रु. नगौकापितत्रं होय ॥ ३६ ॥ पतत्री रु. अंडज वहुरि. गरुत्मान् रु. विहंग ॥ अरु. पतत्रिं सब नाम गनि विंशति सप्त प्रसंग ॥ ३७ ॥ भिन्न भिन्न पक्षीन के नाम ॥ दोहा ॥ कारंडवं प्लवं मद्गु पुनि. कोयष्टिकं हारीतं ॥ तित्तिरिं कुक्कुभं टिट्टिभकं जीवंजीवं पुनीत ॥ ३८ ॥ लावं रु. वर्त्तकं वार्त्तिका चकोरां दि पहिचानि ॥ भिन्न २ पक्षी सकल नाम एक इक जानि ॥ ३९ ॥ पांख के ६। पाख की जडके २। चूंच के २। नाम ॥ दोहा ॥ गरुत् तनूरुह पत्त्रं छद पक्ष पतत्रं पिछानि ॥ पक्ष मूल तौ पक्षति हि चंचु त्रोटि जुग जानि ॥ ४० ॥ पक्षीन की गति भेद के ३। नाम दोहा ॥ खगगति क्रिया. प्रडीनं अरु. उड्डीनं रु. संडीनं ॥ तिरछी. ऊंची. अरु. भली क्रमतें लखो प्रवीन ॥ ४१ ॥ अंडाके ३। घूंसलाके २। शिशु मात्र के ७। नाम ॥ दोहा ॥ पेशी कोश रु अंडं त्रय नीडं कुलायं हि होत ॥ पृथुकं तु. शावकं डिंभं शिशु अर्भकं पाकं रु. पोतं ॥ ४२ ॥ स्त्री पुरुष के जोडे के २। दो के ३। समूह के २२। समूह भेदोंके। नाम ॥ दोहा ॥ द्वंद्वं तु मिथुनं हि तिय पुरुष ॥

युग्म युगल युग तीन ॥ निवह व्यूह संदोह ब्रज निकर ओघ च पंवीन ॥ ४३ ॥ विसर समूह रु स्तोम गण संचय समुदय ब्रात ॥ समुचाय रु समुदाय पुनि वार वृन्द संघात ॥ ४४ ॥ संहति और कदम्बक रु निकुरंब हि दाईस ॥ वृन्द भेद अब कहत ही वर्ग समन कारि दीस ॥ ४५ ॥ संघ सार्थ जुग जन्तु गन सजातीय कुल जानि ॥ तिर्यक् गन मैं यूथ इक पशु गन समज बखानि ॥ ४६ ॥ अन्य समूह समाज है सधर्मि को तु निकाय ॥ पुंज कूट उत्कर गरो अन्नादि को लगाय ॥ ४७ ॥ कापोत हंस मयूर पुनि तैत्तिर शौक हि आदि ॥ कापोतादि तिन तिन हि के गन मैं नाम विवादि ॥ ४८ ॥ पाले हुये पक्षी और मृगों के २ नाम ॥ दोहा ॥ क्रीडा हित जे पक्षि मृग पंजरादि मधि होय ॥ सो कहियतु है गृह्यक रु छेक हु जुग जिय जोय ॥ ४९ ॥

इति सिंहादि तरंग

अथ नृतरंग लिख्यते ॥ मानुष के ९ पुरुष के ७ नाम ॥ दोहा ॥

मानुष मर्त्य मनुष्य नर मानव मनुज बखानि ॥ पूरुष पुरुष नर पंचजन पंच पुमान् बखानि ॥ १ ॥ स्त्री के १० नाम ॥ दोहा ॥ स्त्री योषित सीमंतिनी अबला योषा सोय ॥ नारी अरु महिला वधू बामा वनिता जोय ॥ २ ॥ विशेष स्त्रीन के कोपना के २ उत्तमा के ४ पटरानी को १ राजा की अन्य स्त्री को १ नाम ॥ दोहा ॥ भीरु अंगना कामिनी बामलोचना लेखि ॥ ... ॥

प्रमदा कांता "मानिनी" ललना रमणी देखि ॥ ३ ॥ पुनि नितंबिनी सुन्दरी "रामा" इक इक जानि ॥ कोपना तु जुग भामिनी "मत्तकाशिनी" मानि ॥ ४ ॥ सुवरारोहा उत्तमा वरवर्णिनी "विचारि ॥ महिषी" कृतअभिषेक न्रप अन्य भोगिनी "धारि ॥ ५ ॥ विवाहिता स्त्री के ७ नाम ॥ दोहा ॥ पत्नी पाणिगृहीति अरु सहधर्मिणी "रु दारे ॥ द्वितीया रु जाया वधू भार्या "सात उदार ॥ ६ ॥ पति पुत्र वाली के २ सती के ४ प्रथम व्याही स्त्री के २ स्वयम्वर वाली के ३ कुलवती के २ पांच वर्ष की कन्या के २ नाम ॥ दोहा ॥ कुटुंबिनी तौ पुरंध्री "सती तु साध्वी देखि ॥ सुचरित्रा रु पतिव्रता अध्यूढा तौ पेषि ॥ ७ ॥ अधिविन्ना हि पतिंवरा स्वयंवरा वर्या "हि ॥ कुलस्त्री तु कुलपालिका कुमारी तु कन्या हि ॥ ८ ॥ दश वर्ष की कन्या के २ प्रथम रजस्वला के २ जुवान स्त्री के २ पतोहू के ३ नाम ॥ दोहा ॥ नग्निका तु गौरी जुगल दृष्टरजा मध्यमा "हि ॥ युवति तु तरुणी "सुत वधू धूजनी रु स्नुषा "हि ॥ ९ ॥ जुवान पी . . मे होय उसके २ धनादि की इच्छा वाली के २ मैथुनेच्छा वाली के २ नाम ॥ दोहा ॥ जुन्विंटी रु सुवासिनी "इच्छावती तु जोय ॥ कामुकी हि अर्थकामकी रु वृषस्यंती "होय ॥ १० ॥ कामातुरा के पति के पास जाने वाली को १ व्यभिचारिणी के ८ वीर पुत्र वाली को १ पति पुत्र रहित को १ रंडा के २ नाम ॥ दोहा ॥ जाय वहै अभिसारिका पुंश्चली तु कुल

होरु॥ सोय स्वैरिणी इत्वरी असती सुपांशुला रु॥ ११॥ आठ धर्षिणी
बंधकी अशिशु, अशिश्वी आहि॥ अवीरा तु पति सुत रहित, विधवा वि
श्वस्ता हि॥ १२॥ साथन के ३। बूढी के २। सुहागिन के २। कु
रु संमुकदार स्त्री के २। नाम॥ दोहा॥ सखी वयस्या आलि
त्रय पलिक्नी तु, वृद्धा हि॥ पति पत्नी तु, समर्त्र्का प्राज्ञी प्रज्ञा आ
हि॥ १३॥ अति बुद्धिमती के २। शूद्री को १। शूद्रा को १ नाम
॥ दोहा॥ धीमती तु प्राज्ञा तिया शूद्रक की शूद्री सोय॥ विजाती
रु निज जाति तो, शूद्रा निज पर जोय॥ १४॥ अहीरिनी के २। क्ष
त्रियानी के २। वनियानी के २। नाम॥ दोहा॥ आभीरी पति जा
ति करि सु, महा शूद्री आहि॥ द्वि, क्षत्रियाणी क्षत्रिया अर्याणी
अर्या हि॥ १५॥ पढाने वाली के २। मंत्र का अर्थ करने वाली
को १। नाम॥ दोहा॥ दोय उपाध्यायी उपाध्याया आप पढाव॥
इक आचार्या नारि जो आपहि मंत्र सिखाव॥ १६॥ पति योग में
पांच नाम॥ दोहा॥ आचार्यानी क्षत्रियी अर्यी पति की जोय।
रु उपाध्यायानी उपाध्यायी पंचम होय॥ १७॥ पोटा को १।
वीरभार्या के २। वीरमाता के २। नाम॥ दोहा॥ पोटा नर तिय
रूप, अथ जु वीरभार्या होय॥ सु, वीरपत्नी वीरसू रु वीरमाता
होय॥ १८॥ प्रसूतिका के ४। नंगी स्त्री के २। नाम॥ दोहा॥
प्रसूतिका तो प्रसूता जाता पत्या माने॥ प्रजाता हु अ ५ न,
नि तिय कोटवी जानि॥ १९॥ दूती के २। कात्यायनी को १।
ना॥ दोहा॥ दूती तो, संचारिका कात्यायनी जोय॥ अर्द्ध वृद्ध भ

गिवा वसन संजुत विधवा होय॥१९॥ सैरंध्री १। असिक्नी १। नाम॥ दोहा॥ सैरंध्री परसदन थित स्ववश शिल्प कृतजोय॥ प्रेष्यांतःपुरचारिणी ज्वान असिक्नी होय॥२०॥ पातुर के ४। वारमुख्या को १। नाम॥ दोहा॥ रूपाजीवा रु॰ गणिका वारस्त्री वेश्या हि॥ सो इं सत्कृत जनन करि सु हे॰ वारमुख्या हि॥२१॥ कुटनी के २। शुभाशुभ जानने वाली के ३। नाम॥ दोहा॥ दोय॰ कुट्टनी शंभली परतिय पुरुष मिलानि॥ ईक्षणिका विप्रश्निका दैवज्ञा त्रय जानि॥२२॥ रजस्वला के ७। नाम। दोहा॥ रजस्वला तौ ऋतुमती पुष्पवती अवि जोय॥ उदक्या रु॰ मालिनी तथा॰ आत्रेयी हू होय॥२३॥ स्त्री रज के ३। गर्भ के वस से अन्नादि की विशेष अभिलाषा वाली के २। रजरहित स्त्री के २। नाम। दोहा॥ रज तु॰ पुष्प आर्त्तव त्रय हि दोहदवती तु॰ देखि॥ श्रद्धालु हि विगतार्त्तवा तौ॰ निष्कला परेखि॥२४॥ गर्भिणी के ४। वेश्य समूह को १। गर्भिणी समूह को १। युवती समूह को १। नाम॥ दोहा॥ अंतर्वत्नी गर्भिणी सु आपन्नसत्वा रु॰॥ गुर्विणी हु गाणिक्य गण गार्भिण यौवत चारु॥२५॥ दो वार विवाही के २। ताके पति को १। विशेषपति को १। नाम। दोहा॥ पुनर्भू रु॰ दिधिषू जुगल॰ दोवर परणी नारि॥ तिहिं पति दिधिषु हि द्विज सुतो॰ अग्रे दिधिषु विचारि॥२६॥ विना व्याही का पुत्र के २। सुभगा का पत्र के २। नाम॥ दोहा॥ काजात सुतु॰ पुनि॰ कानीन बखानि॥ जु सौ

तुम यासुत पहिचानि.॥२७॥परसाई स्त्री के पुत्रको १भुवाका पुत्र के २ नाम॥दोहा॥इक पारस्त्रैसोय अथपितुभगिनी सुतहोय.॥सोय पैतृष्वस्त्रीय अरु दूजो पैतृष्वसेय॥२८॥दासी के पुत्र के २। सौतेली मा के पुत्र के ३ कुलटा के पुत्र के ३ भिरवारिनी के पुत्र के २ नाम॥दोहा॥तथा मातृष्वस्त्रीय अरु जानहु मातृष्वसेय॥वैमात्रेय रु मातृज हि बंधुल वांधकिनेय॥२९॥कौलटेर कौलटेय रु असती सुत पचद्रेय॥कौलटेय तो भिक्षुकी सति सुत कौलटिनेय॥३०॥पुत्रके ६ पुत्री के ५ नाम॥दोहा॥तनय पुत्र सुत आत्मज रु बेटा सूनु वखानि॥बेटी पुत्री आत्मजा दुहिता तनया मानि॥३१॥पुत्री और कन्या के २। औरस पुत्र के २। पिता के ३ माता के ४ वहिन के २। ननद को १ पोती के ३ नाम॥दोहा॥तोक अपत्य उरस्य तो औरस रु निजजात॥तात पिता जनक हि अरु तोजनयित्री मात॥३२॥जननी अथ भगिनी स्वसा ननांदा तु पति भगिना॥पौत्री सुतौ सुतात्मजा नप्त्री त्यतिय सुजा रा॥३३॥दिवरानी जिठानी को १ भौजाई के २ नाम॥दोहा॥भ्रातृ वर्ग की भार्या यातो आप समाहि॥प्रजा है भ्रातृभार्या सुबै भ्रजावती ही आहि॥३४॥मामी के २ सासू को १ सुसरा को १ काका को १ नाम॥दोहा॥जु मातुलानी मातुली श्वश्रू पति तिय मात॥पितु पति तिय को श्वशुर है पितृव्य पितु को भ्रात॥३५॥मामा को १ शाला को १ देवर के २।

नाम॥ दोहा॥ मातुल मैं भ्राता मात को अथ मदु तिय को भ्रात॥ देवा तो देवर द्वितिय पति को छोटो भ्रात॥ ३६॥ भानेज के २ जवाई के २। पिता मह्यादि के। नाम॥ दोहा॥ भागिनेय स्वस्त्रीय अथ पुत्री पति जामतं दोय पिता मह पितृ पितां पति तामह तिहि तात॥ ३७॥ सात पुस्त भीतर के ३ सगा भाई के ४ नाम। दोहा॥ त्यौं माता मह आदि है होय सपिंड सनाभि॥ समानोदर्य सोदर्य सो सहज सगर्भ्य हु लाभि॥ ३८॥ गोतीन के ६ नाम। दोहा॥ बांधव ज्ञाति सगोत्र पुनि स्वजन बंधु स्व हु होय॥ तिन को गन तो बंधुता भाव जानि ज्ञातेय॥ ३९॥ पति के ४। परपति के २ कुंडको १। नाम॥ दोहा॥ धव प्रिय पति भर्त्ता चतुर उपपति सो तो जार॥ जीवत पति जार जत तनय कुंड नाम संसार॥ ४०॥ गोलक को १। भतीजे के २। द्विवचनवालों के। नाम। दोहा॥ मरें होत गोलक जुगतु भ्रात्रज अरु भ्रात्रीय॥ भ्रात भगिनि कौं एक करि जानै भ्रातरौ जीय॥ ४१॥ पितरौ माता पितु समुझि माता पितरौ होय॥ श्वशुरौ सासु ससुर सुत सुता तु पुत्रौ होय॥ ४२॥ स्त्री पुरुष के ४ जेरके २ नाम॥ दोहा॥ चारि दंपती जंपती भार्यापती वखानि॥ जायापती जरायु तौ गर्भाशय जुग जानि॥ ४३॥ शुक्र शोणित एक ह्वे होके जो कुकवनता है उसके २ जन्म मास के ३ गर्भ के २। नपुंसक के ४। नाम॥ दोहा॥ उल्व कलल वैजनन तो सूति मास जुग मंड॥ भ्रूण तु गर्भ हि षंढ तो क्लीव नपुंसक षंड॥ ४४॥

लडकपन के ३।जवानी के २।बुढापाके २।बुढापास
भूह को १।नाम॥दोहा॥शैशवं बाल्यं शिशुत्वं त्रय योवन
जुगतारुण्य॥वृद्धत्वं तुस्थाविर गनतु तिनको बाईक गाय
॥४५॥अति बुढापाको १।बुढाई के २।दूध पीने वालेव
को के ४।नाम॥दोहा॥पलितं तु कञ्चकी सेलता जरा विस्रसा
दोय॥स्तनप डिंभ उत्तानशय स्तनंधयी चव होय॥४६॥बाल
कके २।ज्वानके ३।बूढाके ६।नाम॥दोहा॥बाल तु मा
णवक हितरुण युवां वयस्थ त्रिजानि॥स्थविर वृद्ध जीर्ण प्र
जरन प्रवयां जीर्न छमानि॥४७॥अति बूढाके ३।बडे भा·
ईके ३।नाम॥दोहा॥दशमी वर्षी यान त्रय ज्यायान् हु अति
जीन॥पूर्वज अग्रिय अग्रिज हि ज्येष्ठो भ्रात प्रवीन॥४८॥छोटे
भाई के ५।दूबलाके ३।बलवान के ३।नाम॥दोहा॥
अनुज जघन्यज अवरज रु पांच कनिष्ठ यवीय॥दुर्बल क्षात
अमांस त्रय मांसल मांसल वीय॥४९॥दूदलाके ४।नक
चपट के ४।नाम॥दोहा॥स्थूल पीन तुन्दिल रु तुन्दी
तुन्दिक थाट॥नतनासिक तु अवभ्रटरु अवटीट रु अवनाट॥
५०॥अच्छे वार वाले के ३।सिमटी चामवाले के २।
कम अधिक अंगवाले के २।वावना के ३।नाम।दोहा
केशी केशव केशिक हि वलिन वलिभ जुग सर्व॥विकलांग
तु पोगंड जुग ह्रस्व तु वामन खर्व॥५१॥तीखी नाकका के
२।नकटा के २।लम्बी वा चिपटी नाकका के २।दूरदूर
...

जांघ का के २ नाम ॥ दोहा ॥ खरा तु खरास विग्र तौ गतना
रि हि जुगजोय ॥ खुरणा खुरणास मज्ञु तौ प्रगत जानुक हि होय
॥ ५२ ॥ ऊंची जांघ का के २ मिली जांघ का के २ वहिरा
के २ कूवडा के २ टूंटा के २ नाम ॥ दोहा ॥ उर्द्धजानुक
ऊर्द्धज्ञु जुग संहत जानुक संज्ञु ॥ एड वधिर कुब्ज तु गडुल कुकर
तु कुणि जुगसंज्ञु ॥ ५३ ॥ छोटे अंग का के २ पांगला के २
मूंड मुंडाये के २ कंजा के २ लंगडा के २ नाम ॥ दोहा
एल्मि अल्पतनु श्रोण तौ पंगु हि मुंडित मुंड ॥ वालिर तु केकर
खोड तौ खंज हि जुग जुग मुंड ॥ ५४ ॥ लहसना के ३ तिल
वाला के २ निरोगी के २ नाम ॥ दोहा ॥ जडुल तु कालक
पिप्लुस हि तिलकालक तु द्वितीय ॥ तिलक हि होय अनामय
तु जुग आरोग्य गनीय ॥ ५५ ॥ इलाज करने के २ इलाज
के ५ रोग के ७ क्षयी के ३ नाक रोग के २ छींक के ३
नाम ॥ दोहा ॥ चिकित्सा तु रुक प्रतिक्रिया औषध भेषज अ
धि ॥ अगद जायु भेषज्य पच रोग रुजा रुक व्याधि ॥ ५५ ॥ ग
द आमय उपताप ही क्षय तौ यक्ष्मा शोष ॥ प्रतिश्याय पीनस
क्षव सुत क्षुत क्षव हि अदोष ॥ ५६ ॥ खांसी के २ सूजन के ३
विवाई के २ सेहुंवा के २ नाम ॥ दोहा ॥ कास तु क्षवथु
हि शोफ तौ श्वयथु रु श्वयथु बखानि ॥ पादस्फोट विपादिका
सिध्म किलास हि मानि ॥ ५७ ॥ खाजु रोग के ४ खुजाल
के ३ फोडा के २ नाम ॥ दोहा ॥ पामा पाम विचर्चिका क

च्छू कंडू सोतु॥ खर्जू कंडूया विकाटे तो विस्फोटहि होतु॥ ५८॥ घावके ४।नस्तरको १।कोढके ३।श्वेतकोढके २।ववासीरके २।फावकीके २।संग्रहणीके २।उलटीके अनाम॥ दोहा॥ व्रणतु घावई र्मरु अरुष् अथनाडी व्रणहोय॥ कोढ मंडलकौ कुष्ठ तो श्वित्र हि अर्शास सोय॥ ५९॥ दुर्नामकं आनाहहै नौ विवंध ग्रहणी सोतु॥ रुक प्रवाहिकौ वमथुतो वमिअर्दिकौ होतु॥ ६०॥ व्याधिभेदके ५।मूत्रकृच्छ्रके २।हृकीसके ५।रोगरहितके ४।रोगसेंदुखीके ३।नाम॥ दोहा॥ व्याधिभेद विद्रधि हृज्वर मेह भगंदर ध्यार॥ मूत्रकृच्छ्र तौ अश्मरी चिकित्सु अगदंकार॥ ६१॥ रुरोगहारी चिकित्सकौ वार्ती तु कल्य वखानि॥ निरामय रुउल्लाघं अथ ग्लानि ग्लास्नू आनि॥ ६२॥ रोगीके ४।खसराकेवालाके २।नाम॥ दोहा॥ अपटुआमयावी विकृत व्याधित आतुर सोय॥ अभ्यमित रुअभ्यांत अथ पामन कच्छुर होय॥ ६३॥ दादवालाके २।ववासीरवालाके २।वायवालाके ४।बहुतदस्तवालाके २।चीपरावांचौंधाके ४।वावलेके २।कफवालेके २।नाम॥ दोहा॥ जु ददुरोगी दद्रुण हि अर्शसतु अर्शवान॥ द्वि वातरोगी वातकी सातिसार तो आन॥ ६४॥ अंतिसारकी हि चुल्ल तो चिल्ल पिल्ल क्लिन्नाक्षं॥ उन्मत्त तु उन्मादवन श्लेष्मल श्लेष्मण दक्ष॥ ६५॥ कूवडाके २।तुंदिल २।सेकुवावालेके २।अंधाके २।मूर्छितके।नाम॥

दोहा॥ न्युब्ज भुग्नरुज तुंडिभ तुतुंडिल सिध्मल सोतु॥ किलासी हु अंध तु अद्दग मूर्त्त तु मूर्छित होतु॥ ६६॥ कामके ६। पित्त के २। कफ के २। खालके २। नाम॥ दोहा॥ शुक्र तु तेजस रेतस रु इन्द्रिय वीर्य रु बीज॥ पित्त मायु श्लेष्मा तु कफ असृग्धरा त्वच धीज॥ ६७॥ मांसके ६। सूखे मांसके ३। नाम। दोहा मांस पलल पिशित रु तरस आमिष क्रव्य कुमानि॥ शुष्कमांस उत्तपन्न पुनि वल्लूर हु त्रय जानि॥ ६८॥ रुधिरके ८। हृदयके ३। नाम॥ दोहा॥ रुधिर असृक रक्त रु क्षतज शोणित लोहित सोय॥ लोहू अस्त्र हु हृदय तो हृदयकमल हृद होय॥ ६९॥ करेजाके २। चरबीके ३। गलेकी पिछली नसको १। नाडीके २। नाम॥ दोहा॥ अग्रमांस बुक्का जुगहि वपा वसा त्रय मेद॥ मन्या नस गल पीछली सिरा तु धमनि द्वि भेद॥ ७०॥ तिलके २ गूदाके २। कान आदिके मलके २। आंतके २। पिलही के २। नाम। दोहा॥ तिलक क्लोम मस्तिष्क तो गोर्द कि द्वै मलै दोय॥ अंत्र पुरीतत गुल्म तो प्लीहा जुग जुग जोय॥ ७१॥ नसके। कलेजा विशेषके २। लारके ३। कीचरके। नाम। दोहा स्नायु वस्नसा यकृत तो कालखंड जुग भाषि॥ लाला स्यारिका स्यंदिनी दूषिका तु मल आंषि॥ ७२॥ विष्टाके ८। कपार के ३। नाम॥ दोहा॥ गूथ तु विष्टा शकृत विट वर्चस्क रु उच्चार॥ शमल अवस्कर कर्पूर तु जानि। कपाल कपार॥ ७३॥ हाडके ३। पींजराको १। रीडको १ खोपरीको १। नाम॥

दोहा ॥ अस्थि कुल्य की कसें अथो तनु की कस.कंकाल ॥ कीकस पीठि.कशेरका शीश.करोटि रसाल ॥ ७४ ॥ पशुरी को १ अंग के ३ देह के ११ पैर के आगे के २ पांव के ४ नाम दोहा पांसू हाड.तु पर्शुका अवयव अंग प्रती क ॥ अप घन हू वपु गात्र तनु काय कलेवर नीक ॥ ७५ ॥ वर्ष्म मूर्त्ति विग्रह तनू अरु संहनन शरीर ॥ प्रपद तु पादाग्र हि चरण अंघ्रि पाद पद धीर ॥ ७६ ॥ घुटने के २ रोडी को १ जांघ के २ जानु के ३ निरोह वा जानु के ऊपर भाग के २ टिहुनी को १ गुदा के ३ नाम ॥ दोहा ॥ घुटिक गुल्फ पद गांठि अथ पार्ष्णि त्तिनहि तर जानि ॥ जंघा प्रस्ता जानु तो ऊरुपर्व पहिचानि ॥ ७७ ॥ अष्ठीवान हि ऊरु तु सक्थि हि वंक्षण सोतु ताकी संधि ॥ अपान तो गुद रु पायु त्रय होतु ॥ ७८ ॥ मूत्रस्थान को १ कमर के ८ नितंब को १ नाम दोहा ॥ वस्ति नाभितर.कटि तु कट श्रोणि फलक श्रोणी रु ॥ ककुद्मती कुनितंब तो तिय कटि पीछु शरीर ॥ ७९ ॥ स्त्री की कटि के अग्र भाग को १ नितंब का खडा को १ कूला के २ भग लिंग को १ नाम ॥ दोहा ॥ आगल जघन कुकुंदर तु गाडजु वांस अवस्थ ॥ कटि प्रोथ तो स्फिच अथो लिंगयोनि तु उपस्थ ॥ ८० ॥ योनि के २ लिंग के ५ अंड के ३ नाम दोहा ॥ भग तु योनि अथ मेहन रु शेफ रु शिश्न बखानि ॥ मेढू लिंग मुष्क वृषण अंडकोश त्रय मानि ॥ ८१ ॥ पीठ वंश

के नीचे की तीन हड्डी को १। पेट के ५। कुच के २। ताकी
बीटनी के २। नाम॥ दोहा॥ पृष्ठवंश अध त्रिक" इकाहि कु
क्षितु जठर पिचंड॥ उदर तुंद" अथ कुच स्तनै कुचाग्र चूच
क" मुख"॥ ८२॥ वाथं वा गोद के २। छाती के ३। पीठ के २
कंधा के ३। नाम॥ दोहा॥ क्रोड भुजांतर" वक्षस तु उरस
रु वत्स" हि देषि॥ पृष्ठ तु पीठ" हि भुज शिर तु स्कंध रु अंस परेषि
॥ ८३॥ हंसुली को १। कांख के २। बगल को १। शरीर
मध्य के ३। नाम॥ दोहा॥ ताकी संधि तु जत्रु" ही बाहमू
ल जुग कक्ष"॥ पार्श्व" तासु तर मध्यम तु मध्य अवलग्न दक्ष
॥ ८४॥ बांह के ३। कुहनी के २। ताके ऊपर को १। कुह
नी नीचे को १ नाम॥ दोहा॥ दोष तु बाहु प्रवेष्ट त्रय क
फोणि कूर्पर" जानि॥ तिहिं ऊपर तु प्रगंड तिहिं तरै प्रकोष्ठ" ब
खानि॥ ८५॥ गट्टा को १। मणि बंध धसौं छिगुनी लौं मं
सल वाह प्रदेश को १। नाम॥ दोहा॥ संधि जु पाणि प्र
कोष्ठ की   पाणि बंध" बखानि॥ ताते लय कनिष्ठ लौं वाहिक
रकरभ" पिछ   ॥ ८६॥ हाथ के ३। प्रदेशिनी के २। अंगु
ली मात्र के २। नाम। दोहा॥ पंच शाख शय पाणि" त्रय अ
ग्र प्रदेशिनी सो तु॥ तर्जनी है अथ अंगुली सो कर शाखा हैं तु
॥ ८७॥ पांचों अंगुलीन के। नाम॥ दोहा॥ अथ अंगुष्ठ
प्रदेशिनी" बहुरि मध्यमा" जानि॥ पुनि अनामिका कनिष्ठा क्र
म तें पांच पिछानि॥ ८८॥ नुह के ४। प्रादेश १। नाम॥ दो॰

करकह नख पुनर्भव ५ नख संजुत गनि चारि॥ प्रादेश तु अं
गुष्ठ अरु तर्ज्जनि अन्तर धारि॥ ८९॥ ताल को १ गोकर्ण
को १ वितस्ति को १ नाम॥ दोहा॥ तथा ताल गोकर्ण
जुग मध्य अनामा नाप॥ छिगुनी नाप वितस्ति सो द्वादश
अंगुल थाप॥ ९०॥ पंजा के ३। मिले जुग पंजान को १
नाम॥ दोहा॥ पाणि रु विस्तृत अंगुली प्रतल प्रहस्त चपेट
॥ सिंहतल तु जंहं प्रतल जुग दक्षिण वाम विभेट॥ ९१॥ प्र
सृति को १ अंजुली को १ चौवीस अंगुल नाप हाथ के
१ नाम॥ दोहा॥ प्रसृत तु कुवरो पानि अथ अंजलि दोय
मिलान॥ विस्तृत कर रु प्रकोष्ठ सब हस्त हि कहत सुजा
न॥ ९२॥ मूठी को २ रत्नि को १ अरत्नि को १ नाम॥
दोहा॥ मुष्टि तु मूठी हि अथो सप्रकोष्ठ मूठी सु॥ रत्नि हि
रोक अरत्नि तो छिगुनी खुले सुदीसु॥ ९३॥ व्याम को १
पौरुष को १ नाम॥ दोहा॥ विस्तृत कर भुज दुहुन को
तिरछो अन्तर व्याम॥ ऊंचो विस्तृत पाणि भुजन रमित पौ
रुष नाम॥ ९४॥ गला के २। नाडि के ३। तीन रेखा की ना
डि को १ नाम॥ दोहा॥ कंठ तु गल ग्रीवा सु तो शिरोधि
कंधर मानि॥ कंबुग्रीवा एक सो त्रय रेखा जुत जानि॥
९५॥ चैंद्र के ३। मुह के ७। नाक के ५ होठ के ४ नाम
दोहा॥ घाट अवटु कृकाटिका वदन वक्त्र मुख आस्य॥ ल
पन तुंड आनन अथो घोणा घ्राण प्रकास्य॥ ९६॥ ...

अरु नासिका नासा पंच निहारि। ओष्ठ अधर रदनच्छद रु दशन बासस हु चारि॥ ९७॥ चिवुक को १ गाल के २ कनपटी को १ दांत के ४ तालवा के २ नाम॥ दोहा॥ तिहिंतर चिवुक कपोल तौ गंड हनुतु परतास॥ रदन तु दशन रु दंत रद तालु तु काकुद भास॥ ९८॥ जीभ के ३ ओठ का किनारा को १ लिलार के ३ नाम। दोहा॥ रसना जिह्वा रसज्ञा अथो ओष्ठ के अंत॥ स्टक्किणी हि इक गोधि तौ अलिक ललाट भनंत॥ ९९॥ भौंह को १ भौंह वीच को १ आंखि का तिल के २ नाम॥ दोहा॥ भ्रू तु दृगन के ऊपर हि। कूर्च तु भ्रून मंझार॥ अथ कनीनिका तारका जुग दृग तिल निर्धार॥ १००

आंखि के ९ नाम॥ दोहा॥ नयन तु लोचन चक्षुष रु ईक्षण अक्षि चखानि॥ दृग अरु अंबक नेत्र पुनि दृष्टि नवम पहिचानि॥ १०१॥ आंसू के ५ आंखि के किनारों को १ किनारों सें देखने को १॥ नाम॥ दोहा॥ अस्नु अश्रु नेत्रांवु पुनि रोदन अस्त्र हि दक्ष॥ अंपागस्तु नेत्रांत ही तिहिं कर दर्श कटाक्ष॥ १०२॥ कान के ६। शिर के ५। नाम॥ दोहा॥ कर्ण शब्दग्रह श्रोत्र श्रुति श्रवण रु श्रव षट जानि॥ उत्तमांग तौ शीर्ष शिर मूर्द्धा मस्तक मानि॥ १०३॥ वार के ६। वालों के समूह के २ ढेबालों के २। नाम॥ दोहा॥ चिकुर तु कुंतल वाल कच केश शिरोरुह जोय॥ कैशिक कैश्य हि अलक तौ चूर्णकुंतल हु होय॥ १०४॥ लिलार पर झुके वालों को १ कुमार खड

के २। पाटीके २। मोतीकी मालाआदिसैं वंधे केशसमूह
को १। नाम॥ दोहा॥ भ्रमरकैं एक। शिखंडके तु। काकपक्ष जु
गमिल्ल॥ केशवेश कवरी कचतु अतिसाजे। धम्मिल्ल॥ १०५॥
चोटीके ३। जटाके २। सर्पाकार रचित केशवेश के २ ना
म॥ दोहा॥ अथो। केशपाशी। शिखाचूडा तीन वखानि॥ जटा
सटा जुग व्रतिनकी। वेणी प्रवेणी जानि॥ १०६॥ साफ वालोंके
२। कचपर्यायसैं परै पाश आदि तीन केश समूह वाची
ताके ३। नाम॥ दोहा॥ शीर्षण्ये स्तु शिरस्य जुग निर्मल वार
प्रसंग॥ पाशपक्ष अरु हस्त ये कलापार्थ कच संग॥ १०७॥
रोमके ३। मूंछडाढीको १। अलंकारकी शोभाके ५। नाम
॥ दोहा॥ रोम तनूरुह लोम त्रय मुखकच। श्मश्रु हि कथ्य॥
वेशं प्रसाधनं प्रतिकर्म आकल्प रु नेपथ्य॥ १०८॥ अलंकार
कर्ताके २। अलंकारयुतके ५। नाम॥ दोहा॥ अलंकरि-
ष्णुं तु जुग अलंकर्त्ता मंडितं सो तु॥ परिष्कृत रु भूषित अलंकृत
रु। प्रसाधित होतु॥ १०९॥ अलंकारादिसैं अति शोभितके
२। शृंगारके २। गहनेके ५। मुकुटके २। चोटीकी मणि
के २। हारके वीचकी वडी मणिको १ नाम॥ दोहा॥
भ्राजिष्णुं तु रोचिष्णु पुनि भाट हु भूषां तु॥ अलंक्रिया अभरण
तो परिष्कार विख्यातु॥ ११०॥ विभूषण रु मंडन अलंकार हि
मुकुट किरीट॥ शिरोरत्न चूडामणि॥ हि तरल तु इक। गुन कीट
॥ १११॥ चोटीकी सोनेकी पाटीके २। वींदीवा टीकाके २

नाम॥दोहा॥ वालपाश्या कनककीपटी पारितथ्याँहि॥भूषन अलिक ललाटिका द्वितिय पत्रपाश्याँहि॥११२॥ताटंकके२ कुंडलके२ कंठीवा कंठाके२नाम॥दोहा॥तालपत्र तौकर्णिका कर्णावेष्टन तुआन॥कुंडलजुगग्रैवेयतौ सुकंठ भूषाँनान॥११३॥नाभिपर्यन्तलंवीकंठीके२ सोनेकी को१ मोतीनसेंगुथीको१नाम॥दोहा॥लम्वनद्विति यललंतिका प्रालंविकातुहेम॥उरसूत्रिकामुक्तकी गूंथीमा लसनेम॥११४॥हारके२ हारभेदोंके लडके के४नाम ॥दोहा॥हारजुगलमुक्तावली देवच्छंद तुजोय॥सौलरको अथयष्टितौ लतारुसरलड होय॥११५॥हारभेदलड़भेदकरि गुत्सयष्टिवत्तीस॥चतुर्विंशगुच्छार्द्ध है गोस्तनचौसरदीस॥ अर्द्धहार द्वादशलरहि माणवकतुलर वीस॥अथएकहिएका वली एकयष्टिकादीस॥११७॥सत्ताईसमोतीनकीको१ प्रकोष्ठाभरणके४नाम॥दोहा॥सप्तवीसमुक्तानकीमु नक्षत्रमालाहि॥कटकतुआवापकवलयपारिहार्यंवआहि ॥११८॥प्रगंड भूषणके२ अंगूठीके२ अंकित अंगूठी को१नाम॥दोहा॥केयूरतु अंगदजुगल अंगुलीयकतुजा नि॥ऊर्मिकाहिसोसाक्षरा अंगुलिमुद्रामानि॥११९॥कडाके २ स्त्रियोंकी कमरके भूषणके५ पुरुषोंकी कमरिभू षणको१नाम॥दोहा॥कंकणकरभूषणजुगल सारसन तुरसनारु॥पांचमेखलासप्तकी कांचिंहु श्रंखलेचारु॥१२०॥

य कलरकी को १। आठकी को १। सोलहकी को १ पच्चीसकी
को १ नाम। दोहा॥ एकयष्टिकांची कहत आठमेखला जानि।
रशना षोडशयष्टिकी पचिसकलाप वखानि॥१२१॥ विछिया।
वा। पायजेवके ६। घुघरूके २। वस्त्रनके कारण के ४।
अलसी आदि सैंवने वस्त्र को १। कपास सैंवने को १ रेस
मसैं वनेके २। पशुरोम सैं वने के २। नाम॥ दोहा॥ तुलाको
टि पादांगद रु नूपुर अरु मंजीर॥ पादकटक हंसक अथो क्षुद्रघं
टिकां धीर॥१२२॥ किंकिणी हुत्वक फल क्रमि रु रोम है कारण
वास॥ वाल्क तु इक क्षौमादि को॥ फाल सु तो कार्पास॥ वादरत्र
य कौशेय तो क्रमिकोशोत्थ्यौ विभाति॥ रांकव तौ मृग रोमज हि
चारि वसन की जाति॥१२३॥ मांडहार। वा। कोराके ४। धो
ये वस्त्र के जोडा को १। नाम॥ दोहा॥ नवांवरस्तु अनाहत
रु तंत्रक रु। निष्प्रवाणि॥ उद्गमनीय तु एक है धौत वस्त्र जुग
जाणि॥१२४॥ घोयेरेसमी को १। दुसाला आदि के २। रे
समी कपडे के २। नाम॥ दोहा॥ जु है धुप्यो कोप्राय सो इ
क। पत्नोर्ण वखानि॥ महाधनं तु वहु मूल्य ही क्षोम दुकूल दि
मानि॥१२५ कपडा के किनारे के २। दशी वा करा के २।
दैर्घ्य। वा। वस्त्र की लम्बाई के २। वस्त्र की चौडाई। वा।
पैना के २। नाम॥ दोहा॥ आहत सु तो निवीत ही दशा तु वस्ति
द्विराह॥ आयाम तु आरोह है जुग विशालता परिणाह॥१२६॥
पुराने कपडे के २। चीथडा के २। वस्त्र मात्र के ६। नाम॥

दोहा॥ जीर्णवस्त्रे तु पटच्चरैं हि नक्तक के कर्पट मान॥ आच्छा
दन अंशुक वसन चेल सुचलेलक वास ॥१२७॥ मोटे वस्त्र
के २। ओहार। वा। बेठन के २। कंवल के २। नाम॥ दोहा॥
स्थूलशाटक तु वराशि हि भच्छदपट तु निचोल ॥ रल्लक से
तो कंवलै हि सब जुग जुग वुध बोल ॥१२८॥ धोती आदि के ५
उत्तरीय। वा। अंगोछा। वा। दुपट्टा आदि के ४। नाम॥
दोहा॥ उपसंव्यान अधोंशुक रु अंतरीय परिधान॥ उत्तरासं
ग वृहति को प्रवार रु संव्यान॥१२९॥ अंगिया। वा। चोली के २
रजाई। वा। ओढना को १ उटंगलहंगा को १ लंबालहंगा
को १ नाम। दोहा॥ चोल तु कूर्पासक जुगल शीत हरण नी
शार॥ चंडातक इक तिय वसन अप्रपदीन ह चार॥१३०॥
चंदवा के २। तंवूडेरा को १। कनात के ३। नाम॥ दोहा॥
वितान स्तु उल्लोच अथ दूष्य वसन गृह जानि॥ प्रतिसीरा तो
जवनिका रु तिरस्करणी मानि॥ १३१॥ रोली आदि सैं अंगसं
स्कार के २। पोंछने के ३। उवटना के २। न्हाने के ३। चं
दनादि लेपन के ३। गई गंध कौं फिर करने के २। ना
म। दोहा॥ अंगसंस्कार तु परिकर्म म्रजा मार्जना मार्ष्टि॥
उद्वर्त्तन उत्सादन हि स्नान तु आप्लव दृष्टि॥१३२॥ आप्लाव
ह चार्चिक्य तो स्था सक चर्चा तीन॥ प्रवोधन तु अनुबोधन
हि गंध धरन पुनि नवीन॥१३३॥ गाल आदि मै कस्तूरी
आदि सैं चिन्ह वनाने के २। तिलक के ४। नाम। दोहा॥

जु पत्र लनखांसे। द्वितिय पत्रांगुली निर्धारि॥ चित्रक तिलक
नियो पक रुतमालपत्रै हु च्चारि॥ १३४॥ केशरके १३। लाख
के ६। नाम॥ दोहा॥ केशर कुंकुम अग्नि शिख वर वाल्ही
क रु धीर॥ पिशुन रक्त संकोच पुनि पीतन अरु काश्मीर॥
१३५॥ लोहित चन्दन जुग रु इक नाम त्रयो दश भाष॥ राक्षो
लाक्षा याव जतु द्रुमामय रु षट लाष॥ १३६॥ लवंग के २
पीत चन्दन के ३ नाम॥ दोहा॥ देवकुसुम श्री संज्ञ ही
अथ कालीयक जानि॥ रु कालानुसार्य सु त्यतिय जायक
नाम वखानि॥ १३७॥ अगुरु के ६। काला अगुरु के २
मल्लिगंधि अगुरु को १ नाम॥ दोहा॥ राजार्ह तु जोंग
क अगुरु क्रमिज वांशिक रु लोह॥ कालागुरु अगुरु हि सु
भिजुत मंगल्या सोह॥ १३८॥ रालके ५। धूपके २ नाम। दो॰। रालस
र्जरस सर्वरस यक्षधूप वहु रूप॥ कृत्रिम धूपक तो द्वितिय लखि
वृक धूप अनूप॥ १३९॥ लोहवान के ४। देवदारु धूप। वा ता
र पान का तेल के ५। कस्तूरी के ३। कबाव चीनी के ३
नाम। दोहा॥ सिल्ह तु पिंडक तुरुष्क रु यावन चारि प्रक
स॥ श्रीवेष्ट तु रक धूप पुनि सरल द्रव श्रीवास॥ १४०॥ पा
यस हू म्रगमद सु तौ कस्तूरी म्रग नाभि॥ कोशफल तु कक्को
लक रु कोलक तीनहि लाभि॥ १४१॥ कपूर के ७। नाम॥
दोहा॥ चन्द्र संज्ञ हिम वालुका घनसार रु कर्पूर॥ चन्द्र के
और सिताभ्र पुनि सप्तम विदित कपूर॥ १४२॥ मलयागि

रिचन्दनके ५। चन्दन भेदके ३। नाम॥ दोहा॥ मलयज चन्दन भद्र श्री गंधसार श्रीखंड॥ हरी चन्दन गो शीर्ष त्रय तैल पर्णिके हु मंड॥ १४३॥ रक्त चंदन के ५। जायफलके २। नाम॥ दोहा॥ रक्त चन्दन तु रजन रु। तिल्ल पर्णी पत्रांग॥ कुचंदन हि जाति फल तौ जाति कोष जुग संग॥ १४४॥ म्रग मद आदि के सम भाग के बनाये पिंड के लेप विशेषको १। घिसी हुई लेपन वस्तु के २ नाम॥ दोहा॥ म्रगमद, कक्कोल, रु अगुरु, कपूर। हि सम लेय॥ यक्ष कर्दम हि वर्गो क तु और विलेपन ज्ञेय॥ १४५॥ पीसे सुगंध द्रव्य के वा चूर्ण वा अरगजा के २। सुगंध करने वाले द्रव्य। वा। चूर्णके २। गंधद्रव्य से वासित वस्तु के २। नाम। दोहा॥ वर्ति गात्र अनुलेपनी चारिकि जुग जुग जोय। वास योग तौ चूर्ण ही भावित वासित दोय॥ १४६॥ गंधमाला आदि के धारन को १। माथे की माला के ३। शिर के बीच की माला को १। नाम॥ दोहा॥ धारन मालादिक न को। अधिवासन इक आहि॥ माथे माल्य माल्य स्रज गर्भक केश न माहि॥ १४७॥ सिर सैं चोटी तक की को १। सिर सैं लला ट तक की को १। गले तक लंबी को १। जनेऊ के समान छाती पर लटकी माला को १। नाम॥ दोहा॥ प्रभ्रष्टक तु शिखा हि मैं ललामक तु गत माल॥ ऋजु लंबि तु प्रलंब है विकक्षक तु र साल॥ १४८॥ चोटी की पहरी माला के २।

माला आदि के पनाने के २। नाम॥दोहा॥जो तरखी उपर रहे अपोा शिखागत आहि॥प्रेखं अरु। आपीडं ही परिसं दंस्वनो हि॥१४९॥सव वस्तु सें परिपूर्ण के २। उष्णीसा वा। ताकेपाके २। विछावने के ३। नाम। दोहा॥आभोग तु परिपूर्णता उपवर्हे तु उपधानं शय्यं नीयं तु शाय्या शयनं त्र पविछावना जान॥१५०॥खटिया वा पलंग के ४। गेंद के २। दीया के २। नाम॥दोहा॥पर्यकं तु पल्यंकं च व खट्वा मं चौं हिजोय॥गेंदुकं तौ कंदुकं हि अथ दीप प्रदीपं हि दोय॥१५१॥पीढा के २। डब्बा। वा। चौफुला के २। कांघी के २। पीकदान के २। नाम॥दोहा॥पीठं तु आसनं संपुटकं सु तैं समुद्गकं राह॥कंकतिकां तु प्रसाधनी पतद्ग्रह तु प्रतिग्राहं॥१५२॥वुका के २। दर्पण के ३। पखा के २। नाम॥ दोहा॥पिष्टातं तु पटवासकं हि मुकुरं तु दर्पणं सोय॥आदर्शं हु त्रय व्यजनं तौ। तालवृंतकं हि होय॥१५३॥

इतिन्द्रतरंगः

अथ ब्रह्मतरंग लिख्यते॥७॥

वंश के ८। वर्णं को १। नाम॥दोहा॥अभिजन संततिं गोत्र कुलं अन्ववाय सन्तानं॥वंश जननं अन्वयं वर्णं तौ। वे प्रादि हि नान॥१॥ब्राह्मणादिको १। राज वंश के २। नाम॥ दोहा॥विप्र क्षत्र विट शूद्र ये चातुर्वर्ण्यं बखानि॥ज्ञुराजवीजी नो हितिय। राजवंश पहिचानि॥२॥कुलीन के २। सज्जन

के ६। ब्रह्मचारी को १। नाम॥ दोहा॥ कुलसंभवं तौ वीज्यं ही। सज्जनं साधुं कुलीन॥ सभ्य महाकुल आर्य अथ सु ब्रह्म चारी लीन॥ ३॥ गृही आदि के ३। आश्रम को १। ब्राह्मण के ४। नाम दोहा॥ गृही वानप्रस्थ रु। वर्णथ। भिक्षु रु आश्रमं मानि॥ वाडव भूसुर विप्र द्विज रु। अग्रजन्मा जानि॥ ४॥ षट कर्मा को १। षट कर्म के भिन्न भिन्न नाम। दोहा॥ षटकर्मा इक कर्म तौ। याग अध्ययनं दानं॥ याजनं अध्यापनं अपरप्र· ति ग्रहं रु षट नान॥ ५॥ धीमान् के २१। नाम॥ दोहा॥ स नं कोविदं दोषज्ञं बुध ... तं कविं विद्वानं॥ सुधी विपश्चितं धी रज्ञं सु। प्रज्ञ रु संख्यावानं॥ ६॥ कृष्टि दूरदर्शी कृती सूरिं दीर्घ दर्शी सु॥ लब्धवर्ण रु। विचक्षण सु मनीषी रु इक्कीसु॥ ७॥ पढ़ाने वाले के २। वेदपाठी के २। पितादि को १। आचार्य को १। नाम॥ दोहा॥ उपाध्यायं अध्यापकं हि श्रोत्रियं छांद संजानि॥ निषेकादिकृत। गुरु हि अथ इक। आचार्य वखानि॥ ८॥ यज्ञाध्य के ३। दीक्षित को १। नाम॥ दोहा॥ यजमानं तु यष्टा व्रती अध्वर मे शिखदानि॥ सोमवान मख मे यही, दीक्षितं नाम वखानि॥ ९॥ वारम्वार यज्ञ करन वाले के २ यज्वा को १। नाम॥ दोहा॥ इज्याशील तु दूसरो। या यज्वं कहीं जोय॥ यज्वां सो तो विधि सहित मखकारक नर होय॥ १०॥ वृहस्पति यज्ञकर्त्ता को १। सोमरस पीने वाल यजमान के २ सर्वस्व दक्षिणा सें विश्वजित् यज्ञकर्त्ता को १। नाम। दो·

स्थपति तु गीष्पति मखकार॥ हि.. सोमपीती सोय॥ सोमपजि
त सित मखकृत जु सु सर्ववेदी होय॥ ११॥ अनूचान को १॥ सु
मान्नत को १ नाम दोहा॥ अनूचानं इक सांग जिहि प्रवचन
सपाठि लीन॥ समावृत्त गृह गमन हित जिहिं गुरु आज्ञा दी
न॥ १२॥ अभिषवस्नान कर्त्ता को १॥ विद्यार्थी के ३। नये
विद्यार्थी के २। सपाठी को १ नाम॥ दोहा॥ सुत्वा इक ही शि
ष्य तौ अंतेवासी छात्र॥ प्राथमकल्पिक शैक्ष अथ सब्रह्मचारी
मात्र॥ १३॥ एक गुरु के पास के पढने वालान को १॥ अ
ग्नि के बटोरने वाला को १। परंपरा उपदेश के ४। नाम
॥दोहा॥ एक गुरु तु सतीर्थ्य अथ एक अग्नि चित आहि॥
परंपरा उपदेश तौ ऐतिह्य इतिह आहि॥ १४॥ प्रथम ज्ञान को
१ ज्ञान करबे आरंभ करने को १। यज्ञ वा मखन के ९
नाम॥ दोहा॥ पहिलो ज्ञान जु उपज्ञा ज्ञात्वारंभ सभाग॥ अ
कर्म ऊ अध्वर तु सव सत्र वितु क्रतु याग॥ १५॥ महायज्ञ को
१ नाम॥ दोहा॥ पाठ होम पूजा अतिथि तर्पण बलि पञ्च
बादि॥ महायज्ञ ये नाम हू पांच ब्रह्म यज्ञादि॥ १६॥ सभा
के ८ नाम॥ दोहा॥ सभा सदस्या समिति सद आस्थानी
आस्थान॥ गोष्ठी संसद परिषद हू नवही नाम निदान॥ १७॥
यज्ञ कर्ता विशेष को १। यज्ञ दर्शक को १। सभा में बैठ
वालान के ५ नाम॥ दोहा॥ यजमान तु सदस्य गृहपति
... ... सभासार सामाजिक सभ्य समासद पञ्च॥

॥१८॥ तीनौं वेद के ज्ञाता के क्रमसैं येकेक१ नाम॥
दोहा॥ उद्गाता अध्वर्यु अरु होता तीन बखानि॥ सामयजुष
ऋक् वेदवित ऋत्विज क्रमतैं जानि॥ १९॥ ऋत्विज के२
नाम॥ दोहा॥ धनदेके पै वरो हि ऋत्विज यजक जानि॥
आग्नीध्रादिक षोडश हि भिन्न भिन्न पहिचानि॥ २०॥ यज्ञवे
दी को १ यज्ञ का चौंतरा के २ यज्ञ का खंभा विशेष के
२ यज्ञस्तंभ घेटडी को १ नाम॥ दोहा॥ वेदी संस्कृतभू
मि अथ स्थंडिल चत्वर होय॥ यूपकटक तु चषाल अथ कुंबी
आहा होय॥ २१॥ यज्ञस्तंभ के आगे के २ अग्नि निका
लने की दो लकडी के २ यज्ञाग्नि तीन के ३ नाम॥
दोहा॥ तर्म सुतौ यूपाग्र अथ अरणी तु मंथनदारु॥ गार्हपत्य
दक्षिणाग्नि रु आहवनीय है चारु॥ २२॥ तीनौं अग्नि को १
यज्ञाग्नि विशेष को १ यज्ञाग्नि के स्थल के ३ नाम
दोहा॥ त्रेता तीनौं अग्नि अथ संस्कृत अग्नि प्रणीत॥ उपचाय्य
रु परिचाय्य अरु समूह्य तीन हि गीत॥ २३॥ अग्नि विशेष को
१ अग्नि की क्रिया के ३ नाम॥ दोहा॥ गार्हपत्य सैं दक्षि
णा अग्नि थाप आनाय्य॥ स्वाहा तौ हुतभुक प्रिया अग्नायी है
हराय॥ २४॥ अग्नि जलाने की ऋचा का मंत्र के २ छंद
को यज्ञ की खीर के २ नाम॥ दोहा॥ ऋक् सामिधेनी रु
धाय्या ऋच्छ कहु अग्नि जराने॥ गायत्र्यादिक छंद अथ हव्य
पाक चरु मानि॥ २५॥ दधि और दुग्ध [illegible] का को १ यज्ञ

का बीजन को १ दही मिल्याघी को १ नाम ॥ दोहा ॥ आमिक्षा उकरुउ ससपय पक्व माहि दधि साज्य ॥ घन्वित्रें स्रगत्व चर्वजनो दधि घृत युज एष दाज्यैं ॥ २६ ॥ खीर के २ देव पितर अन्नके ये के का यज्ञपात्र के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ पायसे तो परमान्न जुग देव अन्न तो हव्य ॥ पितर अन्न तो कव्य अथपात्र स्रुवां दिहि भव्य ॥ २७ ॥ स्रुव भेद के ४ यज्ञपशु को १ नाम । दोहा ॥ ध्रुवां जुहू उपभृत स्रुव रु स्रुच हू इक इक जानि ॥ उपाकृत तु पशु मंत्रि जो मारन हित थित मानि ॥ २८ ॥ यज्ञपशु मारन के ३ मारे पशु के ३ नाम ॥ दोहा ॥ परंपराके तु प्रोक्षण रु प्रामन वधार्थक जोय ॥ उपसंपन्न प्रमीत अरु प्रोक्षित मार्यो सोय ॥ २९ ॥ विप्रो घ हवि । वा सांकल्य के २ होमी वस्तु को १ यज्ञांत स्नान को १ पज्ञयोग्य वस्तु को १ नाम ॥ दोहा ॥ हविसान्नाय्यो हि दध घृत सो तो होमी चीज ॥ अवभृथ तौ दीक्षांत इक यज्ञियैं मख की चीज ॥ ३० ॥ यज्ञ कर्म को १ कूपादि कर्म को १ यज्ञशेष को १ श्राद्ध शेष को १ नाम ॥ दोहा ॥ इष्ट तु मख मे कर्म इक पूर्त कुवादि अशेष ॥ यज्ञशेष तो अमृत इक विघस तु भोजन शेष ॥ ३१ ॥ दान के १३ मरे के लियें दान को १ नाम दोहा ॥ त्याग विहापति वितरण रु अंहति स्पर्शन दान ॥ उत्सर्जन रु विसर्जन सु विश्राणन रु सुजान ॥ ३२ ॥ प्रतिपादन अपवर्जन रु प्रादेशन दश तीन ॥ जुत निर्वपण हि मृत हित तु और्द्ध

देहिक हि वीन॥ ३३॥ पित्रदान के २। श्राद्धको १। मासिक वा। अमावस्याके श्राद्धको १। श्राद्धकाल विशेष को १ नाम॥ दोहा॥ पित्रदान स्तुनिवापहीशास्त्रकर्मजु त.श्राद्ध॥ अन्वाहार्यतुमासिकहि.कुतपतुकालजुश्राद्ध॥ ३४॥ श्राद्धमै ब्राह्मणभक्तिके २। धर्मादिके खोजने के २। विनयके २। नाम। दोहा॥ परीष्टितोपर्येषणाँ अन्वेषणाँ रु.सोय॥ गवेषणाँ ही.सनिसुतौ अध्येषणाँ हि होय॥ ३५॥ मागने के ४। पूजार्थ जलको १। पांव धोने के अर्थ जलको १। नाम। दोहा॥ चारिहि.याज्ञा अर्थना याचना रु.अभिशस्ति॥ अर्घ्य सुतौ अर्घार्थ जल.पाद्य पदार्थहि अस्ति॥ ३६॥ अतिथिके निमित्त कर्मको १। अतिथि के अर्थ साधु होने को १। महमान। वा। पाहुना के ४। नाम॥ दोहा॥ आतिथ्यतु हित आतिथ्यके आतिथेयँ तहंसाधु॥ आवेशिक आगंतु अरु.अतिथि गृहागत साधु॥ ३७॥ अभ्यागत के २। ताजीम के २। पूजा के ६। उपासना के ५ नाम। दोहा॥ प्राघूर्णिक प्राघुणक अथ.गौरव अभ्युत्थानं॥ अर्चा अपचिति सपर्या अरु अर्हणाँ सुजान॥ ३८॥ नमस्या रु पूजा हि वरिवस्या शुश्रूषा रु॥ परिचर्या रु.उपासना पंच उपासना चारु॥ ३९॥ जाने के ५। ध्यानी। वा। मौनी को १ नाम॥ दोहा॥ अटा तु अट्या पर्यटन व्रज्या डोलवँ होय॥ चर्या इक ध्यानादिके सीखन कौं यीति सोय॥ ४०॥ आत्म

अन के २ चुप रहने को १ अनुक्रम के ४ नाम ॥ दोहा ॥
उपरमी भी आचमनै भैनै अभाषण गाय ॥ जु आनुपूर्वी अ
हरे सु परि पाटी पर्याय ॥ ४१ ॥ अतिक्रम को । पर्यय के २ उ
पक्रम आदि प्रारंभ के २ चोपदायण आदि उपवास के २
प्रकृति पुरुष के भेद जानने वा अन्य विचार के भी २
नाम ॥ दोहा ॥ उपात्यय तु अतिपात जु बलि धर्म तु व्रत ढंग
नेक ॥ औपवस्त उपवास जु गण पृथगात्मता विवेक ॥ ४२ ॥ सदा
चार और वेद ध्यान फल के २ वृद्ध पाठ के आदि में श्रो
त्रिय पाठ की अंजलि को १ नाम ॥ दोहा ॥ ब्रह्माध्ययन अ
नु स्मृति पत्र लवर्च स हि जानि ॥ पाठ विषे अंजलि सु तो ब्रह्मां
जलि हि तरवानि ॥ ४३ ॥ अंजलि से वा । पढने के समय
मुख से निकलने वाले जल की बूंद को १ ध्यान और योग को
आसन को १ नाम ॥ दोहा ॥ पाठ करत जल बिंदु सो ब्रह्म बिं
दु इक होय ॥ अथ ध्यान योगासन तु ब्रह्मासन निज जोय ॥
४४ ॥ विधि के ३ मुख्य विधि को १ गौण विधि को १
संस्कार पूर्वक वेद पढने को नाम ॥ दोहा ॥ कल्प तु वि
धि नाम सु मुख्य तो प्रथम कल्प ही जानि ॥ अनुकल्पै तु तासे अ
धम उपाकर्म इक मानि ॥ ४५ ॥ प्रणाम के २ सन्यासी के
५ नाम ॥ दोहा ॥ अभिवादन पाद ग्रहण परिव्राट तो जाय
॥ कर्मन्दी पाराशरी भिक्षु मस्करी होय ॥ ४६ ॥ तपस्वी के ३
मुनि की २ तपस्या के क्लेश सहने वाले को १ नाम

पारिकांक्षी तपस्वी तापस ॥ अथ मुनि देषि ॥ वाचंयम ह्व दांत तौ तपक्के प्रास हलोषि ॥ ५७ ॥ ब्रह्मचारी के २ नैष्ठिकै २ वेदव्रत कौं पूरा कर गुरु की आज्ञा के पाने वाले के २ जितेन्द्रिय के २ नाम ॥ दोहा ॥ जु ब्रह्मचारी सुवर्णी ॥ स्थपितु सत्यव्रत धारि ॥ ह ॥ ५८ ॥ व्रत व या सैं भूमि पर सोने वाले के २ पवित्र के ३ पाखंडी के २ पलाश दंड को १ बांस दंड को १ ऋषि पात्र के २ ऋषि आसन को १ नाम ॥ दोहा ॥ स्थंडिलशायी स्थांडिल हि प्रयत तु पूत पवित्र ॥ सर्व लिंगी पाखंड हि दंड पलाश तु मित्र ॥ ५९ ॥ आषाढ हि अथ वेणु को दंड सुरंभ हि भास ॥ कुंडी सु तो कमंडलु हि वृषी तु आसन तास ॥ ६० ॥ मृग चर्म को १ भिक्षा के समूह को १ वेदाभ्यास के २ यज्ञोपवीत के छूटने के ३ नाम ॥ दोहा ॥ अजिन चर्म कृत्ति भैक्ष तौ भिक्षागन ही जानि ॥ स्वाध्याय तु जप सवन तौ सुत्या अभिषव मानि ॥ ६१ ॥ अघमर्षण को १ अमावस और पूर्णिमा के यज्ञ को १ नाम ॥ दोहा ॥ सर्व पाप हर जाप कौं अघमर्षण पहिचानि ॥ पौर्णमास रव पूर्णिमा दर्श अमा को जानि ॥ ६२ ॥ नित्य कर्म को १ कर्मादिप्रोषक को १ नाम ॥ दोहा ॥ तनु साधन हित नित्य को कर्म सु तो यम होय ॥ नियम तु साधन बाह्य जो नित्य कर्म है सोय ॥ ६३ ॥ बायें कांधे की जनेऊ के २ दहिने कांधे की जनेऊ को १ कंठ मे माला का जनेऊ को १ नाम ॥ दोहा ॥ वाम के

धर्यित नाम जुग॥ यज्ञसूत्र उपवीतैं॥ प्राचीनावीतैं तु दहिन॥ लंवित कंठ विनीतैं॥५४॥ देवतीर्थ १। प्रजापति तीर्थ १। नाम॥ दोहा॥ तीर्थ जु अंगुरी छोर थित॥ देवैं कहावै सोय॥ कायैं तु छिगुनि अनामिका मूल माहि ही होय॥५५॥ पितृतीर्थ के ३। ब्रह्मतीर्थ के २। नाम। दोहा॥ पैत्र्य पैत्र अरु पित्र्य त्रय अंगुठा तर्ज्जनि माहि॥ अथ अंगुष्ठा मूल मैं ब्राह्म ब्राह्मैं जुग आहि॥५६॥ ब्रह्म मैं मिलने के ३। देव मैं मिलने के ३। नाम॥ दोहा॥ ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व अरु तृतिय॥ ब्रह्मसायुज्य॥ देवभूय देवत्व पुनि जानि॥ देवसायुज्य॥५७॥ आचार विशेष को १। संन्यास विशेष को १। नष्टाग्नि के २। दंभ सैं ध्यानादि करने को १। नाम॥ दोहा॥ कृच्छ्र तु संतपनादि ही मार्यैं तु अनशन नेम॥ वीरहा तु नष्टाग्नि हीं कुहना सुविधि अप्रेम॥५८॥ संस्कार हीन के २। वेदाभ्यास रहित के २। बहुरूपिया। वा। ठग के २। नाम॥ दोहा॥ जु संस्कार हीन तु॥ द्वितिय॥ व्रात्य निराकृत सो तु॥ अस्वाध्याय हि लिंगवृति धर्मध्वजी द्वि होतु॥५९॥ ब्रह्मचर्य हीन के २। सूर्यास्त और सूर्योदय मैं सोने वाले को १। नाम। दोहा॥ अवकीर्णी तु क्षतव्रत हि अभिनिर्मुक्त तु भानु॥ अस्त होत जिहिं सोवतैं उदित॥ अभ्युदित मानु॥६०॥ प्रथम छोटे भाई व्याहे गये ता को १। कंवारा बडा भाई को १। नाम॥ दोहा॥ ज्येष्ठ कवारो होय अरु अनुज विवाहित सोय॥ परिवेत्ता परिवित्ति तो जेठो भ्रात सु होय॥६१॥

विवाह के ५। मैथुन के ६। त्रिवर्ग को १। चतुर्वर्ग को १ ना म ॥ दोहा ॥ पाणिपीडन तु उपयम रु उद्वाह रु उप याम ॥ परि णायँ मैथुन तौ विषयं ग्राम्य धर्म रत नाम ॥ ६२ ॥ निधुवन कहे अव वायँ अथ धर्म अर्थ अरु काम ॥ सो त्रिवर्ग अथ मोक्ष जुत चतुर्व ग्र्क नाम ॥ ६३ ॥ धर्मादि सबल होंय ताको। बराती वा। वर के समवयन को १। नाम ॥ दोहा ॥ सबल होंय धर्मादि तै। च तुर्भद्र इक नाम ॥ दूलह के प्रिय मित्र सो जन्यक हाबल जान ॥ ६४ ॥

इति ब्रह्मतरंगः समाप्तः

अथ क्षत्रिय तरंग लिख्यते ॥ मूर्द्धाभिषिक्त वा रजपूत के ४। राजा के ॥ नाम। दोहा ॥ बाहुज तौ राजन्य पुनि क्षत्रियं चवथ विराट ॥ न्रप तौ क्ष्मा भ्रत पार्थिव रु भूप महीक्षित राट ॥ १ ॥ महाराज को १। महाराजाधिराज के २ नाम ॥ दोहा ॥ निकट भूप जिहिं वश रहे वहे अधीश्वर हो य ॥ सार्वभौम सब भूमि पति रु चक्र वर्त्ती होय ॥ २ ॥ छोटा राज को १। राजसूय यज्ञ को कर्त्ता द्वादश मंडल को ईश और सब राजन को शिक्षक हो उसको १ नाम ॥ दोहा ॥ मंडले श्वरं तु आन न्रप सम्राट तुम रखकार ॥ राजसूय न्रप शिक्षक रु बहु मंडल भर्त्तार ॥ ३ ॥ न्रप समूह को १। क्षात्रियन का स मूह को १। मंत्री के ३। मंत्री सें छोटे अन्य मुसाहिबों को १ नाम ॥ दोहा ॥ न्रप गण राजक क्षत्रिय गण राजन्यक हिनि दान ॥ अमात्य मंत्री धीसचिवं कर्म साचिव सब आन ॥ ४ ॥

मुख्य मंत्री के २। पुरोहित के २। न्यायाधीश के ३। नाम दोहा ॥ महामात्र तु प्रधान जुग पुरोहित सु पुरोध ॥ प्राड्विवाक तौ नालवित अक्षदर्शक हु सोध ॥ ५ ॥ चोबदार के ५। खवारे के २। नाम ॥ दोहा ॥ द्वास्थ तु द्वाःस्थित दर्शक रु द्वारपाल प्रतिहार ॥ अनीकस्थ तौ दूसरो रक्षिवर्ग निर्धार ॥ ६ ॥ अधिकारी के २। एक ग्राम के ठेके के दार के २। बहुत ग्रामों के ठेकेदार को १। सोने का अधिकारी के २। नाम दोहा ॥ अधिकृत तो अध्यक्ष ही स्यायुक्त ग्रामाध्यक्ष ॥ गोप तु अधिकृत बहुत को भौरिक कनकाध्यक्ष ॥ ७ ॥ खजानची के २। रनवासाधिकारी के २। रनवास का सेवक के ४। नादर के २। सेवक के ३। नाम ॥ दोहा ॥ नैष्किक रूपाध्यक्ष अथ अंतर्वंशिक सत्य ॥ अंतःपुर अधिकृत अथो सौविदल्ल स्थापत्य ॥ ८ ॥ चारिहि सो विद कंचुकी शंढ वर्षवर दास ॥ अनुजीवी तौ सेवकरु अर्थी तीसर होय ॥ ९ ॥ परोसी राजा को १। बसे सैं अन्य को १। दोनों सैं भिन्न को १। नाम। दोहा ॥ सीव मिलत न्रप शत्रु है मित्र तु तिन तैं पार ॥ उदासीन तिन तैं परे परस्पर हि व्यवहार ॥ १० ॥ अपने राज्य सैं पीछे का के २। वैरी के १९। नाम। दोहा ॥ पार्ष्णिग्राह तु पृष्ठ चिन्ह रिपु तो वैरी जानि ॥ दुर्हृद द्वेषण द्विषत् अरि अहित अमित्र विचानि ॥ ११ ॥ शात्रव प्रत्यनिक सपत्न हि द् प्रत्यर्थी अभिघाति ॥ पर आततायी विपक्ष पुनि परिपंथी रु अराति ॥ १२ ॥ सनबंध

के३। मित्रके ३। मित्रताके ३। नाम। दोहा॥ सवयतु स्नि ग्धं वयस्यें त्रय सखा तु सुहृद रु मित्र॥ सख्यं तु साप्तपदीन अरु मैत्री तीन पवित्र॥१३॥ अनुकूल्य के २। हलकारा के ७। नाम दोहा॥ अनुवर्त्तन अनुरोध हैं अथ भाशिधि स्पश चर चार॥ य थार्हवर्ण अ पसर्प पुनि गूढ पुरुष निर्धार॥१४॥ विश्वासी के २। ज्योतिषी के ८। शास्त्री के ३। मोदी के २। नाम। दोहा॥ आप्त सु तौ प्रत्यायित अथ सांवत्सर दैवज्ञ॥ ज्ञानी गणक रु ज्योतिषक कार्त्तान्तिक रु हतज्ञ॥१५॥ मौहूर्त्तिक मौहूर्त अ रु अथो ज्ञात सिद्धान्त॥ तांत्रिक हू सन्त्री सुतौ गृह पति जुत जुग प्रांत॥१६॥ लेखक के ३। अक्षर के ५। नाम। दोहा॥ लिपिकार तु अक्षर चण रु अक्षरचंचु वखानि॥ अक्षर संस्थान तु लिखित लिपि लिबि लिपी पिछानि॥१७॥ दूत के २। दूतपन के २। पथिक के ५। नाम। दोहा॥ दूत सु तौ संदेशहर दूत्य दूतपन गन्य॥ अध्वनीन तौ अध्वग रु पांथ पथिक अध्वन्य॥ १८॥ राज्य के अंग के ८। नाम। दोहा॥ स्वामी सुहृद अमात्य बल राष्ट्र दुर्ग अरु कोष॥ ये राज्यांग रु प्रकृति हू नामक हात अ दोष॥१९॥ षड्गुण॥ नाम॥ दोहा॥ पौरश्रेणी आठ मो है रा ज्यांग सुजान॥ संधि रु विग्रह आसन रु द्वैध रु आश्रय यान॥ २०॥ शक्तियों के ३। नीतिशास्त्र कात्रिवर्ग को १। नाम। दोहा॥ प्रभावज रु उत्साहज रु मंत्रज शक्ति त्रिमानि॥ स्व स्थान अरु वृद्धि कौं नीति त्रिवर्ग वखानि॥२१॥ प्रमाद के २।

उपायके ७। नाम। दोहा॥ कोश दंड भव तेज सो दोय प्रताप प्रभावै॥ साम दान अरु भेद चव दंड उपाय बतावै॥ २२॥ दंड के २। मिलापके २। भेदके २। मंत्री आदिके कार्यका देखवा को १। नाम॥ दोहा॥ दंड तु साहस दम त्रय हि साम तु सांत्व उदार॥ भेद सु तौ उपजाप अथ उपधा काम निहार॥ २३॥ दो जनों की सलाह को १। एकान्त के ७। नाम। दोहा॥ अथ उपह्वर तु जुग स्थल हि विजन विविक्त कहात॥ निःशलाक रहस पुनि छन्न उपांशु हि सात॥ २४॥ एकान्त की बात वा। कर्म को १। विश्वास के २। अन्याय को। नाम। दो॰ रहसि भव सु रहस्य इक विस्रंभ तु विश्वास॥ यथा उचित तैं भ्रंश जो भ्रेष एक ही भास॥ २५॥ न्यायके ५। न्यायसैं जो वस्तु लीजावै उसके ५। नाम॥ दोहा॥ देशरूप अभ्रेष पंच कल्प तमंजस न्याय॥ भजमान तु अभिनीत पुनि न्य औपयिक न्याय्य॥ २६॥ युक्त ऽयुक्त परीक्षा के २। हुक्म के ७। नाम॥ दोहा॥ संप्रधारणा समर्थन अववाद तु निर्देश॥ आज्ञा आसन शिष्टि पुनि सात हि शास्ति निदेश॥ २७॥ मर्यादा के ४। अपराध। वा। आगसके ३। बांधने के २। नाम। दोहा॥ मर्यादा संस्था रु स्थिति चव धारणा नाम॥ आगस तु अपराध त्रय बंधन तौ उद्दान॥ २८॥ दूने दंड को १। राजभाग के ३। जयाति। वा। कौडी को १। नाम॥ दोहा॥ द्विगुणा दंड द्विपाद्य कर भागधेय बलि तीन॥ घट्ट आदिक मे

देय जो शुल्क एकही चीन॥२९॥ नजरिके २। कन्यादान मैं
और भाईवन्धु आदिके देने की वस्तु के २। नाम॥दोहा॥
प्रादेप्रानं तु उपायनं रुउपग्राह्य उपहार॥ प्राभ्टतं उपदा हरा
तो द्वितिय सु दाय प्रकार॥३०॥ वर्त्तमान काल को १ आने
वाला काल को १। तुरंत फलको १। आनेवाला फलको १
नाम। दोहा॥ तत्कालस्तु तदात्वं अथ आयाति उत्तर कालं
सांद्दष्टिकं तो सद्यफलं उदर्कं उत्तर कालं॥३१॥ अद्दष्टभय
१ द्दष्टभय १ अपने सहायक से भयको १। नाम। दोहा
वान्हि जलादि अद्दष्टभय स्वपर चक्रज तु द्दष्ट॥ निजपक्ष
जभय न्रपन कौं सो तो अहिभय इष्ट॥३२॥ कानून चला
ने को २। चंवरके २। राजगद्दी के २। स्वर्णनिर्मित को १
नाम। दोहा॥ प्रक्रिया तु अधिकार अथ प्रकीर्णकं चामरं
नेम॥ भद्रासनं तु न्रपासनं हि सिंहासनं कृत हेम॥३३॥ छ
तुरीके २ राजा की छत्तुरी के २। पूर्ण कलश के ३। नाम।
दोहा॥ आतपत्रं तो छत्रं जु न्रप लक्ष्म तु न्रप छत्रं॥ भद्रकुं
भ तो पूर्णघट पूर्णकुंभ हु अत्र॥३४॥ सोनो की झा
रीके २। नाम॥ दोहा॥ भ्रंगार कनकालुका कनकप
त्र यह जानि॥ कवि गुलाव झारी जगत नाहर नाम वखानि
३५॥ डेराके २। गत्त के २। सेनांग के ४। नाम। दोहा॥
शिविर निवेशं हि सज्जनं तु पररक्षण जुगसंग॥ हस्ती हय
रथ पैदल हय ये चारि तु सेनांग॥३६॥ हाथी के १५। पृथप्र

के २। मदांध हाथीके २। नाम। दोहा॥ दंतावल गज द्वि
रद द्विप वारण दंती जानि॥ स्तंबेरम हस्ती करी इभ रु मतंग
जं मानि॥ ३७॥ पद्मी नाग अनेकप रु कुंजर यूथप सोवु
यूथनाथ ही मदकल तु द्वितिय मदोत्कट हेतु॥ ३८॥ हाथी
के बच्चेके १। मदस्रवी हाथीके ३। विना मदके हाथी
के २। हाथीके झुंडके २ नाम। दोहा॥ कलभ तु करिशा
वक हि अथ गर्जित मत्त प्रभिन्न॥ उद्धांत तु निर्मद हि अप
हास्तिक गजता गन्न॥ ३९॥ हाथिनीके ३। हाथीके गाले
के २। मदके २। सूंडसैं निकल्या जलके २। हाथीके सि
रके मांसपिंडको १ नाम। दोहा॥ वशा तु करिणी धेनु
का गंड तु कट मद दान॥ करशीकर तो वमथु अथ कुंभ पिं
ड शिर थान॥ ४०॥ कुंभ मध्यको १। ललाटको १। नेत्रगो
लकके २। देखवाको १ नाम। दोहा॥ कुंभन के विच
बिन्दु इक॥ अवग्रह स्तु ललार॥ आक्षि कूटक तु ईषिका
निर्याण स्तु निहार॥ ४१॥ कानकी जडको १। ललाटके
अधोभागको १। दांतोंके मध्यको २। कंधाको १ नाम
दोहा॥ कर्णमूल तो चूलिका वाहित्थ तु कुंभाध॥ प्रातिभा
गं तु वाहित्थतर आसन्न स्कंध अवाध॥ ४२॥ बूंदसमू
हको १। बगलको १। आगाके भागको १ नाम। दोहा॥
बिन्दु जालक तु पक्ष हि पार्श्वभाग तो जोय॥ पक्ष भाग ही
अपरो दंत भाग गज जोय॥ ४३॥ जंघादि आगेको १। जंघ

दिपीठको १ हांकने की लकरी के नाम ॥ दोहा ॥ ग
जंघादिक देश को पूर्व भाग तो गात्र ॥ अवरं तु पिछले भ
गतिहिं तो नं तु रेणु की मात्र ॥ ४४ ॥ जंजीर के ३ । खूंटा को १
आंकुस के २ । कमरि बांधने की रस्सी के ३ नाम । दो
हा ॥ निगड तु अंदुक शृंखल हि बंध थंभ आलान ॥ अंकु
श सृणी अथ वरत्र चूषा कक्ष्या नाम ॥ ४५ ॥ तय्यार करने के
२ । गद्दी । वा । झूल के ५ । लडाई के अयोग्य हाथी औ
र घोडा को १ नाम ॥ दोहा ॥ दोय कल्पना सज्जना परि
स्तोम कुथ चीन ॥ वर्ण प्रवेणी आस्तरण वीत तु गज हय ही
न ॥ ४६ ॥ हाथी बांधने के स्थान के ३ । घोडा मात्र को
१ ३ । कुलीन घोडा के । नाम । दोहा ॥ वारी तो गज बं
धनी गजशाला हू होय ॥ घोटक वीति तुरंग हय अर्वा वाजी स
य ॥ ४७ ॥ सप्ति वाह सैंधव तुरग अश्व तुरंगम वाजि ॥ अरु
गंधर्व कुलीन तो आजानेय हि साजि ॥ ४८ ॥ सीखे घो
डा को १ । घोडान के भेद के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ शिक्षि
त चाल विनीत अथ वानायुज वाल्हीक ॥ पारसीक कां
बोज ये देश जात दयनीक ॥ ४९ ॥ अश्वमेध यज्ञ यो
ग्य को १ । अधिक वेग वाले को १ । लद्दुवा के २ । उ
जला को १ । रथ में चलने वाले को १ ॥ नाम ॥ दोहा ॥
अश्वमेधलायक तु ययु जवन जवाधिक जोय ॥ स्थौरि
पृष्ठ्य हि कर्क सित रथ्य तु रथ हय होय ॥ ५० ॥ वंकुरा को

१ घोडी के ३। घोडीन के समूह को १। घोडे की एकदिन की मंजिल को १ नाम॥ दोहा॥ बाल किशोर हिजु, वडवा वामी अश्वा तीन॥ तिहिं गण वाडव, हयमगतु इकदिनको अध्वीनं॥५१॥ घोडा के मध्य भाग को १। हींसने के ३। घोडा के गले की संधि को १। घोडान के समूह के २ नाम॥ दोहा॥ कक्ष्यं तु हयको मध्य वट हेषा ह्रेषा चीनं॥ गलोद्देशतु निगालं हय गण तु आश्वं आश्वीनं॥५२॥ घोडों की गति के ५। घोडा की नाक को १ नाम॥ दोहा॥ आस्कंदित धौरितकं प्लुत रेचित वल्गित आनि॥ प्लुत हू गति ये पांच अश्व, घोणा प्रोथ बखानि॥५३॥ लगाम के २। सुम्म के २। पूंछ के ३। बालयुक्त पूंछ के २। नाम॥ दोहा॥ खलीन कविका खुरं तु शफ पुच्छ तु संलांगूलं, वाल हस्त तो वालधि सुकेश सहित लांगूल॥५४॥ लोटने के २। लडाई के रथ के ३। रथ विशेष को नाम॥ दोहा॥ उपावर्त्त तो लुठित ही, रथं तु शतांग सुजान॥ स्यंदन येत्रय जुद्ध रथ पुष्परथं तु रथ आन॥५५॥ जनाने रथ के ३। गाडा। वा। छकडा के २। गाडी के २। पालकी के २। नाम॥ दोहा॥ कर्णीरथं प्रवहण हय न शकट तु अनसहिं आदि गंत्री कंबलि वाह्यकौ शिबिका याप्य यानादि॥५६॥ डोली। वा। हिंडोला के २। वाघ चर्म परदा जुत रथ को २। कुछ सपेद और पीले कंबल के परदा सें जुत रथ को १ नाम॥ दोहा॥ डोलप्रेखांद्वैप जो वैयाघ्र हि त्व वान॥

आहृतकंबल पांडु सैं पांडुकंबली नाम ॥५७॥ कंबलयुतको १ वस्त्रयुतको १ रथसमूहके २ धुरीके २ नाम ॥ दोहा ॥ कंबल आहृत कांबलौ हि वास्त्रौं तु वसन हि लीन ॥ रथ्यो रथकट्यों गरा हि धूं स्तु यनमुखैं चीन ॥ ५८ ॥ तांगा । वा रथके अवयवमात्रके २ पहियाके २ पुठीके २ नांह के नाम ॥ दोहा ॥ अपस्कर स्तु रथांग ही चक्र रथांगैं पिछा नि ॥ नेमि तु प्रधि तिहिं अन्त ही नाभि पिंडिका जानि ॥ ५९ ॥ कुलावाके २ लोहके परदाके २ जूडाके काठके २ नाम ॥ दोहा ॥ जुअस्याग्र कालकै सु आरीं वरूथ स्तु रथगु प्ति ॥ कूवर स्तु तो युगंधर हि दो देखि असुप्ति ॥ ६० ॥ रथके नीचे के काष्टको १ जूड़ाको १ वाहनके ५ नाम ॥ दोहा ॥ अनुकर्ष तु तरकाष्ठ ही प्रसंग युग अन्य ॥ यानं तु वाहन मुख्य पुनि धोरणपत्रं हि मन्य ॥ ६१ ॥ कहारादि वाहनोंको १ महावतके ४ नाम ॥ दोहा ॥ काहारादि वैनीतकं हि ह स्त्यारोह तु जोय ॥ निषादी रु आधोरण सु च्चवथ हस्तिपकं होय ॥ ६२ ॥ रथवानके ८ स्यंदनारोह वा रथमैं चढि के लडने वालेको १ नाम ॥ दोहा ॥ क्षत्ता यंता प्राजिता द क्षरास्य सवेष्ट ॥ सूत नियंता सारथि हि रथी तु रथ थित इष्ट ॥ ६३ ॥ सवारके २ लडने वालेके ३ गस्त वालेके २ फोजमै मिलेके २ नाम ॥ दोहा ॥ सादीं अश्वारो हैं अथ भटत्तो योद्धा योध ॥ सेनारक्षक सैनिकं हि सैन्य तु सैनिक श

ष ॥ ६४ ॥ हज़ार सिपाही के मालिक के २ । दंडनाय
क के २ । फ़ौज के मालिक के २ नाम ॥ दोहा ॥ सहस्री
तु साहस्री जु गपरिच्छर तौ परिधिस्थौ ॥ सेनानी तौ वाहिनीपति
ही जु गजुमास्त्र स्य ॥ ६५ ॥ बखतर के २ । कमरिपट्टी के २
टोपके ३ । नाम ॥ दोहा ॥ वार वाण कंचुकौं अधो सारसनं
तु अधिकांगौं ॥ शीर्षराये तु शीर्षक अपर । त्वतिय । शिरस्त्रै प्रसं
ग ॥ ६६ ॥ कवच के ७ । कंचुक आदि पहिने हुये के ४ ।
सन्नादिसैं कवच धारण किये के ४ । कवच समूह को १
नाम ॥ दोहा ॥ वर्म उरच्छद कंकटक जागर दंशन तत्र ॥ क
वचं तनुत्रौं पिनद्ध तौ आमुक्त रु प्रतिमुक्त ॥ ६७ ॥ अपिनद्ध ह
सन्नद्ध तौ वर्मित दंशित रूप्त ॥ व्यूढकंकट हि ता सु गण तौ
का वर्मिकौ हि भज्ज ॥ ६८ ॥ पैदल के ७ । प्यादों के समूह
को १ नाम ॥ दोहा ॥ पत्ति तु पदग पदातिक रु पादिक रु प
द पदाजि ॥ अरु पदाति पादात तौ पत्ति संघात हि साजि ॥
६९ ॥ शस्त्रजीवी के ३ । अच्छे तीरन्दाज़ के ३ । नाम ॥
दोहा ॥ कांडस्पृष्ट तौ आयुधिक अयुधीय न्रुपशास्त्र ॥ सु प्रयोग
विशिख तु अपर हात पुंख रु कृतहस्त ॥ ७० ॥ निशाने से ती
र चूकि जाय उसको १ । निष्फली वा । धनुर्द्धर के ४ । ना
म ॥ दोहा ॥ इक अपराद्ध पृषत्क सो चूक्यौ तीर निशान ॥
धनुष्मान धानुष्क पुनि अस्त्री धन्वी नाम ॥ ७१ ॥ केवल तल
वार धारी के २ । बरछी वाले के २ । लाठी वाले के । नाम ॥

दोहा ॥ कांडवान् कांडीर अथ शक्ति हेतिके सुजोय ॥ शाक्तीकंह याष्टीक तो यष्टि हेतिक हि होय ॥ ७२ ॥ फरसा वाले को १ तलवार वाले के २ सांग वाले को १ भाला वाले को १ ढलैत के २ नाम ॥ दोहा ॥ पारश्वधिक तु परसुधर नैस्त्रिंशिक असिपाणि ॥ प्रासिक कौंतिक एक इक चर्मी तु फलक पाणि ॥ ७३ ॥ निशान वाला के २ सहायक के ४ अगुवा के ८ नाम ॥ दोहा ॥ पताकी तु वैजयंतिक अनुचर सो तु सुहाय ॥ अनुप्लव रु अभिसर अथो एष पुरोग गनाय ॥ ७४ ॥ अग्रेसर अग्रतःसर सोय पुरस्सर जोय ॥ रु पुरोगामी अग्रसर अठम पुरोगम होय ॥ ७५ ॥ धीरे धीरे चलने वाले के २ जल्दी चलने वाले के २ हलकारा के २ नाम ॥ दोहा ॥ जु मंदगामी मंथर सु अतिजव तो जंघाल ॥ जांघिक तो जंघाकरिक सुगजुग नाम रसाल ॥ ७६ ॥ जल्दीमात्र के ६ जीतने शक्य को १ जीतने योग्य को १ नाम ॥ दोहा ॥ वेगी प्रजवी जवन जव त्वरित तरस्वी ज्ञेय ॥ जीति शक्य तो जय्य ही जीति जोग्य तो जेय ॥ ७७ ॥ जीतने वाले के ३ शत्रु के सन्मुख लडने कों जाने वाले के ३ नाम ॥ दोहा ॥ जैत्र जु जेता ही अथो तीन ३ अभ्यमित्रीण ॥ और अभ्यमित्रीय पुनि अभ्यमित्र्य परवीण ॥ ७८ ॥ पहलवान के २ बडी छाती वाले के २ रथ वाले के ४ यथेष्ट गमन शील के २ अति गमन शील को १ जयन शील के ३ बहादर

के ३ नाम ॥ दोहा ॥ ऊर्जस्वी ऊर्जस्वलै हि उरसिले तु उरस्वान ॥ रथ
रथिक रथिन रु रथिरै अनुकामीन तु आन ॥ ७९ ॥ कामंगामी नुग
अयो अत्यंतीनै हि शांत ॥ जेता जित्वर जिष्णु त्रय शूर वीर वि
क्रांत ॥ ८० ॥ रणा कुशल को ९ । फौजके ११ । व्यूहके २ ना
म ॥ दोहा ॥ सांयुगीनै रणसाधु अथ पृतना चमू अनीक ॥
सेना ध्वजिनी वाहिनी बल अनीकिनी नीक ॥ ८१ ॥ सैन्य रु च
क्र वरूथिनी व्यूह तु बला विन्यासै ॥ व्यूह भेद तो जुङमै दंड
दिक बहुभास ॥ ८२ ॥ व्यूहके पीछेके २ । फौजके पीछेके
३ नाम ॥ दोहा ॥ व्यूह पार्ष्णी तो दूसरो प्रत्यासार विचारि ॥ से
न्यपृष्ठ तो प्रतिग्रह त्रितिय परिग्रह धारि ॥ ८३ ॥ फौजकी सं
ज्ञा विशेषके नाम ॥ दोहा ॥ इक इभ इक रथ अश्व त्रय पै
दल पंच सु पत्ति ॥ पत्ति तीन सेना मुखै हि सो त्रय गुल्म हि ध
त्ति ॥ ८३ ॥ गुल्म तीन गण गण त्रय तु नाम वाहिनी जानि ॥
सो त्रिगुणित पृतना यहू त्रिगुणित चमू बखानि ॥ ८४ ॥ तीन
चमू तु अनीकिनी त्रय अनीकिनी सोय ॥ दश अनीकिनी सो त्र
यंतु अक्षौहिणी हि होय ॥ ८५ ॥ अथ अक्षौहिणी संख्या छप्प
य । गज इक्कीस हजार आठसै सत्तर जानहु ॥ रथहु इक्कीस ह
जार आठसै सत्तर मानहु ॥ सैंधव पैंसठ सहस्र छसै दश रथ
हु पत जिय जानि ॥ पत्ति इक लख नौ सहस तीन सै पंचाश हि आनि ॥
सुगलाख अठारह सहस अर होत सात सै जोर लहि ॥ यौं कवि
गुलाब अक्षौहिणी संख्या भिन्न रु मिलित कहि ॥ ८६ ॥ सम्पति

के४। विपति के ३। हथियार के ४। धनुष के ७ नाम। दोहा
श्री तौ लक्ष्मी संपदं रु सम्पत्तिं हु गनि चारि॥ आपद दिपद वि
पत्तिं अथ आयुधं प्रहरणं धारि॥ ८७॥ अस्त्रं शस्त्रं हु धनुषं तौ
धन्वं शरासनं चाप॥ कोदंडं रु इष्वासं पुनि कार्मुकं सप्तम थ्या
प॥ ८८॥ राजा कर्ण धनुष को १। अर्जुन के धनुष के २।
धनुष के किनारे के २। नाम॥ दोहा॥ कालपृष्ठं धनु कर्ण
को, अर्जुन को गांडीवं॥ गांडिवं हू आटनी सुतौ, कोटिं अंतध
नुसींव॥ ८९॥ दास्तान। बिशेष के २। धन्वा के मध्य को
१। धनुष के चिल्ला के नाम॥ दोहा॥ गोधां तलं ज्याघात
को वारण॥ लस्तकं सोतु॥ धनुर्मध्य॥ मौर्वी तु ज्यां शिंजिनी रु
गुणं होत॥ ९०॥ धनुद्धर के आसन भेद के ५। नाम॥ दो
हा॥ समपदं अरु वैशाखं पुनि मंडलं प्रत्यालीढं॥ धनुधारिन
के पगन के थान सहित, आलीढं॥ ९१॥ निशाना के ३। वाण
सीखने के २। तीर के १३। लोहिया तीर के २। नाम॥ दोहा
लक्ष्यं शरव्यं रु लक्षं त्रय शर अभ्यासं तु, ओप॥ उपासनं हु
वाण तु विशिखं मार्गण पत्री रोप॥ ९२॥ खग कलंबं इषु
पृषत्कं रु, शरं रु, शिलीमुखं वान्ह॥ अशुग और अजिह्मगं
हि प्रक्ष्वेडन नाराचं॥ ९३॥ फोंक के २। चलाये तीर के
जहरी वाण के ३। तरकस के ६। तरवारि के ९। कवज
को १। नाम दोहा॥ पक्ष वाजं जु ग, चलित शर तौ निरस्तं
डक धीर॥ लिप्तकं दिग्धं विषाक्तं हीं उपासंग तू णीरं॥ ९४॥

तूणी इषुधिनि वंगपरतत्रों हुं असि तु कृपाण ॥ मण्डलाग्र
[illegible] करवाल ऋष्टि खड्ग सुजाण ॥ ९५ ॥ चन्द्रहास करपाल अरु करवा
लं हु नव जानि ॥ खड्गादिक की मूंठि नौ । त्सरु एक ही मानि ॥
९६ ॥ परतला को १ ढाल के ३ । हथकडा को १ मु
दगर के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ तिहिं बंधन तो मेखलौं फल
क चर्म फलौं तीन ॥ तिहिं मुठि संग्राहहि । घन तु मुद्गर द्रु
घण प्रवीन ॥ ९७ ॥ खांडा के २ । गोफण के २ । लोहथी
के २ । फरसा । वा । कुल्हारी के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ ईली
तो करवालिको भिंदिपाल स्त्रग चीन ॥ परिघ तु परिघात
नें परशु स्वधिति परश्वध तीन ॥ ९८ ॥ छुरी के ४ । फल के
२ । गुर्ज के २ । सांग को १ । भाला को १ । खड्गादि की नों
क के ४ । फौज की तयारी । वा । जमाव के ३ । नाम ॥ दो
हा ॥ असि पुत्री असिधेनुका शस्त्री छुरिका भास ॥ शल्य तु
शंकु हि तोमर तु सर्वला हि । अथ । प्रास ॥ ९९ ॥ कुंत हु कोण
तु पालि अरु अश्रि कोटि मति ओर्ध ॥ जु सर्वाभिसार तु सर्व स
न्नहनं रु सर्वौघ ॥ १०० ॥ शास्त्र पूजन के । शत्रु पर चढाई
के [illegible] ॥ दोहा ॥ जु लोहाभिसार सु विधा पूजन शस्त्र
हि जोय ॥ अरि पै सेना गमन सतु अभिषेण नें द्रुक होय ॥
१०१ ॥ जाना के ४ । फौज के पै लाव के २ । चली फौज के
२ । नाम ॥ दोहा ॥ प्रस्थान तु यात्रा गमन व्रज्या अभिनि
र्याण ॥ असार तु प्रसरण जु आहि । चलित प्रचक्र हि जाण ॥ १०२

निडर होकर शत्रुन के सन्मुख जाने को १ स्तुति कर के प्रातःकाल राजा के जगाने वालों के २ घरियारी के २ नाम॥ दोहा॥ अभय गमन रण शत्रु पै नाम अति क्रम संाय॥ वैतालिक तो वोधकर चाक्रिक घांटिक होय ॥१०३॥ रावो वा भाट के २ जागा वडवा के २ लडा ई सें जो नहीं भागे ताको १ नाम॥ दोहा॥ वंदी तो स्तु तिपाठक हि मगध तु मागध होय॥ संशप्तक तो शपथक रि जुध अनि अवर्त्ती होय॥१०४॥ धूलि के ४ चूनके २ अकुलाने के २ वैजयंती वा झंडा के ३ नाम॥ दो हा॥ रेणु तु धूलि रु पांशु रज चूर्ण तु क्षोद हि आहि॥ सम्भ्रमि जपिंजल ध्वज तु केतन रु पताका हि॥१०५॥ भयानक रणभूमि को १ हम पहिलैं लडैगे उस लडाई को १ नाम॥ दोहा॥ वीर आशंसन युद्ध की भूमि जु अति भय दा नि॥ हम पहिले हम पहिलयौं अहं पूर्विका जानि॥१०६॥ हम ही पुरुष है ऐसैं कहैं उसको १ हम ही लडैंगे ऐ सैं कहै उस लडाई को १ नाम॥ दोहा॥ इक है आहो पुरुषिका संभावन जो दर्प॥ अहंकार जो परस्पर अहम हमिका सु यर्प॥१०७॥ पराक्रम के १० अति पराक्रम के २ नाम॥ दोहा॥ प्राण द्रविण सह तरस बल शौर्य पर क्रम स्थाम॥ शुष्म मारा विक्रम सु तो अति शक्ति तौ हि नाम ॥१०८॥ रण के परिश्रम निवारणार्थ न खाने पीने को १

लडाई के ३१ बाहुयुद्ध के २ नाम ॥ दोहा ॥ वीरपाणं
मदपान रण भूत भविष्यति माहि ॥ युद्ध जन्य म्रध प्रधन
रणं आयोधन कलि आहि ॥ १०९ ॥ अभिदारण आस्कंदन
रु विग्रह कल ह अनीक ॥ सांपरायिक रु समर रणु धे आजि
रु समिति समीक ॥ ११० ॥ समाघात संस्फोट पुनि संप्रहा
र संग्राम ॥ अभ्यागम अभ्यामर्द संयुग आहव नाम ॥ १११ ॥
संख्य समित समुदाय अरु संयत अभिसंपात ॥ बाहुयुद्ध
तौ नियुद्ध हि दोय नाम विख्यात ॥ ११२ ॥ रणव्याकुलता के
२ वीरों के गर्जन के २ हाथीन की कतार के १ वी
रों के निंदा पूर्वक पुकारने को १ नाम ॥ दोहा ॥ तुमुल
तु रण संकुल हि अथ सिंहनाद क्ष्वेडा हि ॥ घटा तु घटनी कं
दनं तु जोधन कोरव आहि ॥ ११३ ॥ हाथीन के गर्जने को
१ धनुषके शब्द को १ जुझाऊ नगारा के शब्द को १
हठ के ३ नाम ॥ दोहा ॥ करिगर्जित तौ बृंहित हि धनुष
शब्द विस्फार ॥ पटह तु आडंबर हठ तु प्रसभं अरु बलात्कार ॥
११४ ॥ धोखा देने के २ उत्पात के ३ मूर्च्छा के ३ शस्या
दिसंपन्न देशको परचक्र सैं पीडने के २ नाम ॥ दोहा
स्खलित छलं हि उत्पात तौ त्रय उपसर्ग अजन्य ॥ मूर्च्छा क
श्मल मोह है अवमर्द तु पीडनं गन्य ॥ ११५ ॥ धोखे सैं दबाने के
२ जीत । वा । फते के २ वैर मिटाने के ३ भागने के ८
नाम । दोहा ॥ जु है अभ्यवस्कंदनं सु अभ्यासादनं जानि ॥

जयं विजयौ हि वैर शुद्धि तु प्रती कारं पहिचानि ॥११६॥ त्यतियवैर निर्यातनौ हि विरुद्ध द्वंद्व सद्भावं ॥ प्रद्राव रु अपयान अपक्रम रु द्राव संद्रावं ॥११७॥ हारिके २। हारेहुये के २। छिपेहुये के २। नाम ॥ दोहा ॥ पराजय तु रण भंगतौ पराभूत तौ जानि ॥ पराजित हि जु गन ष्टतौ निरोहित हि पहिचानि ॥११८॥ मारबे के ३०। मौत के ६। मुर्दा के ७। चिता के ३। बिना मूंड वाले को १। नाम ॥ दोहा ॥ क्षरण वि श्रारण निवर्हण रु थन प्रमापण जानि ॥ निर्वासन रु परासन रु पिंजन निषूदन मानि ॥११९॥ निर्ग्रंथन रु प्रवासन रु घात निकारण सोय ॥ निस्तर्हण निर्हनन पुनि वध रु अपासन होय ॥१२०॥ परिवर्जन रु निहिंसन सु मारण विशर विचारि ॥ उज्जासन संज्ञपन पुनि विशासन प्रथमन धारि ॥१२१॥ निर्वापण प्रतिघातनं रु उद्वासन उन्माथ ॥ आलंभौ हु म्रत्यु तु प्रलय नाश पंचतौ साथ ॥१२२॥ मरण अंत अत्यय निधन काल धर्म दिष्टान्त ॥ प्रेत प्राप्त पंचत्व म्रत परासु संस्थित शान्त ॥१२३॥ सात परेत प्रमीत अथ चित्या चिति रु चितौ हि ॥ विनाशिर तनु जु क्रिया सहित सो कवंध इक आहि ॥१२४॥ प्रमप्राण के २। निर्जीव शरीर के २। वंधुवा वा। कैदी के ३। जेलखाने को १। नाम ॥ दोहा ॥ पित्त्वन सु तौ प्रमप्राण जु गकुणप तु शव हि सुजान ॥ वंदि उपग्रह प्रग्रह हि कारा वन्धन थान ॥१२५॥ प्राण के २। प्राणी के २। उम्र...

जियाने को १। नाम॥ दोहा॥ असु तु प्राण असु धारणो तु जीव हू जीवित काल॥ सुतो आयुँ जीवतु सतु जीवनौषध हि दाल॥१२६॥

इति क्षत्रियतरंग:

अथ वैश्य तरंग लिख्यते॥ ८॥

बनियाके ४। जीविका के ५। नाम॥ दोहा॥ भूमिस्प्रक ऊरव्य विट् ऊरुज अर्य्य हि ध्यात॥ आजीव तु वार्त्ता अपरव र्त्तमे जीवन वृत्ति॥१॥ वृत्तिभेद के ३। पराधीनी के ३। खेती के २। बजार उठने परके अन्न बीनने के। कसिला के ३। नाम॥ दोहा॥ पाशुपाल्य वाणिज्य कृषि भिन्न वृत्ति त्रय जोय॥ श्ववृत्ति सेवा अन्त कृषि उंछ तु शिल ऋत होय॥२॥ ऋतको १। अनृतको १। बानियई के २। करज के २। व्याज के ४। उत्सवादि मे जो भूषणादि मांगके ले जाय उसको १। नाम॥ दोहा॥ ऋतं जु वस्तु मांगे मिले अनृत अमांगे जानि॥ वाणिक भाव सत्यानृत हि पर्युदंचन तु मानि॥३॥ ऋण हू अर्थ प्रयोग तौ वृद्धि जीविका जोय॥ वृद्ध उद्धार कुसीद अथ याचितक सुड़क होय॥४॥ बादे से दा। बदले सैं मिले उसको १। बोहरा को १। कर्जदार को १। नाम॥ दोहा॥ मिलि वस्तु जो नियम सैं आप मित्यक हि आहि॥ उत्तमर्ण ऋणदापक हि अधमर्ण तु ऋणग्राहि॥५॥ ... डिया के ४। किसान के ४। नाम॥ दोहा॥

कृषीदिकेतुवार्द्धुषिकं चव. वार्द्धुषिं दृद्ध्याजीव ॥ कृषीवलतु कर्षककार्षिकं चतुर्थ क्षेत्राजीव ॥ ६ ॥ व्रीहि होने वाले को १ धान होने वाले को १ जव होने वाले को १ कोटे जो होने वाले को १ नाम दोहा ॥ व्रीहि उपज व्रैहेयं इक शालि उपज. शालेयं ॥ यव्यं यवक्यं रु षाष्टिक्यं सु उपज यवादिक ज्ञेय ॥ ७ ॥ तिल २ उडद २ अलसी २ भांग २ होनेवाले । नाम ॥ दोहा ॥ तिल्यं और तैलीन जुग माष्य दोय माषीन ॥ उम्यं सुतौ औमीन जुग भंग्यं जुगल भांगीन ॥ ८ ॥ अणु के २ । कोद्रू १ मूंग १ गोहू १ चरा १ कचरा १ होने वाले का नाम । दोहा ॥ आणवीन तौ अणव्यं है कौद्रवीण मौद्गीन ॥ गोधूमीन रु चाणा कौ अरु है कालायीन ॥ काकुनि १ । कुरथी २ । होने वाले का । नाम ॥ दोहा ॥ प्रियंगवीन सु और हू कौलत्थीन वखानि ॥ भिन्न भिन्न करि खेलये इत्यादिक पहिचान ॥ ९ ॥ वोकर जुते खेत । १ । हांकनी करने के २ । जुते खेत के ३ । तीन बार जुते खेत के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ उप्तकृष्ट वीजाकृत हि सीत्य तु कृष्ट रु हल्य ॥ त्रिगुणाकृत रु त्टतीयकृत चारि त्रिसीत्य त्रिहल्य ॥ ११ ॥ दो वार जुते खेत के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ द्विगुणाकृत तु द्विहल्य गुनि द्वितियाकृत सु पिछानि ॥ पुनि द्विसीत्य शंबाकृत हु पांच नाम उर आनि ॥ १२ ॥ द्रोणाभर जिसमे वोया जाय और आढक अ

दिजिसे वोयाजाय उसके भिन्न भिन्न ५। नाम॥दोहा
द्रौणिकैं प्रास्थिकैं आढकिकैं कौडविके २ रवारीकैं॥ये द्रोणादि
के वीज नित वोयेखेत हि सीक॥१३॥खेत के ३। खेत गरा के
७। नाम॥दोहा॥ वप्र क्षेत्र केदार त्रय खेत गरा तु केदार्य्यं॥
केदारकैं केदारिकैं २ क्षैत्रैं चारिही आयें॥१४॥ढेला।वा।डग
लके २। मोगरी।वा।मेजके २ पैसाी।वा।चाबुक के ३।
कुदारि।वा।कशी के २ नाम॥दोहा॥लोष्टु लेष्टु ही को
टिशं तु लोष्टभेदनं हि भिन्न॥प्राजनं तोदनं तोत्र त्रय अवदा
रणं तु खनित्रैं॥१५॥हासिया।वा।द्रांतली के २। चूड़ायल
वा।जोत के ३। फाल के ५। नाम॥दोहा॥दात्र लवित्रं हि
योत्रं तौ योक्त्रं त्यतिय आवंधे॥फलं तु निरीषं कूटकं २ फाले
२ क्षायिकें प्रबंध॥१६॥हल के ३। संवल।वा।सैला के २ ह
रिस को १ नाम॥दोहा॥लांगल हल गोदारणं सीरैं हि
प्रन्योंग तु॥युगकीलकैं ईषा सुतो लांगल दंड हि होतु॥१७॥
...रि।हारी के २।मेंढी के २। साठी के।वा।धान्यमात्र के
..जौ के २। नाम॥दोहा॥सीता लांगल पद्धती हि खलद
..लो मेधि॥आशु व्रीहिं पाटलं यवं तु शितश्रू कैं हिमा तेराधि
॥१८॥हरयाजौ के २। मटर के ४।कोदू के २। नाम।दो
हा॥तोक्म हरित यवैं कलाय तु हरेणु खंडिके जानि॥सतीन
कैं ऊ कोद्रव सुतो। कोरदूषपहिचानि॥१९॥मसूर के २।मो
ठ।वा।वन मूंग के ३। सरस्यौं कैं घोली सरस्यों को १

गोहूंके २। कुरथी के २। नाम ॥ दोहा ॥ मंगल्यकं तुमसूरहीं
म पुष्टकं तु त्रय जोय ॥ मपष्ठकं रु वनमुद्ग अथसर्षपं तंतुभ
होय ॥ २० ॥ कदंबकं हसिद्धार्थ तौ सरस्यौं सेतहि भाष ॥ गोधू
मं तु सुमनं हि जुगलयावकं तौ कुल्माषं ॥ २१ ॥ चणा के २।
वां मतिलके ३। राईके ४। ककुनी के। वा। टांगुनी के २।
अलसी के ३। भांग को १। नाम दोहा ॥ चणकं तु हरिमंथ
कं अथो निष्फलैं तिल तिलपेज ॥ तिलपिंजं हु अथ राजिका क्षु
धाभिजनन सतेज ॥ २२ ॥ क्षव रु क्षत्रिका असुरी कंगुप्रियं
गुं हि दोय ॥ क्षुमा उमा अतसीं हि इक तुमा तुलानीं होय ॥ २३ ॥
सींवा को १। टूंडा वा। अन्नकी डाढी को १। वालि के २।
सामान्य धान्य के २। नाम ॥ दोहा ॥ व्रीहि भेद अणु श्रा
स्य को शूक वा तु तौ। किंशारु ॥ श्रास्यमंजरी कणिशं अथ व्रीहि
स्तंवकरि चारु ॥ २४ ॥ गुच्छा। वा। मोर को १। नाल के ३।
प्यार। वा। पूरा को १। भुसके २। नाम ॥ दोहा ॥ स्तंबकं गु
च्छ तृणादि को कांड तु नाडी नालं ॥ निष्फल गहि पलालं अ
थ तुसं कडंगर चाल ॥ २५ ॥ भूसी। वा। बूर को १। टूंड के।
वा। सींकुर को १। छीमी के २। ढेर के २। नाम ॥ दोहा ॥
तुषं तु धान्यत्वचं शूकं तौ अग्र जु चिक्कण तीष ॥ शमी तु सिंवा
स्र द्वतौ धान्य आवसितं दोष ॥ २६ ॥ वरसाई हुई साफ
राशि के २। झोंमीवाले के। वालिवाले के। जडहन आ
दि धान्य के। नाम ॥ दोहा ॥ पूतं तु वहुली कृतं अथो शमी

धान्यं माषादि॥ शूकधान्यं तौ यवादि हि शालि सुतो कलमादि॥२७॥ तिन्नी वा मुनि अन्न के २। स्यंहु वां के २। मूसल के २। ओखली के २। नाम॥ दोहा॥ नीवार तु त्रणधान्यं अथ गवेधु गवेधुकां हि॥ मुसल अयोग्रं उदूखलं तु उलूखलं हि जुग आहि॥२८॥ सूप। वा। छाज के २। चलनी के २। थेली। वा। बोरा के २। चौलड़ा के। वा। छाबड़ा के २। नाम। दोहा॥ शूर्प तु प्रस्फोटन तितउ सुतो। चालनी मानि स्यूत प्रसेवं हि पिट सुतो। कंडोल हि पहिचानि॥२९॥ चटाई के २। रसोई के ३। रसोई पति को १। नाम॥ दोहा॥ कट तु किलिंजकं रसवती सोतो। पाकस्थान॥ महानसं हु पौरोगवं तु तो मालिक नान॥३०॥ रसोईदार के ७। नाम॥ दोहा॥ सूपकारं आरालिक रु सूद औदनिकं जानि॥ आंधसिक रु वल्लवं गुणां सुपाक हि कर्त्ता मानि॥३१॥ पूवा आदि बनाने वाले के ३। चूल्हा के ५। नाम॥ दोहा॥ भक्ष्यकारं आपूपिक रु कांदविकं हि उद्धान॥ अधिश्रयणी अश्मंत पंच। चुल्लि अंतिकां नाम॥३२॥ अंगीठी के ४। अंगार को १। लुकाठ के २। नाम॥ दोहा॥ हसिनी अंगारधानिका अंगारशकटी तान॥ हसंती अंगारं इक। उल्मुकं सुतो अलातं॥३३॥ खपरी के २। भट्टी। वा। भार के। वा। कड़ाही के २। मांट के २। करवा। वा। गडुवा के ३। नाम। दोहा॥ अंबरीष तौ भ्राष्ट्रं अथ कंडु स्वेदनी आदि॥ मणीकं अलिंजरं कर्करी तु आलुगलंतिकां हि॥३४॥ बद

लोहीके ५। घडाके ४। तवाके २। सरावा। वा। ढकना के २। नाम॥ दोहा॥ पिठर कुंडं स्थाली उखा घट कुट कलशं निपाव॥ पिष्टपचने तु ऋजीषं अथ वर्द्धमानक शराव ३५॥ कटोराके २। कुप्पाके २। कुप्पीके २। बर्त्तन मात्रके ४। कर्छुलीके ३। डोवाके २। सागके ३। नाम॥ दोहा॥ पान भाजनं तु कंस अथ कुतू सीघडो अत्र॥ कुतुपं सीघडी भाजनं तु भांडरु पात्र अमत्र॥ ३६॥ आवपनं हु कंबि तु दर्वि खजा कां हु त्रय ताक॥ तर्दू तु दारु हस्तकौ हि शीग्रु तु हरित केशा कं॥ ३७॥ शाकके दंडके २। मसालाके २। चूकके ३। नाम॥ दोहा॥ दंड कलंबं कडंबं तिहिं उपस्कर तु अति शुक॥ वेसवार स्वसामत्त तो तिंतिडीक त्रय चुक्र॥ ३८॥ मरिच के ६। जीराके ४। नाम॥ दोहा॥ धर्मपत्तनं तु कोल्लक रु ऊषण रु स्मे मरीच॥ वेल्लनं जरणा तु अजाजी जीरक कणा अपीच॥ ३९॥ कालाजीराके ६। अंदरकके २। नाम॥ दोहा॥ पृथ्वु काल उपकुंचिका पृथ्वी सुखवी सोय॥ कार वी हु आर्द्रक सु तो शृंगवेर जुग जोय॥ ४०॥ धानियांके ४ सोंठिके ४। नाम॥ दोहा॥ वितुन्नक तु कुस्तुंबु रु छत्रा धान्याक॥ नागर विश्वं महौषध रु विश्वभेषज दि ताक ॥ ४१॥ कांजीके ७। नाम॥ दोहा॥ कुंजलं कुल्माषाभि षुतं धान्याम्ल रु सो वीर॥ आरनालक रु कांजिक सु अवंति सोय हु धीर॥ ४२॥ हींगके ५। हींग वृक्षकी पातीके ४। नाम

दोहा ॥ वाल्हीकं तु रामठं जतुके सहस्रवेधि सहिंगु ॥ पृथ्वी
कवरी वाष्पिका कारवी हु दलहिंगु ॥ ४३ ॥ हरदी के ४ समुद्र
फेनके ३ नाम ॥ दोहा ॥ निशा ह्यातु वरवारीनी कांचनी
सु पीतारु ॥ हरिद्रा हि असीवं तौ वपिरं समुद्रजे चारु ॥ ४४ ॥
सैंधवके ४ सांभरिके २ खारी के ३ नाम ॥ दोहा ॥
सैंधवं सिंधुजं शितशिवं रुमा रौ मंथ चत्वारि ॥ रोमकं वसु
कं हि पाक्यं तौ विडं रु कृतकं त्रय धारि ॥ ४५ ॥ सौंचर के ३
कालानोंनको १ राव ॥ वा ॥ खांड के २ पक्की चीनी ॥ वा
॥ मिश्री के २ नाम ॥ दोहा ॥ अक्षतु सौवर्चल रुचकं ति
लकं तु असितं पिछानि ॥ मत्स्यंडी फाणितं जुगल सितं शर्क
रा मानि ॥ ४६ ॥ दही दूध मिला पदार्थ के १ सिखरनि
॥ वा ॥ चटनी के २ कढी के २ शूल पर भुने मांस के ३
वड़ा वा मेपके के २ रासि आदके २ घृत सैं बनी वस्तु
पूरी आदि के २ नाम ॥ दोहा ॥ क्षीरविकृति तौ कूर्चिका
रसाला मार्जिता हि ॥ निष्ठानं तु तेमनं जुगल शूल्या कृतं तौ आ
हि ॥ ४७ ॥ शूल्यं भटित्रं हि पैठरं तु करंबा हि उपसंपन्नं ॥ दो प्र
राीतं हीमयस्तनु सु संस्कृतं हि अछन्न ॥ ४८ ॥ पानि हाव्यं
जन के २ चीना अन्न के २ चिकना के ३ छोंका के २
नाम ॥ दोहा ॥ पिच्छिल विजिलं हि शोधित तु सम्मृष्टं हि
जुग जोय ॥ मस्रणं तु चिक्कण स्निग्धं ही भावितं वासितं दोय
... मरा ॥ वा ॥ हाजुसके ३ ॥ बांवरको २ लालाको १

च्यवडा केप। धानी। वा। बाहुरी को १। वरा। वा। पूवा को ३। दहीसाना सत्तू के २। भातके ६। नाम॥ दोहा॥ आपक्वं तु अभ्यूषं त्रय पौलि हि अक्षतं लाजं॥ चिपिटक पृथुकं हि जो भुने धाना पूपं तु साजं॥ ५०॥ अपूपं पिष्टकं करंभ तु दधिसक्तु हि जुग उक्त॥ भिस्सा ओदन अन्न षट दीदिविं अंधस् भक्त॥ ५१॥ जल। अन्न। वा। भात के २। माँड को १। भात माँडके ३। नाम॥ दोहा॥ दोय भिस्सटा दग्ध को मंडं अग्रस अन्न॥ आचाम तु निस्राव अरु मासर हू त्रय गन्न॥ ५२॥ तपसी के ५। गोसें उत्पन्न होय ताको १। गोबर के। नाम॥ दोहा॥ तरला श्राणा उष्णिका पांच यवागू सोय॥ विलेपी हु गव्यं तु इकाहि गोविट गोमयं दोय॥ ५३॥ उपलाको। वा। छाणा को १ दूधके ३। घीआदि को १। पतला दही को नाम॥ दोहा॥ छको यही करीषं अथ दुग्ध तु पयसं रु क्षीरं॥ घृत दध्यादि पयस्यं अथ द्रप्सं ढील दधि चं २॥ ५४॥ घृत के ४। लूणया के २। तुरत का लूण्या के २। नाम॥ दोहा॥ आज्यं तु सर्पिष घृत हविष नवोद्धृतं तु नवनीतं॥ सो गो दो होय्व घृतं तु है यंगवीनं मीत॥ ५५॥ * ॥

* ॥ * ॥ माठा मात्र के ४। माठा भेद के ३। नाम। दोहा॥ कालशय दंडाहत रु अरिष्टं गोरस चारि॥ तक्रं उदाश्वित मथितं ये चौथ अर्द्ध विनवारि॥ ५६॥ दही के जल को १। पीयूष को १ भूख के ३। ग्रास के २। नाम॥ दोहा॥ [illegible]

मंडतु मस्तु इकै पीयूषं तु नवक्षीर ॥ क्षुदे अशनाया बुभुक्षाय
सो तु कथलौं हि धीर ॥ ५७ ॥ साथ पीने के २ साथ खाने के २
प्यासके ४ भोजन को ७ अघाने को ४ जूंठा को १ नाम ॥
दोहा ॥ तुल्यपान तु सपीति हौ सहभोजन तो सग्धि ॥ तृष्
पिपासो उदन्या तृट अथ भोजन जग्धि ॥ ५८ ॥ जेमन आहार
रु निघस लेप रु न्याद बखानि ॥ सौहित्य तु तर्पण तृप्ति फेल
औं ठहि जानि ॥ ५९ ॥ ग्वाह के ५ अहीर के ५ नाम ॥ दोहा ॥
पर्याप्ति है यथेप्सित रु कामं निकाम अकामं ॥ बल्लव गोप अ
होर गोसंख्य रु गो दुह नाम ॥ ६० ॥ चौपाये को १ गाय के
मालिक के ३ गो सम्बन्धि समूह को २ नाम ॥ दोहा ॥
पादबंधन तु गवादि हि गवीश्वर तु गोमान ॥ गोसी तीन ब
व्रजे तु गोकुल गोधन नान ॥ ६१ ॥ जहां पहिले गायों ने
खाया उसको, बैल के ९ बैल समूह को १ गायों के म
के २ नाम ॥ दोहा ॥ पूरव चरती गो जहां सो आशितंगवी नी
॥ वलीवर्द ऋषभ रु वृषभ उक्षा भद्र प्रवीन ॥ ६२ ॥ अनडु
न सौरभेय रु वर्ध अरु गौ न वहोय ॥ वृष गण औक्षक गो गण
तु गव्या गोत्रा दोय ॥ ६३ ॥ बछड़ों समूह को १ धेनु औ क
समूह को १ बड़ा बैल के १ बूढ़ा बैल के २ कलोर को १
नाम ॥ दोहा ॥ वात्सक धेनुक निज गणो हि महाहद उक्ष तु म
हान ॥ जरद्गव तु लक्ष्मोक्ष सो उत्पन्न तु जातोक्ष ॥ ६४ ॥ नया
के २ बछवा मात्र के २ टा के १ बांधा का

रने लायक को १ नाम ॥ दोहा ॥ सद्य जात तौ तर्णकैं हिव
त्से पाछते करि सम्य ॥ दम्य वत्सवरैं षंडताद्योग्य सुतो आर्षभ्य
॥ ६४ ॥ सांडके ३ ॥ कांधके १ गलकंबरी के २ । नथुवा बै
लके २ नाम ॥ दोहा ॥ षंडतु गोपति इट्चरैं हि स्कंध दे
श वहै सोत ॥ सास्ना गलकंबल अथ नस्तितजु गनस्योत ॥
६६ ॥ चसीटा के २ । जोतने योग्य बैल के ३ नाम ॥ दोहा ॥
एय्वाहै युग पार्श्वग हिं अथ ग्रासंग्यं बखानि ॥ शाकटैं युग्य हि वै
ल त्रय भिन्न वाह के जानि ॥ ६७ ॥ हल में चलने वाले को २ जो
ते बैल के ५ नाम ॥ दोहा ॥ खनति कुया को वहत तें हालिक
सैरिक ज्ञेय ॥ धुर्य धूरीण रु धूर्वह सु धुरंधर रु धौरेय ॥ ६८ ॥ ए
क धुर के वहने वाले के ३ सब भार में चलै उसके २ ना
म ॥ दोहा ॥ एक धुरीण तु एक धुर एक धुरा वह जानि ॥ सर्ब
धुरावह तो हि तिय सर्वधुरीण बखानि ॥ ६९ ॥ गाय के ९ नाम
दोहा ॥ माहे यी गौ शृंगिणी उस्रा माता आहि ॥ रु सौरभेयी
अर्जुनी रोहिणी रु अघ्न्या हि ॥ ७० ॥ उत्तम गाय को १ गाय
विशेष के ५ नाम ॥ दोहा ॥ उत्तमा तु है नैचिकी भावली ध
वली जोय ॥ कृष्णा कपिला पाटला पांडुरंग करि होय ॥ ७१ ॥
एक वर्ष । दो वर्ष । चारि वर्ष । तीन वर्ष की गाय के ये के
का नाम ॥ दोहा ॥ एकहायनी वर्ष की द्विहायनी द्वै साल ॥
चतुर्हायणी चारि की त्रिहायणी त्रय साल ॥ ७२ ॥ बांझ गा
य के २ । अकस्मात पतित गर्भा के २ । गर्भिणी के २ ।

वृषके उपगमन सैं पातेत गर्भा को १ नाम ॥ दोहा ॥
वशांतु दंध्नी अथ स्त्रवद गर्भा अवतोकौं हि ॥ वृष संगमात संधि
नी वेहतं गर्भ गिरा हि ॥ ७३ ॥ उचित समय बैल के पास जा
ने वाली के २ । प्रथम यामिनि के २ । सीधी गाय के २ ना
म ॥ दोहा ॥ काल्या उपसर्या जुगल दाल गर्भिणी सोतु ॥ प्रष्ठोही
सुकरा सुतो । द्वितिय । अचंडी होतु ॥ ७४ ॥ बहुत वेत वियानी के
२ । बकेनि गाय के २ । तुर्त की ब्याई के २ । नाम । दोहा
बहुसूति स्तु । परेष्टुको वष्कयणी तौ जानि ॥ चिरसूतौं नवसूति
का होतो । धेनु पिछानि ॥ ७५ ॥ दुहने में सुशीला के २ । मो
टे थन वाली के २ । दशसेर दूध की के २ गहने धरी को १
वर्ष ब्यावनी को १ नाम । दोहा ॥ सुखसंदोह्या सुव्रता पीव
रस्तनी तु जोय ॥ पीनोध्नी शुरु थनी अथ द्रोणाक्षीरा होय ॥ ७६ ॥
सु द्रोणदुग्धा अथ धरी गहनै धेनुष्या हि ॥ वर्ष ब्यावनी गायतै
समा समांनी आहि ॥ ७७ ॥ थन के २ । खूंटा के २ । रस्सी के
२ । बहुत गांठि युत पशु बांधने की रस्सी के । नाम । दो
हा ॥ ऊधस आपीनं शिव कं कीलकौं अथ संदानं ॥ द्विति
य दाम पशु रज्जु तो द्वितिय दामनी नाम ॥ ७८ ॥ दंड को ४ । र
ई बांधने के खंभ के २ । नेयनी । का । मट्का के २ । ऊंट
को ४ । ऊंट के बच्चा को १ । छोटे बच्चे काठ में बंधे उस
को १ । नाम ॥ दोहा ॥ मंथ दंड वैशाख मंथ पनि । वैशाख रु मं
थानं । कुटरु दंडविष्कंभ ॥ अथ मंथनी सुजान ॥ ७९ ॥ गर्ग

रौं है उष्ट्र तु मय रु. क्रमेलक रसु महांगं ॥ शिशु तु करभ पगबंध
युत सो. फंरवल कैं प्रसंग ॥ ८० ॥ बकरी के २ । बकरा के ५ ।
भेड वा । गाडर के ७ ऊंट । भेड । बकरा । इनके समूह
के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ अजा तु. छागी छगलक तु अज शुभ
वस्त रु. छाग ॥ मेढ्र वृष्णि एडक उरण अरु. ऊर्णायु सम भाग ८१
मेष उरभ हि औष्ट्रक तु औरभ्रक अरु जानि ॥ आजक है ये तीन
तो तिनके गन मे मानि ॥ ८२ ॥ गदहा के ५ । क्रयविक्रयौं
सैं वर्त्तमान साहूकार । वा । व्यवहारिया के ८ । व्योपारी
वा । वेचनेवाले के २ । नाम ॥ दोहा ॥ गर्दभ चक्रीवान ख
र रासभ पचवालेय ॥ सार्थवाह वैदेहक रु नैगम वाणिज ज्ञेय
॥ ८३ ॥ पण्याजीव रु. वाणिक पुनि क्रयविक्रयिक विचारि ॥
आपणिक है विक्रायिक तो. विक्रेता जुग धारि ॥ ८४ ॥ लेनेवा
ले के २ । वनियापन के २ । मोल के ३ । मूलधन के ३
व्याज । वा । नफा के २ । अदलाबदली । वा । लेनदेन के
३ । नाम ॥ दोहा ॥ क्रायक क्रयिक हि वाणिज्या तो वाणिज्य
विचारि ॥ मूल्य तु वस्न अवक्रय है नीवी परिपण धारि ॥ ८५
मूलधन हि अथ अधिक फल. लाभ कहावत नान ॥ परीवर्त्त
नैमेय पुनि. निमय चारि. परिदान ॥ ८६ ॥ निक्षेप । वा । धरो
हर के २ । फेर देने को १ । वेचने को फैलाई को १ । वेचने
योग्य के २ । नाम ॥ दोहा ॥ उपनिधि न्यास है फेरनो. तो
प्रतिदान हि ज्ञेय ॥ क्रय्य तु वेचन हित धरी केतव्य तु है क्रेय ॥ ८७

विक्रेय क्रियाकर्सके ३ साईके ३ । विक्रय क्रैयाके २ ।
नाम ॥ दोहा ॥ विक्रेयतु पणितव्य त्रय पणार्ह सत्यंकार ॥ सत्या
कृती सत्यापनौं हि विपणा विक्रयौं हि चार ॥ ८८ ॥ तोल । चौंनी
पके ४ । तोल भेदके ३ । नाम ॥ दोहा ॥ मान पाय्य पौतव
द्रुवयँ येद तु तुलौं वखानि ॥ अंगुलि प्रस्थ हि तीन करि भिन्न
भिन्न पहिचानि ॥ ८९ ॥ तुलामान ॥ दोहा ॥ आद्यमाषके
तु गुंज पंच सोलह मासा सोतु ॥ अक्ष कर्ष तोलौ विदित चव
तोला पलौ होतु ॥ ९० ॥ अक्षकनकको सुवर्ण रु विस्त सुसुद्ध
जिहान ॥ कुरुविस्त तु पल कनकको सो पल तुलौं सुजान ॥
९१ ॥ बीसतुलाको भार है आचित तौ दशभारै ॥ आचित शा
कटभार है कार्षापणा तु उदार ॥ ९२ ॥ कार्षिक रुपयौ विदित
जगसो ताम्रको होय ॥ तौ पणा पैसौ जगत मैं तुलामान इति
जोय ॥ ९३ ॥ आढकादि ४ के । सूठी भरको १ । पाव भ
रको १ । सेर भरको १ नाम ॥ दोहा ॥ आढकौं ऊक इक द्रौ
णौ पुनि खारी वाह वखानि ॥ अपोनि कुंचकौं कुडवौं पुनि प्रस्थ
आदि पहिचानि ॥ ९४ ॥ चौपाईको १ । बांटके ३ । धनके
१३ । चांदी सोना दोनौंके २ नाम ॥ दोहा ॥ पाद तु चौ
थो भाग है अंश तु वंटक भाग ॥ रिक्थ ऋक्थ धन वित्त वसु
अर्थ स्वापतेय सभाग ॥ ९५ ॥ द्रव्य हिरण्य रु रै द्रविण विभव
सुन अरु अर्थ ॥ हेम रूप्य कृत अकृत मैं कोश हिरण्य समर्थ
॥ ९६ ॥ ताम्रादि द्रव्यको १ नाम । रूपाके मैलको १ ।

मरकत मारो के ३ नाम ॥ दोहा ॥ तिनतें अन्यत कुथ्यैंद कारूपों सुजु गासिलिहोय ॥ अश्म गर्भ गारुत्मत रु हरिन्मणिं हि जियजोय ॥ ९७ ॥ पद्मराग । वा माणिक्य के ३ मोती के २ मूंगा के २ नाम ॥ दोहा ॥ शोणरत्न लोहितकं त्रय पद्मराग सु तोलु ॥ मौक्तिक मुक्ताविद्रुम सु तो द्वितिय प्रवालं कहालु ॥ ९८ ॥ पद्मरागादि औरमोती आदि रत्नमा त्र के २ सोना के १९ सोना के गहना को १ नाम दोहा ॥ अश्मजाति अरु रत्न मणि मुक्तादिक मैं कोय ॥ शातकुंभ हाटक कनकं जातरूप तपनीय ॥ ९९ ॥ कर्बुरं रुक्म महारजत गर्भ हिरण्य रु स्वर्ण ॥ कार्तस्वर जांबून द रु वंा चन हेम सुवर्ण ॥ १०० ॥ चामीकर गांगेय पुनि अष्टापद उनईस ॥ अलंकार जो कनक को शृंगी कनकों हि दीस ॥ १०१ ॥ चांदी के ७ पीतर के २ नाम ॥ दोहा ॥ श्वेत रूप्य दुर्वर्ण पुनि तार रजत रु खर्जूर कलधौत रु अथ रीति सो आरकूट मसहूर ॥ १०२ ॥ तांमा के ६ लोहा के ७ लोह मैल । वा । कीट के सब धातु को १ फ..लको १ नाम ॥ दोहा ॥ ताम्र के शुल्व रु म्लेच्छमुख व्दिष्ट उदुंबर सोय ॥ षट वरिष्ठ लोहं तु अयस शस्त्रक तीक्ष्ण सु होय ॥ १०३ ॥ अश्मसार कालायस रु पिंड हु अरु मंडूर ॥ सिंहाण हु सब धातु तो लोह कुप्यी तु मसूर ॥ १०४ ॥ कांच के २ पारा के ४ सीसा के सीसा को १ अबरख को नाम दोहा ॥ क्षार कांच चपल तु रस रु पारद सूत प्रवीन ॥ सीसा सीसा ग व

तौं हि अमलअभ्रक गिरिजौं हु तीन ॥ १०५ ॥ सुरमा के ४ । तू
तिया के ५ रसोत । वा । रसांजन को ४ । नाम ॥ दोहा
कापोतांजन यामुनरु स्रोतांजन सौवीर ॥ शिखिग्रीवं तुत्थां
जन रु औरवितुन्नकं धीर ॥ १०६ ॥ पांच मयूरक कर्परी ताक्ष्यें
शैल तौ मानि ॥ तुत्थंरसगर्भ दार्विका क्वाथोद्भव पहिचानि ॥
१०७ ॥ गंधक के ३ । काला सुरमा के ३ । अंजन बिशेष
के ४ । हरिताल के । नाम ॥ दोहा ॥ गंधाश्मा सौगंधिकं
रु गंधक चक्षुष्या तु सुकुलाली रु । कुलत्थिका कुसुमांजन तु क
ह तु १०८ रीतिपुष्प पौष्प के चवथ पुष्प केतु अथ ताले ॥ ह
रिताल कं पुनि पीतनं रु पिंजर पंचम आलै ॥ १०९ ॥ शिला
जित के ५ । गंधरस के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ शिलाजतु तु अ
श्मज सुपंच गिरिज अर्थ्यं गैरेय ॥ बोल गंधरस प्राण पंच पिं
डगोपरसै ज्ञेय ॥ ११० ॥ समुद्र फेन के ३ । सिंदूर के २ । सी
सा के ४ । रांग के ४ । रूई के २ । कुसुंभ के ३ । नाम ॥ दोहा
अब्धिकफं तु हिंडीर त्रय फेन हु अथ सिंदूर ॥ नाग संभवौ हि ना
ग तौ सीसकं वर्ध्म सदूर ॥ १११ ॥ योगेष्ट हु पिच्चट तु त्रपु रंग वंग पि
चु तूलं ॥ कमलोत्तरं तो वान्हिशिख महारजत त्रिक तूल ॥ ११२ ॥
कंबल के २ । खरगोस के रोमवस्त्र के २ । सहत के ३ । मो
म के २ । नाम ॥ दोहा ॥ मेषकंबल तु दूसरो ऊर्णायु हि प्राश
लोमी ॥ आशीर ॥ माक्षिकं क्षौद्रं मधुं मधूच्छिष्ट तौ मोम ॥ ११३ ॥
के ४ । नैपाली मैनशिर के ३ । नाम ॥ दोहा ॥

नागजिह्विका मनोह्वा २॥ मनोगुप्ता आहि॥ मनः शिला कुनटी सुतो नैपाली गोला हि॥ ११४॥ जवखार के ३। सज्जी के ३। नाम॥ दोहा॥ यवाग्रज तु यवक्षार त्रय पाक्य हि अय कापोत ॥ औरसर्जिका क्षार त्रय सुखवर्चक जुत होत॥ ११५॥ सौंचर के २। वंशलोचन के २। श्वेतमरिच शोभंजन के २। नाम॥ दोहा॥ रुचक तु सौवर्चल जुगल वंशरोचना सोतु॥ त्वक्क्षीरी हो शिग्रुज तु श्वेत मरिच जग होतु॥ ११६॥ ऊख की जड को १। पीपलामूल के ३। जटामासी के २। पतंग के २। मिले सौंठि मिरच पीपरि के २। मिले हरर बहेरा आवरा के २। नाम॥ दोहा॥ मोरट तो जड़ ऊख की अथो पिप्पली मूल॥ ग्रंथिक चटका शिर त्रय हि गोलोमी तु कवूल॥ ११७॥ भूतकेश पत्रांग तो रक्तचन्दन हि आहि॥ त्रिकटुं तु त्र्यूषण व्योष त्रय फलत्रिक तु त्रिफला हि॥ ११८॥

इति वैश्य तरंगः

अथ शूद्र तरङ्ग लिख्यते॥

शूद्र के ३। करणादि से चंडाल तक के। नाम॥ दोहा शूद्र जघन्यज वृषल पुनि अवर वर्ण चत्वारि॥ संकीर्ण तु चंडाल लौं करणादिक निर्धारि॥ १॥ शूद्र स्त्री और वैश्य से उत्पन्न को १। वैश्य स्त्री और ब्राह्मण सैं उत्पन्न को १। शूद्र स्त्री क्षत्री सैं उत्पन्न को १। नाम॥ दोहा॥ शूद्रा विशज तु सुत करण वैश्या द्विज अंबष्ठ॥ शूद्र मैं क्षत्रि...

ज,तौ उग्र नामजगविह॥२॥क्षत्रिया स्त्री वैश्य सैं उत्पन्न
को १।क्षत्रिया स्त्री शूद्र सैं उत्पन्न को १।नाम।दोहा
मागधी विप्र क्षत्रियात्मज अर्याक्षत्रिय तात॥माहिष्यौंहिक्ष
त्रां सुतौ अर्याशूद्रजतात॥३॥ब्राह्मणी स्त्री मैं क्षत्रिय सैं उ
त्पन्न को १ ब्राह्मणी मै वैश्य सैं उत्पन्न को १।नाम॥दो
हा॥ ब्राह्मणि मै क्षत्रियजतौ सूत नाम विख्यात॥ब्राह्मणी हीमैं
वैश्यजतुहै वैदेहक तात॥४॥शूद्रा वैश्य की लडकी मैं वै
श्या और क्षत्रिय के लडके सैं उत्पन्न को १।ब्राह्मणी
मै शूद्र सैं उत्पन्न को १।नाम॥दोहा॥रथकार तु माहि
ष्य तैं करणी मैं उपजात॥चंडाल तु विप्राणी मै वृषलतनय वि
ख्यात॥५॥चितेरा आदि के २।सब का सजातीय समू
ह को १।उनकुलों के प्रधान के २।माली के २।नाम
दोहा॥शिल्पीकारु हि श्रेणी तौ तिहिं सजाति गण चारि॥
कुलक कुल श्रेष्ठी हि अथ मालिक मालाकारि॥६॥कुम्हार के
२।राज के २।कोली के २।दरजी के २।रंगसाज के २।
शिकलीगर के २।चमार के २।नाम॥दोहा॥कुंभकार
तु कुलाल अथ लेपक तौ पलगंड॥तंतुवाय तु कुविंद जुग तुन्न
वाय तौ मंड॥७॥सौचिक रंगाजीव तौ चित्रकर हि निर्धार॥शा
स्त्रमार्ज असिधावक हि पादूकृत चर्मकार॥८॥लुहार के २
सुनार के ५।नाम॥दोहा॥व्योकार तु लोहकार कैं रुक्म
कार तु चार॥स्वर्णकार नाडिंधम रु पंच कलाद सुनार॥९॥

चुरिहा के २ ठठेरा के २ खाती के ४ नाम ॥ दोहा ॥
शांखिक कांवाविक हि जुगल ताम्र कुट्टक तु होय ॥ शौल्विक तक्षा काष्ठतट त्वष्टा वर्द्धकि होय ॥ १० ॥ गांव के खाती को १ प्रधान खाती को १ नाई के ४ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ ग्रामतक्षतो ग्रामवस कौटतक्ष स्वधीन ॥ दिवाकीर्ति मुंडी क्षुरी नापित चारि प्रवीन ॥ ११ ॥ धोबी के २ कलार के २ गडरिया के २ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ रजक तु निर्णेजक अथो मंड हारक सुदेय ॥ शौंडिक हूजावाल तो अजाजीव जुग जोय ॥ १२ ॥ पंडा वा पुजारी के २ इन्द्रजाल के २ इन्द्रजाली के २ नाम दोहा ॥ देवाजीवी देवल हि सांवरी तु माया हि ॥ जुग जुग मायाकार तो प्रात्यहारक हि आहि ॥ १३ ॥ नट के ६ कथक के २ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ शैलाली भर्त्ता नट रु कृशाश्वी रु शैलूष ॥ जायाजीव हि चारण तु कुशीलव हि सजलूष ॥ १४ ॥ मृदंग बजाने वाले के २ ताली बजाने वाले के २ बांसुरी बजाने वाले के २ बीणा बजाने वाले के २ ॥ नाम ॥ दोहा मार्दंगिक मौरजिक जुग पाणिघ तु पाणिवाद ॥ वेणुध्मा वैणविक जुग वैणिक वीणावाद ॥ १५ ॥ चिड़ीमार के २ जालिक के २ कसाई के ३ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ जीवांतक शाकुनिक जुग जालिक वागुरिका हि ॥ वैतंसिक तो कौटिक रु मांसिक तीन निवाहि ॥ १६ ॥ मजूर के ४ संदेसिहा के २ वो झिया के २ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ भृतक तु भृति भुक् कर्मकर वैतं

तानिक हि च वराह ॥ वैवधिक तु वार्त्तावह हि भारिक तु भारवाह ॥१७॥ नीचेके १० नाम ॥ दोहा ॥ प्राकृत पामर नीच पुनि अपसद जाल्म निहीन ॥ क्षुल्लक विवरण द्वय जन इतर हु द रुम मलीन ॥१८॥ दास वा टहलवा के ९ नाम ॥ दोहा ॥ भृत्य प्रेष्य परि चारक रु दासेर रु दासेय ॥ भुजिष्य गोप्य को नियोज्य रु चेटक किंकर ज्ञेय ॥१९॥ दूसरे से पाले हुये के ४ । सुस्त के ६ । चतुर । वा । तेज के ५ । चांडाल के १० म्लेच्छ भेद के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पराचित स्तु परैधित रु परिस्कंद परिजात ॥ मंद तुद परिमृज अलस अनुष्ण शीत कों जात ॥२०॥ आलस्य कु पेशल तु पटु दक्ष उष्ण सूत्थान ॥ दिवाकीर्त्ति चांडाल प्लव श्वपच जनंगम आन ॥२१॥ अंतेवासी पुक्कस रु, सो, निषाद मातंग ॥ दश चंडाल किरात तो शावर पुलिंद प्रसंग ॥२२॥ व्याध के ४ । कूकर के ७ । बावला कुत्ता को १ । सिकारी कुत्ता को १ । कुतिया के २ । नाम ॥ दोहा ॥ व्याध मृगवधाजीव पुनि मृगयु रु लुब्धक चारि ॥ सारमेय मृगदंशक रु शुनक भषक श्वा धारि ॥२३॥ कौलेयक तु कुक्कुर अथो अलर्क जोगित जानि ॥ विश्वकद्रु मृग याकुशल ॥ सरमा शुनी हि मानि ॥२४॥ गांव सूकर को १ । जवान पशु को १ । सिकार के ७ । नाम । दोहा ॥ विट्चर सूकर गांव को वर्कर तो पशु ज्वान ॥ आखेट न आखेट च च मृगव्य [illegible] ॥२५॥ दाहिने अंगमे घाव वाला मृग को १ । चो

रके १०। चोरी के ३। नाम ॥ दोहा ॥ सुदासिरोमें दहिन अंग
लुब्धयोग म्रगमार ॥ एकागारिक तस्कर रु स्तेन दस्यु निर्धार ॥ २६
चौर भलिम्लु रु मोषक रु पाटच्चर प्रतिरोधि ॥ परास्कंदि दशास्ते
यतो स्तैन्य चौरिका शोधि ॥ २७ ॥ चोरी के मालको १। व्याधों
कीसवारी को १। फंदा के २। नाम ॥ दोहा ॥ लोप्त्र तु चोरीको
धनहि अथ म्रगपाक्षिन साथ ॥ वंधवस्तु वीतंस अथ कूटयंत्र उ
न्माथ ॥ २८ ॥ म्रगवंधन जालके १। रस्सी के ४। रहट के २
नाम ॥ दोहा ॥ वागुरा तु म्रगवंधनी शुल्व वराटक रज्जु ॥ व
टी गुरा हि उदघाटनं तु घटीयंत्र जग सज्जु ॥ २९ ॥ वुनने के
दंड के २। सूत के २। वुनने के २। लीपना आदिको १।
गुडिया गुडवा के २। नाम ॥ दोहा ॥ वाप्यदंड वेमा जुगल सू
त्र तंतु अथ वानि ॥ स्यूति इ पुस्त हि पुत्रिका तु पांचालिका जाणि
॥ ३० ॥ संदूख वा। पेटी के ४। वहगी। वा। कावरि के २।
शिकहरा। वा। छींका के २। नाम ॥ दोहा ॥ पेटा तो पेटं रु
पिटक मंजूषा चत्वारि ॥ भारयष्टि तु विहंगिका शिक्य तु का
चं निहार ॥ ३१ ॥ पनही। वा। जूता के ३। मोजा को १। वाधी
के ३। नाम ॥ दोहा ॥ तीन उपानद पादुका पादू अथ पदमान
॥ सु अनुपदीन वरत्रा नध्री वध्री नान ॥ ३२ ॥ जेरवंद को १
को गिरी के ३। नाम ॥ दोहा ॥ कशा हयादिक ताडनी त्वांड
लिका तु अर्गहि ॥ सुचंडाल वल्लकी त्रय रु कंडोलवीणा हि ॥
३३ ॥ सुनार के कांटा के ३। कशौटी के २। नाम ॥ दोहा

नारीनी कंचन तुला खनित्रीकौ अयशारसी ॥ निकषकेषै है कष्वन ... तो । पत्र परशु जुग जान ॥ ३४ ॥ सलाईके २ । धातुगलाने वारी घरियाके ३ । भाथीके २ । वमीके २ । कतरनीके २ । करवतके २ नाम ॥ दोहा ॥ दोय तूलिका ईषिका मुषा तु मूषा जान ॥ त्रतिय तैजसावर्त्तनी चर्म प्रसेविका ह ॥ ३५ ॥ भस्त्राजुग आस्फोटनी वेधनिका जुग अन्न ॥ दोय कृपाणी कर्त्तरी क्रकच सु तो करपत्र ॥ ३६ ॥ बांकी ॥ वा ॥ वसूलाके २ । टांकीके २ नाम दोहा ॥ जु त्वक्ष भंदी सो द्वितिय वृक्षादनं ही होय ॥ जु पाषाणदारण सुतौ टंक द्वितीय दिजोय ॥ ३७ ॥ आरीके २ । लोहकी प्रतिमाके ३ । कारीगरीको वा । सबकी चतुराईको १ नाम ॥ दोहा ॥ आरां चर्मप्रभेदिका लोहप्रतिमा सो तु ॥ सूर्मी स्थूणा शिल्प तौ कर्म कलादिक होतु ॥ ३८ ॥ प्रतिबिंबके वा तसबीरके नाम ॥ दोहा ॥ प्रतिमा प्रति कृति प्रतिनिधि रु प्रतिबिंब रु प्रतिमान ॥ अरु अर्चा प्रतियातना रु प्रतिच्छाया नाम ॥ ३९ ॥ मिसाल और जिसकी मिसाल दी जाय उसके २ बराबरके ॥ नाम ॥ दोहा ॥ उपमा तौ उपमान जुग सम तु सदृक्ष समान ॥ साधारण सदृश रु सदृक्ष तुल्य रु सात सुजान ॥ ४० ॥ उत्तर पदस्थित समानार्थके ५ नाम ॥ दोहा ॥ प्रनी काश संकाश निभ नीकाश रु उपमादि ॥ उत्तर पदमें थित सम नार्थका द्दियादि ॥ ४१ ॥ मजूरीके ११ नाम ॥ दोहा ॥ ... कर्मण्या वेतन रु अर्तिकर्मरयां भत्या रु ॥ भरण भरण्य रु मू...

ल्यंपुनिपरा॥निर्वेशहै चोर॥४२॥दारूके१३।मद्यपीनेमैं रुचिवढानेवालेको१।मद्यपानस्थानको१नाम॥ दोहा॥हलिप्रियाहालो सुरांगंधोत्तमाइरांरु॥परीस्नुतरुवरु णात्मजामद्यकश्यमादिरांरु॥४३॥परिस्नुतांकादंवरीऔर प्रसन्नांनान॥तहंअमराअवदंशमदस्थान,तुशुंडापान॥४४॥ मद्यपीनेकेसमयके२।महुवाकीमद्यके२।इक्षुरा कादिजन्यमदिराके३।नाम॥दोहा॥मधुक्रमंतुमधुवा रैंअथमध्वासवंमाध्वीक॥माधवकंहिमेरेयतो,आसवंसीधु हिनीक॥४५॥मदिराकल्कके२।काढाके२।मदिरा वनानेके२।सुरावीजको१।मतवाले हो केपुकार नेके२।मदिराफूलके२।नाम॥दोहा॥मेदकजगलहि अभिषवंतुसंधानहि किरावस्तु।नग्नहूकिण्वंतु,सुरामंडजग वस्तु॥४६॥मद्यपीनेकीसभाके२।मद्यपीनेकेपात्रके२ मदिरापीनेके२।नाम॥दोहा॥पानगोष्ठिकातोद्वितियआ पानंहिचषकंस्तु॥पानपात्रहूसरकतोअनुतर्षराजुगअस्तु॥ ४७॥जुआरीके५।जामिनके२।नाम॥दोहा॥धूर्तकि तवरुद्यूतकृतरुअक्षदेवीसोय॥अक्षधूर्तप्रतिभूसुलौलग्न कंजामिनहोय॥४८॥जुवाकरानेवालेके२।जुवांके४ वाजीलगानेके२।नाम॥दोहा॥सभिकद्यूतकारकजु लद्यूतंतुकैतवमानि॥अक्षवतीपणहूअथो,पणअरुग्लहजु गजानि॥४९॥पाशाके३।गोटिकेचलनेको१।चौपड़के१

जीवों के लडाने की बाजी को १ नाम ॥ दोहा ॥ अस्तु देव न पाशकें हि । शारि चाल । परिणाय ॥ अष्टापदें तो । शारिफल म माहूयें तु पराभाय ॥ ५० ॥

इति षष्ठ तरंगः समाप्तः

इति गुलाबसिंहस्यकृतौ नामानुशासने ॥ द्वितीयो भागो भ्म्यादिः सांगरावसमर्थितः २

द्विवेदनन्दाब्जमिते ऽत्र वर्षे
नभस्यशुक्ले दशमी तिथौ च
सुद्रांकितः केशव शर्म्मणायं
गुलाबसिंहेन कृतो हि कोशः २

हस्ताक्षर सेमकरणब्राह्मण गौड़स्य ॥ शुभम्

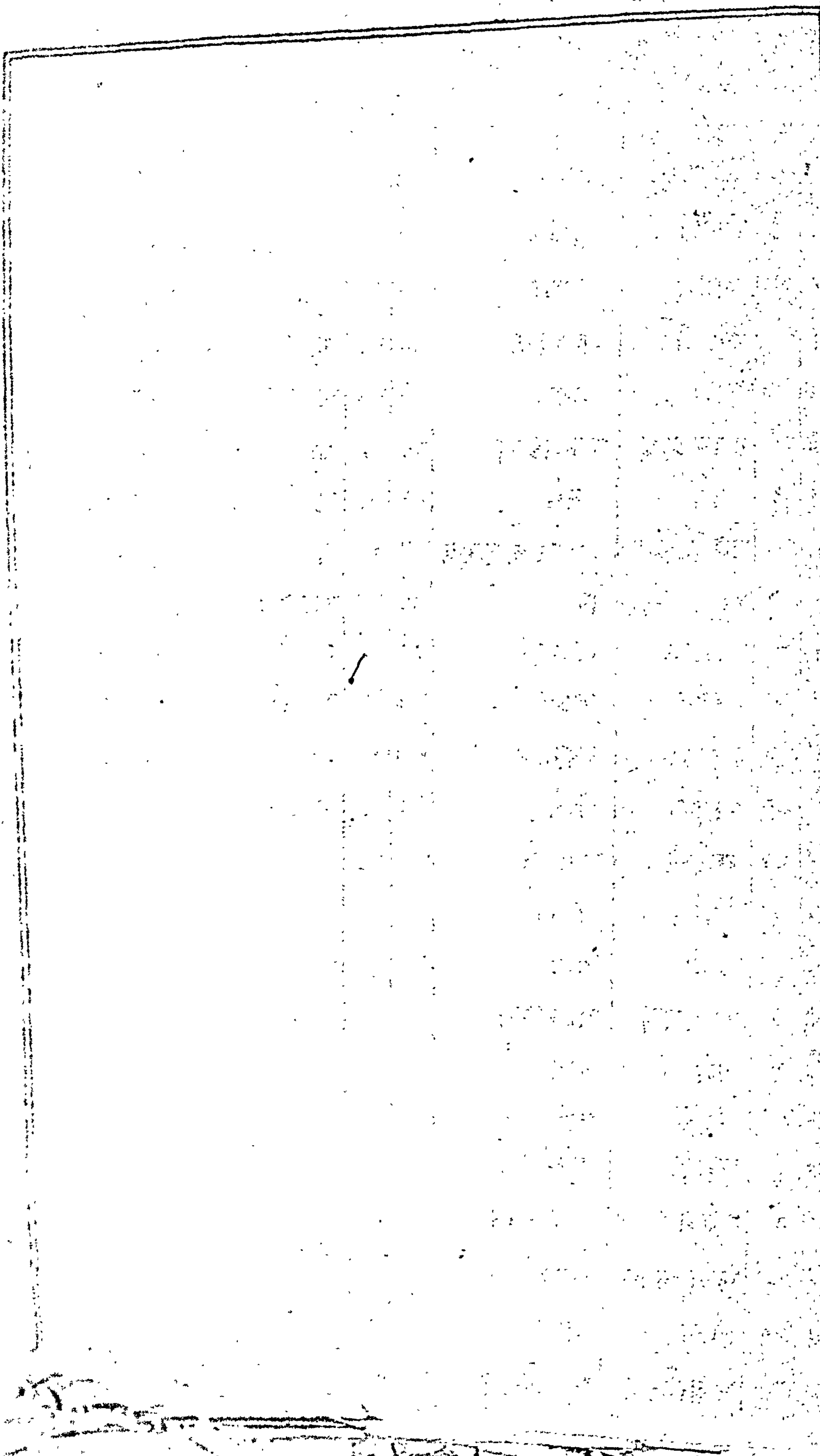
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	वसंधरा	वसुंधरा	१२	१२	भागधी	मागधी
२	४	म्दत्तनउ	म्रत्स्ना	१२	२४	माध्यहि	माध्यंहि
२	६	ऊर्वरा	उर्वरा	१३	१५	ओषघिफल	ओषधिफल
२	८	स्वलीस्थल	स्थलीतुस्थल			पाकान्तमै	पाकान्तमें
२	१६	तत्यंत	मत्यंत	१३	१८	प्याजके२।	प्याजेके २।
४	१६	प्राचीन मित्ति	प्राचीन भिन्ति				हरितप्याजका
५	५	उठज	उटज	१३	२०	दुद्रुम	दुर्द्रुम
५	१७	प्रसाद	प्रासाद	१४	३	कन्दरू	कन्दरु
७	११	धोषहि	घोषहि	१४	८	भस्कर	मस्कर
८	२	हस्याम्दत	हस्याम्टत	१४	१५	प्राध्य	प्राच्य
८	६	सौमध्य	सोमध्य	१४	१८	घोंय	घोंठा
८	१६	भूभि	भूमि	१४	२०	ताली	ताली
८	१८	उर्ध्वाहि	ऊर्ध्वाहि	१५	६	स्तब्धरोमा	स्तब्धरोमा
९	४	वडेवनके१	वडेवनके२	१५	१२	गोभायु	गोमायु
९	८	मंत्रिनको	मंत्रिको	१५	१४	आतु	ओतु
९	१५	हृदके१३।	हृदके१४।	१६	१	ऐसो	ऐरा
			लिके५।	१६	२	चसूरु	चमूरु
९	१८	अनोकह	अनोकह	१६	३	पद	पट्
९	२१	उच्छाय	उच्छ्रय	१६	६	एसा	ऐसो
१०	६	रशिफा	रशिफा	१६	१०	वृक	वृष
१०	१८	काचाफल	कान्चेफल	१६	११	भूषिका	भूषिका
११	५	पारिमद्र	पारिभद्र	१६	१६	होय	होप
११	१८	भूतबास	भूतावास	१६	१८	परावत	पारावत
११	२०	अरुवकयस्था	अरुकायस्था	१७	५	चिडाको१।।	चिडाकेरचिडैको१।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	६	कालिंदेके	कलिंदके	२४	८	भिसुकी	भिक्षुकी
१७	९	भास	भास	२४	११	पुत्री और	पुत्र और
१७	१८	चक्रवाचक	चक्रवाचकवीके	२५	१	स्थामतु	स्थालतु
		वीके ३।०	श्वेतकके २।	२५	४	जामत	जामात
१७	१८	पुष्कराह्न	पुष्कराह्व	२५	७	सोसह्रज	सह्रज
१७	२१	उत्क्रांश	उत्क्रोश	२५	२२	मुंड	मंड
१८	१	मानसौकस	मानसौकसश्च	२६	६	स्तनष	स्तनप
		श्चा	श्चा	२६	१९	वालिनि	वालिन
१८	२९	भोर	भौंर	२७	४	उर्ध्वजानु	ऊर्ध्वजानु
१९	५	एकुंत	प्राकुंत	२७	१७	वयस्तुत	वयनुस्तुत
१९	२१	भेदोंका	भेदोंके	२९	१	तुंडिमतु	तुंडिभतु
२०	९	कापोतादि	कपोतादि	२९	७	उन्तपनु	उत्तपु
२१	१५	पुरुषके४।	पुरुषके ५	२९	१८	[illegible]आषि	मलआषि
२०	१८	माहिला	महिला	२९	२०	कर्पूरतु	कर्परतु
२१	२४	तरुणीसुतव	तरुणीसुतवधू	३०	२	कशेरका	कशेरुका
		वधू		३०	९	अंध्रि	अंघ्रि
२१	१५	धूजनी	वधूजनी	३०	२०	मेढ्	मेढ्र
२१	१८	कामकी	कामुकी	३०	२१	पीठवंश	पीठवंश
२१	२९	होके	होके	३१	९	अस	अंस
२२	५	बुद्धा	वृद्धा	३१	१३	मणिवंधधैसे	मणिबंधसे
२२	१९	भजाता	भजाता	३२	१	पुनर्मव	पुनर्भव
२२	२१	कात्यायनी	कात्यायनीतु	३४	१८	भ्राट	विभ्राटतु
		जोय	जोय	३४	२८	अभरण	आभरण
२३	९	आग्नेयी	आग्नेयी	३५	५	नाभि	नाभि
२३	१५	नर्गिरोंगी	नर्गिरोंगी	३६	१०	एंकव	शंकव

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३७	२	सुचलेलक	सुचेलक	४५	२९	उपासना	उपासन
३७	८	प्रवार	प्रावार	४५	२२	ध्यानादि	ध्यानादि
३७	११	अप्रपदीन	आप्रपदीन	४७	५	पतुयाति	पतीतुयाति
३८	१२	यज्ञधूप	यज्ञधूप	४७	१९	अघमर्षण	अघमर्षण
३९	८	यज्ञकर्दम	यक्षकर्दम	४८	२	दैव	दैव
३९	२०	गलमाल	गलभाल	४९	२०	क्षीरिणाः	क्षीरिणा
३९	२०	प्रलंव	प्रालंव	५०	९	ठेकोके दारके	ठेके दारके
४१	७	अवस	अपर	५०	२०	सयत्न	सपत्न
४१	२८	प्रज्ञ	प्राज्ञ	५०	२१	सनबंध	संबंध
४१	१५	यज्ञाध्यके	यज्ञाध्यक्षके	५१	३	अनुकूल्य	आनुकूल्य
४१	२१	दक्षिणासे	दक्षिणासैं	५१	५	यथार्हवर्णी	यथार्हवर्णी
४२	७	अतेवासी	अंतेवासी	५२	१३	पुनिभ्य	पुलिभ्य
४२	२१	गेलिह्य	गेलिह्यक	५२	२१	दंद	दंड
४२	१४	वंतु	तंतु	५३	१८	नाहर	आहर
४२	१७	भभा	सभा	५४	७	अप	अप
४२	१८	संपद	संसद	५४	१७	प्रतिनाल	प्रतिनाम
४९	१९	यज्ञग्रह	यज्ञ गृह	५४	२०	पाश्व	पार्श्व
४३	८	भूमि	भूमि	५५	५	आलन	आलान
४३	१७	हुतभुकप्रि	हुतभुकप्रिया	५५	९	परिस्तोभ	परिस्तोम
		या		५५	१७	ह्य	ह्य
४३	१७	आग्नायी	आग्नायी	५६	१७	शाकटकु	शाकदन्तु
४४	२	आमिक्षा	आमिक्षा	५६	२१	प्रेखा	प्रेंखा
४४	१७	विधस	विघस	५६	२१	ढेपनो	ढेपतो
४४	१९	विद्यापति	विद्यापित	५७	१	पौंड्रसैं	पौंड्रसैं
४४	१	प्राड्डे	प्राड्	५७	१	नाम	नाल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७	३	कावलहि	कांवलहि	६४	२६	प्रास्यदि	प्रास्यादि
५७	४	यनमुख	यानमुख	६६	१२	जीवतु	जीवातु
५७	९	कालक	कीलक	६६	१५	अम्टत	अम्रत
५७	१०	दोदेखि	दोदोदेखि	६६	२०	करणादापव	करणावाय
५७	१२	मसंगयुग	प्रासंग तु युग	६६	२०	करणग्रहि	करणग्राहि
५७	२४	काह्लारादि	कह्लारादि	६७	७	होनेवाले	होनेवाले
५७	२८	दक्षसारस्थ	दाक्षिणास्थसव्ये	६७	१५	पहिचान	पहिचानि
		स वेष्ट	ष्ट	६७	१९	रुनि	पुनि
५८	१०	अमुक्त	आमुक्त	६८	५	क्षेत्र	क्षेत्र
५८	१६	अयुधीय	आयुधीय	६८	७	लेष्ठ	लेष्टु
५९	८	सुहाय	सहाय	६९	८	असुरी	आसुरी
५९	१५	प्रतवी	प्रजवी	६९	१०	ढूंडावा	ढूंढावा।
६०	२७	रथहुड्क्वी	रथहु डुकीस	७०	१५	पंच	पंच
		स		७०	१६	नाम	नान
६०	१९	पत्ति	पाति	७०	१७	मारके	आरके
६०	२०	अर	अरु	७०	२१	आलुगला	आलुगलां
६०	२१	मिलितकह	मिलितकहि			निका	का
६१	२	मानिचारि	गानिचारि	७१	१८	चवा	चव
६१	२१	धनुद्धरके	धनुर्द्धरके	७१	१८	विश्वमेषज	विश्वभेषज
६१	१७	अप्रुग	आप्रुग	७१	२०	धान्यग्ल	धान्याम्ल
६२	८	इली	ईली	७१	२०	अंबाति	अवांति
६२	९	मिंदिपाल	भिंदिपाल	७१	२१	सोयूह	सोमह्न
६३	७	होय	दोय	७१	२१	हींग्टके	हींगके
६३	८	अनिभवर्त्ती	अनिवर्त्ती	७२	२	सभुद्र	समुद्र
६३	२१	नसरवाने	नसारवाने	७२	२१	हावुसक३।	हावुसके ३

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७३	१	वाहरीको १।	बहुरीको १।	८१	५	शो भंजनके	शो भांजनके
७३	२	पूर्वाको ३।	पूर्वाके ३।	८१	२१	शूद्र मे	प्रद्रा मे
७३	३	चिपटका	चिपटक	८३	५	स्वधीन	स्वाधीन
७३	६	अंधस्र	अंधस्	८४	५	प्रोष्य	पैष्य
७३	८	भास्र्	मास्र्	८४	१०	जात	तात
७३	९	तपसीके	लपसीके	८५	१८	कुलश	कुशल
७३	१७	च्छलंतु	च्छलतु	८५	२०	भगव्य	मसव्य
७३	१९	कालशाय	कालशेय	८५	३	भलिम्लु २	मलिम्लुप
७४	४	तर्प	तर्ष	८५	[illegible]	प्रतिराधि	प्रतिरोधि
७४	१७	वछडोंसमूह	बछडों के समूह	८५	११	वायदंड	वापदंड
		को	को	८५	१५	भंजूषा	मंजूषा
७५	२	वत्सवर	वत्सतर	८६	९	आरीके २।	आरीके २।
७६	२	वंशां	वंशा	८६	१२	प्रतिबिंव	प्रतिविंब
७६	१७	रड्के ४।	रईके ४।	८७	१२	मग्नहूहि	नग्नहूहि
७६	२१	मंथान	मंथान	८८	[illegible]	ममा हुय	समा हुय
७६	२१	मथनी	मंथनी				
७७	१	करस	करभ				
७८	१	कुष्य	कुप्य				
७८	२	अश्मगर्भ	अश्मगर्भ				
	१०	मर्म	भर्म				
[illegible]	१८	मेड्डूर	मंडूर				
८०	१	अभल	अम्ल				
८०	२	रसांजनको ४।	रसांजनके ४।				
८०	८	नक्षुष्यातुसु	नक्षुष्यातु॥सु				
८०	२०	लोभ	लोम				
८०	२०	मधूच्छिष्ट	मधूच्छिष्ट				



नामसिंधुकोश

त्रितीयभाग

अर्थात

गुलाब कोश को संक्षेप अमरकोश के त्रितीय
काण्ड को सार

श्रीयुत चहुवाण वंशावतंस हड्डकुलकलशाबुन्दी
न्द्र महाराजाधिराज महाराव राजाजी श्री श्री
श्री श्री श्री १०८ रामसिंहजी के कविराव जी श्री
गुलाबसिंहजी कृत ॥१॥

—•(०)•—

आगरा

नगरे वेलनगंजे श्री पंडित केशव प्रसाद शर्म्मा
द्विवेदि प्रबंधेन विद्यारत्नाकरयंत्रे मुद्रितः ॥१॥
सन १८८५ ई०

श्रीगणेशायनमः। श्रीसरस्वत्यैनमः

अथनामसिंधुकोश

को तृतीयभाग लिख्यते

दोहा

ब्रह्मादिक वंदित चरन हरन अखिल अघजाल
दिनकर सुख संपति करन नमो नमो जन पाल १
उत्पति पालन प्रलयकर रुजहर त्रिभुवन नाथ
रचि यह ग्रंथ कृपायतन अब मुहि करहु सनाथ २

अथग्रंथ नियम लिख्यते॥ दोहा

रूपविशेष्य निघ्न रु तथा संकीर्ण रु नानार्थ ॥ ५ ॥
अव्यय चारि तरंग हैं कृत गुलाब स्वल्पार्थ ॥ ३ ॥
इच्छ अलुब्ध रु इच्छ पुनि स्वच्छ फक्क पहिचानि
बांट चीढ पर्म रु नवम टेक तु कांत हि जानि ॥ ४ ॥
शब्द अमर क्रम सैं धरे अनेकार्थ कान्तादि ॥ ५ ॥
कछु तजि अर्थ लु वह लिये देखि मेदिनी आदि ६

भागयवान के ३। उदार के २। सीधा के २। उद्योगी के
२। ज्ञाता के १०। नाम॥ दोहा॥ धन्य पुण्यवान म...

महाप्राये स्तु महेच्छ ॥ सुहृदये तौ हृदयालु जुग महोत्साह तौ इच्छ ॥ ५ ॥ महोद्यमैं हु वैज्ञानिके तु कृत मुरद कुशले अभिज्ञे ॥ शिक्षित निस्नाते रु कृती निपुणो प्रवीण रु । विज्ञ ॥ ६ ॥

मान्य के २ । संश्रयी के २ । दाक्षिण्य योग्य के ३ । अति दानी के ५ । नाम ॥ सोरठा ॥ पूज्य प्रतीक्ष्य द्विमानि । संश्रया पन्न मानसे तु ॥ संप्रायिक ह जुग जानि । दाक्षिणीये तौ तीन है ॥ ७ ॥ दाक्षिणा है दाक्षिणयै । दान शौंडे तौ वहु प्रदे रु ॥ स्थूल लक्षे ये गिराय अति दानी रु वदान्यै पञ्च ॥ ८ ॥

वडी उमर वाला के २ । शास्त्री के २ । पारखी के २ ॥ नाम ॥ सोरठा ॥ जैवातृके जुग जाणि । आयुष्मान हि शास्त्रवित ॥ तौ जुग अंतर्वाणि ॥ परीक्षक तु कारणिक जुग ॥ ९ ॥

वर दान देने वाला के २ । हर्षित के ४ ॥ नाम ॥ सोरठा ॥ वरद समर्द्धक दोय । विकुर्वाण प्रमनो वहारि ॥ हृष्ट मानसे सु होय । हर्षमाणो जुत चारि गानि ॥ १० ॥

उदास के ३ । प्रीति युत के २ । सरल चित्त के ३ । दाता भोक्ता को १ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ अंतर्मना तु दुर्मना विमना उत्क तु आहि ॥ उन्मना रु दाक्षिण सरले उदार सुकलै इकाहि ॥ ११ ॥

लीन के ३ । अभीष्ट मैं लगा के २ । प्रसिद्ध के ६ । गुण सैं प्रसिद्ध के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ आसक्त तु तत्पर प्रसित अथ । इच्छा युक्त ॥ उत्सुक हू विख्यात तौ वित्त रु विश्रुत उक्त ॥ १२ ॥ प्रथित प्रतीत रु मत आहत लक्षण सो तु ॥ कृत लक्षण है तीसरो गुण

प्रतीतं हि होतु ॥ १३ ॥ धनी के ३। स्वामी के ८ ॥ नाम ॥ दोहा ॥
इभ्यं तु आढ्य धनी पति तु परि वृढ प्रभु नेतारु अधिभू नायकं
ईशितं ईश्वर अधिप हि चारु ॥ १४ ॥ भरे पूरे के २। कुटुंब पाल
क के ३। वडा सुन्दर को १। नाम ॥ दोहा ॥ समृद्धस्तु आधिक
र्द्धि जुग कुटुंब व्यापृत सोतु ॥ अभ्यागारिक उपाधि हि सिंह सं
हनन होतु ॥ १५ ॥ दुख मै भी खुशी सें कार्य कर्त्ता को १। गूं
गा के २। पितृ तुल्य के २। अलंकृत कन्या दाता को १।
नाम ॥ दोहा ॥ इक निर्वार्य हि अवाक तु मूकं मनोजव सो
तु। पितृ सन्निभ हू कुकुंद तु कन्या दाता होतु ॥ १६ ॥ लक्ष्मीवा
न के ४। दयालु के ४। नाम ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण लक्ष्मीवान पु
नि श्रील चारि श्रीमान ॥ कारुणीकं स्तु कृपालु पुनि दयालु
सूरत नान ॥ १७ ॥ स्वतंत्र के ५। परतंत्र के ४। नाम ॥ दोहा ॥
निरवग्रह स्वैरी अपावृत स्वच्छंद स्वतंत्र ॥ पराधीन परवान च
व नाथवान परतंत्र ॥ १८ ॥ आधीन मात्र के ५। स्नेही के २।
वुहारने वाला के २। नाम ॥ दोहा ॥ म्हह्यक तो आयत्त पुनि
अस्वच्छंद अधीन ॥ निघ्न हू वत्सलं स्निग्ध जुग खलपू वहुकर
चीन ॥ १९ ॥ सुस्त के २ अविन्हारी के २। आलसी के २।
कार्य करने में समर्थ के २। कार्य मै लगे हुये के २। स-
दा काम मै लगे हुये के २। पूरा कार्य करने वाला के २।
नाम ॥ दोहा ॥ दीर्घ सूत्र तो चिरक्रिय हि समीक्ष्य कारी चीरा
॥ जल्म हु कुंठ तु मंद क्रिय अथो अलंकर्मीण ॥ २० ॥

कर्मोद्यत तु। क्रियावानैं मसहूर॥ कर्मशील तौ कार्मैं जुग। कर्म
ठ तु कर्म शूरें॥२१॥ मजूरके २। विना मजूरी काम कर्त्ता
को २। मांस खाने वाला के २। म्रतक खायी के २ नाम
।दोहा॥ भरव्यभृक तौ। कर्म कर कर्म कार इक तात॥ द्विआ
मिषाशी प्रोक्तलौं हि अपस्नात म्रतस्नातौं॥२२॥ भूखा के ४। प
रान्नजीवी के २। भक्षक। वा। खवैया। के २। नाम। दोहा
औदरिक तु। आद्यून जुग ऊंची इच्छा होन॥ आत्मंभरि कुक्षिंभ
रि सुस्वोदर पूरक चीन॥२४॥ सर्वभक्षी। वा। परमहंसादि
के २। लोभी के ७। अभिलाषाशील के ३। किसी के मत
मे पांचौं लोभी के। नाम॥ दोहा॥ जु सर्वान्नभोजी सु तौ। सर्वा
न्नीनं अतुब्ध॥ गर्द्धन ग्रध्नु हि तृष्णक तु। अभिलाषुक त्रय लु
ब्धौं॥२५॥ अतिलोभी के २। सिरडी के २। अन्यायी के २
मत्त। वा। मतवाला के ३। नाम दोहा॥ लोलुप लोलुभ
उन्मद तु। उन्म दिष्णु जुग सीव॥ समुद्धत तु अविनीत अपशो
ड तु। उत्कट सीवौं॥२६॥ कामी के १०। नाम॥ दोहा॥ का
मुक कामित कामन रु। अनुक रु। अभिक अभीक॥ कामयिता
कान्ने रु। कमन कामी जुत दशनीक॥२७॥ आज्ञाकारी के ४
। वशसे प्राप्त के २। नम्र। वा। सीखे हुये के ३। नाम॥ दोहा
विनयग्राही आश्रव रु। वचने स्थित रु। विधेयौं॥ वश्य प्रणेय
हि। प्रश्रितो निभृतो विनीत त्रिज्ञेय॥२८॥ ढीठ के ३। धृष्ट मा
मलज्ज के २। अन्जी के २। व्याकुल के २। डरपो

क के ६। नाम॥ दोहा॥ छत्मकं छ्दं वियातं त्रय प्रतिभान्वि तं तु प्रगल्भ॥ अध्रुष्टं तो प्रालीनं जुग विस्मयान्वित तु राल्भ॥ २९॥ जुग विलक्षं कातरं सु तो अधीरं त्रस्तु तु जोय॥ त्रस्तं भीरुं भीरुकं अपर भीलुकं भीतं हि होय॥ ३०॥ कहने वाला के २। लेने वाला के २। श्रद्धावान् को १। गिरने वाला के २। नाम॥ दोहा॥ आशंसु तु आशंसितां ग्रहीतां तु ग्रहयालु॥ श्रद्धालुं तु श्रद्धासहित पातुकं तो पातयालु॥ ३१॥ लोक लज्जा शील को १। वंदना करने वाला के २। वढने वाल के २। हत्यार के ३। नाम॥ दोहा॥ अपत्रपिष्णु तु एक अ थ अभिवादकं वंदारु॥ वर्द्धिष्णु तु वर्द्धनं जुगल घातुकं हिं स्त्र शरारु॥ ३२॥ उछलने वाला के २। गहना की इच्छा वाला के २। होने की इच्छा वाला के ३। वर्त्तने वाला के २। नाम॥ दोहा॥ उत्पतितं तो उत्पतिष्णु हि मंडन अलंकरिष्णु॥ भवितो भूष्णु भविष्णु त्रय वर्त्तनं तो वर्तिष्णु॥ ३३॥ निका रने वाला के २। मेघ। वा। चिकना के २। जानैया के ३। फूलने वाला के २। जाने वाला के ४। नाम॥ दोहा॥ निराकरिष्णु तु क्षिप्नुं जुग सान्द्र स्निग्ध तु होतु॥ मेदुरं ज्ञाता तो विदुरं विन्दु विकासी होतु॥ ३४॥ विकासशील विकस्वर हि विसृत्वर स्तु वखानि॥ चारि प्रसारी विसारी विस्टमरं जुस पहिचा नि॥ ३५॥ सहन शील के ६। क्रोधी के ३। बडा क्रोधी को १। नाम॥ दोहा॥ सहिष्णु तो क्षमिता क्षमी क्षन्ता सहनं ...

कोपी क्रोधी अमर्षण चंडं तु अति कुपङस्तु ॥ ३६ ॥ जागनेवाला के २। निद्रितके २। सोने वाला के ३। नाम ॥ दोहा ॥ जागरितो जागरूकहैं हि प्रचलायित तौ जानि ॥ घूर्णित हु निद्रालु तौ प्रायालु स्वप्नक मानि ॥ ३७ ॥ सोया के २। विमुख के २। अधोमुखी के २। देवपूजक को १। नाम ॥ दोहा ॥ निद्राणा तु शयितहैं हि पराचीन पराङ्मुखैं दोय ॥ अधोमुखस्तु अवाङ्मुख हि देवद्र्यङ् इक होय ॥ ३८ ॥ चारों ओरकों जाने वाला को १। साथ जाने वाला को १। तिर्छा जाने वाला को १ वक्ता के ३। वडा वक्ता के २। नाम ॥ दोहा ॥ विष्वद्र्यङ् सध्र्यङ् इकिक तिर्यङ् हू इक दीश ॥ वक्ता वद रु वदावदं हि वाक्पति तौ वागीश ॥ ३९ ॥ नैयायिक के २। वहुभाषी के २। अवाच्य कहने वाला के ३। नाम ॥ दोहा ॥ वाग्मी वाचोयुक्ति पटु वावदूक जुग थाट ॥ अतिवक्ता जल्पाक तौ वाचाल रु वाचाट ॥ ४० ॥ अप्रियवक्ता के ३। प्रियवक्ता के २। कुवादी के २। साफ न वोलने वाले के २। नाम ॥ दोहा ॥ दुर्मुख मुखर अवद्धमुख शक्तु प्रियंवद ताक ॥ हि गर्ह्यवादी कद्वद हि लोहल अस्फुट वाक ॥ ४१ ॥ दोषवादी के २। क्रूरवादी के २। पापकर्त्ता के २। आशिष सैं स्तुति कर्त्ता के २। महामूढ के २। गूंगा और वहिरा को १। चुप रहने वाला के २। नाम। दो० कुचर रु कुवाद हि अस्वर तु जुग असौम्य स्वर जानि ॥ खल तु पापी अथ नान्दी वादी मानि ॥ ४२ ॥ नान्दीकर अक्ष तु जड

हि॰ एडमूकँ इक होय॥ तूषणीं शीले तु दूसरो॰ तूषणीकँ हि जि
य जोय॥ ४३॥ नंगाके ३। निकाले हुयेके २। धिक्कारी
के २। टूटे अभिमानवाले के २। धनादि के दाता के २
निरादर किया हुवा के ४। नाम॥ दोहा॥ नग्न अवासं दि
गंवरँ हि निष्कासित अव कृष्टँ॥ अपध्वस्तं धिक्कृतं जुगल॰ आ
त गर्वं तो दृष्ट॥ ४४॥ अभिभूतँ हि दापित सुतो साधितँ प्रत्यादि
ष्ट॥ सुतो॰ निरस्त निराकृत रु प्रत्याख्यातँ हि इष्ट॥ ४५॥ विव
र्णीकृत के २। ठगाये के २। टूटे मन वाले के ४। नाम॥
दोहा॥ निकृतं विप्रकृतं वंचितंतु॰ विप्रलब्धँ जुग धारि॥ प्रति
हत हत प्राति वद्ध पुनि मनोहत हु चत्वारि॥ ४६॥ निंदित के
२। रज्जु आदि सैं निवद्ध। वा। कैदी के ३। विपत्ति मैं प्रा
प्त के २। नाम॥ दोहा॥ अधिक्षिप्तँ प्रतिक्षिप्तँ जुग॰ कीलित
संयत सोय॥ वद्ध हु आपत्प्राप्त तो आपन्नँ हु जुग जोय॥ ४७॥
डरे हुये के २। अपवादी के ३। चंचल के २। नाम। दोहा
कांदिशीक जुग॰ भयद्रुतँ आक्षारित अभिशस्त॥ क्षारितँ हू
अस्थिरँ सुतो संकसुकँ हि जुग शस्त॥ ४८॥ कष्टित के २। शो
कादि सैं व्याकुल के २। शोकादि सैं गात्रभंग के २। म
रणासन्न बुद्धि के २। नाम॥ दोहा॥ उपरक्त तु व्यसनार्त
जुग वि हस्त व्याकुलँ वी हि॥ विक्लव विह्वलँ विवश तो सु अरि
ष्ट दुष्टधीँ हि॥ ४९॥ वेत मारने योग्य के २। मारने योग्य के
वेर योग्य के २। शिरकाटने योग्य के २। नाम॥ दो॰

कश्य कशार्ह हि जुग. इक तु सु आततायी होय ॥ द्वेष्य अस्निगत वध्य तौ, शीर्षछेद्य जुगजोय ॥ ५० ॥ मारडारदेने योग्य को १ ॥

मूसल सैं मारने योग्य को १ । पुण्यात्मा के २ । बिना विचारैं मारने कौं ३ । धृतके २ । केवल दोषदर्शी के २ । कपटी के ३ । चुगुल के २ । दुष्ट को ३ । ना. ॥ दोहा ॥

विध्य मुसल्य इक एक इक. अकस्मकर्म सोतु ॥ द्वैष्यैकदान चपल तु विकुर्वज्जु, पुरोभागी होतु ॥ ५१ ॥ सुदोषैकदृक निकृत तौ अन्दजु शठ हि त्रय जानि ॥ सूचक करौं जप खलतु दुर्जन पिशुन त्रिमानि ॥ ५२ ॥ हिंसक के ४ । कलीके २ । मूर्ख वा । अज्ञ के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ घातुक क्रूर न्दृशंस चव, पापैं वंचक तु धूर्त्त ॥ यथाजात वैधेय बालिश्रीरु मूढ चव धूर्त्त ॥

कृपणा के ५ । दरिद्र के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ क्षुद्र अनमित पच्च कृपण किंपच्च कदर्य जानि ॥ निस्वतु दुर्गत दुर्विध रु. दीन दरिद्र बखानि ॥ ५४ ॥ याचक के ४ । अभिमानी के २ । शुभयुक्त के २ । नाम ॥ दोहा ॥ अर्थी मार्गण याचनक वनीयक हि जु. अहंयु ॥ अहंकारवान हि जुगल, शुभान्वित स्तु शुभंयु ॥ ५५ ॥ देवता की । मनुष्य पशु आदि की । कीटादि की । पक्षी सर्पादि की उत्पत्ति ॥ दोहा ॥ देव. दिव्य उपपादक हि जरायुज तु न्दगवादि ॥ स्वेदज कृमि दंशादि है, अंडज सर्प खगादि ॥ ५६ ॥

इति विप्रादि वर्ग समाप्त

अथ द्वितीयप्रकरण लिख्यते

वृक्ष। लता। घास आदिकी उत्पत्ति को १ उद्भिद के ३। सुन्दर के १२ परम सुन्दर को १ नाम ॥ दोहा ॥ उद्भिदं तरु गुल्मादि हैं उद्भिज तो उद्भिज्ज ॥ उद्भिदं रु चिरं तु शोभने रु सुन्दरं मंजुलं धिज्ज ॥ ५७ ॥ रुच्य चारु मंजु रु सुसमं साधु मनोरमं कांतं ॥ अरु मनोज्ञं द्वादश इक तु असेचनकं अति कांत ॥ ५८ ॥ प्यारा के ६। अधम के १२। मैली वस्तु के ४। नाम। दोहा हृद्यं अभीप्सित प्रिय दयितं अभीष्टं वल्लभं इष्ट ॥ याप्य तु प्रति कृष्टं रु अवमं अर्वा रेफ निकृष्ट ॥ ५९ ॥ गर्ह्य खेट कुत्सित अणकं और कुपूय अवद्यं ॥ मलीमसं तु कच्चरं मालिनं मलदूषितं चवसद्य ॥ ६० ॥ पवित्र। वा। साफ के ३। स्वभाव निर्मल को १। मल रहित के ५। नाम ॥ दोहा ॥ पूतं तु मेध्यं पवित्रं त्रय वीध्रं एक ही बोध्य ॥ म्टष्टं नेरीक्तं शोधितं रु अनवस्करं निः शोध्यं ॥ ६१ ॥ निर्वल के २। खाली के ४। मुख्य के १६। नाम ॥ दोहा ॥ फल्गु असारं द्वि शून्यं तो रिक्तकं वशिकं रु तुच्छ ॥ प्रमुखं प्रधानं अनुत्तमं रु प्रवेकं उत्तमं स्वच्छ ॥ ६२ ॥ अग्रं प्राग्रहर प्रवर्हं रु आग्रियं रु अनवराद्ध्यं ॥ अग्र्य अग्रीयं पुनि प्राग्र्य वरेण्यं परार्ध्यं ॥ ६३ ॥ श्रेष्ठ के ५। श्रेष्ठार्थवाचक के ७। अथ प्रधान के ३। नाम ॥ दोहा ॥ पुष्कल सत्तमं श्रेष्ठ पुनि अति शोभनं श्रेयानं ॥ पर पदाथित श्रेष्ठार्थक तु उक्षं वं कुंजर जान ॥ ६४ ॥ ऋषभं सिंहं अरु

शार्दूल रु नागादि ॥ अप्रधाने अग्राम्यं पुनि उपसर्जनं त्रयवा दि ॥ ६५ ॥ विस्तीर्ण । वा । फैलेहुये के ८ । मोटा के ७ नाम ॥ दोहा ॥ वड्ड विशंकट पृथु पृथुल विपुल रु वृहत विशाल महत्त्व हु पीनं तु पीवरं रु स्थूल रु पीवं सालं ॥ ६६ ॥ थोडा के ३ । सूक्ष्म । वा । मिहीके ११ नाम ॥ दोहा ॥ अल्पं तु क्षुल्लकं स्तोकं त्रय सूक्ष्मं तु श्लक्ष्णं वेश ॥ कृशं तनुं लवं कणं दभ्रं अणुं मात्रां त्रुटिं अरु लेशं ॥ ६७ ॥ बहुत थोडा के ५ । भूरि । वा । अधिक के ११ । गिनने योग्य के २ । गिनेहुये के २ नाम ॥ दोहा ॥ अत्यल्पं तु अल्पिष्ठं है अरु अल्पीयं कणीयं ॥ अणीयं अथ वहुं प्रचुरं पुरुं प्राज्यं प्रभूत गनीय ॥ ६८ ॥ वहुलं भूयं भूयिष्ठं स्फिरं पुरहं अदभ्रं हि तात ॥ गणनीयं स्तु गणेयं जुग गणितं सुनो संख्यातं ॥ ६९ ॥ सब । वा । निःशेष । वा । अनून के १४ । नाम ॥ दोहा ॥ सर्वं विश्वं अखिलं रु निखिलं सकलं समस्तं अशेषं ॥ पूर्णं अखंडं समग्रं समं कृत्स्नं अनूनं निशेषं ॥ ७० ॥ सघन । वा । निविड के ३ । विरला । वा । अलग अलग के ३ । नजदीक । वा । पास के १५ । संलग्न । वा । मिले के ३ । अतिनिकट के २ । नाम । दोहा घनं तु निरंतरं सांद्रं तनुं पेलवं विरलं हि तीन ॥ निकट समीप सनीड अरु सान्निकृष्ट गुन लीन ॥ ७१ ॥ समर्याद आसन्न उपकंठ सावेशं अभ्यासं ॥ अभ्यर्णं अभ्यग्रं पुनि अंतिकं अभित ... ॥ ७२ ॥ और संवेशं सदेशं अथ अव्यवहितं संप्राप्तं ॥

अपटांतरं अंतिकतमे तु नेदिष्ठ हि जुग फक्त॥७३॥ दूरके २। अति दूरके ३। लंबा के ३। नाम॥ दोहा॥ विप्रकृष्टक तु दूरं ही दविष्ठ सो तु सुदूर॥ त्यतिय दवीयसं दीर्घ तौ आयतं जुग ही पूर॥७४॥ गोल के ३। झुका हुवा ऊंचा के २। ऊंच के ६। छोटा के ४। औंधेमुखके ३। नाम॥ दोहा॥ वर्तुलं निस्तलं वृत्तं त्रय उन्नतानत तु दोय॥ वंधुरं उच्चं तु उन्नतं रु प्रांशुं उदग्रं विजोय॥७५॥ उच्छ्रितं तुंगं हि वामनं तु खर्वं ह्रस्वं न्यक् नीचं॥ आनतं सु तौ अवाग्रं अरु अवनतं तीन अपीच॥७६ वक्र। वा। टेढा के १०। सीधा के ३। नाम॥ दोहा॥ वृजिनं अरालं अभिमत वेल्लितं कुंचितं जिह्मं॥ कुटिलं भुग्नं आविद्धं नतं ऋजु तो प्रगुणं अजिह्मं॥७७॥ आकुल के ३। नित्य। वा। सनातन के ४। अति स्थिर के ३। नाम॥ दोहा॥ व्यस्तं अप्रगुणं आकुलं हि ध्रुवं तु सदातनं आन॥ शाश्वतं नित्यं हि स्यास्नु तो स्थिरतरं त्रय स्थेयानं॥७८॥ स्थिर को १। अचर के २। चलने वाले के ६। नाम॥ दोहा॥ इक कूटस्थं हि स्थावरं तु जंगमेतरं हि दोय॥ जंगमं चरं त्रसं चराचरं इंगं चरिष्णुं रु होय॥७९॥ कांपने वाले के ३। चंचल के ७। नाम॥ दोहा॥ चलनं तु कंपनं कंप्रं त्रय चलं तु चलाचलं लोलं॥ पारिप्लवं चंचलं तरलं सात परिप्लवं बोल॥८०॥ अधिक के ३। वडा मिलापी के २। कठिन के ६। वहुत वढे हुये के ३। पुराने के ६। नाम॥ दोहा॥ अतिरिक्तं तु ...

कें सुनल संहत तो दृढ संधैं॥ कक्खटं कठिने कठोर दृढ निष्ठु
रं प्रवंधि॥ ८१॥ जठरं मूर्त्तिमतं मूर्त्त त्यशाधीतं प्रौढं प्रवढं
॥ प्रत्नं पुरातनं चिरंतनं प्रत्न पुराणं हि वृद्ध॥ ८२॥ नव्य।
वा। नया के ७। कोमल के ४। नाम॥ दोहा॥ प्रत्यग्र
तु अभिनवं रु नवं नूतनं नूत्नं नवीनं॥ सुकुमारं तु कोमलं
मृदुलं मृदुं जुत चारि प्रवीन॥ ८३॥ पाछे के ५। प्रत्यक्ष
के २। अप्रत्यक्ष के २। नाम॥ दोहा॥ अन्वक्ष तु अनुप
दं अनुगं अन्वकं अथ प्रत्यक्ष॥ ऐंद्रियकं हु जु अतीन्द्रियं
सु दूजो अप्रत्यक्षं॥ ८४॥ एकाग्रचित के ६। नाम॥ दो
हा॥ एकताने एकायनं रु एकसर्गं एकाग्रं॥ एकायनगत
नाम षट् अनन्य वृत्तिं समग्र॥ ८५॥ आदि के ६। अंत
के ५। नाम॥ दोहा॥ आद्यं पूर्वं आदिमं प्रथमं षट् पौरस्त्यं
रु आदिं॥ पाश्चात्यं तु पश्चिमं चरमं अंत्यं जघन्यं विवादि॥
८६॥ व्यर्थ के २। साफ के ४। साधारण के २। नाम
दोहा॥ मोघं निरर्थकं स्फुटं सुनो उल्वणं अरु प्रव्यक्त॥
स्पष्टं हु साधारणं सुनो जुग समान्यं हि उक्त॥ ८७॥ अ
सहाय के ३। भिन्न के ६। वहुत प्रकार का के २। ज
ल्दी के २। मर्म भेदी के २। अवाधित के २। नाम। दो
हा॥ एकाकी तो एककं रु एकं हु भिन्न तु अन्य॥ इतरं
अन्यतरं एकं त्वं हि अथ उच्चावचं गन्य॥ ८८॥ नैकभेदं
तो अविलंवितं जुग साधं॥ मर्मस्पृक् तु अरुंतुदं हि मि

र्गले स्तुअबाधं॥ ८९॥ उलटाके ४। बाया अंग को १। दहि
ना अंगको १। नाम॥ दोहा॥ अपसव्यं स्तु प्रसव्यं प्रतिकू
लं अपष्टु वखानि॥ वाम सव्यं अपसव्यं तौ दक्षिण अंगहिजा
नि॥ ९०॥ सकडे मार्गादिके २। दुःप्रवेशके २। नानाजा
तिकी गचापची के ३। मुंडितके २। नाम॥ दोहा॥ संकटं
संबाधं हि कलिलं गहनं हि संकुलं सोतु॥ आकीर्णं रु संकी
र्णं परिवापितं मुंडितं होतु॥ ९१॥ गठियाया के ३। फैल
के ३। भूले के २। मिले। वा। पाये के २। नाम। दोहा॥
ग्रंथितं संदितं दृब्धं ततं विस्तृत विस्तृतं त्रितीन॥ अंतर्गतं वि
स्मृतं जुगल प्राप्तोहितं आप्न प्रवीन॥ ९२॥ थोडे कंपित के ६।
भेजहुये के ७। घेरहुये के २। चुराये के २। फैलने के २।
नाम॥ दोहा॥ वेल्लितं प्रेंखितं धूतं धुतं कंपितं चालितं क्षि
द्ध॥ नुत्तं नुन्नं निष्ठतं अरु अस्तं क्षिप्तं आविद्ध॥ ९३॥ ईरितं सा
तहि निवृतं तौ परीक्षिप्तं जुगजोय॥ मूषितं मुषितं हि प्रस्तं
तो द्वितिय भव्हद्धं हि होय॥ ९४॥ फेंके के २। गुणे हुये के २
बढे के २। छिपे के २। धूलिलगे के २। नाम॥ दोहा॥
न्यस्तं निस्रष्टं हि आहतं तु गुणितं हि उपाचितं सोतु॥ निदि
ग्धं गूढ तु गुप्तं जुग गुंडितं रूषितं होतु॥ ९५॥ रसीले के २
उठाये हुये शस्त्रादिके २। छींका मे धरे के २। सूंघे के २
चंदनादि लगाये के २। नाम॥ दोहा॥ द्रुतं अवदीर्णं हि
उद्यतं तु उद्गूर्णं हे जुग दिप्त॥ काचितं शिक्यितं घ्रातं तो

प्रातं दिग्धं तो॰ लिप्तं ॥ ९६ ॥ कूपादिसैं निकाले के २ नदी आदिसैं घिरेके ४ टूटेके २ नाम ॥ दोहा ॥ उद्धृत तो॰ समुदक्तौं जुग॰ वेष्टित तो संवीत ॥ रुद्ध रु॰ आवृत वलयितौ हि॰ रु ग्नं जुगमीत ॥ ९७ ॥ तीखे के ४ पके के २ लज्जित के ३ । हत्त । वा । वरण । किये के २ । नाम ॥ दोहा ॥ प्रात तु॰ क्ष्णुत तेजित निशितं विनापोन्मुखं तु॰ पक्वौं ॥ ह्रीण ह्रीतं लज्जितं हि॰ वृत तो॰ वावृत्तं हि तक्व ॥ ९८ ॥ मिलायेके २ । मिलनेयोग्यके ३ । वहते के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ संयोजित तु उपाहितं हि॰ समासाद्यं तैं प्राप्य ॥ गम्यं हु॰ रीणं तु॰ स्यन्नं स्रुतं स्नुतं जुत चारि हि थाप्य ॥ ९९ ॥ जोडे हुये के २ । निंदित के २ । नाना प्रकार के ४ । धिक्कारे के २ । पिसे के २ । सहजा किये के २ । नाम ॥ दोहा ॥ संगूढं तु॰ संकालितं जुग ख्यात गर्हणीत तु॰ कुत्स॰ ॥ अवगीतं हि॰ वहुविध सुतो॰ विविध रु॰ नानारूप ॥ १०० ॥ पृथग्विधं हु॰ अवरण तो॰ धिकृतं जुग ही वांछ ॥ अनुध्वस्तं अवचूर्णितं हि॰ अनायासकृत फांट ॥ १०१ ॥ बाजते के २ । बंधे के ६ । अच्छे पके के २ । नाम ॥ दोहा ॥ स्वानित ध्वानितं जुग॰ बद्ध तो॰ संदानित सित मूत ॥ संदित्त मुदितं हि कीलितं तो॰ निष्पक्वं हि जुग कृत ॥ १०२ ॥ पके घी आदिको १ मुनि आग्नि आदि के मुक्त होने को १ पवन रहित को १ पके के २ हगे के २ मूते के २ । नाम ॥ दोहा ॥ प्रतं एक हि॰ निर्वाणं इक निर्वातं हु इक

चीढ ॥ पक्कं तु परिणातैं गून तौ हन्नैं हि मूत्रित मीढ ॥ १०३ ॥ क्षमायुक्त के २। मोटेके २। उलटी कियेके २। इंद्रियजित के २। मांगके २। मिट जाने के २। नाम। दोहा ॥ क्षांत सोढ पुष्ट तु पुषितैं उद्धृतं जुग उद्धांतैं ॥ दमितं दांतैं प्रार्थित सुतौ अर्द्दितैं शामितं तु शांतैं ॥ १०४ ॥ जानेहुये के २। ढकेके २। पूजेके २। पूरेके २। लेप्तिके २। नाम ॥ दोहा ॥ ज्ञप्त ज्ञापितैं छादित सुतौ छन्नैं हि पूजितं सोतु ॥ अंचितैं पूर्णां तु पूरितैं हि क्लिप्तिं लिप्तं जुग होतु ॥ १०५ ॥ समाप्तके २। जरे केठ। सूक्ष्मकियेके ३। छेदके। नाम ॥ दोहा ॥ अवसितं सितैं हीप्लुष्टैं नौ प्लुष्ट उषितं चव दग्धैं ॥ तष्टं तु त्वष्टं तनूकृतं हि वेधितं छिद्रितं विद्धं ॥ १०६ ॥ विचारके ३। निस्तेज के ३। पिघले घी आदिके ३। सिद्धके ३। फारके ३। विनेवस्त्र आदिके ३। पूजे के ६। सेवित के ४। नाम ॥ दो॰ विन्न विचारितं वित्तं त्रयनिःप्रभं विगते अरोकं ॥ विद्रुतं द्रुतं रु विलीनं त्रय अथ निर्वृत्तं त्रि थोक ॥ १०७ ॥ सिद्ध और निष्पन्न हू दारितं भेदितं भिन्नं ॥ ऊतं स्यूतं उतैं अर्हितं तु अर्चितं अपचितं गिन्न ॥ १०८ ॥ अपचायितं रु नमस्यितं रु नमसितं उपचरितं स्तु ॥ वरिवास्यितं वरिवसितं प्रानि उपासितं चव अस्तु ॥ १०९ ॥ दून। वा। तपेके ४। हर्षितके ६। नाम ॥ दोहा ॥ संतापितं धूपायितं रु धूपितं अरु संत...

हृष्टं मत्त प्रहृष्ट षट्, प्रमुदित प्रीत रु तृप्त ॥ ११० ॥ कटे के
च्चूये के ७ । नाम ॥ दोहा ॥ छिन्न छात लून रु वृक्ण दि
ते कृत्त रु दात ॥ स्रस्त ध्वस्त भ्रष्ट रु, गलित स्कन्न पन्न च्युत त
त ॥ १११ ॥ भूत । वा । पाये के ५ । ढूंढे के ५ । नाम ॥ दोहा ॥
लब्ध प्राप्त आसादित रु, भावित विन्न हि इष्ट ॥ अन्वेषित मा
र्गित स्टगित गवेषित रु आन्विष्ट ॥ ११२ ॥ गीले के ७ । गुप्त
। वा । रक्षित के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ आर्द्र सार्द्र क्लिन्न रु ति
मित स्तिमित समुन्न रु उत्त ॥ त्रात त्राण रक्षित अवित पत्र, गो
पायित जुत्त ॥ ११३ ॥ अवमत । वा । अपमान किये के ४ ।
त्यागे के ६ । नाम ॥ दोहा ॥ अवज्ञात अवगणित अवमा
नित अरु परिभूत ॥ त्यक्त तु उत्सृष्ट रु, विधुत हीन समुज्झित
धूत ॥ ११४ ॥ उक्त । वा । कहे के ६ । प्रतिपन्न । वा । जाने
गये के ६ । नाम ॥ दोहा ॥ भाषित अभिहित जल्पित रु ल
पित उदित आख्यात ॥ बुद्ध बुधित अवगत मनित अवसित
विदित हि तात ॥ ११५ ॥ अंगीकृत के १४ । स्तुति किये के
खाये गये के १७ । नाम । दोहा ॥ ऊरीकृत उररीकृत रु आ
श्रुत संश्रुत जानि ॥ प्रतिज्ञात अंगीकृत रु, सोय सम्माहित म
नि ॥ ११६ ॥ और उपश्रुत संविदित उपगत अरु संगीर्ण ॥ ईलि
त प्रस्त पणायित रु, प्रणुत गरात अपि गीर्ण ॥ ११७ ॥ पनित प
नायित अभिष्टुत वा शीर्त ईडित नात ॥ भक्षित चर्वित स्वादित
गीर्णित लिल अरु प्सात ॥ ११८ ॥ प्रत्यवसित अभ्यवहृत रु

अशितं भुक्तं अरु सोय॥अन्नं जग्धं अरु ग्लस्तं पुनि ग्रस्तं चतुर्दश होय॥११९॥ अतिशयार्थ मे ७ के १२ आदेश होते हैं॥ छप्पय॥ क्षिप्र होय क्षेपिष्ठ क्षुद्र क्षोदिष्ठ बखानो॥होय अभीप्सित श्रेष्ठ वरिष्ठ हि पृथु ठमानो॥ पीवरं स्तु स्थावेष्ठ वहुलं वंहिष्ठं सदागनि॥ वाढ सुतो साधिष्ठं व्यायतं तु द्राघिष्ठं हि भनि॥ वङ्कुतनु स्फेष्ठं गुरुं गरिष्ठं हि वामनं तु ह्रसिष्ठं जानिये॥ अथ वृंदारकं वृंदिष्ठं ये अतिशयार्थ मे मानिये॥१२०

इतिविप्रोध्यानिघ्नतरंगःसमाप्तः

अथ संका॰ ॥ तरंग लिख्यते॥*॥

साकल्य वचन को १ आसंग वचन को १ स्वतन्त्रता के २। विनाकारण स्थित्ति को १ नाम॥ दोहा॥ पारायण साकल्य वच परायण तु आसंग॥ दोय यदृच्छा स्वैरिता एक विलक्षण अंग॥१॥ शांति के ३। इन्द्रीनिग्रह के ३ सुकर्म के २। काम्यदान के २ नाम॥ दोहा॥ शांति शमथ शम दांति तो दमथ दम हि अवदान॥ कर्मवृत्त ह्र प्रवारण काम्यदानं जुगजान॥२॥ वशीकरण के २। उच्चाटन के २। कांपने के २। अघाये के ३। नाम॥ दोहा॥ वशक्रिया संवदनं जुग कामेरा तु मूलकर्म॥ विधूननं तु विधुवनं अवनं तर्पण प्रीणनं पर्म॥३॥ रक्षा करने के ३। सीने के ३। फूटने के ३। नाम॥ दोहा॥ परित्राण पर्याप्ति त्रय हस्तवारणं हि आहि॥ सेवनं सीवनं स्यूतं त्रय विदरण [illegible]

भेदो है॥ ४॥ गालीके २। अनुभवज्ञान के २। सर्वत्र व्याप्तिके २। भिक्षा के ४। काटने के २। कुशलानन्द के ३। नाम॥ दोहा॥ अभीषंग आक्रोशनौ है वेदनो तु सं वेद॥ अभिव्याप्ति संमूर्छनौ है भिक्षा याञ्चा भेद॥ ५॥ चारि अर्थना अर्दना वर्द्धन छेदन दोय॥ सभाजन तु आनंदन आमन्त्रनै त्रिजोय॥ ६॥ उत्तमोपदेश के २। हानि के २ लेने के २। इच्छा के ३। रक्षा के २। श्राद्ध के २। नाम दोहा॥ संप्रदाय आम्नाय जुग क्षिया दाय है ग्रहै ॥ वश तु कांति रक्षण सुतो त्राण रण तु करण आह॥ ७॥ छे दन के २। पकाने के २। बुलाने के २। वरदान के २। जराने के २। नीति के २। जीर्ण के २। नाम॥ दोहा॥ व्यध वेधै है पाक तु पचौ हवं ह्वाते है वर दत्ति॥ ओष तु प्ले ष है। न्याय नय ज्यानि तु। जीर्णा प्रहानि॥ ८॥ भ्रम के २। वढती के २। प्रसिद्धता के २। छूने के २। झरने के २। वढने के २। नाम॥ दोहा॥ भ्रम भ्रमि स्फाति तु। वृद्धि जु ग। प्रथा ख्याति जुग जोय॥ स्पृक्ति स्पृष्ट है स्रव तु। स्रव स स्यंदिं राधा दोय॥ ९॥ फरकने के २। सच्चा ज्ञान के २ जन्म के २। घी आदि के टपकाने के २। ग्लानि के २ ना म॥ दोहा॥ स्फुरण स्फरण है प्रमिति तो। प्रमा है। प्रसव प्रसूति॥ श्च्योत तु प्राघार है क्लम तु क्लमथ है जुग जुग ... ॥ १०॥ बडाई के २। मिलाप के २। प्रयोजन के २

झुकने। वा। आज्ञा करने के २। लोलने के २। नाम॥दोहा॥
उत्कर्ष तु अतिशय हि अथ श्लेष संधि विषपेस्तु॥आप्रय क्षेप
णं तो क्षिपा गीर्णो तु गिरि ही अस्तु॥११॥उठाने के २। उद्यम
के २। आश्रय के २। जीत के २। खुशी के २। कहने के
२। नाम॥दोहा॥उन्नय उ न्नाय हि गुरण उद्यमं श्रयणं
तु श्राय॥जयनं जय हि मादं तु मदं हि निगदं निगादं गनाय॥
१२॥मीजने के २। उद्वेग के २। अंगीकार के २। नमा
नने को १। नाम॥दोहा॥विमर्दन तु परिमलं हि उद्भ्र
म उद्वेग हि शुद्ध॥अभ्युपगति अनुग्रह हि निग्रह तासु विरुद्ध॥१३॥
लडाई मै पुकारने के २। मूंठी बांधने के २। लूटने के
३। बांधने के २। नाम॥दोहा॥अभिग्रह तु अभियोग जु
ग मुष्टि बंध संग्रहै॥डिंबं डमर विप्लव प्रसिति बंधन चार त्रिअ
ह॥१४॥संताप के ३। अपकार के २। अभिप्राय के अ
नु रूप चेष्टित के ३। प्रकृति के बदलने के। नाम॥
स्पर्श तु उपतप्ता स्पर्श विप्रकार तु निकार॥ इंगं आकार इंगि
तं हि जुग परिणाम विकार॥१५॥विरुद्ध करने के २। छीन
लेने के २। बटोरने के २। लेने के २। खेल मे पांव सैं
चलवा के २। चोरी करवा के २। युक्ति सैं शास्त्रादि नि
कालवा के २। नाम॥दोहा॥विक्रिय विकृति हि अपचय तु
क्षय द्वितिय अपहार॥समाहार तु समुच्चय हे अथ जुग प्र
त्याहार॥१६॥उपादान हि परिक्रम तु द्वि विहार हि अभिहार॥

अभिग्रहसौं निर्हारतो अभ्यवकर्षण चार॥ १७॥ नकल करवा के २। खर्चकों १ वढ़वाके २। वाहनजावाको १ मथवे दीजागवाके २। हिंसाके २। विघ्नके २ नाम। दोहा॥ अनुहारं तु अनुकारं व्ययं इकाहि प्रवृत्ति प्रवाह॥ प्रवहं एक। संयमं नियमं संयाम रु। यम आह॥ १८॥ यामं दियामं हि जागर जागर्यौ जुग जह॥ अभिचारं तु हिंसा करमं अंतराय प्रत्यूह॥ १९॥ पासके आश्रयके २। उपभोगके २। परिवारके २। वडा वियोगके २ नाम॥ दोहा॥ अंतिकाश्रयं तु उपघ्नहि उपभोगं तु निर्वेश॥ परिसर्पस्तु परिक्रिया विधुरं तु प्रविश्लेष॥ २०॥ अभिप्रायके के ३। संक्षेपके २। विगाडके २। नाम॥ दोहा॥ अभिप्राय तो छंद त्रय आशय समसन सोतु॥ संक्षेपणं हि विरोधनं तु द्वि पर्यवस्था होतु॥ २१॥ सब ओर फैलवाके २। आसनके ३ विस्तारके ३। नाम॥ दोहा परिसर्यो परिसारं जुग आस्या तो स्थिति जानि॥ आसनौं हि विस्तारं तो विग्रह व्यासं त्रिमानि॥ २२॥ शब्द विस्तारको २। अंगमीजवाके २। लोपके २। परिचयके २ नाम। दोहा॥ विस्तरं इक संवाहनं तु मर्दनं जुगल विनाश॥ अ दर्शनं हि संस्तव सुतौ परिचय दोय प्रकाश॥ २३॥ घावके फैलनेके २। धनादिसंग्रहके २ परोसके २। अन्नका टवाके ३। नाम॥ दोहा॥ प्रसर विसर्पण प्रयामं तु नीवाक त्रैप्रग्राव॥ सान्निकर्षणं तु सान्निधि हि लव तुल वन अभिलाव

॥२४॥ अन्नादि साफ करवा के ३। प्रसंग के २। गरीब नावा के २। प्रथम गर्भ के २। नाम॥ दोहा॥ पवं तु पवन निष्पावं त्रय अवसर तो प्रस्ताव॥ त्रसर सूत्र वेष्टनं प्रजनं तो उपसर जुग भाव॥ २५॥ प्रेम के २। वृद्धि प्राप्ति के २। कोट के रस्ता के २। उद्योग के २। नाम। दोहा॥ प्रश्रये प्रणयं हि। निष्क्रम तु धी प्राप्तिं हि संक्राम॥ दुर्ग संचरं हि प्रक्रम तु उपक्रमं हि जुग नाम॥ २६॥ युद्ध के बढाव के २। प्रथमारंभ। वा। आरंभ मात्र के ३। वेग के २। नाम। दोहा॥ प्रयोगार्थं प्रत्युत्क्रमं हि आरंभ तु उद्घात॥ अभ्यादानं हु संभ्रमं तु त्वरां हि जुग जुग तात॥ २७॥ कार्य के रुकवा के २। गिरवा के २। साक्षात्कार के २। तिलक करवा के २। नाम॥ दोहा॥ प्रतिष्टंभं प्रतिबंधं जुग निपातनं तु अवनायं॥ अनुभवं उपलंभं हि समालंभं विलेपनं गाय॥ २८॥ स्नेह तोडने के २। अतिदान के। अति प्रसिद्ध के २। पदार्थों के देखने के २। पढवा के ३। गोल। करिवा के ३। क्लेश के ३। नाम॥ दोहा॥ विप्रलंभं विप्रयोगं हि अतिसर्जनं तु विलंभं॥ प्राविर्व्याप्तिं विश्रावं जुग प्रतिजागर तु अदंभ॥ २९॥ अवेक्षां हि पाठ तु निपठं निपाठं नेम तु स्तेम॥ ससुक्लं हु आदीनवं तु आश्रवं क्लेशं हि नेम॥ ३०॥ मेल के ३। ढूंढवा के ५। लिपटवा के ४। देखवा के ६। नाम। दोहा॥ मेलक संगम संगं त्रय। विचयनं मार्गणं देष॥ ...

सरा मृगणां म्हनैं । हि परिरंभं तु संश्लेषे ॥ ३१ ॥ परिष्वंग उपगूहनैं हि निर्वर्णनं निध्यानं ॥ आलोकनं रु. निरीक्षणं रु. ईक्षणं दर्शनं नान ॥ ३२ ॥ निराकरण ॥ तो ॥ निरादर करवा के ४ । मह र के सोने वाले के २ । चिन्तावा के ४ । उलटा पुलटा के ४ । अतिक्रम के ४ । सेवकों कौं बुलाकर भेजवा को १ यज्ञ मैं ब्राह्मण की स्तुति स्थान को १ जिसकों छुपे ना सुरस्वकर चढते हैं उसको १ नाम ॥ दोहा ॥ प्रत्या देश निराकृति रु. निरसन प्रत्याख्यानं ॥ उपशाय तु. विशाय जुग अर्त्तन सुरणं सुजान ॥ ३३ ॥ चारि. ऋतीयां हणीयां व्यत्यय तौ वित्यासं ॥ विपर्यास अरु. विपर्यय अतिक्रम सु प्रकास ॥ ३४ उपात्यय रु. अति पात पुनि. पर्यय चारि बखानि ॥ आतिप्रास नैं सत्तावैं अरु उदघनैं इक इक जानि ॥ ३५ ॥ रबे ता ॥ वासं नौ के २ । बरसा को १ वसाल जगे छक्कन को १ । अन्न आदि के निकालने के २ । छींक को १ डकार को १ व मन को १ । निगलवा को १ । निवृत्ति के ४ । थूकने के ४ हैं वाके २ । अंतके २ । ज्वर के २ पशुओं के ललकारने के २ नाम ॥ दोहा ॥ स्तंवघ्नं तु. स्तंवसनं जुग आदिवैं इक [illegible] आह ॥ उत्कार सु. निकार जुग विक्षाव रु. उद्ग्राह ॥ ३६ ॥ [illegible] अरु. उद्गारं निगार अवराति तु. विरति उपराम ॥ आर [illegible] निष्ठेवनं तौ । निष्ठेवन तिहिं नाम ॥ ३७ ॥ निष्ठीवनं निष्ठ्यू [illegible] नीजवनं जूति अवसानं ॥ सार्ति हि ज्वरे जूर्ति हि उदज पशु

भेरणाँ जुग नाम ॥ ३८ ॥ आपको १ उपगव का समूहको १ पूपा का समूहको १ पूरी का समूहको १ मनुष्यों का। लडकों का समूहको १ मित्रों का समूहको १ नाम ॥ दोहा ॥ अकरणों इक ओपगवकं हु आपूपिकं इक मानि ॥ प्राष्कुलिकं हु माणव्यं इक इक सहायतां जानि ॥ ३९ ॥ हलों का समूहको १ ब्राह्मणों का समूहको १ पशुडियों का समूहको १ पीठके समूहको १ खलों के समूहके २ नाम ॥ दोहा ॥ हल्यां इक ब्राह्मण्य तो वाडव्यं हि जुग जोय ॥ पार्श्वं एक्य इक इक जुगतु खले नीं खल्यां होय ॥ ४० ॥ मनुष्यों का समूहको १ गावों के समूहको १ जनों के समूहको १ धूवों के समूहको १ फांसी के समूहको १ वडी काश का समूहको १ नाम ॥ दोहा ॥ मानुष्यकं इक ग्राम तां जनतां धूम्यां जानि ॥ पाश्यां गल्यां आदि हु भिन्न भिन्न पहिचानि ॥ ४१ ॥ चर्मके समूहको १ हजारके समूहको १ अथर्वण के समूहको १ करसी के समूहको १ नाम ॥ दोहा ॥ चार्मणां अरु साहस्रं पुनि आथर्वणं कारीषं ॥ आदि शब्द तांहैं वृन्दमैं भिन्न भिन्न ही दीष ॥ ४२ ॥

इति संकीर्णतरंगः

अथ अनेकार्थतरंग लिख्यते ॥

नाकके २ लोकके २ श्लोकके २ प्रायकके [illegible]

॥दोहा॥ नाके त्रिदिव आकाश मे लोके भुवनजन जानि ॥ स्लोके पद्यपश शायके तु शर रु खड्ग मे मानि ॥१॥ जंबुक के २। पृथुक के २। आलोक के २। आनक के २। नाम ॥दोहा॥ जंबुके क्रोष्टु रु वरुण ही पृथुके चिपिट शिशु हेरि॥ आलोके तु द्योत रु दरश आनके पटह रु भेरि॥ २॥ अंक के २। कलंक के २। तक्षक के २। अर्क के २। नाम ॥दोहा॥ अंके तु चिन्ह रु गोद ही कलंक अंक कुवाद॥ तक्षके घाती नाग भिद अर्के स्फटिक रवि वाद ॥३॥ के ३। कं के २। पुलाक के ३। पेचक के २ ३। नाम ॥दोहा॥ के तु मारुत विधि रवि रं अंबु निहारि॥ पुलाके स्तु संक्षेप अरु तुच्छ धान्य नि ॥४॥ भक्तपिंड ह्व पेचके तु गज द्रुम मूल उपांत॥ धूकं हु करके तु दारिम रु ओला कर वो प्रांत ॥५॥ विनायक के ३। किष्कु के २। वृश्चिक के २। नाम ॥दोहा॥ विनायके तु बुद्ध रु गरुड गणपति किष्कु तु जानि ॥ हाथ बिलांद हि वृश्चिके तु बिच्छू राशि बखानि॥ ६॥ कौशिक के ७। नाम॥दोहा॥ कौशिके तो गुग्गुलु नकुल उल्लू व्यालग्राहि ॥ सुरपति अरु कोशज्ञ पुनि विश्वामित्र हु आहि॥ ७॥ आतंक के ३। क्षुल्लक के २। जैवातृक के ३। नाम॥दोहा॥ आतंके तु रुज ताप डर क्षुल्लके अल्प रु नीच॥ जैवातृ... आयु प्राप्ति कुश हू तीन अपीच॥ ८॥ पुंडरीक के ५।

नाम ॥ दोहा ॥ पुंडरीक २५ सित कमल अरु अग्नि कोण ग
जं जानि ॥ व्याघ्र कोश कारांतर रु सेत छत्र पन्च मानि ॥ ९ ॥
दीपक के ४। शालावृक के ३। नाम ॥ दोहा ॥ दीपक २६
रुक अलंकृत रु मोर शिखा अजवानि ॥ अजमोद हु शाला
वृक तु कोश्र्वानं कपि जानि ॥ १० ॥ अलीक के २। अनूक
के २। शल्क के २। नाम ॥ दोहा ॥ अप्रिय झूठ अलीक २७
है वंश स्वभाव अनूक २८ ॥ शल्क तु वल्कल खंड हीं जुगजुग अ
नूक ॥ ११ ॥ निष्क के ४। कल्क के ३। नाम ॥ दोहा
३१ [illegible] कनक उरभूषण रु सुवर्ण इक सो आठ ॥ दीनार हु
३२ [illegible] मल रु नम दंभ हि पाठ ॥ १२ ॥ पिनाक के २।
धेनुक के २। कालिका के २। नाम ॥ दोहा ॥ पिनाक ३३
२ शंकर धनुष रु शूल धेनुक ३४ सो तु ॥ करिणी धेनु हि कालि ३५
का काली घनगन होतु ॥ १३ ॥ कारिका के ४। कर्णिका
के ३। नाम ॥ दोहा ॥ कारिका ३६ तु कृति यातना नट ति
शिल्प हि रंज ॥ कर्णिका तु श्रुति भूषण रु करि कराग्र मध्य
कंज ॥ १४ ॥ वृंदारक के ३। एक के ५। नाम ॥ दोहा ॥
वृंदारक ३७ तो देव अरु सुन्दर श्रेष्ठ बखानि ॥ एक ३८ तु इक मु
ख्य रु इतर केवल श्रेष्ठ पिछानि ॥ १५ ॥

इति कान्ताः

मयूख के ३। शिलीमुख के २। शंख के ३। नाम ॥ दो
हा ॥ मयूख ज्वाला छवि किरण ॥ शिलीमुख तु अलि [illegible]

ग्रंथै तु इक निधि कंबु अरु ललाटास्थि त्रय जाण ॥ १६ ॥

ख के ६। शिखा के ३। नाम ॥ दोहा ॥ खैं तु इंद्रिय पुर क्षेत्र अरु शून्य बिन्दु आकाश ॥ शिखैं सु तौ ज्वाला किरण चोटी तीन विभाश ॥ १७ ॥ इति खांताः ॥

नग और अग के २। आशुग के २। खग के ३। पतंग के २ नाम ॥ दोहा ॥ नगैं अग तो गिरि वृक्ष ही आशुगै वायु रु बाण ॥ खगैं शर अर्क विहंगैं त्रय पतंगैं रवि खग जाण ॥ १८ ॥ पूग के २ स्त्रग के ३। वेग के २। नाग के २। नाम ॥ दोहा ॥ पूग सुपारी वृंद ही स्त्रगैं उडु हेर स्त्रगौं दि। वेगैं प्रवाह रु शीघ्रतौ नागैं तु गज अहि वादि ॥ १९ ॥

पराग के ४। सर्ग के ५। नाम ॥ दोहा ॥ परागैं सु उवटने ग्रहण धूलि पुष्प रज भाव ॥ सर्गैं त्याग अध्याय अरु निश्चय स्टष्टि स्वभाव ॥ २० ॥ योग के ५। भोग के ४। नाम। दोहा ॥ योगैं उपाय रु सन्नहन संगति युक्ति रु ध्यान ॥ भोगैं तु अहि कोडील फण सुख तिया दि भ्याति नान ॥ २१ ॥ सारंग के ३। गो के ८। नाम। दोहा ॥ सारंगैं तु चातक हरिण क बुरंग त्रि धारि ॥ गौ दिव भू पशु वाक दिश वज्र किरण दग वारि ॥ २२ ॥ वरांग के २। प्रटंग के २। भग के ७। नाम। दोहा ॥ वरांगैं सु शिर योनि ही प्रटंगैं तु प्रसुतो सानु ॥ भग श्री कांम महात्म अरु वीर्य वत्न जस भानु ॥ २३ ॥

इति गांताः

परिघके २। ओघके २। अर्घके २। अघके ३। नाम ॥दोहा॥ परिघं तु मारवे अस्त्रभिद ओघे वृंदे जव आप॥ अर्घे मोले पूजा विधि हि अघं दुख व्यसन रु पाप ॥ २४ ॥ इति घांताः ॥

काचके ३। प्रपंचके ३। नाम ॥ दोहा ॥ काचं तु कीको म्द्रछिदे रु नेत्ररोग त्रय वीन ॥ प्रपंचस्तु विपरीत अरु ठगवौ विस्तरं तीन ॥ २५ ॥ शुचिके ६। रुचिके ४। नाम। दोहा॥ शुचिं पावक सित मासाभिद ग्रीष्म शुद्ध शृंगार ॥ रुचिं शोभा अभिलाष कर आभष्वंग निर्धार ॥ २६ ॥ इति चांताः ॥

अच्छके २। गुच्छके २। कच्छके ३। नाम ॥ दोहा ॥ अच्छे प्रसन्न रु रीछ ही गुच्छे स्तवक अरु हार ॥ कच्छे पहरवो जलतट रु वस्त्र छोर निर्धार ॥ २७ ॥ इति छांताः ॥

अहिभुजके २। द्विजके ३। अजके ६। नाम ॥ दोहा ॥ अहिभुजं केकी गरुड ही द्विजं रद विप्र विहंग ॥ अजं तु विष्णु हर छाग विधि रघुसुत और अनंग ॥ २८ ॥ ध्वजके ३। धर्मराजके ३। कुंजके २। नाम ॥ दोहा ॥ ध्वजं तु अंध्व अरु गोष्ठ चयं धर्मराजं यम बुद्ध ॥ युधिष्ठिर रु कुंजं तु रदन गजको कुंजौ रु शुद्ध ॥ २९ ॥ वजलके ४। प्रजाके २। अब्जके २। नाम ॥ दोहा ॥ वजलं तु गोपुर क्षेत्र पानि शास्य रु संगर चारि ॥ प्रजा जन रु संतान जुग अब्जं शंख प्राशी धारि ॥ ३० ॥ इति जांताः

॥ क्षेत्रज्ञके २। संज्ञाके ४। नाम। दोहा ॥ क्षेत्रज्ञं तु आत्मा चतुर संज्ञा मति रविनारि ॥ गायत्री हस्तादि करि अर्थ सूचना

चार ॥ ३१ ॥ इति ठांता ॥ कष्ट के २। काष्ठ के २। पिपि
ष्ट के २। नाम ॥ दोहा ॥ कष्ट दुःख काष्ठ ही काष्ठ तु
केसरि गज गालैं ॥ पिपिष्ट तु शिव दुःख में रुजसें पीर वि
नवालैं ॥ ३२ ॥ कष्ट के ३। अरिष्ट के ४। नाम ॥ दोहा ॥ कष्ट
अकाज अभिमान पुनि तीक्ष्णरसौं हू जानि ॥ अरिष्ट मदिरा शु
भ अशुभ मरण चिन्ह पहिचानि ॥ ३३ ॥ कूटके ८। नाम।
दोहा ॥ कूट तु माया निश्चल रु अंत्र रु कैतव राशि ॥ अन्त
अयोघन गिरि शिखर अरु सीरांग प्रकाशि ॥ ३४ ॥ त्रुटि
के ४। दृष्टि के ३। स्पष्ट के २। नाम ॥ दोहा ॥ त्रुटि संशय
अल्प रु समय लघु इलायची च्यार ॥ दृष्टि ज्ञान दर्शन नयन
स्पष्ट तु व्यक्त निर्धार ॥ ३५ ॥ इति टांता ॥ कोष्ठके ३। ज्येष्ठ
के ४। नाम ॥ दोहा ॥ कोष्ठ तु कोठी उदर मध्य अंतर्गृह हि
अगृह ॥ ज्येष्ठ तु अग्रज मासभिद अति उत्तम अति वृद्ध ॥ ३६ ॥
इति ठांता ॥ इडा। और इला के ६। कांड के ६। नाम
दोहा ॥ इडा इला तो गो धरनि वाणी बुधकी नारि ॥ कांड दं
ड नि दित वर्ग बाण रु अवसर वारि ॥ ३७ ॥ इति डांता ॥
गाढ के २। प्रगाढ के २। दृढ के २। नाम ॥ दोहा ॥ गाढ
स तो अत्यर्थ अरु अतिजों हु जुग अर्थ ॥ प्रगाढ सु दुख अति
गाढ हि दृढ तो स्थूल समर्थ ॥ ३८ ॥ इति ढांता ॥ पण के ५।
गुण के ५। नाम ॥ दोहा ॥ पण द्यूतादि रु मोल धन स्तुति उ
द्यमे हि वादि ॥ गुण चिल्ला आवृत्ति रु सत्व शुक्ल संध्यादि

दि॥३९॥स्थराके ३।वरीके ४।नाम।दोहा॥स्थौ निर्व्यापार स्थिति रु।महर।कालभिदं वादि॥वरौ तु अस्त्रं स्तुति अरु त्व्रू।द्विजादिं सत्कादि॥४०॥अरुगाके ३।ग्रामणीके ३।नाम दोहा॥अरुणौ तु रविको सारथि रु।रविरु।लाल रंग तीन॥ग्रामणीं तु।नापित रु।वरं ग्रामाधि पैं त्रयवीन॥४१॥तीक्ष्णके ४।प्रमाणके ५।नाम॥दोहा॥तीक्ष्णं तु विष रग लोह खरं प्रमाणंस्तु मर्यादे॥हेतुं रु ज्ञाता पांचही।शास्त्र इयत्ता वाद॥४२॥करणके ३।संसरणके ३।नाम॥दोहा॥करणं तु साधकतमे रु तनुं क्षेत्र इन्द्रियं हि धारि॥संसरणं तु।प्राणी जनम सडक चमू गतिभारि॥४३॥विषाणके २।प्रवणके ३।नाम॥दोहा॥विषाणौ स्तु।पशुसींग अरु।गजको दंत द्वि मानि॥प्रवणौ क्रमनिम्न भूमि अरु।नम्र चतुष्पथं जानि॥४४॥ इति णांताः॥

जीमूतके ४।हस्तके ४।नाम॥दोहा॥जीमूतं तु ध्यातिकर रु।घन देवताड गिरिं जोय॥हस्तौ हाथ अरु।सूंडि उडु समको सकरं होय॥४५॥सूतके ७ [illegible]॥दोहा॥सूतं तु तक्षा सारथि रु।विप्र क्षत्री पूत॥वंदि भेद पारद अपर प्रेरित और प्रसूतं॥४६॥क्षत्ताके ३।वृत्तान्तके ४।नाम॥दोहा॥क्षत्ता सारथि दास्य अरु।शूद्र क्षात्रिय जातं॥वृत्तान्तं तु प्रकरण रु भेद वार्ता [illegible] हिताता॥४७॥आनर्त्तके ३।कृतांतके ४॥नाम॥दोहा॥आनर्त्तं तु चर न्त्यको समर रु।देश विशेष॥कृतान्तं यम सिद्धान्त पुनि दैवं रु पापं अशेष॥४८॥धातुके ७।नाम॥दोहा॥

धातु तु अन्न विकार अरु। इन्द्रियं रस रक्तादि॥ महाभूत तिनके
गुरा रु। प्राब्द योनि स्नेषादि॥४९॥ भूति के ३। भोगवती के २
नाम॥ दोहा॥ भूति भस्म सम्पत्ति पुनि दंती को सृंगार॥ भोग
वती तो अहिन की नगरी सरिता चार॥५०॥ जगती के ४। पंक्ति
के ३ नाम॥ दो॰॥ जगती जन अरु। भवन भू छन्द सु द्वादस
अंक॥ पंक्ति तु। आली दशागनाति छन्द चरण दश अंक॥५१
श्रुति के ४। वनिता के २ नाम॥ दोहा॥ श्रुति तु श्रोत्र आम्ना
य पुनि। वार्त्त श्रोत्र को कार्य॥ वनिता जाता राग तिय अरु। तिय हू
को नाम॥५२॥ गुप्ति के ४। च्छाति के ४ नाम॥ दोहा॥ गुप्ति
दोष दिल भूमि को कारा रक्षा लेखि॥ च्छाति योगांतर धैर्य मख तु
धृति धारणा देखि॥५३॥ वार्त्ता के २। वार्त्त के २। घृत के २।
नाम॥ दोहा॥ वार्त्ता सो तो। वृत्ति पुनि। जानि जन श्रुति दोय॥
वार्त्त अरोग रु। फल्गु जुग। घृत तु। आज्य जल होय॥५४॥ अमृ
त के ८। नाम॥ दोहा॥ अमृत सलिल पियूष घृत यज्ञशेष
सुर जानि॥ धन्वंतरि रु। अयाचित रु। मोक्ष कु आठ बखानि॥५५
भूत के ९। नाम॥ दोहा॥ भूत तु जंतु रु क्ष्मादि वृत अचित
माप्त सम जोय॥ सत्य पिशाचादिक अपर। देव योनि इक होय
॥५६॥ अभिनीत के ५। संस्कृत के ३। नाम॥ दोहा॥ अभि
नीत तु आत संस्कृत रु युक्त रु मर्षी ताने॥ संस्कृत भूषित कृ
त्रिम रु। न सम जुत हि प्रवीन॥५७॥ प्रतीत के ३। अभिजा
त के ३। नाम॥ दोहा॥ प्रतीत सु। विख्यात अरु। साद हृष्ट नि

हारि॥अभिजातं तु पंडितं अपर न्याय्य कुलीनं विचारि॥ ५८॥ इति तांताः॥अर्थके ४। तीर्थके ४॥नाम॥दोहा॥अर्थं प्रयोजनं वस्तु रै अरु निवृत्ति अभिधेयँ॥तीर्थं तु गुरु क्रतु पुण्य जल निपानं आगमँ ज्ञेय॥ ५९॥समर्थके ३। दशमीस्थके ३।नाम॥दोहा॥समर्थं संबद्धार्थं अरु शक्तिमानं हितं जानि॥ दशमीस्थं तु अति वृद्ध अरु क्षीणरागँ पहिचानि॥ ६०॥वीथी के २। आस्थाकू २। प्रस्थ के २ नाम॥दोहा॥वीथी पदवी पंक्ति अथ आस्था सभा उपाय॥प्रस्थं मान को भेद अरु गिरि को अग्र गनाय॥ ६१॥ इति थांताः॥कन्द के २। अब्द के २। अपवादके २। दायादके २।नाम॥दोहा॥कन्दं अधीनं रु आशयँ हि अब्दं वर्ष घनं वाद॥अपवादं तु निंदा हुकमँ सुत बांधव दायादं॥ ६२॥पादके ३। शादके २। आक्रंदके ५। नाम॥दोहा॥पादं किरण पग चवथ बटँ शादं कीच त्रण ओर॥आक्रंदं तु रव रुदित आर्त्त शब्द रण घोर॥ ६३॥ककुद के ३। संविदके ५। नाम॥दोहा॥ककुदं प्रधानं वृषांग पुनि राजचिन्ह सुख धाम॥संविदं ज्ञानं सुभाषणं रु क्रियाकारं रण नामँ॥ ६४॥पदके ६। मंदके ५। नाम॥दोहा॥पदं उद्यम रक्षण चरण वस्तु चिन्हं अरु स्थानँ॥मंदँ मूढ असमर्थ शनि अल्प अभाग्यँ निदान॥ ६५॥इति दांताः॥आधिके ४। समाधिके ३।नाम॥दोहा॥आधिं अधिष्ठानं रु व्यसनं बंधनं न की पीर॥समाधिं तु नीवाकं अरु नियमं समर्थनं धीर॥

अनुबंधके ४ नाम॥ दोहा॥ अनुबंधै दुगुरसीष अरुदोषे त्यादे निशंक॥ शिशुशासन लष गुरुनकी हल इत लंक्षकअं कौ॥ ६७॥ सिंधुके ४ वधूके ३ साधुके २ नाम॥ दोहा॥ सिंधु देश नद् अब्धि सदि गज मद सावै विशेष॥ वधू स्नुषा भार्या तिया साधु सज्जन रु लेष॥ ६८॥ मधुके ९ अंधके २ नाम॥ दोहा॥ मधु मदिरा जल पुष्प रस सहत दैत्य मिद ओरै॥ चैत्र वसंत अशोक द्रुम अंध अहृश तम धोर॥ ६९॥ इति धांता॰। चित्रभानुके २ सूतात्मा के २ गंधर्व जनके २ नाम ॥दोहा॥ चित्रभानु रवि अग्नि अथ भानु रश्मि रवि धीव॥ सूतात्मा धाता रु तनु गंधर्व जन तु जइ जीव॥ ७०॥ शुकांक के २ पत्रीके ७ शिखरीके २ नाम॥ दोहा॥ शावो नो गाव वागी रे पत्री तो॰ तरु श्येन॥ रथ रु रथिक गिरि कांड रव और शि खरी तरु गिरि लेन॥ ७१॥ शिखरीके ३ विरोचनके ४ नाम॥ दोहा॥ शिखरी गर्भ गुन्दै मोर वैल केतु गर्भ है जानि॥ विरोचन तु रवि अग्नि शशि दैत्य विशेष बखानि॥ ७२॥ आत्मा के ७। अभिमान के ४ नाम॥ दोहा॥ आत्मा बुद्धिस्वभाव धृति चित्त यत्न तनु देश॥ हित आभिमान धनादि मद ज्ञान रु हिंसा दोस॥ ७३॥ घनके ८ इनके २ नाम॥ दोहा॥ घन नु लोह मुद्गर सुरत वाद्य सांद्र संघात॥ विस्तार काठिन्य रु जलद इन तु भानु प्रभु तात॥ ७४॥ राजाके ६ तनुके ३ ... के ३ नाम॥ दोहा॥ राजा शशि न्रप क्षात्रि प्रभु यक्ष

प्राक्कै षट भेद॥ तेनु कृषां त्वकै तनु विरलं कर्मं ब्रह्मैं तत्वं तप वेदैं॥७५॥ गंधन के ४। आतंचन के ३। नाम॥ दोहा॥ गंधैनं सूचनं हिंसनं रु प्रकाशनं रु उत्साहं॥ आतंचैनं पयतक्रकु पुजं वेगं रु तर्पणौं आह॥७६॥ व्यंजन के ४। कौलीन के २। नाम॥ दोहा॥ व्यंजनं लांछनं प्रमस्त्रुप निं ते मानिं अवयवैं धारि॥ लोकवाद कौलीनं अरु अहिप सुरवग कीरारि॥७७॥ उद्यान के ३। उत्थान के ६। नाम॥ दोहा॥ उद्यौनं तु निःसरणं वन भेद प्रयोजनं नान॥ पौरुष उद्यमं तंत्रं रणं उठवं ग्रंथ उत्थौनं॥७८॥ साधन के ५ नाम॥ दोहा॥ साधैनं मारणं द्रव्यं गति म्रतसंस्कारं तुय प॥ अनुव्रज्या उपकरणांपुनि निवर्तनं रु धन दाप॥७९॥ निर्यातन के ३। व्यसन के ४। नाम॥ दोहा॥ निर्यातनै न्यासार्पणं रु वैर शुद्धि पुनि दानं॥ व्यसैनं दोष कामज कुपजं विपद रु भ्रंशौ निदान॥८०॥ पक्ष्मन के ४। पर्वन के ४। नाम॥ दोहा॥ पक्ष्मं केशरौ वाफणीं अणीं रु तत्वा संपूौ॥ पैर्वं ग्रंथि तिथि भेद क्षणौ अरु प्रस्ताव प्रशु [illegible]॥८१॥ प्रधान के ६। निधन के २। नाम॥ दोहा॥ प्रधौनं स्तु उत्तम स मति परमात्मा एकत्वे॥ प्रकृति म [illegible] हि। निधैनं तो कुल अरु पचत्व॥८२॥ क्रंदन के [illegible] न के २। धामन के ४। नाम॥ दोहा॥ क्रंदैनं हेलो [illegible] षं तु देह प्रमाणौं॥ धौमं तु गेह रु देह त्विट् बवथ प्रभावं

तुजान॥ ८३॥ आच्छादनके ३। आराधनके ३। नाम
आच्छादनै संपिधानै रु॰ अपवारता पुनि॰ चीरं॥ ❋ ॥ आराधै
न तौ॰ साधनै रु॰ तोषणा लामैं हि धीर॥ ८४॥ अधिष्ठान
के ४। समानके ३। पैशुनके २। नाम॥ दोहा॥ अधि
ष्ठानै पुरचक्र पुनि॰ अध्यासनं रु॰ प्रभावं॥ सैमानं पंडित
सम रु॰ इकं पैशुनं चुगलं खलं नाव॥ ८५॥ इति नांताः॥
कलापके ५। परीवापके ३। नाम॥ दोहा॥ कलापं स्तु
भूषणो वर्हं कांची गणो तूणीरं॥ परीवापै पर्युप्तिं जलस्थिति
रु॰ परीच्छदं धीर॥ ८६॥ गोपके ४। विटपके ५। नाम
दोहा॥ गोपै तु॰ गोधुकं गोष्ठपतिं बहुत ग्रामपतिं भूपं॥
विटपै स्तंवं पल्लवैं पेड़गे शाखा विस्तृतं रूप॥ ८७॥ इति
पांताः॥ रेफके २। प्राफके २। गुंफके २॥ नाम। दोहा
रेफैं रवर्णं रु॰ कुत्सितं हि प्राफैं खुरं तरु कोमल॥ ❋ ॥ गुंफैं
तु॰ गुंफनं बाहुको अलंकारं हि कबूल॥ ८८॥ इति फांताः
॥ विंवके ४। कंबुकके ४। नाम॥ दोहा॥ विंवं विंवफल
मंडलं सुप्रतिविंव रु॰ ककलासं॥ कंबु शंख शंबूकं
गवलयं हू भास॥ ८९॥ क्लीवके २। खर्वके ३। गर्वके २
नाम॥ दोहा॥ क्लीवं अविक्रम षंढ़ही खर्वं तु संख्या जान॥
नीच हू स्वल्प गर्वं तौ अवलेप रु अभिमान॥ ९०॥ इति वां
ताः॥ कुंभके ७। नाम॥ दोहा॥ कुंभं तु॰ घट गजसीस घट
रुप्पुलं वेश्याकंत॥ कुंभकर्णसुत राशिभिद त्रिवृतैं हि

तम्भंत.॥ ९०॥ पांसुके ४।गर्भके ५। नाम॥दोहा॥पांसु अहे विधि हार्दं हदं हि गर्भ तु अर्भक संधि॥ भ्रूण कुक्षि अरु पनस को कंटक पंच प्रबंधि॥ ९१॥ विस्रंभके ४।नाभिके ३।नाम दोहा॥विस्रंभ तु। विश्वासे बध प्रणय केलि कौ रारि॥नाभि तु। क्षत्रिय मुख्य न्रप चक्र मध्य त्रय धारि॥ ९२॥सुरभिके ९ नाम॥दोहा॥सुरभि तु।सुरगौ शल्लकी चंपक स्वर्ण वसंत ॥जातीफल गंधोत्पल रु कांत सुगंधि भनंत॥ ९३॥ सभाके ४।वल्लभके ३।नाम॥दोहा॥ सभा सुतौ। समाजिकं रु गोष्ठी मंदिर घूतं॥वल्लभ अध्यक्ष रु दयत शुभ तुरंग त्रय कू त॥ ९४॥ इति भांताः॥ कामके ५।पराक्रमके ३।नाम॥ दोहा॥काम तु। रेतस मन्मथ रु। इच्छा काम्य निकाम॥ पराक्रम तु। उद्योग बल शौर्य तीन ही नाम॥ ९५॥धर्मके ११।नाम॥दोहा॥धर्म तु पुण्य स्वभाव यम न्याय क्रतु रु। आचार॥धनुष अहिंसा उपनिषद उपमा सोमप धार॥ ९६॥ निगमके ६।रामके ७। नाम॥दोहा॥निगम तु। वणिज वेद पुरं कट रु। वणिकपथं नाम॥राम रम्य सित असित बलं परशु राघव द्विजराम॥ ९७॥ प्रग्रामके ८।नाम॥दोहा॥ प्रग्राम रु त्में बारिद हरित अक्षय वट पिक जाने॥ दंद दारक रु मरिच पानि। लवण सिंधु कौ मानि॥ ९८॥ ललाम। व ललामन के ८।नाम॥दोहा॥ललाम और ललामन त। पुच्छ शृंग प्रधान्य॥हय हय भूषन केतु पुनि. लक्ष्म प्रभाव

हिमान्य॥९९॥ सूक्ष्म के ४। वामाके ७। वामाको १। वामी के ४। नाम॥दोहा॥ सूक्ष्मं तु। कैतवं अल्पं अणु अरु। अध्यात्मं हि नाम॥ वामं पयोधरं द्रविण। हरं सव्यं प्रतीपं रु। कामं॥१००॥ अतिरम्य हु वामा तु। तिय वामी वडवा जानि॥ और। शृगाली रासभी करभी नाम पिछानि॥१०१॥ इति मांताः प्रत्यय के ९॥नाम॥दोहा॥ प्रत्ययं विश्वास रु। शपथं हे तु अधीनं रु। ज्ञानं॥ रंध्रं शब्दं आचारं पुनि। प्रथितत्वं हु नव नाम॥१०२॥ समय के ८। नाम॥दोहा॥ समयं शपथं आचारं पुनि। निर्देशं रु सिद्धान्त॥ संविदं भाषा कालं अरु संकेत हु अठ प्रांत॥१०३॥ अन्य के ३। अत्यय के ५। नाम॥दोहा॥ अनयं व्यसनं होवे अशुभं विपत हु अत्यय से तु॥ अनुत्पातं अतिक्रमं रु। कृच्छ्रं होवे दंडं होतु॥१०४॥ द्रव्य के ९। नाम॥दोहा॥ द्रव्यं तु भव्यं रु। द्रविणं पुनि। पित्तलं भेषजं विचारि॥ द्रुम विशेषं विलेपं जतुं एथि व्यादि गुणधारि॥१०५॥ धिष्ण्य के ४। भाग्य के २। नाम॥दोहा॥ धिष्ण्यं तु। अग्निं स्थानं गृहं इन्दवक्ष हु हेरि॥ भाग्यं शुभात्मकं विधि अपर। कर्म शुभाशुभ टेरि॥१०६॥ क्रिया के ९। नाम॥दोहा॥ क्रिया चिकित्सा निष्कृति रु। चेष्टा कर्म उपाय॥ आरंभ रु। संप्रधारणा शिक्षा पूजनं गाय॥१०७॥ छाया के ४। कल्य के ४॥ नाम॥दोहा॥ छाया कांति रवि प्रिया ...पंक्ति... ...न। छाहँ॥ कल्यं तु। सज्ज निरामयं रु। दक्षप्रथ

वैं हि आह ॥१०८॥ पुण्यके ६। वदान्यके २। सौम्य के ४। नाम ॥ दोहा ॥ पुण्यै रम्य धर्म रु सुकृतै वदान्यै वाग्मी दानि ॥ सोम्यै अनुग्र रु रम्य वुध सोम दैवतै हु जानि ॥१०९॥ द्वितियांतः वारके ६। संस्तरके २। नाम ॥ दोहा ॥ वारं कुब्ज तरु हर रु। गणं आदित्यादि समाग ॥ अवसर मादिरा भाजनं हि संस्तरेश य्यांयागे ॥११०॥ गुरु के ५। पयोधर के ५। नाम ॥ दोहा ॥ गुरु तु। महत दुर्जर अलघु जीव पितादि हु देरु ॥ पयोधरे तु। कुच कोश कृत नारियर मेघ कशेरु ॥१११॥ वृत्रके ५। करके ५। नाम ॥ दोहा ॥ वृत्रै तु घनै अरिं दानवे रु। ध्वांत शैल भिदं जानि ॥ करं तु। हस्त ओलां वलि रु। किरणां शुंडं पहिचानि ॥११२॥ परिकरके ७। तारके २। नाम ॥ दोहा ॥ परिकरं काटि वंधनं यतनं पर्यंक रु परिवार ॥ गनं विवेकं आरंभं अरथ जतं उच्च स्वरे तारं ॥११३॥ ताराके ४। संगर के ५। नाम ॥ दोहा ॥ तारा उडुगनं गोलकं रु। वालितिया गुरु नारि ॥ संगरं युधं आपदं शमीफल विषं स्वीकृतं धारि ॥११४॥ मंत्रके ३। आडंवरके ३। नाम ॥ दोहा ॥ मंत्रं वेदं भेदं देवको साधन सलाहं नान ॥ आडंवरं तो। तूर्यरवं समारंभं गज गान ॥११५॥ अभिहार के ३। परीवार के ३। नाम ॥ दोहा ॥ अभिहारं तु अभियोग पानि चोर्यं सन्नहनं जानि ॥ परीवारं जंगमं रु। असिकोश गणं रच्छ दं मानि ॥११६॥ विष्टर के ३। कांतार के ४। नाम ॥ दोहा ॥ विष्टरं विटपीं दर्भकी मूठि रु आसनं

कांतारं तु विलं इखु भिद आंतिवने दुर्गमराहं ॥११७॥ वरके ६।
नाम॥ दोहा॥ वरं जामाता श्रेष्ठ पुनि सुरसैं चाहजु होय॥ मना
गिष्टे पुनि फिड्ल अरु कुंकुमैं घट जियजोय॥ ११८॥ हरिके १४
नाम॥ दोहा॥ हरिं तु विष्णु रविं प्राप्ति अनिले यमं शुकं अहि
कपिं नाजि॥ सिंहं अंशुं भेकं रु कपिलं इन्द्रं चतुर्दश साजि॥
११९॥ धात्री के ४। क्षुद्रा के ४। नाम॥ दोहा॥ धात्री जननी
आमलौ उपमाता भूं जोय॥ क्षुद्रा तौ व्यंगा नटी वेश्या सरघा हो
य॥ १२०॥ क्षुद्र के ४। मात्र के २। नाम॥ दोहा॥ क्षुद्रं तु
अधमे रु कृपणौ पुनि क्रूरं अल्पं वदजोय॥ मात्रं सुतौ अवधा
रणौ रु कारतौ होय॥ १२१॥ मात्रा के ६। नाम॥ दोहा॥
मात्रा तौ वर्णावयवं अल्पं वित्त परिमाण॥ और विभूषण
कर्णं परिच्छदं रु पटजाण॥ १२२॥ चित्रा के ८। नाम॥ दोहा
॥ चित्रा तौ दंतिका आखुपर्णी अरु नाय॥ सुभद्रा रु गोडुंबं
आहि नक्षत्रं नदी भिदं गाय॥ १२३॥ चित्र के ८॥ नाम॥ दोहा
॥ चित्रं तिलकं आलेख्यं पुनि कर्बुरं अद्भुतं जोय॥ वस्त्र भेदं
गोत्रं अठमं अलंकारं इक होय॥ १२४॥ कलत्र के ७। पात्र
के ३। नाम॥ दोहा॥ है कलत्रं तौ श्रोणी पुनि जाया दुर्गस्थानं
॥ पात्रं तु भाजनं योग्यं पुनि तीर द्वयांतर पानं॥ १२५॥ क्षेत्र के
४। गोत्र के ६। नाम॥ दोहा॥ क्षेत्रं तु पत्नी तनु अपर सिद्धस्थानं
केदारं॥ ॥ गोत्रं शैल कुलं काननं रु नाम क्षेत्रं मग चार॥
अजिर के ४। अम्बर के ४। नाम॥ दोहा॥ अजिरं वातं

अंगरा विषयं दर्दुर अरु नुभास ॥ अंबरं व्योम सुगंध के रु वास
सं अरु कार्पास ॥ १२७ ॥ चक्र के ८ । नाम ॥ दोहा ॥ चक्रं र
थांग रु कोकं ब्रज सैन्य रु चाक वखानि ॥ राष्ट्र और रु मंतर
रु वारि भ्रमरणौ हु मानि ॥ १२८ ॥ अक्षर के ७ । भूरि के ५ । ना
म ॥ दोहा ॥ अक्षरं वर्णौ रु मोक्ष पुनि । अच्युत ब्रह्म विचारि ॥
भूरि तु प्राज्य रु स्वर्ण हर वासुदेव विधि धारि ॥ १२९ ॥ चन्द्र
के ५ । गह्वर के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ चन्द्र चारु कपूर प्रा
र्ग कांपिल्ल हु चार ॥ गह्वर दंभ निकुंज पुनि गहन रु गुहा उदार
॥ १३० ॥ अग्र के ६ । नाम । दोहा ॥ अग्रं तु आलंबन अधिक
गण पल को परिमान ॥ पुरस्तात प्रथम रु उपरि भांत रु नवम प्र
धान ॥ १३१ ॥ पुर के ५ । मंदिर के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पुरं गु
ग्गुल तनु नगर पुनि गृह रु पाटल हैं जोय ॥ मंदिरं घर मकरा
लय रु नगर तीन ही होय ॥ १३२ ॥ दर के ५ । वज्र के ७ । नाम
दोहा ॥ दरं कम शंख रु गर्त्त भय वज्रं तु पवि न पु हीर ॥ धात्री
बालक योग भिद सात बखानौं धीर ॥ १३३ ॥ तन्त्र के ८ । नाम ।
दोहा ॥ तन्त्रं परिच्छद शास्त्र भिद सूत्रवाय सिद्धान्त ॥ हेतु प्रधा
न रु वर औषध कुटुंब कृत्य रु शांत ॥ १३४ ॥ पुष्कर के १३ ।
शुक्र के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ पुष्कर व्योम रु पद्म जल द्वीप
खड्ग फल राग ॥ वाद्यभांड को मुख विहग तीर्थ शुंड को आ
॥ १३५ ॥ औषधि भेद रु कांड पुनि उरगांतर दश तीन ॥ शु
क्र तु भार्गव वीर्य पुनि ज्येष्ठ वन्हि चव वीन ॥ १३६ ॥ अन्तर

के २१। नाम॥ दोहा॥ अन्तर[५७] तो परिधाने भिद वाहि विनविल
अवकाश॥ तादर्थ्य रु अवसर अवधि अंतरात्म मधि भाश॥ १३७
नागर के ४। गोर के ६। नाम॥ दोहा॥ नागर[५८] नगरोद्भव
चतुर सुस्तक शुंठि सचेत॥ गोर[५९] अरुणा सित पीत शशि शुद्ध रु
सर्षप सेत॥ १३८॥ जठर के ४। अधर के ३। व्यग्र के २। ना
म॥ दोहा॥ जठर[५०] सुनौ कुक्षि रु कठिन वद्ध हु अधर[५१] तु हीन॥
ओष्ठ अनूर्ध्व हि व्यग्र[५२] तो आकुल काम विलीन॥ १३९॥ उत्त
र के ५। पर के ४। मधुर के ५। क्रूर के ३। उदार के ४। नाम
॥ दोहा॥ उत्तर[५३] उपरि विराट सुत दिश उदीच्य भाने वाक॥ पर[५४]
अरि अन्य रु दूर वर मधुर[५५] स्वादु प्रियताक॥ १४०॥ रस विषरस व
तं क्रूर[५६] तो कठिन रु निर्दय घोर॥ उदार[५७] स्तु दाता महत दक्षिरा
ह त्रय जोर॥ १४१॥ इति रांताः॥ काल के ५। कालि के ५। ना
म॥ दोहा॥ काल तु मृत्यु रु यम समय महाकाल पुनि श्या
म॥ कालि[२] जुग भिद रणा सूरमी कालिका कलह हि नाम॥ १४२॥
कमल के ६। कंवल के ५। नाम॥ दोहा॥ कमल[३] जलज जल
ताम्र मृग भेषज व्योम उदार॥ कंवल[४] सास्ना कृमि सलिल नागर
ज भावार॥ १४३॥ वलि के ५। वल के ४। नाम॥ दोहा॥ वलि[५]
मारा गंगज दैत्य भिद कर त्रिवली उपहार॥ वल[६] सामर्थ्य रु दैत्य
भिद सैन्य हलायुध चार॥ १४४॥ व्याल के ५। मल के ५। ना
म॥ दोहा॥ व्याल[७] दुष्ट गज सिंह अहि श्वापद खल पहिचानि॥
मल[८] तु किट्ट अघ कफ परा विट वसा शुक्र नख जानि॥ १४५॥ मज्ज

अरु। त्वच कर्णा कौ मून्र दूषिकौ जोय॥ स्वेद रु। श्लेष्मा अश्रु पुनि अस्रकौ पंच दश होय॥ १४६॥ शूल के ५। काल के ५। नाम॥ दोहा॥ शूलै तु। योग रु। मृत्यु पुनि। आयुध के नल रोग॥ कालै स्तंभे कफ रोग कौ भलै लेश रु। शंकु प्रयोग॥ १४७॥ कला के ५ नाम॥ दोहा॥ कलौ वृद्धिधन मूलकौ काल भेद शिल्पादि॥ भाग सोलवौं चंद को अंशमात्र हू वादि॥ १४८॥ मूल के ५। जाल के ६। नाम॥ दोहा॥ मूलं तु। आद्य शिफा नरवत निकट नाभि धनै रस। जालै दंभ आनाय गरा क्षारक द्रुम रु। गवास॥ १४९॥ फल के ५। पटल के ७। नाम॥ दोहा॥ फलै तु। फलकं जानी फलं रु। व्युष्टि लाभ कक्कोलै॥ पटलं पिटक छदि गन तिलक दृग रुज परिकर तोल॥ १५०॥ तल के ८। नाम॥ दोहा॥ तलै स्वरूप अध वस भिदि वारण जो ज्याघात॥ कार्यबीज कानन वहुरि त्सरु चपेट हि जात॥ १५१॥ इति लांताः॥ भव के ५। भाव के १२। प्रसव के ३। नाम॥ दोहा॥ भवै सत्ता संसृति जनम क्षेम प्राप्ति हू जानि॥ भावै जन्म सत्ता क्रिया लीला आत्मा मानि॥ १५२॥ अभिप्राय गत्यादि अरु। चेष्टा जंतु सहाय॥ भूति पदार्थ हु प्रसवै तो। उपजे पुनि फूल फलै गाय॥ १५३॥ ध्रुव के ११। नाम॥ दोहा॥ ध्रुवं पुनि निश्चित तरक शाश्वत निश्चल मानि॥ कील शंकु शिव योग वट वसु मुनि इक दश जानि॥ १५४॥ इति वांताः॥ वंश के ४। कीनाश के ४। नाम॥ दोहा॥ वंशै वर्ग कुलं मस्कर रु। पीठ हाड़ हू चारि॥ कीनाशै तु। यम क्षुद्र अरु। पांशु घाति कर्षकारि॥ १५५॥

कृपाके ५। दृपाके ४। नाम॥ दोहा॥ कुंभी सीता सुते दर्भ जले योन्हों द्वीपै पहिचानि॥ दर्पौ तौ वौसवक दर्शने रु। माते दृगी चाविब खानि॥ १५६॥ कर्कशाके ५। प्रकाशके ४। नाम॥ दोहा॥ कर्कश दुःसपर्शौ रु। कठिनं कपरोसाहासिक क्रूरै॥ प्रकाशं सोतु। महासे स्फुट आतपे अतिमसहूरै॥ १५७॥ इतिशांता:॥ अनिमिषके २। पक्षके ९। नाम॥ दोहा॥ अनिमिष सुर अरु। मत्स्य ही। पक्षतु। सरवोसहाय॥ बलं मासार्द्धं विरोध ग्रह पार्श्व साध्य अठ गाय॥ १५८॥ उष्णीषके ३। वृषके ५। नाम॥ दोहा॥ उष्णीषै स्तु। किरीट अरु। शिरोवेष्टं जुगवेषै॥ वृषं मूषिक सुकृत रु। वृषभ शुक्ल राशि विशेषै॥ १५९॥ कोषके ८। आकर्षके ३। नाम॥ दोहा॥ कोषं तु। तालव्यांतजुत। कुड्मल खड्ग पिधान॥ संग्रह जो शब्दादि को पेशी पात्र प्रमान॥ १६०॥ च्यौ रु आठ बखानि॥ आकर्षं तु शारिफलक रु। अक्ष १६१॥ अक्षके ५। पौरुषके २। नाम॥ दोहा॥ अक्ष कलिद्रुम पाशक रु। कर्ष चक्र व्यवहारै॥ पौरुषं तौ पुंभाव अरु। ता। की उदार॥ १६२॥ आमिषके ४। किल्विषके ३। वर्षके २। नाम॥ दोहा॥ आमिषं उत्कोच रु। पलल भोग वस्तु संभोगै अघ अपराध रुजं बेषै शाले जल योगै॥ १६३॥ त्विषके ३। क्षके २। अध्यक्षके २। नाम॥ दोहा॥ त्विषं तु। कांति रुचि वाक्य अघ। निक्षेपर्शु धर दक्ष॥ कात्स्न्यं जु गहि अध्यक्ष तौ। अधिक त्यक्ष मन्यक्ष॥ १६४॥ इति षांता:॥ हंसके ९। नाम॥

हंसे हयांतरे विष्नु रवि जीव मराल बखानि ॥ मंत्रभिदे अमत्सरे लोभरहित न्रुप जानि ॥ १६५ ॥ रसके ११ नाम ॥ दोहा ॥ रसै गुण विष द्रव राग जल वीर्य रु श्रृंगारादि ॥ देह धातु पुनि गंधरस पारद स्वाद विवाद ॥ १६६ ॥ वसुके १२ नाम ॥ दोहा ॥ वसु सुभेद रु रत्न धन रश्मि अनल वक राज ॥ मधुर योक्र वृद्धौषध रथ्याल नखत भिदे साज ॥ १६७ ॥ वेधसके ३ । आशिसके २ । लालसाके २ नाम ॥ दोहा ॥ वेधा विधि बुध विष्नु अथ आशीष हे अहिदंत ॥ हिंता प्रास अथ लालसा चाह प्रार्थना संत ॥ १६८ हिंसाके ५ । प्रसूके ४ नाम ॥ दोहा ॥ हिंसा वधन ताडनां वध त्रासन चौर्यादि ॥ प्रसू वीरुध रु जननि पुनि । अम्बा कदली आदि ॥ १६९ ॥ रोदसीके २ । अर्चिसके २ । ज्योतिसके ५ नाम ॥ दोहा ॥ रोदसी तु भू दिव गनौ । अर्चि तु ज्वाला भास ॥ ज्योति तु उडगन द्योत रवि दृष्टि अग्नि हो भास ॥ १७० ॥ तमसके ४ । छंदसके ४ । नाम ॥ दोहा ॥ तमे तु राहु गुणं ध्वांत पुनि शोक रु चारि सुजान ॥ छंदे चाह पद्य रु निगम स्वैराचार प्रमान ॥ १७१ ॥ तपसके ४ । सहसके ४ नाम ॥ दोहा ॥ तप लोकंतर शिशिर पुनि माघ कर्म कृच्छ्रादि ॥ सह तु मार्ग हेमंत बल ज्योतिषै नाम विवादि ॥ १७२ ॥ नभसके ७ । ओकसके २ । पयसके २ । ओजसके ४ । नाम ॥ दोहा ॥ नभे श्रावण आकाश पुनि मेघ पतद्ग्रह घ्राण । वर्षा सूत्र म्रणाल को ओक तु मंदिर जाण ॥ १७३ ॥ आश्रयमात्र पय सुतो ।

पानी है अरु, क्षीर ॥ ओजं तु, दीप्ति प्रकाश बल अवष्टंभ हु धी
र ॥ १७४ ॥ स्रोतस के २ । तेजस के ४ । विद्वस के ३ । बीभत्स
के ६ । नाम ॥ दोहा ॥ स्रोतं तु, इन्द्रिय वेग जल तेजं दीप्ति प्र
भाव ॥ वीर्य पराक्रम विद्वंस तु, पंडित प्राज्ञ गनाव ॥ १७५
॥ आत्मविदं हु, बीभत्सं तो, विकृत पार्थ अरु, क्रूर ॥ पापात्मा
रु, घृणात्मा और रसांतरं सूर ॥ १७६ ॥ इति सांता : ॥ ग्र
ह के ८ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ ग्रहं उपराग रु, ग्रहण रु, ग्रहण क
पो सूर्यादि ॥ सैंहिकेय निर्बंधन रु पूतनादि अठ वादि ॥
१७७ ॥ वर्ह के २ । निर्यूह के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ वर्ह तु,
पत्र कलापं ही, अथ, निर्यूहं तु, द्वार ॥ आपीड रु, निर्यास
जाने, नागदंतकं हि च्यार ॥ १७८ ॥ प्रग्रह । और । प्रग्राह
के ६ । नाम ॥ दोहा ॥ प्रग्रह प्रग्राह तु, किरण बंदि तुला
को सूत्र ॥ बंधन डोरि हयादि की हारे पादपं हु अमूल ॥ १७९
॥ परिग्रह के ६ । गृह के २ । नाम ॥ दोहा ॥ परिग्रह तु, स्त्री
जो परिजन रु, मूल शाप आदान ॥ राहु ग्रस्त रवि गृह हु सुतो,
नारि और घर जान ॥ १८० ॥ इति हांता : ॥ अथ अनेकार्थ
अव्यय लिख्यते ॥ आङ् के ४ । आ के २ । आः के २ । नाम
दोहा ॥ आङ् धातु योगज रु, अभिव्याप्ति क्रम रु, सीमार्थ ॥
आनि पात तो वाक्य स्मृति आः तु कोप पीडार्थ ॥ १८१ ॥ कु के
३ । धिक् के २ । स्वस्ति के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ कु तु, कर्म पाप
रु, कुत्स भौ धिक् निंदा डर पाव ॥ स्वस्ति तु, आशिष क्षेम अरु,

पुण्यादिकें नय भाव ॥ १८२ ॥ अति के ३। स्वित के २। तु के २। सकृत के २। नाम ॥ दोहा ॥ अति श्लाघा लंघने अधिकें तकें प्रश्न स्वितें लार ॥ तु तु। अवधारण भेदमैं सकृत सह रु इक वारं ॥ १८३ ॥ आरात के २। पश्चात के २। उत के २। साक्षत के २। नाम ॥ दोहा ॥ आरातें तु दूर रु निकट पाश्चिमे चरमे पश्चातें ॥ उतें अत्यर्थे विकल्प मैं समें रु प्रगटे साक्षातें ॥ १८४ ॥ शश्वत के २। वत के ४। नाम ॥ दोहा ॥ शश्वत पुनः सदार्थ मैं वत तु खेद सन्तोष ॥ अनुकंपा आमंत्रण रु विस्मय पांच अशेष ॥ १८५ ॥ हंत के ४। प्रति के ४। नाम ॥ दोहा ॥ हंत तु हर्ष विषादे चव वाक्यारंभे दया हि ॥ प्रति तु प्रयोग रु प्रतिनिधि रु लक्षणादें वीप्सा हि ॥ १८६ ॥ इति के ५। पुरस्तात के ७। नाम ॥ दोहा ॥ इतिं तो प्रकरण आदि अरु हेतु समाप्ति प्रकर्ष ॥ पुरस्तात प्राची प्रथम अग्र पुरार्थ सहर्ष ॥ १८७ ॥ यावत के ४। अथो। अथ के ५। नाम ॥ दोहा ॥ यावत तावत निश्चय रु अवधि मान साकल्यं ॥ अथो अथ तु आरंभ सव प्रश्न सतत मांगल्यं ॥ १८८ ॥ वृथा के २। नाना के २। नु के २। अनु के २। नाम ॥ दोहा ॥ वृथा निरर्थक अविधि ही नाना भय बहु तात ॥ नु तो विकल्प रु प्रश्न ही अनु समतां पश्चातें ॥ १८९ ॥ ननु के ४। अपि के ५। नाम ॥ दोहा ॥ ननु आमंत्रण अनुनय रु प्रश्न अनुज्ञा ठीकें ॥ अपि तु समुच्चय प्रश्न सक निंदा संभवं नीक ॥ १९० ॥ वा के २। सामि के २। अमा के २। कम के २। नाम ॥ दोहा ॥

वां नै। उपमां विकल्पैं हि सामैं जुगुप्सनं आधं॥ अमा तु सह रु समीपैं ही। कमं तु वारि शिरैं साध॥ १८ १॥ एवं के २। नूनं के २ जोषं के २ नाम॥ दोहा॥ एवं सुतौ इवार्थ अरु इत्थमर्थ म ति मौन॥ नूनं निश्चय तर्क मैं जोषं सुखं अरु मौनं॥ १८२॥ किम् के २ नाम के ५। नाम॥ दोहा॥ किमं तु जुगुप्सनं प्रश्नैं ही। नामं तु उपगमं क्रोध॥ होन हार प्रकाश्यं अरु कु त्सनं पांन्दस बोध॥ १८३॥ अलं के ४। समया के २। हुं के २। नाम॥ दोहा॥ अलं तु भूषण वारण रु। परिपूरण तो श क्तिं॥ समया मध्यं रु निकटं ही। तर्कं प्रश्नं हुं वक्ति॥ १८४ पुनर् के २। निर् के २। पुरा के ४। नाम॥ दोहा॥ पुनर् तु भिदं अप्रथमं ही। निर् निश्चय रु निषेधं॥ पुरा पुराण प्रबंध अरु भावी निकटं समेध॥ १८५॥ उररी। ऊरी। ऊररी। के २। किल के २। नाम॥ दोहा॥ उररी ऊरी ऊररी त्रय स्वी कारं विस्तारं॥ स्वर तु स्वर्ग परलोकं जुग किल वार्त्ता निर्धारि १८६॥ खल के ४। अभितस् के ५। नाम॥ दोहा॥ खलु जिज्ञासा अनुनय रु निषेध भूषण वाक्यं॥ अभितस ढिंग उ भे अभिमुख शीघ्र पूर्णतो ताक्य॥ १८७॥ प्रादुर के २। मि थस् के २। तिरस् के २। नाम॥ दोहा॥ प्रादुर नाम प्राकाश्य जुग। मिथस रहस अन्योन्यं॥ तिरस्तु अंतर्द्धान पुनि तिर्य गर्थं ही गन्य॥ १८८॥ हा के ४। अहह के २। हि के २। ना म॥ दोहा॥ हा तु शोक दुःखार्थं पुनि कुत्सा विषादं विचार

अहह तु अद्भुत खेद हौ हि तु हेतु रु निर्धार ॥ २९९ ॥

इति अनेकार्थतरंगः

अथ अव्यय तरंग लिख्यते ॥ ॥

दीर्घ काल मे ७ । नाम ॥ दोहा ॥ चिररात्राय चिरस्य पुनि चिरं चिरेण चिराय ॥ चिरे चिरात हि सात ये अति कालार्थ गनाय ॥ १ ॥ बारम्बार वाचक मे ५ । शीघ्रता वाचक मे ७ । नाम । दोहा ॥ शश्वत असकृत अभीक्ष्णं पुनः पुनः मुहु गाय ॥ अंजसा रु द्राक स्राक झटिति सपदि मे सु अन्हाय ॥ २ ॥ अतिप्रायार्थ मे ६ । वर्जनार्थ मे ६ नाम ॥ दोहा ॥ बलवत सुष्ठु सु किमुत अति अतीव पद अत्यर्थ ॥ नाना विना पृथक हि रुक ऋते अंतरेणार्थ ॥ ३ ॥ कारण वाचक ४ । असम्पूर्णार्थ मे २ । किसीकाल मे २ । साथ के वाचक ४ । नाम ॥ दोहा ॥ यतस ततस यत तत सबव ॥ चित चन अपूर्ण ताहि ॥ जातु कदाचित साइ तौ सह साकं सत्रा हि ॥ ४ ॥ अनुकूलता मे १ । व्यर्थ मे ३ । विकल्पार्थ मे ५ । नाम ॥ दोहा ॥ प्राध्वं द्रक अनुकूलता ॥ वृथा मुधा तु विनार्थ ॥ किं किमूत आहो किमुत उताहो विकल्पार्थ ॥ ५ ॥ पादपूर्णार्थ मे ६ । पूजनार्थ मे २ । दिनार्थ मे १ । रात्र्यर्थ मे २ । नाम ॥ दोहा ॥ तु हि च स्म ह वै पाद के पूर्णार्थक पद भाति ॥ पूजन अति सु हि दिन दिवा दोषा नक्तं राति ॥ ६ ॥ टेढा अर्थ मे २ । सम्बोधनार्थ मे ५ । समीपार्थ मे ३ नाम ॥ दोहा ॥ तिरके तिरस रु साचि अथ सम्बोधन भो पाट

नृं मैं अंगं हि। हिरुकं नौ। समयां निकषौ याद ॥ ७ ॥ अकस्मात् अर्थ मे १ आगे इस अर्थ मे ३ देवतार्थ विष्वदान मे ४। नाम ॥ दोहा ॥ सहसां इक। पुरतसं पुरसं अग्रतसं हि अग्रार्थ। स्वाहां श्रोषट् वौषट् रु। वषट् स्वधां देवार्थ ॥ ८ ॥ अल्पार्थ मै ३ जन्मान्तर मे २। तुल्यार्थ मे ६। नाम ॥ दोहा ॥ मनाक ईष त् किंचित हि प्रेत्य अमुत्र हि। दोय ॥ व रु। वा एवं इव यथा तथा साम्य मै होय ॥ ९ ॥ विस्मायार्थ मे २। चुपचाप मे २ तत्का लार्थ मे २। नाम ॥ दोहा ॥ अहो हीं तु विस्मयार्थ क। तूष्णीं तो मोनार्थ ॥ तूष्णींकां जुग सपदि तो। सद्यः तत्कालार्थ ॥ १० ॥ मध्य अर्थ मै युक्तार्थ मे २। हठार्थ मै १। नाम ॥ दोहा ॥ नी न। अन्तरं अन्तरा अन्तरेणा मांधि मांहिं ॥ उचित तु। स्थाने साप्रतं इक। प्रसह्य हठ आहि ॥ ११ ॥ निरन्तर अर्थ मे २। प्रतिषेधार्थ मे ४। निवारणार्थ मै ३। नाम ॥ दोहा ॥ अभीक्ष्णं शश्वत् अनारत। अ अरु। नो न नहिं चारि ॥ भास्म अलं मां तीन ये वारणार्थ उर धारि ॥ १२ ॥ पक्षांतर मे २। तत्वार्थ मे २। प्रगटार्थ मे २। अंगीकार मे २। नाम ॥ दोहा ॥ चेत् वरु। यदि पक्षांतर हि। अंजसा रु अद्धा हि ॥ प्रादुस् आविर् प्रगट वो परमं ओम् हि आहि ॥ १३ ॥ चारों ओर इस अर्थ मे ४। विना इच्छा स्वीकार मे १। निन्दापूर्वक स्वीकार मे १। नाम ॥ दोहा ॥ समंततसं सर्वतसं च व। परितसं विष्वक् जानि ॥ कामं तु अकामानुमति अस्तु एक पिछानि ॥ १४ ॥ [illegible] धोक्ति मे १ इष्टप्रश्न मै ३।

१ झूंठ अर्थमे २ भूतकाल मे १। नाम॥दोहा॥ विरोधो
क्ति मैनतु हि अथ,काङ्क्षित काम प्रवाक॥ झूंठ मांहि मिथ्या
न्यां अतीतार्थकत् भाक॥१५॥ निश्चयार्थ मे ५। निश्चयमे
२। वर्ष मे १। नाम। दोहा॥ एवं एवं तु पुनर वा अवधारणा
र्थक पंच॥ निश्चय नूनं अवश्य संवत् वर्ष प्रपंच॥१६॥ अंगी
कार मे २। पीछे मे १। आपमे १। अल्पमे १। उचाई मे १
नाम॥दोहा॥ आं एवं अंगीकृतहि अवरमाहि अर्वाक॥
स्वयं आप नीचैः अलप उच्चैः महताहि ताक॥१७॥ वहुता
ई मे १। धीरे धीरे मे १। नित्य मे १। वाहर मे १। भूतकाल
मे १। छिपने मे १। नाम॥दोहा॥ प्रायस वहु॥ धीरे॥ शनैः
सनां एक नित्यार्थ॥ वहिं वाह्य॥ भूतार्थ स्मां अस्त अदर्श
नार्थ॥१८॥ विद्यमान मे १। क्रोधसे कहने मे १। प्रश्नमे
अनुनय मे १। रात्रि के अन्त मे १। तर्क मे १। प्रणाम मे १
नाम॥दोहा॥ अस्ति हैहि। ऊं रोषवच। ऊं प्रश्न हि। अथि
प्रीति॥ उषा निशांतहि। तर्क। हु नमः प्रणामहि रीति॥१९॥ फिर
इस अर्थमे १। निंदामे १। प्रशंसामे १। सायंकालमे १।
प्रातःकाल मे २। नाम॥दोहा॥ अंग फेरि। दुष्टं तु वरं सु
ष्टु प्रशंसा जानि॥ सायं सांझहि॥ प्रात मे प्रातर प्रगे वखानि॥
२०॥ समीप मे १। गतवर्ष मे १। गतवर्षसे पूर्व का वर्षमे
१। वर्त्तमान वर्षमे १। नाम॥दोहा॥ निकषा निकटहि परु
त तो। पूर्ववर्ष मे हेरि॥ हे परारि ताते परे ऐषमस्तु यह टेरि॥२१॥

आज इस अर्थमे १ पूर्वेद्युः आदि ५ शब्द एद्युस प्रत्ययां
तता ही शब्द दिनार्थमे हैं। गतदिन मे १ गया दिन मे २
नाम ॥ दोहा ॥ अद्य आज॥ पूर्वेद्युस रु. अथरेद्युः पहिचानि
अन्येद्युः उत्तरेद्युः अन्यतरेद्युः जानि॥२२॥उभयद्युः उभयेद्युस
होतिहिं दिनार्थमे जोय॥गतदिन माहि॥ परेद्यवि हिद्यस गत
दिन मे होय॥२३॥आवा वाला दिनमे १ परसों का दिनमे
१। ता कालमे २। कोई काल मे २ नाम ॥ दोहा ॥ श्वसे आग
म दिन. तिहिं परे दिन सु. परश्वस आहि॥ तदा तदानीं ता समै.
युगपत तु एकदाहि॥२४॥सर्व काल मे २। वर्त्तमान का
ल मे ५। नाम॥ दोहा॥ सदा सर्वदा सब समय. अधुना हं प्रति
लेखि.॥ और.सांप्रतं एतहिं इदानीं हु. अब. देखि॥२५॥पूर्व
दिश देश काल मे १। उत्तर दिश देश काल मे १ पश्चिम
दिश देश काल मे १॥ नाम॥ दोहा॥ पूर्वादिक दिश अरु का
ल माहि लिय जोय॥ प्राक् उदक् प्रत्यक् सु नय आदिक अव्यय
होय॥२६॥इत्यव्यय तरंगः॥श्लोक॥इतिगुलाबसिंहस्य कृतो ना
मानुशासने॥सामान्यभागस्तृतीयःसांगः वसमर्थितः॥शुभम
स्तु॰ युग्मवेदनवचन्द्रसम्मिते हायने शरदिमासि चाश्विने॥
नामसिन्धुरिति नामतोह्ययं केशवेन खलु मुद्रितो ऽधुना॥

सम्वत १९४२

हस्ताक्षराणि क्षेमकरण ब्राह्मण

गौडस्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	६	संशयिकहु	सांशयिकहु	२०	१०	अभिप्रायकेके	अभिप्रायके
२	२०	प्रतात	प्रतीत	२०	१८	प्ररिश्रय	परिश्रय
३	३	इशिता	ईशिता	२१	१	गरीवनावाके	गरीवनावाके
३	१३	निर्वयह	निर्वय्यह	२२	१२	सस्ताव	संस्ताव
५	२	सल्भ	सुलभ	२४	१२	गजद्रुम	गजद्रुम
५	६	हत्यारके३।	हत्याराके३।	२४	१२	धूकहु	घूकहु
६	२१	अक्ष	अङ्ग	२४	१६	अन्तकके३।	आतंकके२।
८	१९	अग्रअग्रीय	वर्यअग्रअग्रीय	२७	२१	दीर्घायु	दीर्घायु
९	१७	अयप्रधान	अप्रधान	२५	३	दीपकेके४।	दीपकके४।
९	१९	दर्शादिहैं	दर्शादिहैं				
१०	१०	साजो	भाज्य	२६	१०	वेग	वेग
१०	१९	सन्निकंष्ट	सन्निकृष्ट	२६	१२	पुष्करज	पुष्करज
११	१०	अर्मिमत	ऊर्मिमत	२७	१७	वजलके४।	वलजके४।
१२	२	राधित	एधित	२७	१८	वजलतु	वलजतु
१२	१०	एकायनयत	एकायनगत	२८	१४	धन	घन
१२	१६	समान्यहि	सामान्यहि	२९	२१	पाय	ताप
१३	६	द्रव्य	द्रव्य	३०	१४	पियूष	पीयूष
१३	१२	घुत	धुत	३०	१९	तान	तीन
१३	१२	निष्ठत	निष्ठूत	३१	११	धन	घन
१३	१८	गुडित	गुंडित	३१	१९	अधिके४	आधिके४
१५	३	मांगके३।	मांगे के२।	३२	४	सिंधुदेन	सिंधुदेश
१५	२१	सताधित	संतापित	३२	१९	धनतु	घनतु
१७	१५	द्राति	दांति	३३	१९	पचल	[illegible]
१७	१५	अववान	अवदान	३४	३	लामहि	नाभहि
१७	१८	विधूनन	विधूनन	३४	६	पिशुन	पिशुन
१८	८	ग्रहग्रह	ग्रहग्राह	३४	१०	यार्मपति	[illegible]
१९	११	अभिग्रह	अभिग्रह	३४	११	विद्रपसन	[illegible]
२०	२	समयके ६	संमय के ६।	३५	१५	कंधुकके	[illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४	१०	स्वर्गीके	स्वर्गीके	४३	१२	लैरन्चार	स्वैरचार
३४	१८	क्लीव	क्लीव	४३	१७	साध	माघ
३५	१९	ह्रस्‍	ह्रस्व	४४	१	घीर	धीर
३५	१९	सुरगो	सुरंगो	४४	३	तेजदीप्ति	तेजतुदीप्ति
३५	७	सुगंधि	सुगंधि	४५	४	साक्षातके	साक्षातके
३५	८	समाजिक	सामाजिक	४५	१३	यावतके ४।	यावत तावतके
३५	२१	प्रधान्य	प्राधान्य	४५	१५	अवधि	अवधि
३६	१	नामके७	वामके७	४५	२५	आगाल्प	मांगल्य
३६	२	अधात्म	अध्यात्म	४६	४	मतिमौल	अतिमौन
३६	१०	अन्यके३	अनयके३	४६	४	सुखं	सुख
३७	१२	अत्यक्त	अभ्यक्त	४६	६	मकाश्य	प्राकाश्य
३७	७	स्वच्छा	स्वच्छ	४६	१३	करीकेश्किलकेर	करीकेश्स्वरके किलके२।
३८	१०	भूरराता	संभूरराता				
३८	१२	विभूषणाकर्षा	विभूषणाकर्षी	४६	१४	निर्धारि	निर्धार
३८	१७	स्रोरी	स्रोरी	४६	१५	खलके ४।	खलुके ४।
३८	१८	माजन	माज्जन	४६	१८	माकाश	प्रकाश
३८	२०	केदर	केदार	४८	२	विष्यदानमे	हविष्यदानमे
३९	१	आखतु	अरुतनु	४८	११	तीनस्यंतर	तीनअंतरे
३९	७	चन्द	चन्द्र	४८	१४	मास्म	मास्म
३९	१९	खड्ग	खड्ग	४८	१७	अविर	आविर
४०	२१	अच	अच	४८	१९	स्वीकरमै	स्वीकारमे
४१	१	कालके५	कीलके५	४९	१२	निशांतहि	निशांतहि
४२	१९	उपजाफल	उपजफल	४९	१५	तर्कहुं	तर्कहुं
४२	१३	शरिफलके	शारिफलके	४९	१७	सुष्ट	सुष्टु
४३	१	[illegible]भिद	मानिमंत्रभिद	५०	१३	दिशअरु	दिशदेशअरु
४३	५	[illegible]क्षौपचर	नक्षोपचरु ज्योतिनु	५०	१५	इत्यव्यतरंगः	इत्यन्वयतरंगः

नामसिंधुकोशको

चतुर्थभाग

अर्थात

गुलाबकोशको संक्षेप त्रिकाण्डशेष नामकोश

कोसार

श्रीयुत चहुवाणवंशावतंस हड्डकुलकलश

बुन्दीन्द्र महाराजाधिराज महाराव राजाजी श्री

श्री श्री श्री श्री १०८ रामसिंहजीके कविराव जी

श्री गुलाबसिंहजी कृत

—०(०)०—

आगरा

नगरे बेलनगंजे श्री पंडित केशवप्रसाद शर्म्म द्विवे
दि प्रबन्धेन विद्यारत्नाकरयंत्रे मुद्रितः। सम्वत १९४७

—०(ॐ)०—

श्रीगणेशायनमः॥श्रीसरस्वत्यैनमः॥

अथ नामसिंधुकोषाको

चतुर्थभागलिख्यते

दोहा

वीणा पुस्तक अभयवर जुत कर त्रिभुवनमाय

तम हरनी शारद करो परमेश्वरी सहाय॥ १ ॥

सदा सुमति बुधि कविन की कीनी सहज सम्हार

दृढ परि कर बांधहु जननि जड गुलाब की बार २

अथग्रन्थ नियम॥ दोहा

त्रिकाण्ड शेषहिसार अरु हेम सार संख्या हि॥

येतरङ्ग तीन हि इहां भाग चवथ मे आहि ३

अथ तु कान्त नियम॥ दोहा

आद्य निवादि सुमीतु रु सुस्वस्थ समूल रु राष्य॥

सार्थ रु वन्धि अवक्र पुनि योग एक दश भाष्य ४

अथ त्रिकाण्ड शेष सार तरङ्ग लिख्यते॥ तत्र पितृ

के ५। पितृभेद के २। नाम॥ दोहा॥

पितृ तु स्वधाभुक पूर्वज रु न्यस्तशस्त्र पुनि वाटे

पांच चन्द्र गोलस्थौ तिहिं भेद कव्यवालौ दि ५

दैत्य माता के ३। कश्यप पिता के २। कृष्ण माता को

१। कृष्ण रथ को १ नाम॥ दोहा॥

दैत्य माते दिति दनु हि अथ भू कश्यप हरितात॥

दुंदु हि मात तु क्षिति अदिति शतानंद रथख्यात ६

सारथि को १। ध्वज को १। हयन के भिन्न भिन्न ४ नाम

दो॰ सारथि दारुक हरि ध्वज तु भुजंग हा इक साजि॥

मेघ पुष्प सुग्रीव अरु शैब्य वलाहक वाजि॥७॥

उद्धव के २। सात्यकि के ४ नाम॥ दोहा॥

पवन व्याधि तु उद्धव हि हरि को मंत्री जान॥+॥

सात्यकि शिनिनप्ता च वहि शैनेय रु युयुधान॥ ८॥

काम की स्त्री के ३। काम बानन के ५ नाम॥ दो॰

रागलता रति केलती उन्मादन तो बाना॥+॥

सन्तापन निश्चेष्टकर मोहन शोषण जाना॥ ९॥

मारी को १। शिव के खट्वाङ्ग के २। शिव के वृषभ के २।

शिवगण विशेष के ६। महाकाल के ३। नाम। दो॰

हरि कर की मारी स्यमंतक शिव खट्वांग तु येह॥

सुखसुर हि भृंग तु वृष हि रिटि तौ नाडीदेह १०

भृंगरीट भृंगी फल रु अस्थि विग्रह हु जानि॥+॥

महाकाय नैः वृषपार्षद महाभीम त्रय मानि।११।

शिव द्वार पालन के ४। शिवा के २ नाम॥ दोहा

द्वाःस्थ तु नांडव तालिके रु नंदिकेश्वर सु आहि
नंदी शालंकायनं हु बाली यम स्वसौ हि॥ १२॥
पार्वती की सखी के २ पार्वती का सिंह को १ इन्द्राणी
के ३ नाम॥ दोहा
शिवा सखी विजया जया मनस्ताल मृगराज॥
इन्द्राणी तु शतावरी रु चारु धारा साज॥ १३॥
इन्द्र की सुता को १ परी को १ विद्याधर के ४ नाम॥ दो०
सुता देवसेना पुरी वृषभाषा इक ऊपि॥ ॥
विद्याधरं स्थिरयो वनं रु खेचर रु कामरूपि १४
जम की स्त्री को १ लेखक को भृत्य को ११ नाम॥ दोहा
धूमोर्णा तो यमालिया चित्रगुप्त लिपिकार॥
महा चंड इक चंड इक यम भृत्यहि निर्धार॥ १५
जम की विचार भूमि को १ पिशाच के ३ कुबेर पुत्र के
वर्णा कादि ३ नाम॥ दोहा॥
कालीची तु विचारभू कापिशेय तु पिशाच॥
पिंडक वर्णाक विर्निध रु भायुराज त्रयराच॥ १६
इति स्वर्ग वर्ग सार २॥
अथ दिग वर्ग सार लिख्यते॥ अगस्त्य की स्त्री के २
वृहस्पति के ४ नाम॥ दोहा॥
कुंभज तिय कौषीतकी विदर्भजा हु द्वि धारि॥
उतथ्यानुज तु गोरथ रु द्वादशाकर गुरु चारि १७

दक्षमाता को १। ध्रुवमाता को १। देवपथ वा आकाश गंगा के ३। नाम॥ दोहा॥

मात दक्ष की मारिषा ध्रुव की मात सुनीति॥
नभस्सरित छायापथ रु त्रिस्रोत घारै चीति १८

सूर्य्य की स्त्री के ५। दूसरी स्त्री के १३। तिनमैं स्वाति आदि तो ७ अरु यम सू। कालिन्दी स्व आदि ६। नाम। दो०

रवितिय छाया भूमयी तपती वरी पिछानि॥
रु मंद जननी स्वाति तो संज्ञा द्युमयी जानि १९

त्वाष्ट्री रु महावीरया सुवर्चला नसरेणु॥ ० ॥
यम कालिंदी दस्र मनु रेवंत स्व स्वरेणु॥ २०॥

इति दिग वर्ग सारः॥ ० ॥

अथ काल वर्ग सार लिख्यते॥ सत्य युग के ३। त्रेता के २। द्वापर के २ कलि के ३। नाम॥ दोहा

कृत तु सत्ययुग युगल अथ। अघाथी त्रेता हि॥
याज्ञिय द्वापर कर्मयुग भ्रम्भेरक रु कलि आहि २१

जीव के ४। मन के ३। नाम॥ दोहा॥

जीव तु पुद्गल ईश्वर रु। अन्तर्यामी चारि॥
अन्तःकरण तु मनस अरु। निगु लीनहि निर्धारि २२

इति कालवर्ग सारः॥

अथ धी वर्ग सार लिख्यते॥ बुद्धि के ३। निर्णय के ३। सिद्धान्त के ३। नाम॥ दोहा

पंडो तो. चार्वी विदाँ गुंजा तर्क विचार ॥ ११ ॥

उत्तर पक्ष समाधि अरु. त्रय. कता तैं निर्धार २३

प्रश्न के २। गिरा के ३। नाम के ४। नाम। दोहा

पूर्व पक्ष तो. चोद्य जुग. गी र्नु. भणिति वाचौ हि

संज्ञा लक्षण अधि वचने सद्यः कृतं चव आहि २४

इति धीवर्गसारः ॥

शब्द के ७। गद्गद वचन के २। नाम ॥ दोहा ॥

अभिधा कु हरित ह्वान पुनि. वाचक ध्वनि अभिधान

अभिलाप हु गद्गद ध्वनि, तो मन्मन जुग जान ॥ २५ ॥

इति शब्दादि वर्गसार:

वंशी के २। कथक के २। नट के २। नाम ॥ दो०

विवर नालिका वेणु जुग कथक एक नट दोय ॥

लयारंभ वालाव चर रु. सर्व वेषी होय ॥ २६ ॥

खड्ग धारादि पै नर्तकी के ३। नट विशेष के २। गायक के २। घणी स्त्री हाथ पकड़ि नाचैं तिन को १ नाम ॥ दो०

लय पुत्री नर्त्त नटी प्लवक तु केलक दोय ॥ १० ॥

गायन गाथक तीय गन नाचत सतु. हल्लीष ॥ २७

रस भेद के ३। शृंगार के २। शृंगार भेद के २। नाम ॥ दो०

दास्य स ख्यं वात्सल्य रस भेद एक इक योग ॥

शृंगार तु कोशक भेद तु. विप्रलंभ संभोग ॥ २८ ॥

इति नाट्य वर्गसारः

अथ भूमि वर्ग सार लिख्यते ॥ नवखंडन के ९ सप्त
द्वीपन के ७ पृथक पृथक नाम ॥ हरिपद छन्द

भारत नव किंपुरुष हरिवर्ष हिरण्मय जानौ ॥
उत्तर कुरु भद्राश्व इलावृत केतुमाल नव मानौ ॥
जंबु प्लक्ष कुश क्रौंच शाक पुनि शाल्मलि पुष्कर कहिये
कविगुलाब नवखंड भूमि के सप्तद्वीप ये लहिये ॥ २९

गौड देश के ३ प्रभास के २ कामरूप के २ कुशस्थ
ली के २ निच्छवि के ३ कीर के २ नाम ॥ दोहा ॥

गौड नरेन्द्री पुंड्र त्रय सोम तीर्थ तु प्रभास ॥॰॥
कामरूप प्राग्ज्योतिष हि कुशस्थली तु प्रकास ३०
अन्तर्वेदी निच्छवि तु तीरभुक्ति २ विदेह ॥॰॥
कीर शारद शिल्पी त्रितय काश्मीर हु गनि लेह ३१

नवदेशन के पृथक पृथक नाम ॥ दोहा ॥

तुरुष्क खश वाल्हीक पुनि दाशेरक २ अवन्ति ॥
मरुभू मालव त्रिगर्त कहि अरु यह सौं भवन्ति ॥ ३२

कारूष के २ चेदि देश के ३ यदु के ४ नाम ॥ दोहा ॥

ह्रस्व है तु कारूष हि डाहल चैद्य २ चैदि ॥॰॥
यदु तौ सात्वत कुकुर २ चारि दशार्ह निवेदि ३३

ओड्र के २ कीकट के २ चंपपुरी के ३ अयोध्या के २
कलिंगसुर के २ द्वारकापुरी के ३ नाम ॥ दो॰

ओड्र तु उत्कल कीकट तु मगध हि चंपपुरी तु ॥

एकचक्र हरिगृहहै त्रयीहि अथ साकेत सुमीतु ३४

दूसर उत्तरकोशलो हास्तिने सुतो गजाह्व ॥ ३०॥

द्वारवती वनमालिनी रु अब्धि नगरी आह्व ॥ ३५

जनकपुरी के २ मथुरा के २ वारानासी के ३ नाम दो०

विदेहा तु मिथिला जुगल मधूपघ्न मथुरा हि ॥

तपस्थली तो जित्वरी रु तीर्थराजी आहि ॥ ३६

उज्जयिनी के २ करणपुरी के ३ प्रतिमार्ग के ३ नाम

दो० उज्जयिनी तो विशाला चंपा पृथ्वी तीन ॥

मालिनी ह उद्रंग तो त्रंगो त्रंग प्रवीन ॥ ३७॥

इति भूमि वर्गसार: ॥

हिमालय के ४ कैलाश के ३ नाम ॥ दोहा

हिमालय तु मेनाधव रु उमागुरु रु नगनाथ ॥

रजतप्रस्थ गण पर्वत रु कुबेराचल ह साथ ३८

मैनाक के ४ खडी के ४ नाम दोहा

हिरण्यनाभ तु सुनाभ रु हिमवत्सुत मैनाक ॥

खटी तु कठिनी कक्खटी रु वर्णलेखीता[illegible] ३९

इति शैल वर्गसार: ॥

सिंहनाद के ३ अष्टापद के ४ नाम ॥ दोहा

सिंहनाद चुत्कार पुनि क्ष्वेडित तीन समूल ॥

उत्पादक तो शरभ चव अष्टापद शार्दूल ॥ ४०॥

इति सिंहादि वर्गसार: ॥

देवरके १। प्यालाके २। पतिके ३ उपपतिके ४। नाम। दो॰

देवर नागर प्यालतौ। वारकीन भर सोतु ॥ ॥

नर्मकील रत्मुक नयहि जार पाप पति होतु। ४१

इति न्ट वर्ग सारः॥

ऋषिके ३। महर्षि आदि ४। नाम॥ दोहा

सत्य वचस शापास्त्र ऋषि महर्षि तो व्यासादि ॥

परमर्षि तु भेलादिही। देवर्षि स्तु करणादि ॥ ४२॥

ऋतु पर्णादि तु। राजऋषि वशिष्ठादि। ब्रह्मर्षि ॥

जैमिन्यादि तु। कांड ऋषि सुश्रुतादि तु श्रुतर्षि ४३

नारदके २। दुर्वासाके २। वाल्मीकके ३। नाम॥ दोहा

कपि वक्त्रस्तु। विधात्मभू कुशारणि तु दुर्वास ॥

कवि ज्येष्ठ प्राचेतस रु। कुशीवश रु नयभास ४४

काश्यपके २ व्यासके ८ वशिष्ठके २ विश्वामित्रके २ नाम

दो॰ शतकोटि तु काश्यप अथो। माठर वेद व्यास ॥

कृष्ण द्वैपायन अपर बादरायण रु व्यास। ४५।

सत्यभारत रु। सात्यवत पाराशर अठ मित्र ॥

अरुंधतीपति वशिष्ठ हि। गाधिज विश्वामित्र। ४६

गौत्तमके २। कणादके २। धन्वंतरिके २। काशिराज

को १। नाम॥ दोहा॥

शतानन्द गौतम हि अथ। कणाद काश्यप दोय ॥

दिवोदास धन्वंतरि हि। सुधोद्भव तु इक होय ४७

कौरणु के २ कौंडिन्य के २ मंदनाग के ४ नाम॥ दोहा

रुचिरासुत तु. कौरणु अथ विष्णुगुप्त कौंडिन्यौ॥
मंदनाग वात्स्यायन रु. पक्षिल स्वामी गिन्य ४७

चाणक्य के ३। हलभूति के ४। नाम॥ दोहा॥

चाणक्य तु. द्रोमिण त्यतिय. अंगुल हलभूति सोतु
अयाचित रु. कृत कोटि पुनि. उपवर्ष हु यव होतु ४८

पाणिनि के ६ नाम॥ दोहा॥

दाक्षीपुत्र तु. पाणिनि रु. शालोत्तरीय जानि॥१०॥
शालंकि रु. पाणिन छठो. आहिक नामबखानि ४९

व्याडि के ४। कात्यायन के ३। नाम॥ दोहा॥

मेधावी नंदिनीसुत चव. विंध्यस्थ रु. व्याडि॥
कात्यायन मेधाजित रु. कात्यं हि त्यतिय न व्याडि ५०

वररुचि के २। पतंजलि के ४। भर्तृहरि के २। नाम॥ दो॰

पुनर्वसु त. वररुचि पतंजलि तो. गोनर्दीय॥
भाष्यकार चव. चूर्णिकृत हरितु भर्तृ हरि बीय ५१

कालिदास के २। भवभूति के ३। भारवि के २। नाम॥ दो॰

मेधारुद्र तु. कोटिजित भूगर्भ तु. भवभूति॥
विरुद्यत श्रय. श्रीतसुष्ण तो. भारवि जुग करवृति ५२

इति ब्रह्म वर्ग सार॥

मंडलेश के ३। एयु के ३। काकुत्स्थ के २। नाम॥ दो॰

मंडलेश तो. भयापह रु. एकजन्मा स्वरुच॥

आदिराज पृथु वैण्य त्रय पुरंजयं तु काकुत्स्थ ॥
मांधाता के २ दिलीप के २ दाशरथि के ३ नाम ॥ दो०
मांधाता यौवनाश्व हि दिलीपराद् तु नाम ॥
रघु रामं हि दशरथि जितं कौशल्या यानै राम ५७
जानकी के ३ कुश को १ लव को १ एक बार मे दोनों
को १ नाम ॥ दोहा ॥
वैदेही तो मैथिली भूमिजा रु सीता हि ॥ ८ ॥
राम पुत्र कुश लव हि इक उक्ति कुशीलव आहि ५५
लक्ष्मण के ३ रावण के ४ नाम ॥ दोहा
लक्ष्मण तो सौमित्रि त्रय मेघनाद जित वेश ॥
राक्षसेंद्र धनदानुज रु पौलस्त्य रु लंकेश ५६
इन्द्रजीत के २ हिडिंबारमण के ६ नाम ॥ दोहा ॥
मेघनाद तो शक्रजित आंजनेय हनुमान ॥ ९ ॥
योगचर रु अर्जुनध्वज आनिलि रु हनूमान ५७
वालि के ३ पुरूरवा के ४ ययाति के २ नाम ॥ दोहा ॥
ऐंद्रि तु वाली वालि त्रय पुरूरवा तो बौध ॥
ऐल उर्वशीरमण हि ययाति नाहुष शोध ५८
शाकुंतलेय के ४ सहस्रार्जुन के ३ नाम ॥ दोहा ॥
सु शाकुंतलेय सु भरत सर्वदमन दौष्यंति ॥
हैहय बाहुसहस्रभृत रु कार्तवीर्य भनंति ५९
नल के ४ शंतनु के ३ नाम ॥ दोहा ॥

बाहुक नैषधे अश्व वित नल अरु। पुण्यश्लोकं॥
महाभीष्म तो शांतनु रु॰ त्रय शातीयं अशोक॥ ६०॥

शांतनु की स्त्री योजनगंधिका के ७। भीष्म के ७। धृतराष्ट्र के २। पांडु के ३। नाम॥ दोहा॥

दासेयी तु झषोदरी चित्रांगद सू जानि॥ -॥
काली विचित्रवीर्य सू रु॰ व्यास माता मानि। ६१॥
सत्यवती हू गांग तो। गंगा यनि गांगेय॥ -॥
स्वेच्छामृत्यु रु॰ शांतनव कौरापदंत रु॰ ज्ञेय ६२
पुरावसु इ॰ धृतराष्ट्र तो। आंबिकेय जुग जानि॥
माद्रीपति तु पृथापति रु॰ पांडु तृतीय बखानि ६३

दुर्योधन के ३। युधिष्ठिर के ४। नाम॥ दोहा॥

सुयोधन तु कुरुराज त्रय। गांधारेय अशोक॥
धर्मपुत्र अजमीढ पुनि। अजातशत्रु रु॰ कंक ६४

भीमसेन के ८। तिनमें वृकोदर आदि तो ४। अरु जरासंधजित। वकजित आदि ४। नाम॥ दोहा॥ -॥

वृकोदर तु। कटवृक रु॰ बीरेश गांधार॥
जरासंध किर्मीरजित वक हिडिंबजित मार। ६५॥

अर्जुन के १६। नाम॥ दोहा॥

गुडाकेश अर्जुन विजय जिष्णु वृहन्नल सोय॥
गांडीवी फाल्गुन धनंजय रु॰ किरीटी होय। ६६
रु॰ सव्यसाची कपिध्वज सु शब्दभेदी साथ॥

भीमत्सु रु. वानंद पुनि सुभद्रेश अरु. पार्थ। ६७॥

द्रोपदी के ७ नाम ॥ दोहा ॥

पांडु प्रार्मिलो वेदिजा पांचाली ह्वलो रु.॥१॥

नित्य योवना पार्षती रु. याज्ञसेनी चारु॥६८॥

करण के ६ नाम ॥ दोहा॥

चदोन्द्रो चांलको करण पुनि. वसुषेण रु. राधेय॥

सूतपुत्र के रु. रवितनय चंपेश हु षट ज्ञेय।६९॥

द्रोण के २ अश्वत्थामा के २ जनमेजय के ३ नाम॥

दो० गुरु आचार्य हि. कृपीसुत तो. द्रौणायन दोय॥

पारीक्षित राजर्षि अरु. जनमेजय त्रय होय।७०

बलि के २ वाण के २ त्वाष्टृ के ३। शिशुपाल के

३। कंस के ४। नाम। दोहा

बलि तु. विरोचन सुत जुगल. विंध्यावलीसुतस्तु

बाण हि. त्वाष्टृ तु. वृत्र अहि चेदिराट तो अस्तु.७१

चैद्य न्यतिय. दमघोषसुत मूल भद्र तो धारि।॥

मूल देव कर्णीसुत रु. कालांकुर हु. चत्वारि॥७२॥

आकाशवाणी के ४। लेखक के ३। नाम॥ दोहा॥

देव प्रश्न उपश्रुति रु सुपुण्य शकटी जानि॥

चित्रकारि हु मासिपराय तो लेखक किरिकौ त्रिमानि७३

दवाति के ४। मेला के २ नाम॥ दो०

नरो कृपिका मसिमाणी रु. सुमसीधानी जोय॥

मेलांधु हि मेला सुतौ। मसीजल हि जुग होय॥७४॥

मसि के २। कलम के २। लेखक के ४। नाम॥ दोहा॥

परांजन तु। मसि लेखिनी तु वर्ण तूली देख॥
वर्णदूत तौ स्वस्तिमुख वाचिक हारक लेख ७५

छापके २। लेख्यस्थान के २। लिफाफा के २ नाम। दो॰

मुद्रा प्रत्यय कारिणी ग्रन्थकूट तो होय॥ ॥
लेख्यस्थानैक चेल तौ लेखनि बंधन होय॥७६॥

पथिकको १। पथिक गणको १। संदेशा के ३। नाम। दो॰

पथिक तु। यातु रु गंतु त्रय पथिक संहति तु। हारि।
कौशली तु। संदेश अरु प्राभृत त्रय निर्धारि॥७७॥

घूस के २। गुप्तके २। लुंडी के २। चामरवात के २। नाम। दो॰

उत्कोच तु। उपदानक हि। जनांतिक तु अप्रकाश॥
लुंडी तु। न्याय सारिणी कुठरु मंथरु आश्र॥७८॥

हाथी के ९। नाम॥ दोहा॥

सिंधुर करटी निर्झर रु। पीलु महामृग जानि॥
जलकांक्ष रु। राजीव पुनि। सामज पेचल मानि ७९

राजवाह्य के २। महादंत के २। हाथी का बच्चा को १। नाम॥ दोहा॥

राजवाह्य दूजो। विजय कुंजर ईषा दन्त॥ ॥
महादंत दंतरि प्रावक तु। विक्क हि नाम भनन्त ८०

गजबंधनस्तंभके ३। अंकुशके २। पटखला के २॥

नाम॥ दोहा॥

अभोग्य तु मारन्धि अरु। गजबंधनी त्रिधीर॥
चित्त ज्वर तौ। पालको हि। पारी तौ। हिंजीर॥ ८२॥

अश्व के १२। पञ्चकल्याण के १ नाम। दोहा

अर्व तु। हेली चामरी हरि कान्ता श्री पुत्र॥
रागस्कंध रु। कुन्दसके शालिहोत्रगनि अत्र॥ ८२॥
मरुद्रथ रु वातायन सु। एकशफ रु। किल्की हि॥
सु पंचाग पुष्पित सुतौ। पंचभद्र लखि वीहि। ८३।

मानुषा कृष्ण के १ केशर के १ अश्व हृदावर्त के १ नाम। दो०

रविकृष्णलाट रु। हरित वेशर तौ। स्वर मानि॥
अश्वतर रु श्री हृस्तक तु। हृदावर्त गुणजानि ८४

अर्जुन का रथ को १ बृहस्पति का रथ को १ नायक को १ पुष्परथ को १ नाम॥ दो०

नंदिघोष रथ अर्जुन। हि। नीतिघोष रथ जीव॥
अग्रेसरिक तु। नायको हि उल्लास तु इकनीव। ८५

धनुष के ५। चिल्ला के १ नाम॥ दोहा

शरावाप स्थावर धनुष स्वरात निशात पंच॥
ज्या तु। जीवा भारवे रु। अतिकाय रु। गुणपंच ८६

शर के ७ नाम॥ दोहा

अस्त्र कंदक तु। विकर्ण रु। स्थूलसेड शर तात॥
निन पुंख रु। विपाठ प्रानि। पत्रवाह गनि सात ८७

तीरके ३। तरवारिके ४। याँकी तरवारीको १। नाम ॥ दो०
तीरं तु। बिज्जलं शायकौ हि। भद्रात्मज तरवारि॥
विशासनं धारा बिषं चक्राहि त्सरु। कटीतलं धारि ८७

अभ्यासके ३। स्तुतिग्रन्थके २। जाचकके २। नाम ॥ दो०
खुरली शस्त्राभ्यासं अरु योग्या विबुधकिरीट॥
वन्दि पाठ भोगावली याचका तो बसु कीट ॥ ८८

धूलिके ४। पताकाके ४। नाम ॥ दोहा
वातकेतु मेदिनी द्रवं पांशु रु। क्षिति करा चारि
चीन तु। कदली कंदली व्योम मंजरं रु धारि ॥ ८९॥

भीरु के ४। अपयानके २। वधस्थली के २। नाम। दो०
भेलं तु। भीरु पलंकट रु। हरिण हृदय चवस्यात॥
शृगाली तु। विद्रवं जुगल वधस्थली आघातं ९०

मारणके २। रात्रिमारणके २। मृत्युके ४। मारकके ३।
नाम ॥ दोहा ॥
कदन तु मंथ हि। सौप्तिकं तु रात्रिमारण हि धारि
भूमिलाभ तु। निपातं उतपात तु मरक रु। मारि ९२

शावके ५। श्मशानके ४। नाम ॥ दोहा
शाव क्षिति वर्द्धन स्यागं कट पंचावस्थ हि नान॥
शातानक तु। पैव दाहसर रुद्राक्रीड श्मशानं। ९३

इति क्षत्रिय वर्ग सार ॥ ॥

तृष्णाके २। ऋणमुक्तिके २। प्रस्वेदके २। का

चपान को १ नाम ॥ दो॰

टप्पा तो. धन पिशाची विगराने तो. अटा मुक्ति

प्रपे वात फुल्लफाल है. सैधारा तु इक उक्ति. ९४

वायन के ३. फुलका रोटी के ३ ॥ नाम ॥ दोहा

व्रतोपायन तु. वायन रु. साहित. महेराक तीन ॥

पूपाली तो चर्पटी त्रय. पोली परवीन ॥ ९५ ॥

लाजा के २ दोह्नी के ७ नाम । दोहा ॥

खादिका लाजा दोह्नी तो. पारी रु. निपान ॥

तुंबा गली रु. रोहिणी साल. निलिंपा नान ॥ ९६

कलेवा के ३. पारद के ४ नाम ॥ दोहा ॥

कल्य वर्त्त प्रातराश रु. प्रातर् भोजन धारि ॥

सिद्ध धातु हरबीज पुनि. पारद सूतक चारि । ९७

इति वैश्य वर्ग सार: ॥

कायस्थ के २ नाम. पित के ३. कुकुर के १० । नाम ॥ दोहा

अक्षरचुंचु तु. अंजोकर है चंडिल वात्सीपुत्र ॥ ९ ॥

नखकुक्कुर रु. रसनालिह तु अरत नपेलरिवअत्र ९८

कपिल इन्द्रमह कामुक रु. दीर्घसुरत वांताद ॥

वक्र पुच्छ पुनि. ग्रामसृग प्रायाल रत मरा वाद ९९

चोर के ७ । नाम ॥ दोहा ॥

मुन्यां प्रान्य मुनीर त्रय मचुर पुरुष तो जानि ॥

प्रतिकित दराव कुंभिल रु. चोर हु चारि प्रमानि १००

वधचोरके ३ असत्यचोरके ३ नाम ॥ दोहा ॥

वधश्चोर तु कुजंभिर रु सुरंगाहि हू तीन ॥ १ ॥
वंदीकार तु माचले रु विल्ला भु चयचीन ॥ २ ॥

स्त्रीचोरके २ काव्यचोरके २ अँडालगावावाला चोरके २ नाम ॥ दोहा ॥

स्त्री चोर रत्नहिंडक हि काव्य चोर तो जोय ॥ १ ॥
चर्कटेरा हू ही खानिक तु कुड्य छेद्य जुग होय ॥ २ ॥

संधिके २ संधिभेदके १ ।१ ताकूके २ तर्कुपाराके २ तर्कुपीठीके २ पीनगाके २ तूलके ३ नाम दोहा ॥

संधि सुरंगा भेद तिहि गोमुख श्री वत्सादि ॥ १ ॥
तर्कु तु कपालनालिका तर्कुशाल तो वादि ॥ ३ ॥
सामक हीअथ वर्त्तनी रु तर्कु पीठी मूल ॥ १ ॥
तूलकार्मुक तु पिंजन हि तूल तु पिचु पिचुतूल ५

पिंजकाके २ तुरीके २ मोचड़ीकावापावड़ीकाभेला ४ नाम ॥ दोहा ॥

तूलनालिका पिंजिका तंत्रकाष्ठ तु तुरी हि ॥
प्राणहिता पदरथी पादुका रु पन्नधी हि ५

इतिशूद्रवर्गतरंगः ॥

कल्याणकर्त्ताके ४ द ताके ३ अन्नार्थस्वच्छोदाताको १ नाम ॥ दोहा ॥

क्षेमकर मद्रकर रु शंकर रु रिष्ट ताति ॥ १ ॥

दार तु दाता सुचिर त्रय भार्याट तु इक ख्याति ६

सुम्न घातक के २ तीक्ष्ण के २ सम्बन्धी के ३ नाम । दो०

सुम्न घातक तु इस्योर हि राजघ तीक्ष्ण हि जानि ॥

सम्बन्धी गुणवान अरु संसुक तीन पिछानि ॥ ७ ॥

षट्मज्ञ को १ नाम । दोहा ॥

लोक और तत्वार्थ पुनि काम मोक्ष धर्मार्थ ॥ ७ ॥

अति मज्ञा इन मैं रखै सो षट्मज्ञ हि सार्थ ॥ ८ ॥

पूछवा वाला के २ हढ के ५ पाक्रिम के २ नाम । दो०

कथंकथिक प्रश्नी जुगल ककवद तो निस्संधि ॥

निर्वह हढ रु निवात ही पाक्रिम पाकिम वंधि ९

पापिष्ठ के ४ बौद्ध के ५ कौल के २ नाम ॥ दोहा ॥

अधर्म तु अपसद पाप ध्रुव बौद्ध क्षपण अह्रीक ॥

वैनायिक भिन्नक हि अघ कौल आत्वयिक नीक १०

शैव के ३ पाशुपत के ४ चीकण के २ नाम ॥ दोहा ॥

ओऊर्ध्व स्रोतासिक शैव ही पाशुपत तु चिद्रूप ॥

स्फूर्तिमान पांचार्थिक हि मस्करी मराल अनूप ११

खचित के ४ पात्रेसमित को १ नाम ॥ दोहा ॥ ७ ॥

करंवित तु खचित रु लिपत गुरु गुंडित चवजोय ॥

भोजन नैं अनतन मिलत पात्रे सामितै सहोय १२

इति विशेष्यनिघ्न वर्ग सारः ॥

धार्मिक सह भोजन को १ दोस्य को १ नाम । दो०

सहभोजन धार्मिकनको। गरा चक्रकै इक आहि॥
दोस्थतु क्रीडा क्रीडक रु सेवा सेवक माहि॥१३॥

कलंजको १ वक्रभारीत के २ अनुमानके १ नाम। दो॰

करिविषास्त्रमृगपक्षि। हतते कलंज ही नाम॥
वक्रभारीते ढेकोक्तिजुग अनुमो तो। अनुमान॥१४

राजकरास्फालको १ वस्तुके ६ नाम॥ दोहा

स्फालनजो करिकरां को। झलझ्लो इक पाव॥
धर्मे तु सत्व रु। तत्व पुनि। वस्तु पदार्थ रु। भाव॥१५

संदर्भके २ ग्रन्थके २ महाकाव्यके २ नाम॥ दोहा॥

संदर्भ स्तु। प्रबंध अथ द्वात्रिंश दक्षरी सु॥।॥
ग्रन्थ सर्गबंधतु। द्वितिय। महाकाव्य ही दीसु॥१६

नाटकके २ वाङ्मयभेदनके भिन्नाभिन्न ४ नाम। दो॰

महारूपक तु नाटक ही वाङ्मयभेद। कथासु॥
परिकथा रु। आख्यायिका चंपू खंड कथा सु॥१७

कथा परिच्छेदनके भिन्नभिन्न ८। नाम॥ दोहा॥

परिच्छेद उद्घात पुनि। सर्ग वर्ग अध्याय॥।॥
परिवर्त्त रु। उच्छ्वासनव। संग्रह अंक गनाय॥१८

ग्रन्थसंधिनके भिन्नाभिन्न ६। संकेत के ५। अप्रति

रूपकथाके २ नाम॥ दोहा॥

काराड पर्व आन्हिक पटल प्रकरणस्थान सचेत॥
ग्रन्थ संधि षट ही। अप्रो। समय कार संकेत॥१९॥

परिभाषा प्रश्नोत्ति सुनि श्लेली पंच बखानि ॥ १ ॥
असती रूपकथा सुतो संसारिकौं जुग जानि २० ॥

इति संकीर्ण वर्गसार:

इति त्रिकाण्ड शेषसार तरंग: ॥ १ ॥

अथ हेम सार तरङ्ग लिख्यते ॥ दोहा

जुदे वाधि देव सु प्रथम देव मर्त्य पुनि मान्य ॥
तिर्यक् नारक हेम क्रत छठम काण्ड सामान्य ॥ १ ॥
देवाधिदेव प्रथम भै देव तु दूजे माहि ॥ + ॥
नर तीजे तिर्यक् चवथ एकेन्द्रियादि आहि ॥ २ ॥
एकेन्द्रिय भूतेज जल वायु मही रह जोय ॥
द्वीन्द्रिय तो कृमि आदि अथ पीलकादि त्रय होय ३
लतादि तु चतुरिन्द्रिया हे पंच इन्द्रिय तु जानि ॥
इनके भी मत्स्यादि ये थल नभ जल चर मानि ४
सुर नर नारक तीनये पंच इन्द्रिय हि होय ॥ १ ॥
नारक पंचम कठ्म भै साधारण जिय जोय ॥ ५ ॥

मोक्ष के ९ नाम । दो॰

महानन्द अपुनर्भव रु महोदय रु निर्याण ॥
निर्वृति अक्षर ब्रह्म सिद्धि सर्व दुःखक्षय जाण ॥ ६

मुनि धन के ३ । दीक्षा । वा । संन्यास के ३ । नाम ॥ दोहा

तप रु योग श्लेलें सुनि धनहि व्रतादाने तो धारि ।
तपस्या रु नियम स्थिति रु सु परिव्रज्या चारि ७ ।

अष्टांग योग नाम। दोहा॥

योग अंग अठ। यमं नियमं आसनं प्राणायामं॥
प्रत्याहारं रु। धारणां ध्यानं समाधिं हि नाम।८॥

यम भिन्न भिन्न ५। नाम॥ दोहा॥

यम तु। अहिंसा सत्यता अरु। अस्तेय बखानि॥
ब्रह्मचर्य अपरिग्रह हु भिन्न भिन्न ये जानि।९

भिन्न भिन्न नियम के ५। आसन को १ नाम॥ दोहा

नियम। शौच सन्तोष तप अरु। स्वाध्याय विवादि।
ईश्वर प्रणिधान हु अथो आसनं बहु पद्मादि।१०

प्राणायाम के २। प्रत्याहार को १ नाम॥ दोहा॥

प्राणायाम तु। प्राणायमं श्वास प्रश्वास सम्हार॥
विषयन तैं इन्द्रियन को रोकब प्रत्याहार॥११॥

धारणा। ध्यान। दोहा

धारणा तु स्थिर बन्धन जु मन को ध्येय मंझार॥
सतत एकता ध्येय मै मन की ध्यानं उदार॥१२॥

समाधि। संयम। दोहा॥

अर्थमात्र आभास जब ध्येय जु शून्यस्वरूप॥
सो समाधि अथ एकता त्रय की संयम रूप॥१३॥

इति देवाऽधिदेवकाण्डसारः

अथ देवकाण्डसार लिख्यते। स्वर्ग के ५। रैवन्त के ४। नाम। दोहा

ऊर्द्ध लोकनि गोमुदिं तरिष नाविषै पञ्च भनन्त॥
स्वर्ग अर्के रतोजे अरु। हय वाहन रेवन्त॥ १४॥

चन्द्रमा के ४। बुध के २। कुज के ३। नाम॥ दोहा॥

सित वाजी तु लिथि मरा अम्टतदेह। दशवाजि॥
श्यामाङ्ग तु पञ्चार्चि अरु आर नवार्चि हि साजि।१५

शुक्र के २। शनि के ५। नाम॥ दोहा॥

मघाभव तु षोडशार्चि हि असित सप्त कर जानि॥
क्रोड रेवती भव पञ्चम। नीलवास सं हिमानि।१६

सागर कोटि कोटि की बीसी में द्विविध काल को वर्तो व॥ दोहा॥

काल द्विविध अव सर्पिणी उत्सर्पिणी पिछानि॥
सागर कोटि हि कोटि गुनि तिन बीसन मधि मानि।१७

काल चक्र के अरन की संख्या। नियम॥ दोहा॥१॥

षट अर अवसर्पिणी विषै उत्सर्पिणी माहि॥
पूरव सैं विपरीत पर काल चक्र अर आहि॥१८॥

प्रथमार नाम प्रमाण॥ दोहा॥

सुराकान्त सुखमा प्रथम काल चक्र अर धारि॥
तहां वर्ष सागरन के कोटि कोटि हुं चारि॥१९॥

द्वितीय त्टतीय अर नाम प्रमाण। दोहा॥

दूजे सुखमा अरविषै कोटि कोटि ते तीन॥
सुखम दुःखमा अरविषै कोटि कोटि जुग बीन।२०

चतुर्थाऽर नाम मझार ॥ दोहा ॥

दुःखम सुखमौ चवथ मैं कोटि कोटि इक आहि ॥
सहस वयाली सहित रष न्यून होय तिहिं माहि २१

पंचामाऽर षष्टार नाम प्रमाण ॥ दोहा ॥

पंचम दुःखमौ अर विषे वर्ष इकीस हजार ॥
अथ इक्कीस हजार ही अति दुःखमौ मझार ॥ २२

अथ उत्सर्पिणी के षट अरनको संक्षेप बरनन ॥ दोहा ॥

अथ षट अर उत्सर्पिणी मे इन तें विपरीत ॥ ॥
अति दुःखमौ रु दुःखमौ प्रथम द्वितीय क्रम मीत २३

अव सर्पिणी के प्रथमाऽर त्रय मैं उत्पन्न मनुष्यन की
आयु। उच्चाई। भोजनादि नियम। दोहा ॥

प्रथम दूसरे तीसरे आर मे मानुष होय ॥ ॥
पल्य तीन द्वै एक ही क्रम तें जीवत सोय ॥ २४ ॥

ऊंचे तीन रु दोय इक गव्यूती है तेतात ॥ ॥
तीन दोय इक दिवस मै कल्प द्रुम फल खात २५

चतुर्थाऽर मे आयु। उचाई। नियम। दोहा ॥

चतुर्थ अर मै नरन की पूर्व कोटि वय जानि ॥ ॥
धनुष पांच सौ उच्चता तव ही तिन की मानि ॥ २६ ॥

पंचमार षष्ठार मे आयु। उचाई। नियम ॥ दोहा

पंचम मे शत वर्ष वय उच्चता तु कर सात ॥ ॥
छठें आयु षोडश वरष हाथ उचाई तात ॥ २७ ॥

॥ एकान्त दुःखमादिजु उत्सर्पिणी मभार ॥
षट अरके मानवन को जानिव यादि विचार ॥ २८॥

उत्सर्पिणी के षट अरन को ॰॰क नाम ॥ दोहा ॥ ॰॥

अति दुःखमाँ ॥ दुःखमाँ दुःखम सुखमाँ जोय॥
सुखम दुःखमाँ ॥ सुखमाँ अति सुखमाँ षट होय २९

कालवर्ष जीवन समय उच्चाई ॥ भय रीति ॥ ॰॥
या क्रम करि पूरव लिखित ज्यौं षट आरकी चीति ३०

सागर कोटि ॥ पल्य पुनि पूर्व कोटि संख्या हि ॥
नियम विशद विस्तार लखो ग्रन्थ जैन मत माहि ३१

काष्ठा ॥ लव ॥ कला ॥ लेश ॥ नाम ॥ दोहा ॥

अष्टादश हि निमेष की काष्ठा काष्ठा दोय ॥ ॰॥
सोलवँ पंदरह लव कला लेश कला जुग कोय ॥ ३२

क्षण ॥ १ घडी के ४ ॥ मुहूर्त १ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ ॰॥

लेश पंच दश क्षण सु षट घटिका घटी बखानि॥
चारि धारिका नाडिका सुजुग मुहूर्त हि मानि ॥ ३३॥

तिथि के २ ॥ हेमन्त के ३ ॥ शिशिर के २ ॥ वसन्त के २ ॥ नाम ॥ दो॰

तिथि तु कर्मवाटी हि ऋतु सप्राल रौद्र हेमन्त
शैष तु शिशिर हि इष्य तो वलाङ्क हि वसन्त ३४

वर्षा ऋतु के ४ ॥ शरद के ३ ॥ नाम ॥ दोहा ॥

मेघकाल मेघागम ॥ वर्षा तपात्ययं चारि ॥ ॰॥
शरत घनात्यय शरद ऋतु तीन नाम निर्धारि ३५

दक्षिणादिग्भववस्तुके २। उत्तरादिग्भववस्तुके २। पूर्व दिग्भववस्तुके २। पश्चिमदिग्भववस्तुके २ नाम। दो॰

अपाचीनं तो अपाक हि उदक सत्तु उदीचीनं ॥
प्राक तु प्राचीनं हि जुगल प्रत्यक तु प्रतीचीन। ३६

इन्द्रशत्रु ७ तिनके भिन्न भिन्न। नाम॥ दोहा॥

जम्भं अद्रि वलं व्रत्रं अरुन मुचि पुलोमा पाक ॥
भिन्न भिन्न ये सात हो शत्रु इन्द्र के ताक॥ ३७॥

इन्द्रसुतके २। इन्द्रसुताके ३। इन्द्रद्वाःस्थको १। नाम। दो॰

सुत जय दत्त रु जयं जुग हि सुता जयन्ती स्वास्य॥
...वेषी तीजी तावेषी जु देवनन्दी द्वाःस्थ॥ ३८॥

इन्द्रसरोवरको १। स्वर्गशिल्पीके ४। नाम। दोहा

...सतो नन्दी सर इक हि देववर्द्धकि तु जाने ॥१॥
सु॰ विश्वकर्मा विश्वकृत त्वष्टा चारि पिछाने॥ ३९॥

यमपुरीके। १। यमद्वाःस्थको १। कुबेरपुरीके २। नाम। दो॰

सं यमनी जमकी पुरी वैध्यतं तिहिं प्रतिहार॥
जु॰ वस्वोकसारां सुतो प्रभा द्वितिय निर्धार॥ ४०॥

पार्वतीके ३। स्वामिकार्त्तिकके ४। नाम॥ दोहा

स्वसा कृष्ण मेनाके कौ भूतनायिका धारि॥१॥
उमा कातिका गङ्ग को सुत अर शरभू चारि॥ ४१॥

विष्णुके शत्रुनके २३। नाम॥ छप्पय

मधुं धेनुकं चाणूर पूतना यमलार्ज्जुनं कहि॥१॥

शकट अरिष्ट रु कालनेमि पुनि हयग्रीवहि लहि ॥
कैटभ केशी कंस साल्व मुर मैन्द द्विविद भानि ॥
नरक वाण शिशुपाल रहु बल कालिय हू गनि ॥
अरु कनककशिपु हू वीस त्रय हरि के शत्रु बखानिये
कहि कविगुलाब अरि काम के शंबर प्रत्यक जानिये ४२

बलदेव के ४। बलदेव के मूसल को १। हल को १। नाम। दो०

सौनन्दी संवर्त्त की हाल सिता सित चारि ॥ १ ॥
सौनन्द तु तिहिं मुसल अथ हल संवर्त्तक धारि ॥ ४२

सूत्र को १। भाष्य को १। प्रस्ताव के २। निरुक्त को १। नाम। दो०

सूत्र तु सूचन करत हि तिहिं विस्तृत अर्थ तु भाष्य ॥
प्रस्ताव तु प्रकरण हि पद भंजन निरुक्त राष्य ४३

अधिकरण को १। वार्त्तिक को १। नाम। दोहा

अधिकरण तु उपपादन ज़ु न्याय हि वार्त्तिक जान ॥
उक्त अनुक्त दुरुक्त त्रय अर्थहि कारण ज्ञान ॥ ४४

टीका को १। पद सूचनी टीका को १। अर्थानुसारणी टीका को १। नाम ॥ दोहा ॥

टीका व्याख्या निरन्तर पंजिका तु पद भंज ॥ १ ॥
अन्वय स्तु निबंध अरु वृत्ति हु तीन हि रंज ४५ ॥

परिशिष्ट १ पद्धति १ कारिका १ नाम ॥ दोहा ॥ १ ॥

परिशिष्ट पद्धति इकिक अर्थ कारिका पिछानि
स्वल्प वृत्ति में सूचना वृहत अर्थ की जानि ॥ ४६

सर्वविद्याको १ नामसंग्रहको १ सामान्यगालीको १ आशिषको १ नाम ॥ दोहा ॥

सर्वविद्यातु कालिन्दिकों निघंटु संग्रह नाम ॥
गालितु विरुद्धशंसनहि आशी मंगलधाम ४७

अभिनयभेद ४ । नाम ॥ दोहा ॥

आहार्य तु भूषण रचित वचकरि वाचिक जानि ॥
तनुकरि आंगिक सत्वकरि सात्विक अभिनय मानि ४८

दशरूपक के भिन्न भिन्न । नाम ॥ दोहा

नाटक प्रकरण भाण पुनि प्रहसन डिम व्यायोग ।
समवकार ईहामृग रु वीथी अंकहि योग ॥ ४९ ॥

षट्भाषा । नाम ॥ दोहा ॥

संस्कृत प्राकृत मागधी रु शौरसेनी जानि ॥ ·। ॥
पैशाची भाषा छठी अपभ्रंश पहिचानि ॥ ५० ॥

वृत्ति ४ । नाम ॥ दोहा ॥

वृत्ति चारिये भारती और सात्वती जोय ॥ । ॥
आरभटी पुनि कैशिकी भिन्न भिन्न चव होय ५१

शिवादिकी वीणान के भिन्नाभिन्न । नाम । छप्पय

जुअना लम्बी वीण सो तु शिव की उर आनो ॥
कच्छपी तु शारदहि नारद हि महती मानो ॥
प्रभावती तो वीण गणन की कविजन गावैं ॥
विश्वावसु की वीण विदित ब्रहती ठहरावैं ॥

अरु तुम्बुरु कौतुक कलावती कोविद शुलाव वीणा कही
अथ कंडोले रु चांडालिका चंडालन की जुगलही ५२

वीणा का मूल मै तार बांधवा के अंग के २। कोण के २
नाम ॥ दोहा ॥

वंश शलाका मूल मै कूणिका रु कलिका हि ॥
शारिका तु वीणादि को वादन। कोण हि आहि ५३

नाट्य मै सौगतादि को १ पूज्य के ४। नाम ॥ दोहा ॥

सौगतादि तौ भदंत हि पूज्य जु तत्रभवान ॥
अत्र भवान रु तीसरे भगवान हि परिमान ५४

इति देव कांड सारः ॥

अथ मर्त्य काण्ड सार लिख्यते। वेश्या की मजूरी को १ कावड आदि का दंड के २ वीवध को २ नाम ॥ दोहा ॥

भोग तु गणिका की भृति हि भारयष्टि नौ जानि ॥
विहङ्गिका हू रू तौ आरभट हि पहिचानि ५५

खरूट के २। मार्ग खर्च के २। जा को पिता का नाम कै पाछै जाणिवो होय ता पुत्र के ३। वेश्या का पति को १ बडो भाई कवारो होय छोटो परण्यो ताकी स्त्री को १ नाम ॥ दोहा ॥

रूढ मण पद तौ किणा हि। शंबल तौ पाथेय ॥
जु। भरव्यात वह्नुक सु तौ आमुष्यायण होय ५६
अरु। अमुख्य पुत्रै हु न्य हि गणिका पति तु भुजंग

परिवेत्ता की नारिसो. परिवेदिनी अभंग॥५७॥

बडीसाली के २। छोटी साली के ३। नाम॥ दोहा॥

तियकी बडि भगिनी. कुली ज्येष्ठश्वश्रू होय॥
लघु सो. हाली आलिको केलिकुंचिका होय ५८

देवर आदि सैं उत्पन्न पुत्रको १। वाम दृग को १। दाहिना दृगको १। डाढ के २। नाम॥ दो॰

देवरादि सुतु क्षेत्रज हि सौम्य वामदृग जोय॥
भानवीय ——— न दाहिनो. दाढा जंभ हि होय।५९

जीभ मलादि ५ के ५। भोजन वस्त्र को १। वेत्र का आसन के २ भोजन शयन को १ नाम। दोहा॥

कुलुक जीभमल. दंतमल सुनो पिप्पिका घूष॥
नाकमल तु. सिंहाण इक. कानमल तु पिंजूष ६०
लिंगमैल तो पिप्पिका काशिपु तु भोजन चीर॥
आसन्दी वेत्रासन हि अशन शयन. औशीर ६१

प्रदीप के ५। वस्त्र का पंखा को १। नाम॥ दोहा॥

स्नेह प्रिय, स्नेहमारी दशाकर्ष दशेन्धन दीप॥
आलावर्त तु. वासनो बसनरचित कुल दीप। ६२

चक्रवर्ती १२ के पिता समेत दोय २ दोय नाम तिन में शांति १। कुंथु १। अर १। इनको एक एक नाम है। दो॰

अर्षिभि भरत हि सगर तो. सुमित्र भू हिगनीय॥
माघवा वै जय युगल अथ सनत्कुमार हि तोम ६३

अश्वसेन न्टप नन्द हि शांति कुंथु अर तीन ॥ ३ ॥
एक एक हि भये जिन चक्रेश नवीन ॥ ६४ ॥
कार्त्तवीर्य तो सुभूप हि पद्मोत्तरात्मज स्तु ॥ ३ ॥
पद्म हि जुग हरिषेण तो हरिसुत जुगहीश स्तु ६५
विजय नन्दन तु जय जुगहि ब्रह्म स्तु तो दोय ॥
ब्रह्मदत्त ये द्वादशहि सब इक्ष्वाकुज होय ॥ ६६ ॥

पितासहित ९ वासुदेव । नाम ॥ छप्पय ॥ ३ ॥

प्रजा पत्य त्रिपृष्ठ ब्रह्मसम्भव द्विपृष्ठ गाने ॥
स्वयंभू तु रुद्रज हि सोमसू सुरुषोत्तम भाने ॥
पुरुषसिंह तो शैव दोय अथ महाशिरःसुत ॥
पुरुष पुंडरीक हि रु दत्त तो अग्निसिंह सुत ॥
न्टप दशरथ सुत नारायण हि कृष्ण तनय वसुदेव कर
ये वासुदेव नव हि भये सकल जानत सुनर ६७

बलदेव ९ तिनके । अरु वासुदेवरिपु ९ के । एकत्र के । नाम ॥ छप्पय ॥

अचल विजय अरु भद्र बहुरि सुप्रभ रु सुदर्शन ॥
आनन्द रु नन्दन रु पद्म पुनि राम हि । हर्षन ॥
वासुदेव रिपु नव रु अश्वग्रीव रु तारक भाने ॥
मेरक मधु रु निशुम्भ बलि रु प्रह्लाद विदित गाने
लंकेश अस्मगधेश्वर हि पृथक २ कर जानिये ॥
नवनन्त रु विष्णु रिपु हन्त हि सब अष्टादश मानिये ६८

धर्म पुत्र के २ भीमसेन के ४। द्रौपदी को १ नाम। दो०

युधिष्ठिर तु, शल्यारि ही। मरुत्सुत तो भीम ॥ ६ ॥
नाग बलरु। कीचकजित हि। सैरन्ध्री इक सीम ६९

अर्जुन के ५। करण के ३। नाम। दोहा ॥

राधावेधी, एन्द्रि, नर, श्वेत हय रु। करणारि ॥ ६ ॥
अगराट राधातनय त्यांतेय। करण निर्धारि ॥ ७० ॥

राजा श्रेणिक के २। हाल के २। चौलुक्य के ६। निजदेश रक्षणादि विचार को १। अरिनाशनादि को १ नाम। दो०

श्रेणिक भम्भासारि न्यप सातवाहन तु। हाल ॥
चौलुक्य तु, परमार्हत रु कुमार पाल रसाल ॥ ७१
धर्मात्मा राजर्षि पुनि। म्टत स्वभोक्ता थाप ॥
स्वराष्ट्र चिन्ता तन्त्र ही अरि चिन्तन, आवाप ७२

पान दान के २ ... चौकी के २ नाम। दोहा

है ताम्बूल करंक तो। स्थगी नाम जुग जोय ॥
पाद पीठ तु पदासन हि सु चरण चौकी होय ७३

व्यसन ७ के भिन्न भिन्न। नाम। दोहा ॥

म्रगया द्यूत रु। नारि मद अर्थ दोष चव घोर ॥
कठिन दंड ये त्याज्य हैं व्यसन सात चित चोर ७४

पेटीविशेष जो पट की सिलहती का २। पीडी की सिलह के २। अंग की सिलह के २। दस्ताना आदि हाथ की सिलह के २। नाम। दो०

उदर त्रारा नाग्रो दै हीमंभ्तुरा जंघा त्रारा ॥
अंगरसिरणी जालिका वाहुलं वाहुत्रारा ॥ ७४

पारिणमुक्ताऽऽदि शस्त्र के ४। नाम ॥ दोहा ॥

पारिण मुक्तै शक्त्यादि है। यंत्र मुक्तै वाराादि ॥
याष्टि आदि मुक्ताऽमुक्त है। अमुक्त छुरिकादि ७५

चिल्ला सैं वारा का छूटवाको १। वारा का अति वेगको

खड्ग का म्यान के ३। नाम। दोहा ॥

व्यवच्छेद शरमुक्ति। अथ दीप्ति वेग अतितास ॥
कोश तु। मत्याकार अरु परीवार त्रय भास ॥ ७६

ढाल के ४। वडी छुरी को १। शस्त्राभ्यास की पृथ्वी को १। नाम ॥ दोहा

अड्डन खेटक आवरण स्फर हु वड छुरी सोतु ॥
पत्रपाल अथ शस्त्र सिखभू। खलूरिका होतु ॥ ७७

सहाय कों मित्र की सेना आवै ती को १। चलाई सेना को डेरा मैं सूं त्वरा काष्टादि कौं जायती को १। नाम ॥ दोहा

सुहृद वल तु आसार है। चालित वलस्तु। प्रचक्र ॥
प्रसरणात्वरा काष्टादि हित सुतौ। प्रसार अवक्र। ७८

अखाडा के २। वील दंड के ३। नाम ॥ दोहा ॥

असवादे तौ। मल्लभू रत मै दंड जु लेय ॥ ॥
वैल्व रौच्य सारस्वत हि वील दंड त्रय ज्ञेय। ७९

पीलु का दाड के २। पीपल का दाड के २। गूलर का

दराडके २। आसन १ नाम॥ दोहा॥

औपरेधिक तु पैलवै हिजिनमें तु अश्वत्थ॥
उत्खल तु औदुंबरौं हिव्रपीपीठ ह्रकन्थ॥ ८०॥

ब्रह्मयज्ञादि ५ के १। पक्षान्तयज्ञ दोयके २ नाम। दो॰

ब्रह्मयज्ञ अध्ययन है होमादिक सुरयज्ञ॥
तर्पणादि पितृयज्ञ है अतिथिसेव नरयज्ञ ८१
भूतयज्ञ बलिदान है महायज्ञ ये पंच॥१॥
पौर्णमास इक दर्श मख है पक्षान्तप्रपंच। ८२।

यज्ञकुराडके २। होमकी अग्निके ४। नाम॥ दोहा॥

होमकुराड तो हविर्नी महाज्वाल तो जानि॥
महावीर होमाग्नि अरु प्रवर्ग चारि बखानि। ८३

होम की धूवां को १। होमकी भस्मको १। चरित्र के ६।
नाम। दोहा॥

होमधूम तो निगरा ही वैष्टुत भस्म हि मित्र॥
शील वृत्त चरित रु चरण आचार रु चारित्र ८४

नारदके ४। वशिष्ठकी स्त्री को १ गुरुघातकके २। ना॰ दो॰

नारद कलिकारक पिशुन देवब्रह्म आहि॥
अथो अक्षमाला इका हैं नरकील रु गुरुहा दि ८५

अग्निहोत्रकरिवाका फल सैं द्रव्य भोगै तो विप्रको १।
देवादि पूजा में श्रद्धारहित विप्रको १। पंचयज्ञभ्रष्ट
द्विजको १ एकमतसैं रुचि उडाय दूजा मैं लगावै ताके

१ प्रद्र का धनसैं अग्नि होन्न कैरेता विप्र को १ । होमनु किजावताको १ नाम । दोहा ॥

जु वीरीय जीवकें सु इक. व्लैं भ्रमिल्लु चैं खरैं भिन्न
एक वीरविप्रावकैं हु वीरोज्ज्ञ हि इक गिन्न ॥ ८६ ॥

जैन दर्शन वादीके २ । बौद्ध दर्शन वादी के २ न्याय दर्शन वादीके ३ नाम ॥ दोहा ॥

जु. वादवादी आर्हतें हि. सौगतं तु शून्यवादि ॥
नैयायिके तो. योग अरु. आक्षपादें त्रयवादि ८७

सांख्य वादी के २ । वैशेषिक वादी के २ । चार्वाक । वा महा नास्तिक वादीके ३ नाम । दोहा ॥

सांख्यं तु. कापिलैं ही अयो. वैशेषिकं औलूक्यं ॥
वार्हस्पत्यंतु. नास्तिकं रु. लौकायतिकं अचूक ८८

इन कउं वादीन को १ साखी के २ । झटरा के निमित्त गह्यो धरवा की वस्तु के २ । यथासंख्य करि मान भेद के ३ । नाम ॥ दोहा ॥

केषट. तार्किकं स्थेय तो साक्षी द्रष्टकं आर्धि ॥
पौतवें द्रुवयैं रु. पाय्यैं ये तोलैं मापैं करैं साधि ८९

विंसा को १ तेली के ३ । खलि के २ । म्रगादिप कडवा कोखाडा के २ नाम । दोहा ॥

दानमुष्टि तो. वराटैं अथ. तैली चाक्रिकं तात ॥
धूसरैं पिण्याकं तु खलं हि अवटं द्वितिय अवपातं ९०

इतिमर्त्यकाण्डसारः॥

अथतिर्य्यक्काण्डसारलिख्यते॥

धरतीके रत्नसू आदि ३। लवणखानिभूमिको १ रवा
निभवलवणके २। टंकणखारके २ नाम॥ दोहा॥

रत्नवीजसू भूमि त्रय रुमा लवणकी खानि॥
रुमाभवेस्तु वसक जुग पाचीनं टंकणं मानि ८१

कर्म्मभूमि विचारमे १। फलभूमिमे १ नाम॥ दोहा॥

तीन भरत ऐरावत सु अरु विदेह कुरु हीज॥
वर्षे कर्म्मभूमिं हि अपरदेश तु फलभू चीन ८२

आधागांवको १। सेतुके ३। वाडाके ४। नाम॥ दोहा॥

अर्द्धग्राम तु पाटकं हि आलि तु पाली चीन॥
संवरां इ आवेष्टकं तु वाट रु वृति प्राचीनं ८३

गयाको १। शिवपुरीके ४ नाम॥ दोहा

गया तु गयराजर्षि की पुरी नाम निर्धारि॥
वाराणसी वाराणसी काशि रु काशी चारि। ८४

त्वणघरके २ खजानाके २ होमवस्तुका घरके १ ना० दो

कायमानं तो त्वणो कसं दोय कुप्यशाला रु॥
संधानी होत्रीय तो हविर्गेह अति चारु। ८५॥

शान्ति घरके २। गजशाला के २ सभागृह के २ गोशा
लाको १ नाम। दोहा

शांतिगृह तु अथर्वणं हि चतुरं हस्तिशाला हि

इन्द्रके आस्थान ग्दई ही संदानिनी इका हि ९६

चित्रशाला को १ तंतुशाला को १ नापित शाला के ३

खूंटीके २ नाम। दोहा॥

जालिनी तु इकवर्तिकों अथ खरकुटी जिसानि॥

वपनी शिल्पी दंतकं तु नाग दन्त जुग जानि ९७

कोटी आगलके २ तालाके २। कूंचीके ३। नाम॥ दोहा

सूचि तु अर्गलिकों जुगल। तालक तु द्वारयंत्र॥

तीनकुंचिका कूंचिको साधारणं सुमंत्र॥ ९८॥

तालाकीसुसके २। देहलीके ३। वांदरवालको १ ना॰ दो

ताली मति ताली उदम्बर तो। उंबरं तीन॥

अंबुरं वंदन मालिकों मंगल दाम प्रवीन ९९

गवाक्षादिके ताकियो। दो। कटहडो होय ताके ३। चित्र

कीपुतलीको १ नाम॥ दोहा॥

मत्तालंब अपाश्रय रु। मत्तवारणो सुजानि॥

पुतली। अंजलिकारिको लेप्यमयी इकमानि १००

दीवड़ा दीवडी के २। खालका करवा डोलची को १ वि

मलाचलके २। मंदराचलके २ नाम। दोहा॥

दृति खल्लो हि जुग। एक तो। करक पात्रि कों प्रील

शत्रुञ्जय विमलाद्रि हीमंदर तु। इन्द्रकील। १०१

सूर्य मणि के ३ चन्द्रमणि के ४ नाम। दोहा

सूर्यकांत दहनोपल रु। सूर्याऽश्मो त्रय जोय॥

चन्द्रकांत चन्द्रोपल रु। चान्द्र चन्द्रमणि होय।१०२

स्थावर २५ विषभेदनको एकैक।नाम॥छप्पय॥।॥

मेषशृंगै अहिछत्रै कुष्टै वालूकै रु नन्दतै॥।॥

कैराटकै मर्कटै रु हैमवतै करवीरकै मत॥।॥

गौराद्रकै मूलकै रु सर्षपै रु। सक्तुकै कर्दमै॥

कालिंगै रु म्टांगिकै रु। इन्द्रै मधुसिक्थकै गौतम॥

अंकोल्लसारै लांगलिकै पुनि।पिंगलै सुसर्कै दालवै हि

अरु।विस्फुलिंगै पच्चीस ह्यों स्थावर विषकी जाति कहि१०३

कुरंटादि वृक्षयोनि षट जाति।नाम॥दोहा॥

कुरंटादि तो अग्रजै हि मूलज।उत्पल आदि॥

पर्वयोनि इक्ष्वादि है स्कंधज सल्लाकि आदि४

बीज रु हतुशाल्यादि है संमूर्च्छे जतु तृणादि॥

सकल वनस्पति माहि ये मूलजाति षट वादि।५

इति पृथिव्यादि एकेन्द्रिया:॥।॥

देह मै पडे ता कीडाके २। देह के बाहिर पडे ता कीडाको

१ इन दोनौंन को १ सूक्ष्म कृमि को १।नाम॥दोहा॥

अन्तर्ज तु नीलंगु कृमि सु क्षुद्र कीटै वहि जात॥

पुलकै नाम इन दुहुन को कीकसै अणु कृमि तात६

काठका कीडा को १।गिंडोला को १।जोक के ४।नाम।दो॰

काष्ठकीट।घुणै अथ कुरुै जलसर्पणी तु धारि॥

सु।जलालोका जलूका सहित अस्वपा चारि॥१०४॥

सीपको१ शंखके २। छोटा शंखको १ नाम॥ दोहा।।·।

जु, अब्धिमंडकी सु इक। वारिज शुतो। त्रिरेख॥

त्वतिय, षोडशावर्त्त अथ, लघु तो। क्षुल्लक देख ८

कोडा कोडी रूप सारी के ४। कोयल्या जोंकको १ ना· दो·

पगास्थिक स्तुवराटक रु। चारि। कपर्द हिराय॥

अथ, दुर्नामा हू सहित ये सब द्वीन्द्रिय गाय १०९॥

इति द्वीन्द्रियः॥

अथ त्रीन्द्रियः। मकोडाके २। सूक्ष्म कीडीके २। बडामा

धाकी कीडीके २ नाम। दोहा॥

पीलक सुतो। पिपीलक हि अथ, पिपीलिका सोतु॥

हीनांगी अथ। ब्राह्मणी सु स्थूलशीर्षा होतु। ११०

घृतप्रिय कीडीके १ उदेहीके २। लीखके २। नाम॥ दोहा॥

घृतेली तु, पिङ्ग· कापिशा वम्रपदी का सोतु॥

उपजिह्वा उपदेहिका लिक्षा रिक्षा होतु॥ १११॥

जूंके २। खटमलके ५। नाम॥ दोहा॥·॥

षट्पदी तु, यूका जु गाहि किटिभ तु, उत्कुण जानि॥

कोलकुण रु उदंश पुनि मत्कुण पंजापिका जानि ११२

चींचडीके २ चीरवळूटी। वा। सावरा कीडोकरीके ५।·

य भवकीडाको १ नाम॥ दोहा॥·॥

महाभीरु गोपालिका इन्द्र गोप वैराट॥·॥

अग्निरुजी अग्निक तितिभ गर्दभी तु इकयाट ११३

इतित्रीन्द्रियाः॥

अथ चतुरिन्द्रियास्तत्र मौकडीके ५ बीछूके २ बीछूका डंकको १ नाम। दोहा॥

अष्टपाद ऊर्मि जालिके रु जालकारक सुजानि॥
लालास्रावे ह आलि द्रुणौ तिहिं डङ्कु तु अलै मानि १४

चंचरीक के ३। मधु वालकी मांखी के २। तेलादी मांखी को १। जुगनू को १ नाम॥ दोहा॥ ॥

झिल्ली सुख तु इन्द्रिन्दिर रु रोलम्बै ह त्रय होत॥
सुद्रां सरघी जुग इकिक तैलादी खद्योत॥१५॥

तीतरी को १। भीमरी को १। नीली मांखी को १। डांस को १। टीडी को तथा पतङ्ग को १। छोटा डांस को १ नाम। दोहा

इकिक पुत्तिका झिल्लिका नीला दंश पतङ्ग॥
लघुदंशौ हु चतुरिन्द्रिया मानत इनहि अभङ्ग १६

इतिचतुरिन्द्रियाः॥

अथपञ्चेन्द्रियाः॥ हाथी की मुख ४ जाति के एकेक। दांत के समय वी दांत न आवे अरु खाटरो होय ता को भे लो १ नाम॥ दोहा॥

भद्र मन्द्र मृग मिश्र ये भिन्नाभिन्न गज जाति॥ ॥
लघु तनु वयम हु दन्तेना हि सो गज मत्कुण ख्याति १७

वालादि ४ के ४। नाम। दोहा॥

पंच वर्ष को वाल गज दशको पोत वखानि॥ ॥

वीसवर्ष को निर्के है कल्मैं तीस को मानि ॥११७॥

अङ्कुश का अग्र को १ अङ्कुश से रोकिबा को १ मन्हावत
का पगन की क्रिया को १ यात को । अरुयत को भोली १
नाम ॥ दोहा ॥

अङ्कुश अग्र, अपष्ठ है अङ्कुश वारण, यातैं ॥
यतं तुम हावत पद करम वीतं तु येजुगतात ११८

खुरो चालै फिरै तौ घोडा को १ हृदय अरु मुख पर भौंरी
वाला घोडा को १ नाम ॥ दोहा ॥ ॥

दुर्विनीत, प्रकलं हय हि, श्रीवत्स को तु साजि ॥
जा के हृद मुख ऊपरे भौंरी होय सु वाजि ॥११९॥

पांचौं अंग श्वेत होंय ता को १ आठौं अंग श्वेत होंय ता को
नाम ॥ दोहा

पंचभद्र उर हृद मुख पार्श्व युगल सित जानि ॥
खुर उर हृद मुख केश सित, अष्टमंगल तु मानि २०

श्वेत घोडा के २ श्वेत पिंगल रंग का को १ दुग्धसम श्वे
त रंग का को १ पीला रंग का को १ नाम । दो॰

सित तु कर्क को काह्न ही सितपिङ्गल खोङ्गा है ॥
सेरहै तु पीयूषरंग, पीत तु, हरियै हि आह १२१

काला रङ्ग का को १ लाल रङ्ग का को १ सब्ज नीला को
१ कपिल रङ्ग का को १ नाम ॥ दोहा

काल वर्ण, खङ्गाह है हय लोहित हय तु किआह है ॥

आनीलतु नीलकौं हि अपकापिल। नियूहँ सराह २२

नियूहको आलवालको श्वेत होवे ताको १। कछुश्वे
तरङ्ग पीडी श्यामताको १। नामा दो०

कापिलजु सित दुम आलजुत सो बोल्लाहैं बखानि॥
कछु जंघ कम पारडु सो बाजि उराहँहि जानि २३॥

गधासम रंगका को १ गुलाबी रंगका को १ कछु पी
लो रंग होय श्याम गोडा होय ताको १ नाम॥ दोहा

गर्दभआभ सुरूहैं हयपाटल बोरु खानं॥
कछु जानु कम पीत सो हय कुलाहँ हीजान २४

पीत रक्त मिल्या रङ्ग का को १ नाम॥ दोहा॥
पीतरक्त रंग मिलित सो हय उकनाहँ विजोय॥
कछु रक्त छवि युक्त हूक हुँ उकनाहँ हि होय १२५

लाल कमल सम रङ्ग का को १ पीत हरित रङ्ग का को
१ श्वेत काच सम रङ्ग का को १ नाम॥ दोहा॥

शोणाँ कोकनद छवि हयहि हरितपीत रंग सो तु॥
हरिकं हालकौं हि पंगुलौं तु सित काचाभहि होतु २६

कवरा को १ धोरितगति के लक्षण सहित १ ना० दो

चित्रित हय तु हलाहैं ही धोरितेघोरणाँ जाने॥
वस्तुकं कापिशारव कोडकी गति सी हय गति मानि २७

वल्गित को लक्षण सहित १ प्लुत को लक्षण सहित
१ नाम॥ दोहा॥

समुल्ला सतजु अग्रतनु कांचित सुख विकनीच ॥
वल्गित अथप्लुतै लंघन जु खग म्हग लौं हि अधीन २८

उत्तेरित के लक्षण सहित ३ नाम ॥ दोहा ॥ ५ ॥

उत्तेरित आस्कंदित कै उपकण्ठ हि त्रय बादि ॥
उत्प्लुत्योत्सुत्य जुगम्न चौपद कारि कोपादि २९ ॥

उत्तेजित के लक्षण सहित २ तो बराका ओहरी का। कुलफका। भेला ३ नाम ॥ दोहा ॥

उत्तेजित तो रेचित हि मध्य वेग गति जानि ॥
वक्र पट्ट तल सारक रु तालिकौ तीन बखानि ३०

दांवण। वा। पिंकाडी के २ पाखर के २ बाग के २ नाम ॥ दोहा

पाद पाश दामांचन हि प्रक्षर अखर द्वि धारि ॥
रश्मि सु तो वल्गा कुशो अवक्षेपणी चारि ३१

गाय। वा। बैल का शिर को १ सींग को १ गाडरी के ६ नाम ॥ दोहा ॥

गो शिर। नैचिक कूणिका सींग हि मेषी सोतु ॥
कुकरी जालिकिनी रु जो अविला वेणी होतु ३२

वनवोक के ४ गाडर का दूध के ३ नाम ॥ दोहा ॥

गाडिक तु शिशुवाहक पृष्ठशृंग रु वज्राजे ॥
अविसोढ तु। अविदूस अरु। अविमरीसै त्रयसाज ३३

गाज सर्पके २। जौ की शब्द अरु रङ्ग· कूकडा को सो·

होयताके ७ नाम ॥ दोहा ॥

भुजङ्ग भोजीराज अहि कुक्कुराहि तो जानि ॥
कुकुयम अहि वर्ण अरु रवकारि सो पहिचानि ३४

शेष अरु वासुकिको वर्ण लक्षण नाम ॥ दोहा ॥

शेषे तु श्यामकिशुक्लरंग सितपंकजको चिन्ह ॥
वासुकि श्वेतरु तासुके नील सरोजहि चिन्ह ३५ ॥

तक्षक अरु महापद्मको वर्ण लक्षण ॥ दोहा ॥

लोहितांग तो तक्षके सुस्वस्तिक अङ्कितसीस ॥
महपद्म अतिशुक्ल अहि दशविन्दुनजुतसीस ३६

शंख अरु कुलिक को वर्णलक्षण ॥ दोहा ॥

शंखे पीतविभ्राणगलरेख इन्दु सित जोय ॥ ॥
कुलिक अर्द्ध शशि मस्तकरु ज्वाल धूमप्रभ होय ३७

चारि नाग विशेष तिनको एकैक नाम ॥ दोहा ॥

कम्बल रु अम्बतर रु धृतराष्ट्र वलाहक भिन्न ॥
तक्षकादि इन आठ मे आठ नागकुल गिन्न ३८

सविष निर्विष सर्प अरु दृग विषादि वर्णन ॥ दोहा

सविष सर्प नागादि है अजगरादि विष हीन ॥
नाग तु दृग विष पुच्छ विष वृश्चिकादि ही चीन ३९
लोम विष तु व्याघ्रादि है नख विष सो तु नरादि ॥
लाला विष लूतादि है कालान्तर मूषादि ४०

औषध मंत्रादि करि जो रह दाये होय ता विषको १

इति खचराः पंचेन्द्रियाः

नक्रादि ६ का एकैक। नाम। दोहा

नक्रौं महामुखं ग्राहमुखं नालु जिह्वा कुम्भीर॥१॰॥
जल सूकरं आलस्यं नव गौमुखं कुम्भी धीर॥१४६॥

जलमारास्था के ४। जलविलाव के ७। नाम॥ दोहा॥

अंबुकूर्मे तु महावसं रु उल वीर्य शिशुमार॥
पानीयनकुल उद्र अरु वसी रु जलमाजार १४७

जलनरादि नाम॥ दोहा॥

स्थल मे होंय नरादि जेते जलहू मे होंय ।१॰॥
जलनरं जलगजं जल हयं हि जलवाचक जुतजोय ४८

इति जलचराः पंचेन्द्रियाः॥

अण्डजादि ६ योनि। नाम। दो॰

अण्डजं खगसर्पादि हैं पोतजं कुञ्जर आदि॥
रजसं मद्यकीटादि हैं जरायुजं तु न्रुग वादि ४९
मत्स्यादितु संमूर्च्छनजं स्वेदजं तो यूकादि॥
सुरनारक उपपादकं हि उद्भिदं खञ्जन आदि ५०
आठ भाँति की योनियों चर जीवन की जोय॥
उद्भिदं तरु गुल्मादि की योनि सुनवम हि होय ५१

इति तिर्य्य काण्ड सारः॥

अथ नरक काण्ड सार लिख्यते॥१॰॥

अनाधार ७। नरकन का एक एक। नाम॥ दोहा॥